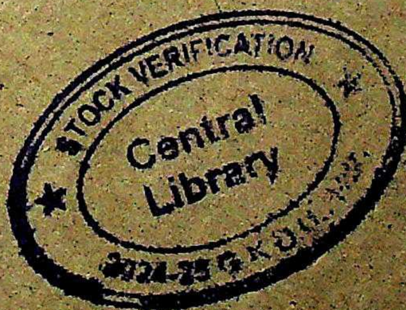
HINDI PRCHARK 1964 G.K.V.


STOCK VERIFICATION
Central
Library
2024-25 G K U



हिन्दी प्रचारक

वर्ष : २२ ० अंक : २२
फरवरी : १९६४

हिन्दी पुस्तक-व्यवसाय का मुख-पत्र

नई

प्रचारक पॉकेट बुक्स

★ सीताराम — बंकिमचन्द्र

★ झाड़ फानूस — आरिग पूडि

★ धर्मचेता — हिमांशु श्रीवास्तव

★ गुलाब कुमारी — निहालचन्द वर्मा

★ बादलों के आर-पार — राजेन्द्र अवस्थी 'तृषित'

★ झांसी की रानी — देश पांडे

★ बिना चिराग का शहर — आचार्य चतुरसेन शास्त्री

★ रजतपट के प्रणय गीत — सं. पी. वी. भानुशाली

★ स्त्री रोग चिकित्सा — डॉ. केवलधीर

★ सात उपन्यास सात कहानियाँ — (अनु०) हरिवंश, एम. ए.

* * * * * * *

प्रत्येक का मूल्य 1/-

* * * * * * *

‡ प्रचारक पाकेट बुक्स ‡

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पो. बॉक्स नं. ७०, : पिशाचमोचन : वाराणसी-१



1/-

हिन्दी प्रचारक

[मासिक]

सम्पादक
श्री कृष्णचन्द्र बेरी

[फरवरी]
१९६४

मूल्य
वार्षिक : ३.००
एक प्रति : २५ पैसे

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी : हीरक जयन्ती-समारोह

समय-समय पर साहित्यिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक स्वर्गीय महान् नेताओं का सामूहिक रूप से गुण-कीर्तन और स्मरण विभिन्न क्षेत्रों में मनोयोगपूर्वक निष्ठा के साथ काम करने का उत्साह, नव-स्फूर्ति और प्रेरणा प्रदान करता है। हमारा परम सौभाग्य है कि राष्ट्र-भाषा के नवयुग-प्रवर्तक पुण्यश्लोक आचार्य द्विवेदी की हीरक-जयन्ती का पुण्य पर्व हमारे समक्ष आ रहा है। द्विवेदीजी ने जिस अदम्य उत्साह, अविचल साहस, अपूर्व त्याग और अन्त:शुद्ध निष्ठा के साथ राष्ट्रभारती की सेवा की और उसे राष्ट्रभाषा के महान् दायित्व को वहन करने के योग्य बनाया, उनके पश्चात् वह उत्साह, वह साहस, वैसा त्याग और वैसी निष्ठा के दर्शन किसी अन्य साहित्यकार में नहीं हुए। काव्य, आलोचना, निबन्ध के अतिरिक्त उन्होंने संस्कृत और अंग्रेजी के अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के सफल अनुवाद भी राष्ट्रभाषा

प्रतीत होता था। अपने इस भाव
धिक महत्त्वपूर्ण कार्य जो उन्होंने
ट के कवियों और लेखकों का जन्म
सिंह आदि विभूतियाँ उन्हीं की
का में कहा है—

ह,
।"

१५ मई '६४ को आचार्य महावीरप्रसाद जी द्विवेदी की शत-वार्षिकी है। भूल से हीरक-जयन्ती छप गया है। पाठक हीरक-जयन्ती के स्थान पर शत-वार्षिकी पढ़ें।

श्रेय द्विवेदीजी को ही है। ऐसे ही
ोचित पथ-प्रदर्शन किया।

को व्याकरण-सम्मत रूप-प्रदान।
सका मनमाने ढंग से व्यवहार करते
रमार दिखाई पड़ती है। 'सरस्वती'
ड अपने हाथ में सँभाला तब सभी

हिन्दी-साहित्यकार चौकन्ने और सतर्क हो गए। हिन्दी के बड़े-से-बड़े लेखक का लेख जब सरस्वती में प्रकाशनार्थ जाता तो द्विवेदी जी उसे बिना व्याकरण-सम्मत रूप दिए छापने का आदेश नहीं देते थे। यदि लेखक संशोधन से असहमत होता तो वे उसका लेख लौटा देते थे। हिन्दी की स्वरूप-रक्षा के प्रश्न पर उन्होंने किसी को किसी प्रकार की छूट देने की शिथिलता कभी नहीं दिखाई। हिन्दी के महान् कहे जाने वाले साहित्यिक भी उनसे घबराते थे। उनका यह आतंकपूर्ण शासन उनके जीवन-काल तक बराबर बना रहा। इसका फलप्रद परिणाम यह हुआ कि हिन्दी भाषा का एक स्वरूप निश्चित हो गया और यह एक व्याकरण-सम्मत समृद्ध भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो गई। उसके पश्चात् उस शासन-यन्त्र के समाप्त हो जाने का ही परिणाम है कि अब भाषा की प्रकृति का ध्यान बड़े कहलाने वाले कितने ही साहित्यकार नहीं रखते और उनकी भाषा पूर्णतया व्याकरण-सम्मत नहीं होती। शासनाभाव में लोग हिन्दी-व्याकरण को समझने का कष्ट भी नहीं उठाना चाहते और शुद्ध गुरुडम के बल पर आचार्य-पद पर प्रतिष्ठित होने का दम्भ करते हैं। हिन्दी के इस सर्वोन्मुखी विकास-काल में द्विवेदी जी जैसे व्यक्तित्व की महती आवश्यकता का अनुभव लोग करते हैं।

१५ मई, ६४ को आचार्य द्विवेदी की हीरक जयन्ती सार्वदेशिक रूप में मनाई जाने वाली है। काशी में भी उच्च स्तर पर इसके आयोजन की तैयारी की जा रही है। महान् साहित्यिकों की जयन्ती के अवसर पर विद्वानों को इस बात का बराबर ध्यान रखना चाहिए कि उनके वक्तव्यों द्वारा निर्दिष्ट साहित्यकार के महत्त्व से साधारण-से-साधारण जन को भी परिचित कराया जाय, उसके महान् व्यक्तित्व को प्रकाश में लाया जाय; यह नहीं कि ऐसे आयोजनों का आत्म-विज्ञापन के मञ्च के रूप में उपयोग किया जाय। अभी-अभी पन्द्रह-बीस दिनों पूर्व प्रसाद जी के निवास-भवन में उनकी जयन्ती मनाई गई है, उसमें अनेक वक्ताओं ने प्रसादजी के कृतित्व और व्यक्तित्व पर अधिक कुछ न कहकर आत्म-प्रचार की भावना से प्रेरित होकर विषयान्तर ही उपस्थित किया। हम आशा करते हैं कि महान् आचार्य द्विवेदी जी के रजत-जयन्ती-समारोह के अवसर पर विद्वद्वर्ग आत्म-संयम के साथ समारोह के मूल उद्देश्य पर ही ध्यान केन्द्रित रखकर उसे सफलता प्रदान करने में पूर्णतया यत्नवान् होगा। एवमस्तु।

नई

प्रचारक पॉकेट बुक्स

★ सीताराम — बंकिमचन्द्र

★ झाड़ फानस — आरिग पूडि

★ धर्म

★ गुल

★ बाद

★ झाँ

★ बि

★ ए

★

★ — (अनु०) हरिवंश, एम. ए.

* * * * * * *
प्रत्येक का मूल्य 1/
* * * * * * *

‡ प्रचारक पाकेट बुक्स ‡

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पो. बॉक्स नं. ७०, : पिशाचमोचन : वाराणसी–१



1/-

हिन्दी प्रचारक

[मासिक]

सम्पादक
श्री कृष्णचन्द्र बेरी

[फरवरी]
१९६४

मूल्य
वार्षिक : ३.००
एक प्रति : २५ पैसे

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी : हीरक जयन्ती-समारोह

समय-समय पर साहित्यिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक स्वर्गीय महान् नेताओं का सामूहिक रूप से गुण-कीर्तन और स्मरण विभिन्न क्षेत्रों में मनोयोगपूर्वक निष्ठा के साथ काम करने का उत्साह, नव-स्फूर्ति और प्रेरणा प्रदान करता है। हमारा परम सौभाग्य है कि राष्ट्र-भाषा के नवयुग-प्रवर्तक पुण्यश्लोक आचार्य द्विवेदी की हीरक-जयन्ती का पुण्य पर्व हमारे समक्ष आ रहा है। द्विवेदीजी ने जिस अदम्य उत्साह, अविचल साहस, अपूर्व त्याग और अन्तःशुद्ध निष्ठा के साथ राष्ट्रभारती की सेवा की और उसे राष्ट्रभाषा के महान् दायित्व को वहन करने के योग्य बनाया, उनके पश्चात् वह उत्साह, वह साहस, वैसा त्याग और वैसी निष्ठा के दर्शन किसी अन्य साहित्यकार में नहीं हुए। काव्य, आलोचना, निबन्ध के अतिरिक्त उन्होंने संस्कृत और अंग्रेजी के अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के सफल अनुवाद भी राष्ट्रभाषा को दिए। उस पराधीनता काल में भी देश पर विदेशी भाषा का शासन उन्हें असह्य प्रतीत होता था। अपने इस भाव को उन्होंने अपने कई निबन्धों में व्यक्त किया है। स्वतन्त्र साहित्य-सर्जना से भी अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य जो उन्होंने अत्यन्त दक्षता के साथ सम्पन्न किया वह है साहित्यिक-सर्जना। उन्होंने कई उच्च कोटि के कवियों और लेखकों को जन्म दिया। पं० लोचनप्रसाद पाण्डेय, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, ठाकुर गोपालशरण सिंह आदि विभूतियाँ उन्हीं की देन हैं। आचार्य द्विवेदी के प्रति आभार प्रकट करते हुए राष्ट्र कवि ने साकेत की भूमिका में कहा है—

"कैसे तुलसीदास फिर करते मानस-नाद,
'महावीर' का यदि उन्हें मिलता नहीं 'प्रसाद'।"

महान् उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द को उर्दू से हिन्दी में लाने का श्रेय द्विवेदीजी को ही है। ऐसे ही कितनी ही महती प्रतिभाओं को वे हिन्दी-साहित्य-क्षेत्र में ले आए और उनका यथोचित पथ-प्रदर्शन किया।

हिन्दी-साहित्य के क्षेत्र में द्विवेदी जी की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण देन है—भाषा को व्याकरण-सम्मत रूप-प्रदान। द्विवेदी जी के पहले खड़ीबोली का एक निश्चित स्वरूप नहीं बन पाया था। लेखक इसका मनमाने ढंग से व्यवहार करते थे और आज जब हम भारतेन्दुकालीन भाषा देखते हैं, तो उसमें अनियमितताओं की भरमार दिखाई पड़ती है। 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक के रूप में सन् १९०३ में जब उन्होंने राष्ट्रभाषा का शासन-दण्ड अपने हाथ में सँभाला तब सभी हिन्दी-साहित्यकार चौकन्ने और सतर्क हो गए। हिन्दी के बड़े-से-बड़े लेखक का लेख जब सरस्वती में प्रकाशनार्थ जाता तो द्विवेदी जी उसे बिना व्याकरण-सम्मत रूप दिए छापने का आदेश नहीं देते थे। यदि लेखक संशोधन से असहमत होता तो वे उसका लेख लौटा देते थे। हिन्दी की स्वरूप-रक्षा के प्रश्न पर उन्होंने किसी को किसी प्रकार की छूट देने की शिथिलता कभी नहीं दिखाई। हिन्दी के महान् कहे जाने वाले साहित्यिक भी उनसे घबराते थे। उनका यह आतंकपूर्ण शासन उनके जीवन-काल तक बराबर बना रहा। इसका फलप्रद परिणाम यह हुआ कि हिन्दी भाषा का एक स्वरूप निश्चित हो गया और यह एक व्याकरण-सम्मत समृद्ध भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो गई। उसके पश्चात् उस शासन-यन्त्र के समाप्त हो जाने का ही परिणाम है कि अब भाषा की प्रकृति का ध्यान बड़े कहलाने वाले कितने ही साहित्यकार नहीं रखते और उनकी भाषा पूर्णतया व्याकरण-सम्मत नहीं होती। शासनाभाव में लोग हिन्दी-व्याकरण को समझने का कष्ट भी नहीं उठाना चाहते और शुद्ध गुरुडम के बल पर आचार्य-पद पर प्रतिष्ठित होने का दम्भ करते हैं। हिन्दी के इस सर्वोन्मुखी विकास-काल में द्विवेदी जी जैसे व्यक्तित्व की महती आवश्यकता का अनुभव लोग करते हैं।

१५ मई, ६४ को आचार्य द्विवेदी की हीरक जयन्ती सार्वदेशिक रूप में मनाई जाने वाली है। काशी में भी उच्च स्तर पर इसके आयोजन की तैयारी की जा रही है। महान् साहित्यिकों की जयन्ती के अवसर पर विद्वानों को इस बात का बराबर ध्यान रखना चाहिए कि उनके वक्तव्यों द्वारा निर्दिष्ट साहित्यकार के महत्त्व से साधारण-से-साधारण जन को भी परिचित कराया जाय, उसके महान् व्यक्तित्व को प्रकाश में लाया जाय; यह नहीं कि ऐसे आयोजनों का आत्म-विज्ञापन के मञ्च के रूप में उपयोग किया जाय। अभी-अभी पन्द्रह-बीस दिनों पूर्व प्रसाद जी के निवास-भवन में उनकी जयन्ती मनाई गई है, उसमें अनेक वक्ताओं ने प्रसादजी के कृतित्व और व्यक्तित्व पर अधिक कुछ न कहकर आत्म-प्रचार की भावना से प्रेरित होकर विषयान्तर ही उपस्थित किया। हम आशा करते हैं कि महान् आचार्य द्विवेदी जी के रजत-जयन्ती-समारोह के अवसर पर विद्वद्वर्ग आत्म-संयम के साथ समारोह के मूल उद्देश्य पर ही ध्यान केन्द्रित रखकर उसे सफलता प्रदान करने में पूर्णतया यत्नवान् होगा। एवमस्तु।

हमारे साहित्यिक प्रकाशन

शोध-प्रबन्ध

आधुनिक हिन्दी कवियों के काव्य सिद्धान्त : डॉ० सुरेशचन्द्र गुप्त २५.००
करुण-रस : डॉ० ब्रजवासीलाल श्रीवास्तव १२.५०
मध्य युगीन हिन्दी साहित्य में नारी भावना : डॉ० उषा पाण्डय १०.००
हिन्दी साहित्य में हास्य-रस : डॉ० बरसानेलाल चतुर्वेदी १०.००
प्रेमचन्द-पूर्व हिन्दी-उपन्यास : डॉ० कैलाशप्रकाश १२.५०

आलोचनात्मक

अनुसन्धान का विवेचन : डॉ० उदयभानुसिंह ६.००
सूरदास और उनके भ्रमर गीत : प्रो० दामोदरदास गुप्त १२.५०
विद्यापति और उनकी पदावली : प्रो० देशराजसिंह भाटी १८.००
विद्यापति की काव्य-साधना ,, ५.००
जायसी : एक विवेचन ,, ५.००
कबीर : एक विवेचन : डॉ० सरनामसिंह शर्मा १२.५०
विमर्श और निष्कर्ष : ,, १२.५०
राजस्थान साहित्य : परम्परा और प्रगति : डॉ० सरनामसिंह शर्मा २.००
कामायनी में शब्द-शक्ति चमत्कार : डॉ० विमलकुमार जैन ५.००
पालि-साहित्य और समीक्षा : सरनाम सिंह शर्मा ३.१२
प्रेमचन्द और गांधीवाद : प्रो० रामदीन गुप्त १३.५०
हिन्दी पद-परम्परा और तुलसीदास : डॉ० रामचन्द्र मिश्र १२.५०
मध्ययुगीन वैष्णव संस्कृति और तुलसीदास : डॉ० रामरतन भटनागर ७.५०
विनयपत्रिका-समीक्षा : दानबहादुर पाठक ४.६२
सरल भाषा-विज्ञान : डॉ० मनमोहन गौतम ७.००
हिन्दी साहित्य और उसकी प्रमुख प्रवृत्तियाँ : डॉ० गोविन्दराम शर्मा ९.५०

साहित्यिक निबन्ध : प्रो० भारतभूषण 'सरोज' ७.५०
युगकवि पन्त की काव्य-साधना : प्रो० विनयकुमार शर्मा ७.००
हिन्दी नाटक की रूपरेखा : प्रो० दशरथ झा ५.००
साहित्यिक वाद : प्रो० भारतभूषण 'सरोज' २.२५
भारतीय काव्य सिद्धान्त : देशराज सिंह भाटी ३.००
काव्यशास्त्र : डॉ० भारतभूषण 'सरोज' ५.००
जायसी की काव्य-साधना : प्रो० दानबहादुर पाठक ३.५०
संस्कृत साहित्य का इतिहास : डॉ० महेन्द्रकुमार ३.००
गुजराती साहित्य का इतिहास डॉ० बरसानेलाल चतुर्वेदी २.००
जयहिन्द निबन्धमाला : भारतभूषण 'सरोज' ३.००
रासो : पद्मावती समय : ,, १.५०
रासो : आदि पर्व : ,, २.२५
हिन्दी-गुजराती प्रवेश : दयानन्दनारायण स्वामी १.५०
साहित्यालोचन सिद्धान्त : डॉ० मनमोहन गौतम २.५०
मौखिक प्रश्नोत्तर : ,, ०.७५
हिन्दी साहित्य का इतिहास : प्रो० भूषण 'स्वामी' ३.५०
भाषा-विज्ञान : भारतभूषण 'सरोज' २.५०
महात्मा कबीर : ,, २.५०
चिन्तामणि चिन्तन : प्रो० ओमप्रकाश सिंघल २.५०
कविवर सुमित्रानन्दन पन्त : प्रो० भूषण 'स्वामी' २.५०
भाषा का इतिहास : प्रो० देशराजसिंह भाटी २.५०
महाकवि बिहारी : डॉ० रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' २.५०
सूरदास : प्रो० दामोदरदास गुप्त २.५०
तुलसीदास : ,, २.५०
भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त : प्रो० देशराजसिंह भाटी ६.५०
केशव की काव्य-साधना : प्रो० ओमप्रकाश शर्मा २.५०
काव्य विवेचन : देशराजसिंह भाटी १.५०

ये पुस्तकें पुस्तकालयों के लिए स्थायी निधि सिद्ध होंगी। हमारे समस्त प्रकाशनों के लिए वृहद् सूचीपत्र मुफ्त मँगवाएँ। पुस्तकें अपने निकटस्थ पुस्तक-विक्रेता अथवा हमसे सीधे प्राप्त करें। हमारे यहाँ सभी प्रकार की हिन्दी-पुस्तकें मिलती हैं।

हिन्दी साहित्य संसार

१३, यू. बँगलो रोड, दिल्ली–६
ब्रांच-आफिस
खजांची रोड, पटना–४



श्री आरिगपूडि से साक्षात्कार :

श्री विजय प्रकाश बेरी

श्री रमेश चौधरी आरिगपूडि का जन्म कृष्णा डिस्ट्रिक्ट, आंध्र प्रदेश में २८ नवम्बर १९२३ में हुआ। यद्यपि आप किसी कालेज में पढ़ने नहीं गये, तथापि कालेजों में आपकी पुस्तकें अवश्य पढ़ाई जाती हैं।

स्वदेश-प्रेम की भावना आपके हृदय में जन्म-जात ही रही। Quit India movement में आप १९४२-४३ के समय बलमाई-अलीपुर, कर्नाटक जेल में रहे।

प्रारंभिक जीवन आपने पत्रकार रूप में प्रारंभ किया। हिन्दू, इंडियन एक्सप्रेस, हिंदुस्तान टाइम्स आदि अनेक समाचार-पत्रों के प्रतिनिधि रहे। आपने पत्रकार रूप में अपना जीवन प्रारंभ किया। 'इण्डियन रिपब्लिक' नाम के दैनिक पत्र के सम्पादक रूप में भी आपने काफी दिनों तक कार्य किया। किन्तु उनके अपने ही शब्दों में वे इन दिनों 'अंग्रेजी में ही भटकते रहे'। राष्ट्रभाषा के प्रति तेलुगू भाषी कितना प्रेममय उद्गार है।

भारत की आजादी के बाद हिन्दी में लिखने की आपकी इच्छा प्रबल हुई। आपका यह मत रहा है कि विदेशी भाषा में लिखने से यह असन्तोष तो बना ही रहता है कि 'जितना लिखना चाहते थे नहीं लिख सके। समाज की भाषा में लिखना समाज के चित्रण में सहायक होता है; अतः हिन्दी को ही आपने अपनी रचनाओं का माध्यम बनाया

दक्षिण भाषा-प्रचार-सभा ने 'दक्षिण भारत' का संपादन करने के लिए आपको आमन्त्रित किया, जहाँ आपको हिन्दी में अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ। १९५६ में उसी पत्रिका में धारावाहिक रूप में 'दूर के ढोल' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ, जोकि बाद में पुस्तक के रूप में आया।

साहित्य एक प्रकार का साधन है, जिससे साहित्यिक समाज में समयानुकूल चेतना पैदा करने की कोशिश करता है। आंध्रवासी रूप में आपने रचनाओं को लिखना प्रारंभ किया। यह निर्विवाद सत्य है कि दक्षिण भारत के संबंध में आपके उपन्यास हिन्दी के पहले उपन्यास हैं।

अब तक प्रकाशित उपन्यास खरे-खोटे, धन्य भिक्षु, अपने-पराये, भूले-भटके, मुद्राहीन, पतितपावनी, अपनी धरती, दूर के ढोल, आदरणीय, अपवाद, सारा संसार मेरा, यह भी होता है, साँठ-गाँठ, झाड़-फानूस हैं। 'जीने की सजा', भगवान भला करे' आपके कहानी-संग्रह हैं। १५० 'नेपथ्य' एकांकी नाटकों का संग्रह है। 'कोई न पराया' नाटक भी प्रकाशित हो चुका है। यू० पी० सरकार द्वारा आप की—दूर के ढोल, आदरणीय अपवाद, खरे-खोटे, धन्य भिक्षु, अपने-पराये नामक पुस्तक पुरस्कृत भी हो चुकी हैं। आपकी पुस्तकों का अनुवाद मलयालम, तामिल, तेलुगू, नेपाली, रूसी आदि अनेक भाषाओं में भी हुआ है। भाषा-प्रवाह आपने प्रेमचन्द जी से सीखा है। आपने अपनी भाषा को तेलुगू का रूप, अंग्रेजी का प्रवाह, संस्कृत का अकर्षण दिया है।

आप अपने को ही खोजने में लगे हुए हैं। और लेखन में जो लोग अपने आपको खोज रहे हैं सभी एक पथ के ही गामी हैं। पुस्तक लिखते समय आप उसे उपयुक्त समझ कर प्रारंभ करते हैं, किन्तु अन्त में उससे असन्तुष्ट रहते हैं। यही प्रवृत्ति उन्हें अधिक से अधिक अच्छा साहित्य प्रस्तुत करने में प्रोत्साहन देती है। आप अपने को अभी भी अशिक्षित समझते हुए स्वाध्याय जारी रखे हुए हैं और आपका विश्वास है कि आप स्वतः ही अपने को सिखाने का प्रयत्न करते आये हैं।

यह पूछने पर कि 'भारतवर्ष में कौन-सी भाषा साहित्यिक दृष्टिकोण से समृद्ध है,' आरिगपूडि जी का यह सीधा-सा उत्तर था कि अलग-अलग अंगों में भिन्न-भिन्न भाषाएँ समृद्ध हैं—

तेलुगू में—कहानी-साहित्य
बँगला में—उपन्यास-साहित्य
अपभ्रंश में—सन्त-साहित्य
हिन्दी में—छायावाद।

उन्होंने अपना मत दिया—

'हिन्दी में उपन्यास तो अधिक निकलते हैं किन्तु साहित्यिक कसौटी पर कम ही उतरते हैं और वे वास्तविकता से कम संबंधित होने के कारण विशेष प्रभावित नहीं करते। हिन्दी साहित्य में उपन्यास नया अंग है, बहुत कुछ किया जा रहा है, किन्तु उपलब्धियाँ कम ही हैं।'

आजकल आप विविध भारती मद्रास ऑल इंडिया रेडियो में प्रोड्यूसर हैं तथा लेखन-कार्य करते रहते हैं।

राजकमल के १९६३ के प्रकाशन

चारु चन्द्रलेख : हजारीप्रसाद द्विवेदी	१२.००
तपस्विनी भाग २ : क० मा० मुन्शी	१०.००
भूले बिसरे चित्र (विद्यार्थी संस्करण) भगवतीचरण वर्मा	४.५०
मोतियों वाले हाथ : मधुकर गंगाधर	३.००
कँटीली राह के फूल : अमरकान्त	४.००
सिद्धि-पथ : जगदीश शरण शर्मा	४.००
मैला आँचल (पु० मु० विद्यार्थी संस्करण) फणीश्वरनाथ रेणु	४.००
लहरों के राजहंस : मोहन राकेश	३.५०
एकांकी श्री : सं० राजेन्द्र मनोत शील	३.००
पल्लविनी : सुमित्रानन्दन पन्त	११.००
पल्लव (परिवर्द्धित) : ,, ,,	६.००
आवाज़ों के घेरे : दुष्यन्त कुमार	४.००
नाट्यशास्त्र की भारतीय परम्परा और दशरूपक : हजारीप्रसाद द्विवेदी	१०.००
हिन्दी रीति साहित्य (परिवर्द्धित संस्करण) : डॉ० भगीरथ मिश्र	५.००
हिन्दी सन्त साहित्य : डॉ० त्रि. ना. दीक्षित	६.००
भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी : डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या	१०.००
सौ आदर्श निबन्ध : सं० मुनीश सक्सेना गणेश शुक्ल	५.००
दस तसवीरें : जगदीशचन्द्र माथुर	६.००
राधाकृष्णन् का विश्व-दर्शन : शान्ति जोशी	५.००
सामाजिक पुनर्निर्माण के सिद्धान्त : बर्ट्रेंड रसेल	६.००
स्वाधीनता का सिंहनाद : मोतीलाल नेहरू	१०.००
विश्व अर्थ-व्यवस्था एक परिचय : ए० जे० ब्राउन	७.५०

नीलोखेड़ी : एस० के० दे	५.००
नीतिशास्त्र : शान्ति जोशी	८.००
शरीर विज्ञान : श्रीमती कुसुमकुमारी साहा	३.००
स्वास्थ्य विज्ञान ,, ,, ,,	३.५०
शिक्षा की रूपरेखा : बर्टेंड रसेल	६.२५
फ्रायड मनोविज्ञान प्रवेशिका : कैल्विन एस. हॉल	४.५०
कृषि विज्ञान : राजेश्वरादास गुप्त	७.००
हमारे बच्चे १ से ६ वर्ष तक	२.५०
नन्हें मुन्ने की देखभाल	२.२५
शान्ति की ओर : रेजिना टार, एलेनार रूजवेल्ट	१.००
(इसी पुस्तक के मराठी, गुजराती एवं पंजाबी संस्करण भी प्राप्य हैं मूल्य प्रत्येक का)	१.००
उमराव जान अदा : मिर्ज़ा हादी रुस्वा	१.००
हिज़ हाईनेस : ऋषभचरण जैन	१.५०
सुमन : रज़िया सज्जाद ज़हीर	२.००
सितारों से आगे : ख्वाजा अहमद अब्बास	१.००
तौलिए : उपेन्द्रनाथ अश्क	१.००
चाचा की चमत्कारी पगड़ी : जे० भारत दास	०.६०
बन्दर और भालू : जे० भारतदास	०.६०
समुद्र का खजाना : जे० भारतदास	१.५०
शिक्षा की पुनर्रचना : के० जी० सैयदेन	७.००
उन्नत कृषि की ओर (पु० मु०) पन्नालाल जायसवाल	२.००
मानसरोवर (पु० मु०) सं० क्षेमचन्द्र सुमन	१.७५
पद्य प्रवाह : सुशीलाकुमारी	२.५०
शिक्षण प्रविधि : विश्वनाथ सहाय माथुर, शची माथुर	३.००
युग छाया : शिवदान सिंह चौहान	२.५०

The Monkeys and the Bear : J. Bharat Das	0.60
Chacha and His Wonderful Turban : J. Bharat Das	0.60
Wall Across the River : J. Bharat Das	0.60
Riches from the Sea : J. Bharat Das	1.50
A Text Book of Chemistry : Elementary Course : Smirnov and Shelinsky	6.50
A Text Book of Chemistry : Advanced Course. Khodakov, Tsvekov & Epshtien	14.00
Problems and Exercises in Chemistry : Y. D. Goldfarb, L. M. Smorgonsky	7.50
Small Electrical Machines : Dr. N. P. Yermolin, D. Sc.	10.00
Vector Analysis and Tensor Calculus : Profs. Borisenko & Tarapov	12.00
Reinforced Concrete Constructions : V. N. Baikov	6.00
Dislocations and Plasticity : N. K. Akulov	7.00

राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०

८, फ़ैज़ बाजार, दिल्ली-६ • साइंस कॉलेज के सामने, पटना-६

बिहार में पुस्तकाध्यक्षों के प्रशिक्षण का कार्यक्रम

‡ श्री परमानन्द दोषी, एम० ए० ‡

पुस्तकालय का अर्थ जो केवल पुस्तक-संग्रह लगाते हैं, पुस्तकालय का कार्य जो पुस्तकों का मात्र लेन-देन समझते हैं और पुस्तकाध्यक्ष का दायित्व जो केवल पाठकों को पुस्तकें देना, उनसे वापस लेना और उनकी सुरक्षा करना भर समझते हैं, उनके विषय में विशेष कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। उनकी अज्ञानता और अनभिज्ञता का लोहा मानना ही पड़ेगा। और पुस्तकालय और पुस्तकाध्यक्ष मात्र उपर्युक्त कार्य किया करें, तो फिर पुस्तकालय खोलना और चलाना बड़ा ही आसान कार्य हो जाय और साधारण-सी साक्षरता प्राप्त किया हुआ कोई भी व्यक्ति एक अच्छा-सा पुस्तकाध्यक्ष बन सकता है।

पर बात वस्तुतः ऐसी है नहीं। पुस्तकालय-संचालन का कार्य बड़ा ही गंभीर और दायित्वपूर्ण कार्य समझा जाता है। इसके संचालन की क्रिया वैज्ञानिक है और इसीलिये इसे पुस्तकालय-विज्ञान कहा जाता है। पुस्तकाध्यक्ष का कार्य करने वाला व्यक्ति केवल साधारण ज्ञान नहीं रखता, बल्कि उसे सुयोग्य और दक्ष पुस्तकाध्यक्ष कहलाने के लिये पुस्तकालय विज्ञान का ज्ञाता होना चाहिये, जिसके लिये प्रशिक्षण की अपेक्षा होती है।

सचमुच पुस्तकालय-सेवाओं का उत्तरोत्तर बड़ा ही विकास होता जा रहा है। पुस्तकालय-विज्ञान की बारीकियाँ दिनोंदिन बढ़ती जा रही हैं। पुस्तकालय-संचालन के क्षेत्र में इसी कारण आये दिन नये-नये आविष्कार और अनुसंधान होते रहते हैं।

कम-से-कम समय में अपने पाठकों को ज्यादा-से-ज्यादा पुस्तकालयी-सेवा कोई पुस्तकालय अथवा पुस्तकाध्यक्ष प्रदान कर सके, इसके लिये नित्य नये-नये शोध किये जा रहे हैं और आज अद्यतन साज-सज्जाओं से युक्त किसी साधन-सम्पन्न पुस्तकालय में जाकर देखा जा सकता है कि पुस्तकालय-विज्ञान कितना आगे बढ़ गया है। पुस्तक-चयन से लेकर पुस्तक-लेन-देन तक, पुस्तकों के वर्गीकरण-सूचीकरण से लेकर उनके रख-रखाव तक और उनकी जिल्दबन्दी तथा अन्यान्य सुरक्षात्मक कार्रवाइयों में विभिन्न प्रकार की वैज्ञानिक प्रक्रियाएँ देखी जा सकती हैं।

तब प्रश्न होता है कि जब इतने सुधार और विकास पुस्तकालय-सेवा के क्षेत्र में हो रहे हैं, तब पुस्तकालय-अध्यक्ष भला क्योंकर साधारण शिक्षा प्राप्त व्यक्ति हो सकता है? क्या उसकी सामान्य-शिक्षा-दीक्षा उसके व्यवसाय के प्रति पूर्ण न्याय कर सकेगी? क्या वह पुस्तकालय की पाठ्य-सामग्रियों का सही ढंग से चुनाव कर सकेगा? उन्हें उपयोगार्थ समुचित रूपेण सारी व्यवस्थायें कर सकने में क्या यह समर्थ हो सकेगा? कदापि नहीं। जिस प्रकार चिकित्सा-विज्ञान की शिक्षा पाये बिना कोई व्यक्ति चिकित्सक नहीं हो सकता, अभियंत्रण शास्त्र की जानकारी हासिल किये बिना कोई इंजीनियर नहीं हो सकता, उसी प्रकार पुस्तकालय-विज्ञान का समुचित प्रशिक्षण प्राप्त किये बिना कोई व्यक्ति पुस्तकाध्यक्ष नहीं हो सकता है।

इसी तथ्य को स्वीकार कर विश्व के सभी उन्नत देशों में अन्यान्य विषयों की भाँति पुस्तकालय-विज्ञान के प्रशिक्षण का प्रावधान किया गया है। पुस्तकालय-विज्ञान का पाठ्य-क्रम बड़ा ही विस्तृत और व्यापक है। इसमें मास्टर डिग्री तक हासिल की जा सकती है और डी० लिट्० और पी-एच०-डी० भी मौलिक तथ्यों का उद्घाटन करने से प्राप्त की जा सकती है। इसके बाद भी यदि कोई व्यक्ति पुस्तकालय-विज्ञान के विभिन्न विषयों में गवेषणा और अनुसंधान करना चाहे, तो आजीवन वह ऐसा करता रह सकता है। विषयों और तथ्यों की कमी उसे अनुभव नहीं होगी।

इधर स्वातंत्र्योत्तर-कालीन भारत में पुस्तकालयों के प्रति एक नवीन चेतना का उदय लोगों में हुआ है। फलतः न केवल सुदूर गाँवों में पुस्तकालय खुल रहे हैं, बल्कि पुस्तकालय-सेवाओं के उन्नयन के लिये सर्वत्र प्रयत्न किये जाते रहे हैं। हमारी समस्त राष्ट्रीय योजनाओं में पुस्तकालय-सेवाओं के लिये स्थान रहता है। भारत के विभिन्न विश्वविद्यालय पुस्तकालय-विज्ञान का डिप्लोमा कोर्स चलाते हैं। एकाध विश्वविद्यालय में तो पुस्तकालय विज्ञान में मास्टर डिग्री की भी व्यवस्था है। पी-एच० डी० और डी० लिट्० के लिये भी प्रबन्ध है। कई विश्व-विद्यालय और पुस्तकालय संबंधी संस्थाएँ पुस्तकालय विज्ञान का सर्टिफिकेट कोर्स भी चलाती हैं। यह सब देश में पुस्तकालय सेवाओं के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिये बड़े ही अच्छे कार्य हैं, और इनकी जितनी भी प्रशंसा की जाय, थोड़ी ही होगी।

परन्तु जब पुस्तकालय विज्ञान की पढ़ाई की व्यवस्था को लेकर बिहार

प्रत्येक पुस्तकालय के लिये पुस्तकालय विज्ञान विषय पर पुस्तकें

१. पुस्तकालय में संदर्भ सेवा	द्वारका प्रसाद शास्त्री	...	५.००
२. भारत में पुस्तकालयों का उद्भव और विकास	,,	...	५.००
३. पुस्तकालय-विज्ञान	,,	...	५.००
४. पुस्तक-वर्गीकरण कला	,,	...	५.००
५. पुस्तकालय-संगठन और संचालन	,,	...	३.२५
६. बेसिक विद्यालय में पुस्तकालय की उपयोगिता	,,	...	१.००
७. पुस्तकालय-परिचय	,,	...	१.५०
८. पुस्तक - सूचीकरण - कला	,,	...	५.००
९. पुस्तकालय प्रबंध	,,	...	५.००
१०. पुस्तक-चुनाव : सिद्धान्त और विधि	भास्करनाथ तिवारी	...	४.००



हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पो० बॉ० नं० ७०
सी. २१/३०, पिशाचमोचन
वाराणसी-१

में विश्व-विद्यालयों की ओर हम अपनी नजर घुमाते हैं, तो हमें आश्चर्यजनक निराशा होती है। विश्वविद्यालयों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ रही है, परन्तु अब तक किसी भी विश्वविद्यालय द्वारा पुस्तकालय-विज्ञान की पढ़ाई की व्यवस्था नहीं की जा सकी है। जिस बिहार की भूमि पर नालन्दा, विक्रमशिला, उदंतपुरी आदि के जगत् प्रसिद्ध पुस्तकालय पुरातन काल में अपने अस्तित्व के द्वारा समग्र विश्व को आकृष्ट करते थे, उसी भूमि पर अवस्थित विश्वविद्यालयों की पुस्तकालय-संबंधी उदासीनता और उपेक्षा परिताप का विषय है।

इधर विगत कई वर्षों से सुनाई पड़ रहा है कि पटना विश्व-विद्यालय पुस्तकालय विज्ञान का डिप्लोमा कोर्स आरंभ करने जा रहा है। परन्तु पता नहीं कब सुनी हुई बात देखी भी जा सकेगी। राजनीति के विषय चक्कर में पड़ जाने वाली शिक्षण- संस्थाओं में प्रमाद आ जाना स्वाभाविक ही है और बिहार के विश्व-विद्यालय इसके अपवाद नहीं हैं।

जहाँ खुदाबख्श ओरियण्टल लाइब्रेरी, सिन्हा लाइब्रेरी जैसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के पुस्तकालय हों, वहाँ पुस्तकालय विज्ञान की पढ़ाई का प्रबन्ध न हो, यह बड़ी ही लज्जा की बात है।

पिछले कई वर्षों से राज्य सरकार पुस्तकालयों के प्रचार-प्रसार, उन्नयन-उत्थान के लिये बड़ी ही उदार नीति का परिचय दे रही है। छोटे-बड़े पुस्तकालयों को नियमित रूप से अनुदान देना तथा पुस्तकालयोत्थान के लिए अन्यान्य प्रभावकारी कार्य करना निश्चय राज्य सरकार के बड़े ही अच्छे कार्य हैं। पर राज्य सरकार भी इन कार्यों की ओर मुखातिब नहीं होती, यदि बिहार राज्य पुस्तकालय संघ अपने समस्त शाखा संघों के साथ सारे राज्य में पुस्तकालयमय वातावरण पैदा नहीं कर देता।

राज्य सरकार की अधिकांश योजनायें बिहार राज्य पुस्तकालय संघ की योजनाओं पर ही आधारित हैं। यहाँ तक कि पुस्तकाध्यक्षों के प्रशिक्षण का जो उसका कार्य-क्रम है, उसकी शुरुआत भी बिहार राज्य पुस्तकालय संघ ने ही की थी। बिहार राज्य पुस्तकालय संघ ने समझा था कि केवल पुस्तकालयों की स्थापना करा देने तथा उन्हें संघ से सम्बद्ध करा देने से पुस्तकालयों के प्रसार का कार्य भले ही संपन्न हो जाय, परन्तु उसमें सजीवता लाने के

सांस्कृतिक जागरण, साहित्यिक [illegible] प्रतिष्ठा की साधिका भारतीय भाषाओं की सर्वोत्कृष्ट सर्जनात्मक साहित्यिक कृति पर प्रतिवर्ष एक लाख रुपया पुरस्कार योजना प्रवर्तिका विशिष्ट संस्था

भारतीय ज्ञानपीठ
के
चार चर्चित अभिनव प्रकाशन

*** सेज पर टिकी हुई कुहनियाँ : रमेश बक्षी**

इन कहानियों को देखकर कोई कहे तो अत्युक्ति न होगी कि आधुनिक कथाशिल्प और आधुनिक जीवन-दृष्टि दोनों को एक साथ स्वाभाविक रूप में सजा हुआ यहाँ पाया। कभी पढ़ते-पढ़ते लग सकता है कि ये कहानियाँ नहीं, पर फिर अगले क्षण बरबस लगेगा कि ये ही तो सचमुच कहानियाँ हैं : आज की।

मूल्य : ३.५०

*** खोयी हुई दिशाएं : कमलेश्वर**

ग्यारह कहानियाँ जो वास्तव में घुटन और पराजय में जीने की विवशता को नियति न मानकर नये सन्तुलन और अर्थों की दिशाएँ खोजती मिलेंगी। संग्रह की कोई कहानी पढ़ें और मन पर प्रभाव न छोड़े, यह असम्भव होगा।

मूल्य : २.५०

*** महके आँगन : चहके द्वार : क० ला० प्रभाकर**

कौन पति-पत्नी नहीं चाहते कि उनका दाम्पत्य जीवन सुखी हो ? काश उसकी कला उन्हें आती ! इस पुस्तक की यही अनिवार्यता है। बड़ी रोचक और भीतर तक पैठ जानेवाली ये कहानियाँ-सी पढ़ने के बाद कारण न होगा कि अपने पारिवारिक जीवन को आप स्वर्ग जैसा न बना सकें।

मूल्य : ४.००

*** भाव और अनुभाव : मुनि नथमल**

जीवन पूरा-पूरा विकसित हो और अपने को प्रमाणित भी कर सके, इसके लिए न केवल चलते जाना पर्याप्त होगा न देखते-दिखाते रहना। व्यवहार-जगत् में आँख और पाँव दोनों का रहना आवश्यक है। श्रद्धा हमारी आधारभूमि हो और बुद्धि उसके ओर-छोर की अंजोरती आलोक-शिखा। यहीं सूक्तियों और नीति-वचनों का विशेष उपयोग और महत्व होता है। इनमें श्रद्धा और बुद्धि दोनों का ऐसा समन्वित स्वर वाचा पाता है जो अनुभूतियों की आग में तपा हुआ भी होता है। प्रस्तुत संकलन तो अपनी सरसता, सौम्यता और व्यापक दृष्टि को लेकर और भी मूल्यवान बन उठा है।

मूल्य : १.५०

भारतीय ज्ञानपीठ

प्रधान कार्यालय : ९, अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
विक्रय केन्द्र : ३६२०।२१, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६
प्रकाशन कार्यालय : दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५

लिये यह आवश्यक है कि उन पुस्तकालयों के पुस्तकाध्यक्षों को पुस्तकालय विज्ञान की प्रारंभिक जानकारी करा दी जाये। और इसी उद्देश्य से राज्य संघ ने अपने तत्वावधान में ग्रामीण और शहरी पुस्तकालयों के पुस्तकाध्यक्षों के एक माह के कई प्रशिक्षण शिविर सफलतापूर्वक चलाये। राज्य सरकार ने संघ को इस कार्य के लिये न केवल स्वीकृति दी, बल्कि आर्थिक अनुदान भी दिया।

इस योजना को राज्य सरकार ने इतना पसन्द किया कि वह इसे अपना लेने के लोभ को संवरण नहीं कर सकी और वह विगत कई वर्षों से अपने तत्वावधान में दो प्रकार के एतत्सम्बन्धी शिविर लगाती है। एक शिविर तीन माह के लिये पटने में प्रति वर्ष एक बार लगता है, जिसमें राज्य के विभिन्न पुस्तकालयों एवं विद्यालयों के पुस्तकाध्यक्ष प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।

प्रवेशिकोत्तीर्ण पुस्तकाध्यक्षों के लिये राज्य के चारों प्रमण्डलों के मुख्यालयों में एक-एक माह का एक-एक शिविर प्रति वर्ष लगता है।

स्नातकों वाले शिविर में पच्चास और प्रवेशिकोत्तीर्ण वाले शिविर में तीस-तीस प्रशिक्षार्थी सम्मिलित होते हैं। सभी के लिये छात्रवृत्ति की व्यवस्था रहती है और सुयोग्य पुस्तकाध्यक्षों द्वारा उनका प्रशिक्षण-कार्य किया जाता है।

प्रशिक्षण का उपर्युक्त कार्य राज्य सरकार अपने तत्वावधान में पूरी सफलता के साथ प्रति वर्ष नियमित रूप से करती रही है।

राज्य सरकार द्वारा प्रशिक्षण-कार्य को अंगीकृत कर लिये जाने के बाद से राज्य संघ पटने में कोई प्रशिक्षण शिविर नहीं लगाता है पर अपने विभिन्न शाखा संघों द्वारा राज्य के विभिन्न अंचलों में पुस्तकाध्यक्षों का साप्ताहिक शिविर वह यदा-कदा अवश्य संचालित करता रहा है। ऐसे शिविरों से ग्रामीण पुस्तकाध्यक्ष विशेष रूप से लाभान्वित हुए हैं। राज्य भर में ऐसे दर्जनों शिविर लग चुके हैं।

इधर तृतीय पंचवर्षीय योजना में राज्य सरकार ने इस प्रकार के शिविर के लिये व्यापक कार्य-क्रम बनाया है, जिससे अवश्य ही ज्यादा से ज्यादा पुस्तकाध्यक्ष लाभान्वित होंगे। इस संबंध में मेरा एक विनम्र सुझाव यह है कि सबसे पहले सब-डिवीजनल स्तर पर पुस्तकाध्यक्षों के साप्ताहिक शिविर सारे राज्य में लगाये जायें। शिविर में भाग लेने वाले समस्त प्रशिक्षणार्थियों के पूरे विवरण रखे जायँ। जब एक जिला के समस्त सब-डिवीजनों में शिविर लग चुके तो जिला स्तर पर सभी प्रशिक्षणार्थियों का एक अर्द्ध साप्ताहिक

सेमिनार किया जाय और लोग [illegible] विवाद और विचार-बिमर्श के द्वारा अपने-अपने पूर्व प्राप्त प्रशिक्षणों के अनुभव आदि प्रकट करें। सभी जिलों में अर्द्ध साप्ताहिक सेमिनार की रिपोर्ट प्रकाशित कर दी जाये और सभी जिलों में अर्द्ध-साप्ताहिक सेमिनार के संपन्न हो चुकने के बाद राज्य स्तर पर सभी प्रशिक्षण प्राप्त पुस्तकालयों का एक द्विदिवसीय सेमिनार किया जाये, जिसमें समस्त प्रशिक्षण प्राप्त पुस्तकाध्यक्ष राज्य के सभी अवर-विद्यालय निरीक्षक, समाज शिक्षा आयोजक, प्रतिष्ठित पुस्तकाध्यक्ष, पुस्तकालय संघ के प्रतिनिधि, शिक्षा विभाग के अधिकारी तथा अन्यान्य समाज सेवी संस्थाओं के आमंत्रित अतिथि भाग लें। इस सेमिनार में देश के सुप्रसिद्ध पुस्त-[illegible] नेताओं से भाषण दिलवाये जायँ, पुस्तकालय संबंधी चल-चित्र दिखलाया जाये, सांस्कृतिक कार्य-क्रम का आयोजन रहे तथा पुस्तकालय-साहित्य लोगों में बाँटा जाये और अन्त में इसकी बृहत रिपोर्ट प्रकाशित की जाय।

यदि इस प्रकार से कार्य होगा तो न केवल पुस्तकाध्यक्षों को पुस्तकालय सेवा की प्रेरणा मिलेगी, बल्कि निरंतर मिलन-साक्षात्कार होते रहने से एक दूसरे के अनुभवों से भी लोग लाभान्वित होंगे। बड़े-बड़े पुस्तकालय विज्ञान-वेत्ताओं एवं शिक्षा-शास्त्रियों के दीक्षान्त भाषण भी सुनेंगे और एक सांख्यिकी की भी प्राप्ति हो सकेगी कि प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों में से अन्त तक कितने लोग इस व्यवसाय में लगे रह जाते हैं और कितने दूसरे व्यवसायों को स्वीकृत कर लेते हैं। दूसरे व्यवसाय को स्वीकृत करने के कारणों का भी पता लग सकेगा और उनका निवारण करने के उपाय भी सोचे जा सकेंगे।

ये सारे कार्य तो हों ही, पर बिहार के सभी विश्व-विद्यालय शीघ्र ही पुस्तकालय विज्ञान का डिप्लोमा कोर्स चालू करें और कुछ वर्षों के अनुभव के बाद एक-दो विश्वविद्यालय उसे डिग्री कोर्स में प्रोन्नत कर दें।

खुदाबख्श खाँ जैसे पुस्तक-संग्रह-कर्ता और सच्चिदानन्द सिन्हा जैसे पुस्तक-प्रेमी और विद्या-व्यसनी के राज्य में पुस्तकालय-विज्ञान विश्वविद्यालयों में न पहुँचे, यह अच्छी बात नहीं है।

आशा है, अधिकारीगण इस ओर अविलंब ध्यान देकर इस अभाव को दूर करेंगे।***

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय के

कतिपय उत्कृष्ट प्रकाशन

कालिदास के ग्रंथों पर आधारित तत्कालीन भारतीय संस्कृति १०.००
डॉ० गायत्री वर्मा

गीतिकाव्य का विकास १०.००
लालधर त्रिपाठी 'प्रवासी'

बिहारी का नया मूल्यांकन ३.५०
डॉ० बच्चन सिंह

महाकवि मतिराम १०.००
डॉ० त्रिभुवन सिंह

कामायनी की व्याख्यात्मक आलोचना ८.००
विश्वनाथ लाल 'शैदा'

हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप-विकास १२.००
डॉ० शंभुनाथ सिंह

बीसलदेव रासो ६.००
डॉ० तारकनाथ अग्रवाल

भारतीय प्रेमाख्यान काव्य १०.००
डॉ० हरिकांत श्रीवास्तव

नाटक और रंगमंच १०.००
राजकुमार

सूरपूर्व ब्रजभाषा और उसका साहित्य १२.५०
डॉ० शिवप्रसाद सिंह

राष्ट्र-कवि मैथिलीशरण गुप्त 'अभिनन्दन ग्रन्थ' ३०.००
सं० मं० : डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल, डॉ० मोतीचन्द, आदि

दरबारी संस्कृति और हिन्दी मुक्तक ४.५०
डॉ० त्रिभुवन सिंह

कहानी का रचना-विधान ६.००
डॉ० जगन्नाथप्रसाद शर्मा

विद्यापति ५.००
डॉ० शिवप्रसाद सिंह

मधुमालती (मंझन कृत) ८.००
डॉ० शिवगोपाल मिश्र

चित्ररेखा (जायसी कृत) २.५०
सं० शिवसहाय पाठक

रवीन्द्र कविता-कानन ०.६७
'निराला'

कबीर और जायसी का मूल्यांकन २.२५
पुरुषोत्तमचन्द बाजपेयी

प्रसाद के नाटक ४.५०
परमेश्वरीलाल गुप्त

रस-साहित्य और समीक्षाएँ ४.००
'हरिऔध'

हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद ८.००
डॉ० त्रिभुवन सिंह

साहित्य-परिचय ३.००
डॉ० एस० पी० खत्री

सूर के सौ कूट ५.००
चुन्नीलाल 'शेष'

श्रीराधा का क्रम-विकास ८.००
डॉ० शशिभूषण दास गुप्त

डॉ० इकबाल और उनकी शायरी ०.६७
डॉ० हीरालाल चोपड़ा

हिन्दी लिटरेचर (अंग्रेजी) ५.००
डॉ० रामअवध द्विवेदी

संक्षिप्त हिन्दी साहित्य और साहित्यकार ०.६७
सुधाकर पाण्डेय

हिन्दी-साहित्य २.२५
सुधाकर पाण्डेय

हिन्दी साहित्य की रूपरेखा १.६०
कृष्णदेव प्रसाद गौड़

लोकधर्मी नाट्य परंपरा ५.००
डॉ० श्याम परमार

दिग्विजय-भूषण १५.००
डॉ० भगवती प्रसाद सिंह

समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द ५.००
डॉ० महेन्द्र भटनागर

भोजपुरी लोक-साहित्य का अध्ययन १०.००
डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय

हिन्दी के मुसलमान कवियों का प्रेमकाव्य २.५०
गुरुदेव प्रसाद वर्मा

काव्य रूपों के मूल स्रोत और उनका विकास १०.००
डॉ० शकुन्तला दूबे

हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास ६.००
डॉ० जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन
(सं० डॉ. किशोरीलाल गुप्त)

आधुनिकक हिन्दी कविता की स्वच्छन्द धारा ५.००
डॉ० त्रिभुवन सिंह

रत्नाकर और उनका काव्य ५.००
उषा जायसवाल

छायावाद के गौरव चिह्न ६.००
प्रो० 'क्षेम'

बाबू श्यामसुन्दर दास व्यक्तित्व और कृतित्व २.२५
रामनाथ पाण्डेय

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पो० बॉक्स नं० ७०, पिशाचमोचन, वाराणसी—१
१६२/१ महात्मा गांधी मार्ग, कलकत्ता—७



पाँचवीं कक्षा से हिन्दी की पढ़ाई होगी

केरल सरकार ने निश्चय किया है कि राज्य में हिन्दी की पढ़ाई कक्षा ५ से प्रारम्भ की जाय। अब तक केरल में कक्षा ६ से हिन्दी पढ़ाई जाती थी। राज्य सरकार हिन्दी को प्री युनिवर्सिटी एवं डिग्री कोर्स में ऐच्छिक विषय भी बनाना चाहती है, जो अभी तक विश्वविद्यालयों में द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है।

हिन्दी-विभाग का नाम परिवर्त्तित

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के हिन्दी विभाग का नाम बदल कर भाषा विभाग कर दिया गया है। इस समय हिन्दी विभाग, हिन्दी व संस्कृत के विकास और प्रसार का काम करता है।

बाल-पुस्तकें तैयार करने पर बल

अमरीकी लेखक श्री मुनरो लीफ जिन्होंने बाल-साहित्य की ४० पुस्तकों को लिखा है, बताया है कि बाल-साहित्य की अभी भी और आवश्यकता है। तीन वर्ष पूर्व जब मैंने भारत की यात्रा की थी उस समय से बच्चों की पुस्तकों की माँग में पर्याप्त वृद्धि हुई है।

साहित्यिकों के जीवन और कृतियों के बारे में पुस्तक

न्यूयार्क नगर के एक प्रकाशक ने संसार के साहित्य का अध्ययन करने के लिए एक नई पुस्तक-माला प्रारम्भ करने की घोषणा की है। प्रत्येक पुस्तक में लगभग १६० से लेकर २०० तक पृष्ठ होंगे और उसमें किसी एक देश के प्रमुख साहित्यकारों के जीवन तथा कृतियों पर प्रकाश डाला जायेगा। जिन देशों के साहित्यिकों के सम्बन्ध में पुस्तकें प्रकाशित की जायेंगी, उनमें भारत भी शामिल है।

'ट्वेन पब्लिशर्स, इन्कार्पोरेटेड' के अनुसार, ये पुस्तकें अपने-अपने विशिष्ट क्षेत्र के अधिकारी व्यक्तियों से लिखवाई जायेंगी।

इस पुस्तक-माला की प्रधान सम्पादक इण्डियैना विश्वविद्यालय की इंगलिश की प्रोफेसर डॉ० सिल्विया ई० बोमैन होंगी। भारतीय साहित्य सम्बन्धी पुस्तक के सम्पादक दिल्ली विश्वविद्यालय के भूतपूर्व लेक्चरर श्री पौल फुर्टैडो हैं जिनका वर्तमान पता है : ७६९ मैनिंग एवेन्यू, टोरोण्टो–४, कनाडा।

नेत्रहीनों के लिए 'सवाक् पुस्तकें'

भारत में अन्ध लोगों के प्रयोग के लिए अमेरिकी सरकार ने सवाक् पुस्तक (टाकिंग बुक) नामक एक अनूठा यन्त्र प्रदान किया है। यह एशिया में अपनी किस्म का पहला यन्त्र है। हाल में नई दिल्ली में, उप-राष्ट्रपति डॉ० जाकिर-हुसेन, स्वास्थ्य मन्त्री डॉ० सुशीला नायर, श्रीमती इन्दिरा गांधी तथा अन्य लोगों के समक्ष इस यन्त्र का प्रदर्शन किया गया।

'सवाक् पुस्तकें' पुस्तकों से तैयार किये गये ऐसे रिकार्ड हैं, जिन्हें अन्धे लोग बजा कर लाभ उठा सकते हैं। इनसे अन्धे लोग संसार के उत्कृष्ट साहित्य का आनन्द ले सकते हैं।

बाल उपयोगी पुस्तकों पर पुरस्कार

केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय ने दसवीं बाल साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता की घोषणा की है। इसके लिए लेखकों और प्रकाशकों से बच्चों के उपयोग की सुरुचिपूर्ण और आकर्षक पुस्तकें माँगी गयी हैं। सर्वोत्तम पुस्तकों या पांडुलिपियों पर १-१ हजार रुपये के १५ पुरस्कार दिये जायेंगे। हिन्दी की पुस्तकों या पांडुलिपियों पर दो और असमिया, बँगला, गुजराती, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, सिन्धी, तमिल, तेलुगु और उर्दू की पुस्तकों या पांडुलिपियों पर १-१ पुरस्कार दिया जायगा। कुल पुरस्कारों में से दो पुरस्कार पुरस्कृत पुस्तकों के कलाकारों के लिये भी निर्धारित किये जा सकते हैं।

पुस्तकें भेजने की अन्तिम तिथि १ मई, १९६४ है। लेखकों को अपनी पुस्तकों या पांडुलिपियों के साथ ३ रुपये प्रति पुस्तक और प्रकाशकों को ५ रुपये प्रति पुस्तक प्रवेश-शुल्क देना होगा। केवल १९६२-६३ में प्रकाशित पुस्तकें ही इस प्रतियोगिता में भेजी जा सकती हैं।

हिन्दी, उर्दू और सिन्धी की पुस्तकें भेजने के नियमों आदि के बारे में सहायक शिक्षा सलाहकार, शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार, सेक्शन 'बी०'–३, नयी दिल्ली से पूरी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। अन्य भाषाओं की पुस्तकों के बारे में सम्बन्धित राज्य सरकारों के शिक्षा विभाग के सचिव से जानकारी ली जा सकती है।

कलकत्ते में भारती परिषद् की स्थापना

कलकत्ते में भाषागत विषमता को दूर करने के लिए भारती परिषद् नामक एक संस्था की स्थापना अहिन्दी भाषी क्षेत्र इंटाली में की गयी है। परिषद् का उद्देश्य जन-साधा-

रण में साहित्यिक रुचि का सृजन करना, शोध एवं साहित्यिक कार्यों को प्रोत्साहन देना, स्वर्गीय एवं जीवित साहित्यकारों की जीवनी, चित्र आदि का संग्रह करना है। एक सुन्दर एवं वृहद पुस्तकालय भी खोलने का संकल्प है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास का प्रकाशन

आचार्य श्यामसुन्दर 'सुमन' के सम्पादन में हिन्दी साहित्य का नवीन इतिहास प्रकाशित हो रहा है। सभी साहित्यकार कवि, कहानीकार, लेखक, उपन्यासकार, पत्रकार, और सम्पादक उसमें प्रकाशनार्थ अपना परिचय ३१ मार्च १९६४ तक श्री सुमन जी को श्री सुमन साहित्य-मंदिर, होलीगली तिलक द्वार मथुरा (उ० प्र०) के पते पर भेज दें।

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

काशी नागरी प्रचारिणी सभा के प्रधान मंत्री डॉ० जगन्नाथप्रसाद शर्मा ने अस्वस्थता के कारण सभा के प्रधान मंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया है। उनके स्थान पर श्री शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र काशिकेय' सभा के प्रधान मंत्री निर्वाचित हुए हैं।

बाबू गुलाबराय स्मृति संस्थान की स्थापना

हिन्दी-जगत के सुप्रसिद्ध साहित्यकार स्व० बाबू गुलाब राय एम० ए० की पुण्य स्मृति में 'बाबू गुलाब राय स्मृति संस्थान' की स्थापना आगरा में की गयी है। इस संस्थान द्वारा बाबू गुलाब राय स्मृति ग्रंथ के प्रकाशन की वृहद् योजना बनाई गयी है।

रूसी विद्वान् द्वारा हिन्दी में एक निबन्ध पुस्तक

रूसी विद्वान प्रो. चेर्निशोव ने 'साधारण वाक्य विन्यास' विषय पर हिन्दी में शोधपूर्ण निबन्ध तैयार किया है। इसका प्रकाशन मास्को के प्राच्य विद्या प्रकाशन गृह से होगा।



युग-सन्देश—लेखक : **रामवीर शास्त्री "अरुणेश"**। प्रकाशक : **अरुणेश प्रकाशन, बेतिया, भागलपुर**। पृ० सं० १६८। मूल्य : ३.००।

प्रस्तुत पुस्तक "अरुणेश" जी की औपन्यासिक कृति है, जिसके नाम के सम्बन्ध में लेखक ने सुझाव माँगें हैं। पुस्तक में भाषा, शैली तथा कथानक हर दृष्टि से आधुनिकता का घोर अभाव है। एक व्यक्ति को विश्वपति बनाकर उसके चारों ओर तीन युवतियों को घुमाया गया है। पुस्तक में अधूरे स्वप्न बहुत हैं और प्रायः निरर्थक, अजिल्द पुस्तक का मूल्य भी अधिक लगता है।

आज का इंगलिस्तान—लेखक : **मुकुटबिहारी वर्मा**। प्रकाशक : **सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली**। पृष्ठ सं० : ११०। मूल्य : २.००।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने अपने यात्रा-विवरण के साथ-साथ अंग्रेजी संस्कृति, राजनीति, उद्योग तथा जन-जीवन की झाँकियाँ उपस्थित की हैं। लेखक ने पुस्तक के माध्यम से विदेश की परिस्थितियों को भारतीय दृष्टि से देखा है। पुस्तक में कतिपय सुन्दर चित्रों का चयन है। पुस्तक की छपाई तथा गेटप भी ठीक ही है।

गुरुदेव और उनका आश्रम—लेखिका : **शिवानी**। प्रकाशक : **सस्ता साहित्य-मण्डल, नई दिल्ली**। पृ० सं० : ८०। मूल्य : १.००।

इस संस्मरण में लेखिका ने आश्रम के प्राण रवीन्द्रनाथ ठाकुर के व्यक्तित्व की और उनकी कर्मभूमि शान्तिनिकेतन की झाँकी प्रस्तुत की है। पुस्तक की छपाई-सफाई ढंग की है और कवर आकर्षक।

राजस्थान का वासन्तिक पर्व गणगौर—सम्पादक : **दीनदयाल ओझा**। प्रकाशक : **मूमल प्रकाशन, जैसलमेर**। पृ० सं० : ९२। मूल्य : १.२५ न. पै.।

पुस्तक में राजस्थान के प्रसिद्ध पर्व गणगौर सम्बन्धित ३५ लोकगीतों का संकलन किया गया है। पुस्तक में प्रूफ की अशुद्धियाँ अधिक हैं।

न भीत न मंजिल—लेखक : **श्री रेवती सरन शर्मा**। प्रकाशक : **नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली**। पृष्ठ सं० २३४। मूल्य : ५.००।

इस उपन्यास में एक गरीब कन्या रमा की दुखभरी समस्याओं का मनोरंजक ढंग से उल्लेख है, जिसका बस एक ही अपराध था। उसने जिन्दगी चाही और जिन्दगी में रंगीनी। अन्त में उसे सब कुछ मिलकर भी कुछ न मिल[illegible] [illegible]। पुस्तक में दर्द की अनुभूति है। आकर्षक सजिल्द कवर के साथ छपाई तथा सफाई अच्छी है।

प्रकाश की रेखा—लेखक : **रणजीत भट्टाचार्य**। प्रकाशक : **सस्ता साहित्य-मण्डल, दिल्ली**। पृष्ठ सं० : ३२। मूल्य : १.५० न. पै.।

उल्लिखित पुस्तक में लेखक ने कुल २० ऐसी घटनाओं का चित्रण किया है जो दैनिक जीवन में बराबर घटती रहती हैं। इन्हें पढ़ने में आनन्द तो आता ही है साथ ही कुछ सीखने को भी मिलता है। पृष्ठों की दृष्टि से पुस्तक का मूल्य १.५० न० पै० अधिक लगता है। साइज तथा गेटअप आकर्षक है।

खरगोश गुसाईं—लेखिका : **वीणादर**। प्रकाशक : **नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली**। पृष्ठ : ६२। मूल्य : ३.००।

प्रकाशित कहानी-संग्रह में कुल ९ प्रचलित कहानियों का संकलन है। प्रत्येक कहानी में चित्रों की सेटिंग, प्रिंटिंग तथा कलरिंग मनमोहक है। पुस्तक की छपाई एवं गेटअप सराहनीय है।

कन्या-दान—ले० : मोतीलाल 'आजाद'; **प्रकाशक** : मोतीलाल 'आजाद'; ग्राम इन्दरवार, पो० शिवपुर, वाराणसी; **मूल्य** : ३.५०।

यह उपन्यास जीवन के प्रधान अंगों पर सूर्य जैसा प्रकाश डालता है। इसमें दो कन्याओं के जीवन का सफल चित्रण है। लेखक सामाजिक विषय को लेकर सर्वोदय साहित्य की

ओर कदम बढ़ाने में सफल हुआ है। राम राज्य के मूलभूत आधारों पर प्रकाश डाला गया है। वास्तव में भारत जैसे देश के लिए ऐसे ही साहित्य की आवश्यकता है।

साहित्य-रामायन—लेखक : श्री दुर्गासंकर प्रसाद सिंह नाथ'; **प्रकाशक** : नव साहित्य-मन्दिर, रैन बसेरा, दलीपपुर, जि० शाहाबाद (बिहार); **आकार** : डिमाई; पृ० २६०; **मू०** ६.००।

रामचरित के एक अंश विशेष को लेकर उसे विस्तृत रूप देकर भोजपुरी बोली में महाकाव्य-रचना का यह अभिनन्दनीय सफल प्रयास है। राम चरित के दो काण्डों—किष्किन्धा और सुन्दर—के आधार पर सर्ग-बद्ध-पद्धति पर काव्य का निर्माण हुआ है। किष्किन्धा की कथा को लेकर बीस सर्गों और सुन्दर काण्ड की कथा को उन्नीस सर्गों में विभक्त किया है। इस प्रकार कुल ३९ सर्गों में यह बृहत्काव्य प्रस्तुत है। कथा-काव्य को देखने से विदित होता कि श्री 'नाथ' सद्भक्त व्यक्ति हैं। यही कारण है कि वे इस काव्य की रचना के सफल अधिकारी सिद्ध हो सके हैं विश्वास है, इस रामायण का आदर पूरे भोजपुरी-प्रदेश में होगा और कवि यथोचित सम्मान अर्जित करेगा। काव्य की छपाई, कागज मुखपृष्ठ आदि आकर्षक है।

श्री अरविंद चरितामृत—लेखक : भुवनेश्वरप्रसाद मिश्र 'माधव'; **प्रकाशक** : श्री अरविन्द सोसाइटी, श्री अरविंद आश्रम पांडुचेरी–२; पृष्ठ-संख्या : २४३; **मूल्य** : ५.००।

श्री अरविन्द वर्तमानयुग के महान् भारतीय चिंतकों में से हैं। इनका एक अलग दर्शन ही बन गया जिसका प्रभाव **भारत** के अनेक महान् साहित्यकारों पर देखने में आता है। इनके दर्शन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन्होंने प्राच्य तथा पाश्चात्य दर्शन का मौलिक रूप से सामंजस्य प्रस्तुत किया है। अब तक इस महर्षि का विस्तृत जीवन-चरित्र राष्ट्रभाषा में उपलब्ध नहीं था, हर्ष की बात है श्री माधव जी ने इस अभाव की पूर्ति बड़ी योग्यता, दक्षता, सावधानी और विद्वत्ता से कर दी है। महर्षि के जीवनचरित्र के जिज्ञासु हिन्दी पाठकों को इस पुस्तक द्वारा पूर्ण परितोष प्राप्त होगा और उस महापुरुष के जीवन-चरित्र से विश्व मानव-प्रेम के विकास में योगदान करने की प्रेरणा प्राप्त होगी।

पुस्तक का मुद्रण, कागज, मुख-पृष्ठ आकर्षक है।

प्रतीकवाद—ले० : डॉ० पद्मा अग्रवाल एम. ए., पी-एच. डी.; **प्रकाशक** : मनोविज्ञान प्रकाशन, ५६।२३ गोविन्दपुरा, वाराणसी–१; आकार : डिमाई। पृ० सं० २६०; **मूल्य** : ७.५०।

प्रस्तुत पुस्तक मनोविज्ञान के क्षेत्र में शुद्ध प्रतीकवाद पर इतने व्यापक क्षेत्र में विचार-विमर्श प्रस्तुत करने वाली राष्ट्रभाषा की सम्भवतः प्रथम पुस्तक है। भावनाएँ और संवेग जो अधिक लम्बे अर्से तक दमित रूप में अवचेतन मन में पड़े रहते हैं, उन्हीं की अभिव्यक्ति प्रतीकात्मक रूप में होती है। फ्रायड, युंग, मेग्डूगल जैसे पाश्चात्य मनोविज्ञानियों ने अपने-अपने ढंग से इस पर विचार किया है। इस क्षेत्र में वैचारिक खण्डन-मण्डन भी होते रहे हैं—यह क्रम अब भी चल रहा है। स्वप्न, कला, मानसिक रोग, धर्म, भाषा—दैनिक क्रियाएँ—आदि के क्षेत्र में प्रयुक्त प्रतीकों पर विदुषी लेखिका ने बड़ी गम्भीरता से वैज्ञानिक ढंग से विचार किया है। शिशिक्षुओं को इस पुस्तक से बहुलांश में नूतन विचारों का साक्षात्कार करने का अवसर मिलेगा और बहुत-सी अभिनव बातें प्रकाश में आएँगी। छात्र और विद्यार्थी दोनों के लिए इसकी उपयोगिता निर्विवाद है।

मङ्गलदीप—(दीपावली विशेषांक, १९६३)। सं० : श्री रामरिख 'मनहर'। पृ० : २००। मूल्य : ३.०० रु.। आकार : रॉयल।

मङ्गलदीप का प्रथम दीपावली विशेषांक हिन्दी के विख्यात लेखकों की उत्तम कहानियों, व्यंगों-लेखों और संस्मरणों तथा हिन्दी-उर्दू के विशिष्ट कवियों की सुन्दर कविताओं को लेकर अत्यन्त आकर्षक रूप में हिन्दी-जगत् में उतरा है। यह सुन्दर साहित्यिक पुष्प-वाटिका प्रत्येक साहित्य-प्रेमी को अपनी ओर आकृष्ट कर लेनेवाले पुष्पों के परिमल से सुरभित हो रही है। हिन्दी-पत्र-जगत् में इस प्रकार की कृतियों का अवतार हिन्दी के उज्ज्वल भविष्य का सूचक है।

आर्ट पेपर, उत्कृष्ट मुद्रण, आकर्षक चित्रावली एवं कलापूर्ण मुखपृष्ठ ने सोने में सुगन्धि ला दी है। यह मङ्गलदीप सभी हिन्दी-प्रेमियों द्वारा संग्रहणीय है। सम्पादक एवं प्रकाशक इस अभिनव प्रकाशन के लिए बधाई के पात्र हैं।

हिन्दी प्रचारक

हिन्दी पुस्तक-व्यवसाय का मुख-पत्र

चार नवीन प्रकाशन

प्राचीन भारत में लक्ष्मी प्रतिमा
डॉ. राय गोविन्दचन्द्र
मूल्य : ७.००

कथा सूर्य की नयी यात्रा
हिमांशु श्रीवास्तव
मूल्य : २.५०

प्रत्यूष की भटकी किरण यायावरी
'अंचल'
मूल्य : २.००

काली घटा
आबिद रशीद
मूल्य : ४.५०



हिन्दी प्रचारक कार्यालय सी. २१/३० पिशाचमोचन, वाराणसी-१, श्री ओमप्रकाश बेरी द्वारा प्रकाशित एवं विद्या मन्दिर प्रेस ... बेरी द्वारा मुद्रित।

हिन्दी प्रचारक

वर्ष : २२ • अंक : १२
मार्च : १९६४



हिन्दी पुस्तक-व्यवसाय का मुख-पत्र

हिन्दी प्रचारक

[मासिक]

वर्ष ११ : अंक १२

सम्पादक
श्रीकृष्णचन्द्र बेरी

मार्च
१९६४

मूल्य
वार्षिक : ३.००
एक प्रति : २५ पैसे

चम्बलघाटी के डाकू और गंगा के मैदान के लुटेरे

विगत मास दिल्ली के एक सहयोगी ने पुस्तक-व्यवसाय में व्याप्त जाली पुस्तकों के भ्रष्टाचार पर सम्पादकीय लिखते हुए इस कार्य को जघन्य अपराध बताया था। इस प्रसंग में कहा गया था कि आज का कापीराइट कानून इतना मजबूत नहीं है जिससे अपराधियों को कानून का रंचमात्र भी भय हो। कापीराइट ऐक्ट सारे विश्व में एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें पुस्तक-व्यवसाय में दूसरों के अधिकार पर हस्तक्षेप करने पर अपराधी को दंडित किया जा सकता है, परन्तु कापीराइट ऐक्ट के निर्माताओं को इस ऐक्ट का सर्जन करते समय संभवतः इस बात का स्वप्न में भी ध्यान नहीं था कि जाली पुस्तकों का व्यवसाय भी इतने बड़े पैमाने पर आरम्भ हो सकता है, अन्यथा उस ऐक्ट में ही इस बात की व्यवस्था हो चुकी होती कि ऐसा कार्य करनेवाले को इतना कठोर दंडित किया जाय, जिसे देखकर ऐसा गुरुतर अपराध करने का किसी का साहस ही न हो।

प्रकाशकों को जो सम्मान विश्व के अन्य देशों में प्राप्त है उससे सर्वथा भिन्न स्थिति हमारे देश में है कतिपय सहृदय और प्रकाशकीय मर्यादाओं को समझनेवाले प्रकाशक आज की स्थिति में यह सोचने लगे हैं कि वे प्रकाशन-व्यवसायके क्षेत्रमें क्यों आये,जहां प्रकाशकीय स्वत्वाधिकारका संरक्षण नहीं है और प्रत्यक्ष रूपसे जाली पुस्तकों का काम करनेवाले लोगों को दंडित करने के लिए कोई भी विशेष धारा कापीराइट ऐक्ट में पायी नहीं जाती। चोरी से जाली पुस्तकें छापकर लेखकों तथा प्रकाशकों की सम्पत्ति पर डाका डालनेवाले जाली गिरोह के लोग जब प्रकाशकों की श्रेणी में संबोधित होते हैं तो प्रबुद्ध प्रकाशकों के लिए बड़ी ही लज्जा का विषय हो जाता है, केवल यही सोचकर कि क्या प्रकाशक इतने गिर गये हैं कि सारे देश में जाली पुस्तकें छापने का एक गिरोह-सा बन गया है। इस गिरोह का साहस इतना बढ़ गया है कि आज वह नैतिकता की भी दुहाई देने लगा है। गिरोह के लोग यह कहते सुनाई देते हैं कि सही प्रकाशक कम कमीशन देते हैं, इसलिए हम नकली पुस्तकें छापने के लिए विवश हैं। यह भी तर्क सुनने में आता है कि अपनी गरीबी दूर करनेके लिए हम यह काम करते हैं और कभी-कभी तो ये समाज-द्रोही इतनी दूर तक बढ़ जाते हैं कि इनके मुँह से सुना जाता है कि हम जाली पुस्तकें न छापते तो पुस्तकों के मूल्य कम ही न होते। चाहे जो भी हो, जाली पुस्तकों के छापने की मनोवृत्ति की निन्दा पुस्तक-व्यवसाय से सम्बन्धित प्रत्येक व्यक्ति करेगा। इससे लेखकों, प्रकाशकों और पाठकों तीनोंके वर्गों की हानि हो रही है। प्रकाशकों की वास्तविक आय छिन जाती है, लेखक अपनी रायल्टी से वंचित हो जाते हैं और पाठक अशुद्ध और रद्दी पुस्तकें पाते हैं। लाभ के भागीदार होते हैं--जाली पुस्तकें छापने और बेचनेवाले।

सरकारी प्रकाशनोंके जाली काम से सरकारको भी क्षति उठानी पड़ती है और गरीब जनता की गाढ़ी कमाई से टैक्स द्वारा वसूली रकम से छापी पुस्तकें सरकारी गोदाम में सड़ जाती हैं, जबकि जाली पुस्तकों के संस्करण धड़ल्ले से बिकते हैं। आज का सबसे बड़ा प्रश्न है, इन समाज-विरोधी तत्वों का सामना करना। यह तभी सम्भव होगा जब कापीराइट ऐक्ट की धारा में ऐसी व्यवस्था हो जिससे इन अपराधियों को कड़ी से कड़ी सजा मिल सके। पुस्तक विक्रेता इनका बहिष्कार करें और जाली पुस्तकें बेचने में सहयोग न दें। प्रकाशक अपने संगठन में ऐसे कार्य करनेवालों को दृढ़ सङ्कल्पपूर्वक स्थान न दें। यदि ऐसा न हुआ तो पुस्तक-व्यवसाय में जुआचोरीके काम में उतरे ये समाजद्रोही कालान्तर में डाकुओं का काम करने लगेंगे।

हमारा अपना विश्वास है कि जब शासन और पुस्तक-व्यवसायी दोनों ही सम्मिलित रूपसे इनका विरोध करने के लिए सन्नद्ध हो जायेंगे तो ये समाज-विरोधी लोग या तो स्वतः आत्मसमर्पण कर देंगे अथवा ताड़ित और दंडित होने पर इनका दिमाग ठिकाने आ जायेगा। आज जब कि चम्बल घाटी के डाकू तथा गंगा के मैदान के लुटेरे भी देश की स्थिति और परिस्थिति को समझते हुए अपने आपको बदल चुके हैं, तो क्या हम इन किताबी डाकुओं और लुटेरों से यह आशा न रखें कि पुस्तक-व्यवसाय के क्षेत्र में व्याप्त इस डाकेजनी को त्याग, ये देश की प्रकाशकीय मर्यादा का इतिहास समुज्ज्वल बनाये रखने में सहायक होंगे?

★

हिन्दी की महत्ता समझें !

हिन्दी विश्वविद्यालय, प्रयाग में
आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का
दीक्षान्त भाषण

स्नातको,

आप सब स्नातक हो गए। नदीष्ण और पारंगत होना है अब आप सब को। आपने जिस तीर्थ में स्नान किया है वह साधारण तीर्थ नहीं है। यह वह तीर्थराज है जिसमें त्रिवेणी का संगम है। यह त्रिवेणी उपासना, ज्ञान और कर्म की त्रिवेणी है—हिन्दी की उपासना, साहित्य का ज्ञान और सम्मेलन का कर्म। त्रिवेणी का यह संगम असामान्य है, अलौकिक है। उपासना की श्वेतिमा, ज्ञान की अरुणिमा और कर्म की नीलिमा से यह त्रिवेणी त्रिगुणात्मिका है। पवित्रता, गरुता और एकनिष्ठताकी इसमें विशेषता है। यहां के स्नातक को सबसे प्रथम हिन्दी का व्रत लेना है। जहां अपेक्षा हो वहां हिन्दी का अवश्य व्यवहार करने और उसकी समृद्धि के लिए सतत तथा शक्ति भर प्रयत्नवान् होने की प्रतिज्ञा करनी है। श्रद्धा से उसे कुछ न कुछ निरंतर देना है। हिन्दी भारत का भारती है। भारतीयता का प्रतीक है। यह भारत की एकता का सूत्र है। इसकी प्रकृति ही नहीं, प्रवृत्ति भी भारतीयता और एकता की ही है। यह जिस परिवार की है उसमें भारतीयता और एकता के गुणों का निरंतर विकास होता आया है। संस्कृत के मध्यदेशीय रूप को देखिए; प्राकृत के शौरसेनी लावण्य को निहारिए; उसी से विकसित सर्वभारतीय काव्यभाषा महाराष्ट्री को परखिए; नागर अपभ्रंश की नागरिकता को निहारिए; जिसकी लाड़िली नागरी भाषा है; पिंगल पढ़िए; नाग को निरखिए; ब्रजभाषा में विचरिए; ब्रजबुली के साथ उत्कल, बंग, असम, नेपाल की यात्रा कीजिए मन ही मन खड़ी के खरेपन को इसी कसौटी पर कसिए। सर्वत्र एक-सी विशेषता क्रमशः उसका विकास होता गया है। 'अमरभारती' के 'भारती' तत्त्व का संवर्धन होता आया है। 'अमर' का स्थान लियां 'नर' ने 'जन' ने। हिन्दी सुरभारती से नरभारती हो गई, जन भारती हो गई, भारतभारती हो गई।

हिन्दी में रचना करनेवाले प्राचीन कवि इसकी इस भारतीय प्रवृत्ति को भलीभाँति जानते थे। अवधी के तुलसीदास ही नहीं जानते थे, ब्रजभाषा के सूरदास ही केवल नहीं जानते थे, पूरबी भाषा वाले कबीरदास भी जानते थे, ठेठ अवधीवाले मलिक मुहम्मद जायसी भी जानते थे, बुंदेली के केशव दास भी जानते थे, पंजाबी के गुरु नानक भी जानते थे, गुरु गोविन्द सिंह भी समझते थे, राजस्थानी की मीराबाई भी जानती थीं, मराठी के समर्थ रामदास भी जानते थे, मैथिली

मिथिला के विद्यापति भी जानते थे, बंगाली के चंडीदास भी जानते थे। जो जानता था वह मानता था। वे अपनी बोली भी जानते थे और हिन्दी भाषा भी जानते थे। 'भाषा ही' नाम था, 'भाखा' ही कही जाती थी यह। विभाषा के भाषक इस भाषा की व्याप्ति से परिचित थे। 'विभाषा' वाला जब 'भाषा' में रचना रचने बैठेगा तो कुछ-न-कुछ भाषा निज का रंग दे ही देगा। भाषा उसे मानेगी, मानती आई है।

हिन्दी आरंभ से ही अन्य किसी भी भाषा का सम्मान सीखती आई है। जो विदेशी भाषाओं का सम्मान करती है वह देशी भाषाओं का सम्मान क्यों न करेगी। संत-फकीरों के बीच बहुत दिनों तक रहनेवाली हिन्दी स्वप्न में भी रागद्वेष के चक्कर में नहीं पड़ सकती। जो उसके संबंध में ऐसा सोचते हैं उन्हें शुद्ध भ्रम है। हिन्दी ने कभी किसी की भाषा की उपेक्षा नहीं की। हाँ, उसी की उपेक्षा बराबर होती रही है। उसका विरोध भी होता आया है। इतने पर भी उसने रोष नहीं किया। उसमें आभिजात्य की भावना जो है, वह बड़े घर की बेटी है। हिन्दी में लिखनेवाले पहले पढ़ते संस्कृत ही थे, भले अपनी बोली ही थे। पर संस्कृत के सामने हिन्दी की कोई गिनती नहीं थी। जो हिन्दी में लिखने का विचार करते थे वे सावधानी से चतुर्दिक देखते थे। उन्हें लोग मंद बुद्धिवाला, भोला-भाला, असंस्कृत कहते थे, उनका उपहास करते थे। फिर भी हिन्दी ने यही कहा कि हँस लो। सुनिए, तुलसीदास क्या कहते हैं—

भाषामनिति मोरि मति मोरी।
हँसिबे जोग हँसें नहिं खोरी।।

हिन्दी किसी को दोष क्यों देने लगी। हँसते कौन थे संस्कृतवाले, सुसंस्कृत लोग। 'अपभ्रंश' से निकली हिन्दी भला सुसंस्कृत कैसे कही जा सकती थी। इसे तो 'गँवारी' कहा जाता था। तुलसीदास ने समझाया कि आप संस्कृत के विद्वान् हैं, सुजान हैं, भाषा को मत मानिए, गँवारी ही कह लीजिए, पर मर्यादा पुरुषोत्तम का यश क्या आप इसलिए नहीं सुनेंगे कि वह 'ग्राम्य गिरा' में है। गाय काली हो पर दूध उजला ही न देती हो, उजली गाय से अधिक गुणकारी उजला दूध देती हो, तो क्या काली-कलूटी होने से उसका दूध भी त्याग दिया जाए—

स्याम सुरभि पय विसद अति
गुनद करहि सब पान।
गिरा ग्राम्य सिय राम जस
गावहिं सुनहिं सुजान।।

हिन्दी या अपभ्रंश की 'भारई' कभी यह नहीं कहती थी कि मेरे नाम में 'हिन्द' या 'भारत' पड़ा है इसलिए हमारा प्रयोग करो। नाम के लिए नहीं काम के लिए उपयोग-प्रयोग-विनियोग अनिवार्य है। कोई तुलसीदास से रास्ता रोक कर पूछता था कि 'भाखा' में क्यों लिखने लगे ब्राह्मण देवता। आप तो संस्कृत जानते हैं। बढ़िया संस्कृत लिख सकते हैं। आपकी मति क्यों मारी गई है। आपका भी संस्कृत से प्रेम नहीं रहा। तब बाबाजी को उत्तर देना पड़ता था कि—

का भाखा का संस्कृत प्रेम चाहिये सांच।
काम जु आवै कामरी का लै करै कुमाच।।

संस्कृत की अवमानना करके किसी ने हिन्दी में लिखना कभी नहीं आरंभ किया। तुलसीदास ने मानस-पटल ही खोला है संस्कृत से और दिखा दिया है

विकास-आयुक्त उत्तर प्रदेश द्वारा स्वीकृत

विकास-खण्डों के लिए

हमारी स्वीकृत पुस्तकें

क्रम सं.	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	मूल्य	पृ. सं.
२६	चीन को चेतावनी	सं० रुद्र काशिकेय	१.००	३
७२	भारत का राजनीतिक इतिहास	राजकुमार	१०.००	४५
८९	भारत का इतिहास	क्षितीश्वरप्रसाद सिंह	८.००	४६
२९	परिवार-नियोजन	अत्रिदेव विद्यालंकार	३.००	११
१४	बौद्ध कलाकृतियाँ	विद्यावती मालविका	३.००	१३
२७	रामायण कथा	रघुनाथ सिंह	४.५०	१४
३०	सुभाषित	आनन्दकुमार	१.००	१६
१३	पीड़ारहित प्रसव	सावित्री देवी वर्मा	१.००	१९
१६	झाँसी की रानी	श्यामनारायण प्रसाद	५.००	३८
१३	मौसम और मौसम की भविष्यवाणी	वजारत हुसैन	१.५०	२१
२१	मरण-ज्वार	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००	३९
३०	सपना टूट गया	ब्रजकिशोर नारायण	२.००	४०
३२	द्वासुपर्णा	जगदीश	१.००	४३
४१	हिन्दीमें सरकारी कामकाज करनेकी विधि	रामविनायक सिंह	३.००	४३
४५	आर्थेण्टिक सीनियर डिक्शनरी	बी.सी. पाठक, सी.एम.पाठक	१४.००	४४
३०	ग्राम-स्वयंसेवक-दल	मदनमोहन मदारिया	२.००	३४
	१९६२ (उपन्यास, कहानी छोड़कर)			
४९	आधुनिक कृषि-विज्ञान	डी० एस० वर्मा	४.००	२७
	१९६१ (उपन्यास, कहानी छोड़कर)			
४५	इतिहास-परिचय	मध्ययुगीन विश्व	१.००	८८
४६	इतिहास-परिचय	प्राचीन विश्व	१.००	८८
४७	सही रास्ता	राजकुमार	१.५०	४०
४८	सुन्दर-असुन्दर	'बेधड़क' बनारसी	३.५०	४९



हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय | सी. २१/३०, पिशाचमोचन वाराणसी-१.

कि मैंने सावधानी से संस्कृत साहित्य-शास्त्र भी पढ़ा है। मंगलाचरण का मंगलाचरण, साथ ही साहित्य की पूरी परिभाषा—

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छंदसामपि।
मंगलानां च कर्त्तारौ वंदे वाणीविनायकौ

वर्ण, अर्थ, रस, मंगल सब का उल्लेख है। वे करते क्या! अपने यहाँ, अपनी कुटिया पर वे ही अकेले नहीं रहते रहे होंगे। 'तुलसीदास' होने से वे अपना काम 'स्वयं दासास्तपस्विन' की नीति से चला लेते रहे होंगे, ऐसा नहीं जान पड़ता। आस-पास के लोग, 'दास' सभी भाखा बोलते थे, संस्कृत बोल भी नहीं पाते थे और समझ भी नहीं पाते थे। तुलसीदास के यहाँ तो यह स्थिति और केशवदास के यहाँ दूसरी स्थिति। वे स्वयम् 'भाखा' नहीं बोल पाते थे, उनके परिवार में भी कोई 'भाखा' नहीं बोल पाता था। दास भी धड़ल्ले से संस्कृत बोलने लगे; पर लिखने लगे वे भी 'भाखा' में ही। उन्हें लोग मंदमति कहने लगे, उसकी चिन्ता उन्होंने भी नहीं की, लिखा 'भाखा' में ही। केशवदास की वाणी में ही सुन लीजिए—

भाखा बोलि न जानहीं
जिनके कुल के दास।
भाखा कवि भवो मंदमति
तेहि कुल केसवदास।।

केशवदास को यदि संस्कृत का अभिमान था तो 'भाखा' का भी अभिमान था। वे बढ़िया संस्कृत में बढ़िया रचना कर सकते थे, सुमति कहला सकते थे। फिर भी उन्होंने 'भाखा' में क्यों लिखा। अपने कुल के दासों के ही लिए तो लिखना नहीं था, दूसरे कुल थे, दूसरे के कुलों में दास थे, जहाँ भाखा ही चलती थी। इसलिए केशवदास के ऐसा संस्कृत का प्रचंड पंडित भी विवश था 'भाखा' में रचना करने के लिए। हिन्दी का ग्रहण प्रचार-प्रसार से कहाँ हुआ है। उसमें लिखने को विवश थे कविगण। हिन्दी का ग्रहण विवशता ने ही पहले भी कराया है और अब भी उसके ग्रहण में विवशता ही हेतु है। हिन्दी की भारतीयता और एकता की शक्ति इतनी प्रबल है कि उसे सर्व-भारतीय स्तर के लिए निरंतर ग्रहण किया गया है और ग्रहण किया जाएगा। जैसे केशवदास को संस्कृत का ज्ञान था वैसे ही मलिक मुहम्मद जायसी को अरबी-फारसी-तुर्की का ज्ञान था। वे भी जब हिंदुई में पद्मावत लिखने लगे तो अरबी-फारसी-तुर्की के पंडितों ने उनकी निन्दा आरम्भ की। फकीर से नहीं रहा गया। तब उसने स्पष्ट घोषणा कर दी—

अरबी तुरकी हिंदुई भाखा जेती आहिं।
जेहि महँ मारग प्रेम कर सबै सराहैं ताहि

जहाँ सराहना करनी चाहिए वहाँ आप निन्दा-कुत्सा कर रहे हैं। प्रेम को देखो, भाखा को मत देखो। जब संस्कृतवालों ने उसे हटाने की, उसको छोड़ देने की हठधर्मी की तब भी हिन्दी ने संस्कृत की अवमानना नहीं की। फारसी-अरबी-तुर्की ने उसको अग्राह्य बताया तब भी उसने इन बाहरी भाषाओं की अवहेलना नहीं की। शब्द-प्रयोग ही नहीं, उस साहित्य के प्रवाह को, उसकी साहित्यिक प्रवृत्ति को भी ग्रहण किया। जायसी नहीं इसे घनआनंद भी बताते हैं।

इसलिए, आज अंगरेजी हटाओ कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि अँगरेजी भाषा के प्रति हिन्दी की कुत्सा की भावना है। उसने अँगरेजी भाषा और साहित्य से बहुत कुछ लिया और सीखा है। उसका आदर ही हिन्दी करती है और करती रहेगी। जब गांधी टोपी से काम चल जाता है, तो हैट लगाने की अनिवार्यता न होनी चाहिए। एक प्रतिशत के लिए निन्यानबे प्रतिशत की उपेक्षा में किस निन्यानबे का फेर है! हिन्दी का बीज-मंत्र भारतीयता है। ऐसा कहने का यह प्रयोजन कदापि नहीं कि अंगरेजी अभारतीय भाषा है, इसलिए उसका आदर न हो। हिन्दी ने किसी भाषा का अनादर करना सीखा ही नहीं। विरोध होने पर भी उसने दूसरे का विरोध नहीं किया। वह साधु-संतों के बीच पली-बढ़ी है। उसने तपश्चर्या का ही लक्ष्य रखा है। हिन्दीवालों ने वाणी की उपासना के ही लिए हिन्दी की उपासनाकी है। शब्द-साधना ही उसका उद्देश्य रहा है, अर्थ-साधना नहीं।

अब साहित्य की सरस्वती की धारा पर आइए। भारतीय साहित्याचार्यों ने 'साहित्य' को 'दर्शन' माना है। जीवन को देखने-समझने की विशेष दृष्टि साहित्य से आती है। राजनीतिवादी, समाजवादी, धर्मनीतिवादी जीवन को अपनी-अपनी दृष्टि से देखते हैं साहित्य भी अपनी दृष्टि से उनसे भिन्न प्रकार से जीवन को सामने लाता और उसका निरूपण करता है। साहित्य

घोषणा

प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक्स एक्ट (१९५९ में संशोधित) की धारा १९ डी. के अनुसार 'हिन्दी प्रचारक' के स्वामित्व आदि के सम्बन्ध में निम्नलिखित विवरण प्रकाशित किया जाता है :—

१.	प्रकाशन का स्थान	वाराणसी
२.	प्रकाशन की अवधि	मासिक
३.	मुद्रक का नाम	श्री कृष्णचन्द्र बेरी
	राष्ट्रीयता	भारतीय
	पता : विद्या मन्दिर प्रेस (प्रा०) लि०, मानमन्दिर, वाराणसी—१	
४.	प्रकाशक का नाम	श्री ओम्प्रकाश बेरी
	राष्ट्रीयता	भारतीय
	पता : हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, पिशाचमोचन, वाराणसी—१	
५.	सम्पादक का नाम	श्री कृष्णचन्द्र बेरी
	राष्ट्रीयता	भारतीय
	पता : हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, पिशाचमोचन, वाराणसी—१	
६.	उन व्यक्तियोंके नाम-पते, जो पत्रिकाके मालिक हैं।	श्री निहालचन्द बेरी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी

मैं ओम्प्रकाश बेरी यह घोषित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरी पूरी जानकारी और विश्वास के अनुसार यथार्थ है। ओम्प्रकाश बेरी

दिनांक : १-३-६४ (प्रकाशक का हस्ताक्षर)

'मानस' के व्यापार या साधना द्वारा अपने दर्शन की सिद्धि करता है। साहित्य 'सहित' से बना है इसलिए वह एक ओर अध्ययन करनेवाले को यह संकेत करता है कि साहित्य के नाते कोई ऐसी विद्या नहीं है, कोई ऐसी उपविद्या या कला नहीं है जिसे अध्ययन करने की आपको आवश्यकता न हो। जहाँ तक अध्ययन-मनन-चिंतन किया जा सके सब का करना चाहिए। यही उसके ज्ञान की गरिमा है। सब के सहित चलता है साहित्य। केवल ज्ञान से ही नहीं, बुद्धि से ही नहीं, मन से भी सबसे मिलने की शिक्षा देता है। साहित्य के स्वाध्याय का स्वरूप यह होना चाहिए कि पढ़नेवाला सबके मन से अपने मन को मिला सके। सब के सुख-दुख को यथावत् समझ सके। राजनीति बहुजनहिताय की की घोषणा कर सकती है, धर्मनीति भी चाहे कभी बहुजनहिताय से ही संतोष कर ले सकती है, पर साहित्य की तुष्टि सर्वजनहिताय से ही होती है। तुलसीदास स्पष्ट कहते हैं—

कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहं हित होई॥

ऐसे स्वरूप के कारण साहित्य सबके अनुशीलन की वस्तु जो है सो तो है ही, यह सब समय आजीवन मनन करने की भी वस्तु है। जिन्हें स्नातक होने के अनन्तर साहित्य के क्षेत्र में कार्य करना है उनकी बात अभी छोड़िए। जो अन्य क्षेत्र में प्रवेश करेंगे उनको भी साहित्य का अनुचिंतन करते रहना चाहिए। इसीलिए कि साहित्य जीवन को सदा रसमय बनाए रखता है। केवल अक्षरज्ञान से, शब्दज्ञान से, वाक्यज्ञान से मनुष्य में पूर्णता नहीं आती। उसके अन्तःकरण में जब सरसता का उदय होता है तभी पूर्णता आती है।

जिन्हें हिन्दी-साहित्य के क्षेत्र में काम करना है, अथवा किसी अन्य साहित्य के क्षेत्र में कार्यरत होना है उनके लिए अन्य प्रणाली भी ग्रहण करनी होगी। यदि निर्माण-पक्ष में लगना पड़े, कारयित्री प्रतिभा के द्वारा कविता, कहानी, नाटक आदि का प्रणयन करना हो तो 'रमणीयता' का सदा ध्यान रहे। साथ ही शिवेत-रक्षवि का भी लक्ष्य रहे। जिस [illegible] से उसे पढ़नेवाले का अशिव हो वह कहाँ का साहित्य, [illegible] यदि भावयित्री प्रतिभा के द्वारा आलोचना आदि में प्रवृत्त होना हो तो अपने विचारों को सुव्यवस्थित रूप में संजोना चाहिए। 'विचारित सुस्थ' वार्ता करनी चाहिए। आलोचना सबका काम नहीं है। जो साहित्य की साधना को सरल समझते हैं वे भ्रम में हैं। यह साधना किसी भी साधना से कठिन है। किसी योगी को समाधि लगाने की विधि उसका गुरु सरलता से बतला देता है। पर साहित्य में जिस 'समाधि' की अपेक्षा होती है वह गुरु के बतलाने मात्र से नहीं आती। तुरंत नहीं आती। सतत अभ्यास से बहुत कालांतर में आती है। आ भी सकती है और नहीं भी आ सकती। किसी की रचना या आलोचना में जब कमी या अभाव दिखाई दे तो समझ लीजिए कि समाधि की अवस्था तक कर्त्ता या आलोचक नहीं पहुँच सका है।

हिन्दी-साहित्य के क्षेत्र में ही जिन्हें अपने भावी जीवन में कार्य करना पड़े उनसे इतना ही कहना है कि हिन्दी के प्राचीन साहित्य के अध्ययन, उद्धार और संग्रह से कभी पराङमुख न हों। अभी जितना मुद्रित-संपादित होकर सामने आया है उसका सहस्रगुना ज्यों का त्यों पड़ा है। हिन्दी-साहित्य का भांडार बहुत बड़ा है। परिमाण ही नहीं गुण में भी वह विशिष्ट है। केवल हिन्दी के प्राचीन और नवीन साहित्य का ही अनुशीलन उन्हें नहीं करना है। भारत की चौदहों राष्ट्र-भाषाओं के साहित्य का मनन करना है। उन सबका स्वर—उर्दू को छोड़ कर—एक सा है। एक ही तत्त्व विविध भंगिमाओं से उनके द्वारा उद्घाटित किया गया है। सबकी छटा निराली है। प्रस्थानभेद से सब एक ही साध्य तक पहुँचते दिखाई देते हैं। उर्दू का स्वर कुछ भिन्न है। देखने से उर्दू हिन्दी भाषा की एक शैली ही दिखाई देती है, पर उसके साहित्य की धारा अभिनव है। उसका ऐसा बढ़िया साहित्य है, ऐसी नवीन शैली है अभिव्यक्ति की कि वैसी विशेषता भारत के किसी साहित्य क्या, भारत के बाहर के उसके समानशील साहित्य के अतिरिक्त अन्यत्र नहीं है।

[शेष पृष्ठ १५ पर]

पुस्तक प्रकाशन, अक्षर-शोधन और अनुवाद

—चन्द्रशेखर मिश्र

पुस्तक प्रकाशन में भारत विगत वर्ष सबसे आगे रहा है। यह प्रकाशन के क्षेत्र में शुभ लक्षण है। साथ ही साथ पुस्तकों का अम्बार साहित्य के नाम पर लग रहा है। जिस प्रकार भारत के प्रकाशकों ने साज-सज्जा, छपाई-सफाई पर ध्यान दिया, वह सराहनीय है। सबसे अधिक इस ओर ध्यान दिया दिल्ली के प्रकाशकों ने तदनंतर वाराणसी से भी इस ओर अधिक ध्यान दिया गया।

आजकल सबसे अधिक प्रकाशकों का ध्यान 'पॉकेट बुक्स' की ओर केन्द्रित हो गया है। प्रकाशन-क्षेत्र में यह महत्वपूर्ण कदम उठाया गया। छपाई, साज-सज्जा, सभी दृष्टियों से यह सर्वोत्तम है। पर इससे व्यावसायिक को घाटा है। इन सबके बावजूद भी प्रकाशकों ने इस ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया।

आवरण पर जितना ध्यान अब दिया जाने लगा है, उतना ही छपाई और कागज पर ध्यान कम रहता है। पुस्तक की बँधाई भी विदेशी अनुकृति पर मनोहारी ढँग की अब होने लगी है। छपाई में भी इस देश ने उन्नति की, रंगीन चित्रों की भी कमी अब नहीं रही। कागज पर भी अब बड़े प्रकाशक ध्यान देने लगे हैं। पर सबसे अधिक ध्यान देने की बात है, जिस पर इस देश के प्रकाशकों का ध्यान अभी कम है और वही सबसे मुख्य और उपयोगी है—प्रूफ रीडिंग या अक्षर-शोधन।

हस्तलखों पर काम करनेवाले लोग इस बात से अवगत होंगे कि लिपिकर्ता जिसे 'लिखक' कहते हैं, से प्रायः छूट पंक्ति की पंक्ति इसलिए हो जाया करती रही है कि ऊपर की पंक्ति में ठीक उसी प्रकार का शब्द मिल गया। उदाहरण के लिये 'हरिहर पद रस, वेद बखाना'। दो बार रस, शब्द में एक छूटने की आशंका है। इसी कारण पाठांतर बढ़ते चले गये। एक रस की छूट होने पर वहाँ रस के स्थान पर 'वर' तो कहीं 'रति' पाठ भी दे दिया गया। मानस के काशीराज संस्करण पर हुए कार्य में

यह देखने को मिला जो कि अभी-अभी सन् १९६० की १२ जनवरी को प्रकाशित हुआ है, उसके सम्पादक हैं आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ।

दूसरा उदाहरण बहुत प्रसिद्ध है और वह है एक बिन्दु के कारण कुंती कुत्ती होय । कुंती पर की बिन्दी हट गई और वह कुती हुई । कुती शब्द बैठता न देख कुत्ती कर दिया गया । यही नहीं, सुना जाता है कि संस्कृत के कर्मकाण्ड की एक पुस्तक किसी ऐसे पंडित के हाथ लगी जो अभी इस क्षेत्र में नवागंतुक था । वहाँ मुद्रा-राक्षसों की कृपा से छप गया---'पिंडोपरि मूत्रं दद्यात् ।' सूत्र के स्थान पर मूत्र छप गया । पंडित जी ने सोचा कि मूत्र क्या होगा तो उन्होंने अपनी ओर से जोड़ दिया 'गोमूत्रं दद्यात ।' किसी ऐसे ही चार पंडितों की कथा मैंने छोटी कक्षा में एक बड़े विशिष्ट हास्य के ढंग से सूत्रों को याद करने का पाठ पढ़ा था ।

कथा यों है---चार ब्राह्मण अभी [illegible] पढ़कर निकले थे । उन्हें प्रैक्टिकल ज्ञान (साक्षात ज्ञान) नहीं था । पोथी खोली तो उसमें निकला कि 'महाजनो येन गतः स पंथाः' । उन्होंने महाजन का अर्थ श्रेष्ठ पुरुषों के स्थान पर वणिक महाजन लगाया । इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि वे महाजनों के साथ श्मशान पहुँच गए । यही नहीं 'राज द्वारे श्मशाने च यः तिष्ठति-सबांधवाः' । गधे को श्मशान में उन लोगों ने भाई बताया । भाई को धर्म से लगाना चाहा । धर्म की पहचान न हो सकी । ऊँट को देखा और स्मरण किया कि 'धर्मस्य त्वरितागतिः' । धर्म की गति शीघ्र होती है । ऊँट के गले में गधे को लटका दिया । वहाँ 'परस्परं पशंशांति अहो रूप महो-ध्वनि' सुनकर धोबी मारने दौड़ा । बेचारे भागे । भागते-भागते नदी के किनारे पहुँचे । हाथ-पैर चलाना भी उन नौसिखुओं को नहीं आता था; [illegible] का सहारा लेकर नदी पार करना चाहा, तिनके का सहारा उनके काम न आ सका । दूसरे ने सोचा कि 'सर्वनाशेसमुत्पन्ने अर्धंत्यजति पंडितः' । डूबनेवाले का सर तो रख ही लिया जाय । दो तो डूब गये पर दो बचे । आगे बस्ती में जाने पर एक को सेवई मिली भोजन में, दूसरे को बड़ा मिला । एक तो 'दीर्घ सूत्री विनश्यति'—लंबे सूत वाली को न खाकर भूखे मर गये । दूसरे 'छिद्रेश्वनर्था बहुलीभवन्ति' का स्मरण कर बुभुक्षित रहकर प्राण गँवाये ।

इस कहानी के कहने का केवल तात्पर्य इतना ही है कि बाहरी तड़क-भड़क में, छपाई-सफाई में तो उन्नति अवश्य कर रहे हैं; पर-प्रूफ-रीडिंग का, जो कि विषय के बाद दूसरा स्थान है, कोई ध्यान नहीं विषय यदि हृदय है, तो अक्षर-शोधन पुस्तक का प्राण है । प्राण ही

विकास आयुक्त उत्तर प्रदेश द्वारा स्वीकृत पुस्तकें

१९६३ की सूची में

पृष्ठांक	क्रमांक	नाम पुस्तक	लेखक	मूल्य
८	३	घाघ और भड्डरी की कहावतें	(संकलन)	१.५०
८	१३	फलों की खेती और व्यवसाय	सीताराम अग्रवाल	१.५०
८	१४	सरल कृषिशास्त्र	"	३.००
११	३०	घर में वैद्य	संकलन	१.००
१२	४	जीवन का सत्य	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	२.००
१४	३९	मनुस्मृति	स्व० दर्शनानन्द सरस्वती	५.००
१४	४०	उपनिषद प्रकाश	"	३.५०
१९	२५	आधुनिक पाक-विज्ञान	नृसिंहराम शुक्ल	३.००
२१	२१	झिलमिलाते सितारे	रमेश वर्मा	२.५०
३८	१	गीतांजलि	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	२.५०
३८	६	सूर पदावली	संकलन	२.००
३९	६	डाक-घर	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	२.००
४०	७	प्रायश्चित	"	२.००
४०	८	नटी की पूजा	"	२.००
६०	९	चिरकुमार सभा	"	४.००
४०	१०	मेघनाद	आचार्य चतुरसेन	२.५०
४०	११	गांधारी	"	३.००
४१	३९	अजीतसिंह	"	३.५०
४१	४०	श्रीराम	"	२.५०
४१	४१	पाँच एकांकी	"	२.५०

१९६२ की सूची में (उपन्यास कहानी छोड़कर)

पृष्ठांक	क्रमांक	नाम पुस्तक	लेखक	मूल्य
२२	३७	धर्म के नाम पर	आचार्य चतुरसेन	३.००
२७	११	चकबन्दी से लाभ	राजेश दीक्षित	०.७५
३०	५	वृहद् पशु-चिकित्सा	विद्याश्रमी जगन्नाथ	४.००

१९६१ की सूची में (उपन्यास कहानी छोड़कर)

पृष्ठांक	क्रमांक	नाम पुस्तक	लेखक	मूल्य
४८	४७	माली	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	२.००
५०	२५	अमरसिंह	आचार्य चतुरसेन	२.५०
६८	४५	फसल के दुश्मन	राजेश दीक्षित	०.७५
९१	५०	योगासन	स्वामी सत्यानन्द सरस्वती	२.००

प्रभात प्रकाशन : २०५, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६.

सांसारिक ज्ञान है। अक्षर-शोधन पर हमारे प्रकाशक बंधुओं का ध्यान नहीं जाता। वे सस्ते प्रूफरीडर खोजते हैं। छोटी पुस्तकों की प्रूफ-रीडिंग पर विशेष असावधानी बरती जाती है। यदि बच्चों और किशोरों में यह अशुद्धियाँ घर कर गईं, तो बड़ी गड़बड़ी होगी। जीवन में ये ब्लण्डर्स बहुत धोखा देंगे। विदेशों में यह गड़बड़ी कम होती है। उनके यहाँ अशुद्धियाँ निकालनेवाले को पुरस्कार भी मिला करता है। पर यहाँ पुरस्कार के बदले तिरस्कार ही हाथ लगता है।

मुद्रण में कंपोजीटर आदि कम पढ़े-लिखे रहते हैं, यदि कहीं उन्हें 'आकर' (रिफरेन्स) शब्द मिला, तो वे आकार कर बैठते हैं। आकर को आकार देनेवाले बड़े-बड़े पढ़े-लिखे भी मिल जाते हैं, तो कंपोजीटर बेचारा तो इसके लिये कम दोषी है। 'रिक्थ' को वे रिक्त कर देते हैं। यदि अच्छे प्रूफ-शोधक न मिलें, तो अशुद्धियाँ रह ही जाती हैं। साहित्य में व्याकरण का स्थान जिस प्रकार है, प्रकाशनमें अक्षर-शोधन का भी। उसी प्रकार भाषा-विज्ञान व्याकरण के नियमों से परे है। अशुद्धियों पर ही भाषा-विज्ञान की गाड़ी अग्रसर होती है। पर प्रकाशन में अशुद्धियों पर ऐसी छूट नहीं दी जा सकती। कुछ लोग अशुद्धिपत्र आदि लगाकर संतोष कर लेते हैं। पर इतने मात्र से कार्य नहीं चल सकता क्योंकि अशुद्धियों के कारण भ्रांतियाँ अधिक हो जाती हैं। उनमें पाठांतर या क्षेपक नहीं आँका जा सकता। जिस प्रकार किसी पुस्तकालय में सबसे अधिक और विज्ञ पुरुष को ही पुस्तकालयाध्यक्ष बनाना चाहिये; उसी प्रकार अधिक विद्वान् और अनुभवी व्यक्ति को ही अक्षर-शोधन का कार्य सौंपना चाहिये। अधिकतर लेखक अपनी पुस्तक का अक्षर-शोधन नहीं करते और कभी-कभी कर भी नहीं पाते। प्रकाशक पुस्तक छपाकर ही सूचना देते हैं। ऐसा अधिक बिकनेवाली पुस्तकों के साथ अन्याय हो जाता है। जब कि अधिक बिकनेवाली पुस्तक पर अधिक ध्यान अक्षर-शोधन का होना चाहिये; क्योंकि वह अधिक लोगों तक यदि शुद्ध न हुई तो भ्रम उत्पन्न करेगी। प्रकाशक इसका दोषी है, वह देखता है कि पुस्तक जल्दी छपकर तैयार हो, उसका पैसा खड़ा होता चले। अधिक से अधिक द्रव्य सीधा होता चले तो और अच्छा है। पाँच हजारा, दस हजारा पुस्तकों में तो बहुत से अक्षर, पंक्ति की पंक्ति, टूट कर छटक जाते हैं पर हजार या पाँच सौ पर उन्हें कौन देखता है। छापकर किनारे कर दी जाती हैं। बच्चों की और बेसिक पुस्तकों

का प्रूफ तो सरसरी ढँग पर देखकर ही समाप्त कर दिया जाता है।

यहाँ एक चलन है कि एक ही प्रूफ-शोधक रात्रि भर बैठकर जबरदस्ती प्रूफ देख कर आर्डर दे देता है। यह सरासर अन्याय है। मुद्रक, प्रकाशक और प्रूफ-शोधक, तीनों का।

दैनिक पत्रों के कारण बहुत-सी अशुद्धियाँ चल पड़ती हैं। विशेष कर अनुवाद के कारण तो और भी। 'टु टेक पार्ट' का अनुवाद हिस्सा लेना, भाग लेना चल पड़ा और अच्छे-अच्छे लेखक इसका व्यवहार करने लगे। जब कि उसके लिये हमारे यहाँ हाथ बटाना, योग देना, सम्मिलित होना आदि शब्द भरे पड़े हैं। प्रतिशत के ढँग पर दो आने, चार आने, आठ आने, सोलह आने और यहाँ तक कि सोलह आने पावरत्ती आदि प्रयोग भरे पड़े हैं। पर हम इन समाचारपत्रों की अनुकृति पर शब्द-चयन कर लेते हैं। हो सकता है कि दैनिक पत्रों आदि के बहुत अच्छे शब्द भी मिल जायँ। इसका तात्पर्य यह नहीं कि हम एकत्र के स्थान पर एकत्रित का व्यवहार ही ग्रहण करें। इस प्रकार हमें अनुवाद की पुस्तकों पर भी अधिक ध्यान देना है। दूसरे साहित्यों से इतना अनुवाद हम करा रहे हैं, पर अनुवाद कहीं-कहीं एकदम भ्रष्ट हो जाते हैं। इसमें एक अनुवादक के अल्पज्ञान और प्रकाशन की आर्थिक नीति भी द्योतक होती है। बहुत से अनुवादों से तो मूल पुस्तक में बहुत अन्तर मिलेगा। बड़ी पुस्तकों का अनुवाद सूक्ष्म रूप में कराना भी घातक है। जानकार और ऊँची श्रेणी के जानकार से यह कार्य कराना चाहिये। चाहे प्रकाशकों का अधिक व्यय हो या कम। यह सदा ध्यान देना चाहिये कि जिस प्रकार अक्षर-शोधन का कार्य कठिन है, उससे भी कहीं अधिक काठिन्य उत्पन्न करनेवाला कार्य अनुवाद का है। दूसरी भाषा का ज्यों-का-त्यों भाव रख देना भी एक बहुत बड़ी कला है। मूल पुस्तक से कम महत्व का कार्य वह नहीं है, चाहे अनुवादक को कम ही मिलता हो। प्रकाशक को अक्षर-शोधन और अनुवाद का कार्य बहुत ऊँचे लोगों के हस्ते कराना चाहिए। जिन्हें उसका पूरा-पूरा ज्ञान और अनुभव हो। हम अब दूसरे देशों की होड़ में आगे हैं। अस्तु अक्षर-शोधन और अनुवाद पर भी विशेष ध्यान देना आवश्यक है।***

लेखक का पता :
वाणी-वितान प्रकाशन, वाराणसी-१

(पाण्डुलिप तैयार है, प्रकाशक सम्पर्क स्थापित करें।)

डॉ० कमलकुमारी जौहरी, महारानी लक्ष्मी गर्ल्स डिग्री कालेज, भोपाल (म. प्र.)।
१. हिन्दी के स्वच्छन्दतावादी उपन्यास (शोध-प्रबन्ध)
२. बाणभट्ट की आत्मकथा का शास्त्रीय विवेचन।
३. निराला के कथा-साहित्य में उनका व्यक्तित्व।

श्री बाबूलाल कोठारी, १३१ सरदारपुरा, उज्जैन--(म. प्र.)।
१. मेरा तन तुम्हारा दर्पण (उपन्यास)
२. शिप्रा का तट (मालव की सभ्यता व संस्कृति एवं लोक-कला पर आधारित)
३. आदर्श नागरिक (बाल उपन्यास)
४. आजादी के दीवाने (कहानी-संग्रह)

श्री विश्वनाथ गुप्त, द्वारा ईश्वरी खेतान शूगर मिल्स प्रा० लि०, पो० लक्ष्मीगंज, देवरिया (उ. प्र.)।
१. पिनोशियो (हिन्दी अनुवाद)
२. पिलग्रिम्स प्रोग्रेस (हिन्दी अनुवाद)

श्री सिद्धेश्वर ओंकार, गर्ल्स बेसिक स्कूल क्वार्टर नं० २, डाल्टनगंज, पलामू (बिहार)।
१. लोकनायक (काव्य)
२. परशुराम (काव्य)
३. जतरा (उपन्यास)
४. जब देश पुकार रहा हो (उपन्यास)
५. बाँसुरी (कविता संग्रह)
६. अपना देश (नाटक)

श्री प्रेमनारायण वर्मा, ३२५ शाहगंज, इलाहाबाद।
१. साहित्यिक सूक्तियाँ (संकलन)

डॉ० राम अनुग्रह गुप्ता, स्वास्थ्य उपकेन्द्र, जमुई वाया विक्रम, पटना (बिहार)।
१. भीगी आँखें (उपन्यास)
२. सुहाग (उपन्यास)

श्री बलदेव प्रसाद गुप्त, १७/एच/८, बलाई सिंघी लेन, कलकत्ता-६।
१. जिन्दगी की आग (उपन्यास)

श्री अनिरुद्ध सिंह 'अलबेला', द्वारा रामनारायण प्रसाद, हमीदगंज, डाल्टनगंज, पलामू (बिहार)।
१. संयोग (उपन्यास)

श्री निर्मल 'मिलिन्द', द्वारा पोस्ट मास्टर मधेपुर, सहरसा।
१. ये हिन्दुस्तान है प्यारे (कविता-संग्रह)
२. अटपटे बोल (काव्य-संग्रह)

विद्वान के० नारायनन, टी० सी०, १२/१७८७, गन्धारी अम्मान रोड, पुथेंचंयई, त्रिवेन्द्रम-११।
१. भूरा धागा
२. पहली दीवाली
३. क्या आप कवि बनना चाहते हैं?

श्री पद्मदेव प्रसाद 'पद्म', महर्षि विश्वमित्र कालेज, बक्सर-(बिहार)।
१. भोजपुरी गीत और गीतकार (कविता-संग्रह)

श्री नवारुण, द्वारा असम राष्ट्र-भाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी।
१. सती जयन्ती (महाकाव्य)
२. युग देवता शंकरदेव (काव्य)
३. चाय की पत्तियाँ (उपन्यास)

श्री वी० वेंकटेश, एम० ए०, आर्ट्स एण्ड कामर्स कालेज, मलेश्वरम्, बंगलोर-३.
१. आलोचना राजी (निबन्ध-संग्रह)

डॉ० मुरारीलाल शर्मा 'सुरस', आर्य कालेज, लुधियाना (पंजाब)।
१. अवधी कृष्ण काव्य और उसके कवि (शोध-प्रबन्ध)

श्री डी० श्रीमन नम्बोदिरी, कोपुवक्कल माना, सुवात्तुपुषा (केरल)।
१. प्राचीन केरल की सरस कहानियाँ (कहानी-संग्रह)

श्री गुलाबचन्द्र दुलारे 'अर्न्गल', वाणिज्य विभाग, महाराणा प्रताप कालेज, गोरखपुर।
१. दहेज (उपन्यास)
२. कलयुग (उपन्यास)
३. मेरी माला

हमारे साहित्यिक प्रकाशन

शोध-प्रबन्ध

आधुनिक हिन्दी कवियों के काव्य सिद्धान्त : डॉ० सुरेशचन्द्र गुप्त २५.००

करुण-रस : डॉ० ब्रजवासीलाल श्रीवास्तव १२.५०

मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य में नारी भावना : डॉ० उषा पाण्डेय १०.००

हिन्दी साहित्य में हास्य-रस : डॉ० बरसानेलाल चतुर्वेदी १०.००

प्रेमचन्द-पूर्व हिन्दी-उपन्यास : डॉ० कैलाशप्रकाश १२.५०

आलोचनात्मक

अनुसन्धान का विवेचन : डॉ० उदयभानुसिंह ६.००

सूरदास और उनके भ्रमर गीत : प्रो० दामोदरदास गुप्त १२.५०

विद्यापति और उनकी पदावली : प्रो० देशराजसिंह भाटी १८.००

विद्यापति की काव्य-साधना ,, ५.००

जायसी : एक विवेचन ,, ५.००

कबीर : एक विवेचन : डॉ० सरनामसिंह शर्मा १२.५०

विमर्श और निष्कर्ष : ,, १२.५०

राजस्थान-साहित्य : परम्परा और प्रगति : डॉ० सरनामसिंह शर्मा २.००

कामायनी में शब्द-शक्ति चमत्कार : डॉ० विमलकुमार जैन ५.००

पालि-साहित्य और समीक्षा : सरनाम सिंह शर्मा ३.१२

प्रेमचन्द और गांधीवाद : प्रो० रामदीन गुप्त १३.५०

हिन्दी पद-परम्परा और तुलसीदास : डॉ० रामचन्द्र मिश्र १२.५०

मध्ययुगीन वैष्णव संस्कृति और तुलसीदास : डॉ० रामरतन भटनागर ७.५०

विनयपत्रिका-समीक्षा : दानबहादुर पाठक ४.६२

सरल भाषा-विज्ञान : डॉ० मनमोहन गौतम ७.००

हिन्दी साहित्य और उसकी प्रमुख प्रवृत्तियाँ : डॉ० गोविन्दराम शर्मा ९.५०

साहित्यिक निबन्ध : प्रो० भारतभूषण 'सरोज' ७.५०

युगकवि पन्त की काव्य-साधना : प्रो० विनयकुमार शर्मा ७.००

हिन्दी नाटक की रूपरेखा : प्रो० दशरथ झा ५.००

साहित्यिक वाद : प्रो० भारतभूषण 'सरोज' २.२५

भारतीय काव्य सिद्धान्त : देशराज सिंह भाटी ३.००

काव्य-शास्त्र : डॉ० भारतभूषण 'सरोज' ५.००

जायसी की काव्य-साधना : प्रो० दानबहादुर पाठक ३.५०

संस्कृत साहित्य का इतिहास : डॉ० महेन्द्रकुमार ३.००

गुजराती साहित्य का इतिहास : डॉ० बरसानेलाल चतुर्वेदी २.००

जयहिन्द निबन्धमाला : भारतभूषण 'सरोज' ३.००

रासो : पद्मावती समय : ,, १.५०

रासो : आदि पर्व : ,, २.२५

हिन्दी-गुजराती प्रवेश : दयानन्दनारायण स्वामी १.५०

साहित्यालोचन सिद्धान्त : डॉ० मनमोहन गौतम २.५०

मौखिक प्रश्नोत्तर : ,, ०.७५

हिन्दी साहित्य का इतिहास : प्रो० भूषण 'स्वामी' ३.५०

भाषा-विज्ञान : भारतभूषण 'सरोज' २.५०

महात्मा कबीर : ,, २.५०

चिन्तामणि चिन्तन : प्रो० ओमप्रकाश सिंघल २.५०

कविवर सुमित्रानन्दन पन्त : प्रो० भूषण 'स्वामी' २.५०

भाषा का इतिहास : प्रो० देशराजसिंह भाटी २.५०

महाकवि विहारी : डॉ० रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' २.५०

सूरदास : प्रो० दामोदरदास गुप्त २.५०

तुलसीदास : ,, २.५०

भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त : प्रो० देशराजसिंह भाटी ६.५०

केशव की काव्य-साधना : प्रो० ओमप्रकाश शर्मा २.५०

काव्य विवेचन : देशराजसिंह भाटी १.५०

ये पुस्तकें पुस्तकालयों के लिए स्थायी निधि सिद्ध होंगी। हमारे समस्त प्रकाशनों के लिए वृहद् सूचीपत्र मुफ्त मँगवाएँ। पुस्तकें अपने निकटस्थ पुस्तक-विक्रेता अथवा हमसे सीधे प्राप्त करें। हमारे यहाँ सभी प्रकार की हिन्दी-पुस्तकें मिलती हैं।

हिन्दी साहित्य संसार | १३, यू. बँगलो रोड, दिल्ली–६
ब्रांच-आफिस
खजांची रोड, पटना–४

[पृष्ठ ६ का शेषांश]

हिन्दी-साहित्य के अध्येता को उर्दू-साहित्य अनिवार्य रूप से पढ़ना चाहिए। आधुनिक हिन्दी-साहित्य के पथिकृत विद्वानों की भाषा और शैली देखिए। उनमें उर्दू भाषा के अध्ययन-मनन से जो रंगीनी आई, उसकी प्रेरणा से उन्होंने हिन्दी को सजाने-सँवारने में जो सुवर्णता उत्पन्न की वह दर्शनीय है। उर्दू भाषा और उसके साहित्य का अनुशीलन हिन्दी भाषा और साहित्य के अध्ययनपूरक तत्त्व हैं।

भारतीय भाषाओं के साहित्य का पढ़ना ही उनकी सीमा न होनी चाहिए। विदेशी भाषाओं में अंगरेजी भाषा का साहित्य तो यहाँ के बच्चे-बच्चे पढ़ते हैं। उसके संपर्क में मातृभाषा का साहित्य पढ़ने के साथ ही वे आने लगते हैं। कभी-कभी तो निज भाषा के साहित्य से वे अंगरेजी का साहित्य कहीं अधिक जान जाते हैं। साहचर्य के आधिक्य से कहीं-कहीं, जानकारी या परिचय से आगे बढ़कर उससे वे ऐसा प्रेम करने लगते हैं कि उसी में जीते हैं। उनका अंगरेजी के लिए मोह बढ़ जाता है। यहाँ तक उतनी हानि नहीं, पर हानि तब दिखाई देती है जब अरस्तू, प्लेटो की पंक्तियों को अंगरेजी माध्यम से हृदयंगम करनेवाला मम्मट, भामह का नाम सुनकर चौंक पड़ता है। अलाभ वहाँ होता है जहाँ शेक्सपियर ही नहीं, कीट्स-ईट्स की रचनाओं का पारायण कर जाने वाला, संस्कृत के माघ कवि के नाम को माघ महीना समझता है। भारतीयता की ऐसी क्षति प्रशंसनीय नहीं है। भारतीय साहित्यों को पहले और अधिक जानने की जहाँ आवश्यकता हो वहाँ उसे कोई न जाने, पर विदेशी भाषा के साहित्य से प्रेम हो, उसका मोह तक हो तो क्या कहा जाए। हिन्दी-साहित्य वाले को बड़ी सार्वभौम कल्पना लेकर चलना पड़ता है। उसे तमिल के कंब को भी जानना-समझना है, तेलगू के वेमना और पोतनामात्य की कृतियों को भी देखने-सुनने को सहर्ष प्रस्तुत रहना है। मलयालम के एजुत्तच्छन को भी तुलसीदास से मिलाना है। कन्नड़ के कुमारव्यास, लक्ष्मीश और रत्नाकर-वर्णी की रचनाओं का भी आलोडन करना है। संस्कृत और अँगरेजी वालों को इनके ज्ञान की सामान्यतया अनपेक्षा है। उधर समस्त भारतीय भाषाओं के ज्ञान-अभिज्ञान से ही हिन्दी की पूर्णता है।

अस्तु। विदेशी भाषाओं के साहित्य के अध्ययन का विस्तार अँगरेजी से आगे बढ़ने से होगा। 'हिन्दी विश्व-भाषा होगी, हिन्दी साहित्य विश्व-साहित्य होगा' यह कल्पना बड़ी मधुर है। विश्व की राजनीति हिन्दीवालों की यह कल्पना कब स्वप्न से सत्य में परिणत करेगी इसे तो कल्पना करनेवाले सोचें, पर विश्व की भाषाओं और विश्व के साहित्यों से परिचित हुए बिना ऐसा होना कथमपि संभव नहीं प्रतीत होता। आज अँगरेजी भाषा और उसका साहित्य सारे संसार में शुद्ध राजनीतिक कारणों से ही नहीं प्रसरित हो गया है। उस भाषा और साहित्य के साधकों ने उसमें विश्वसाहित्य, विश्ववाङ्मय सबका संग्रह-संकलन करने का अथक परिश्रम किया है। इसे हिन्दी-साहित्य के कार्यकर्ताओं की आँख खोलकर देखने की बेला है।

अब कर्म के लोक में आइए। कर्म विधि और निषेधमय होते हैं। संग्रह और त्याग बिना पहचाने नहीं होता। अन्य भाषाओं और उनके साहित्य के ज्ञान से, जानकारी मात्र से काम पूरा नहीं होता। उनके बोलनेवालों, उनके रचयिताओं से भी परिचय की आवश्यकता होती है। एकता का सूत्र घर बैठे नहीं बँधता। भारत की धार्मिक एकता के लिए अतीत में भगवान् शंकराचार्य ने भारत के चारों कोनों में पीठों की स्थापना की थी। धर्मिष्ठ सनातनी आज भी चारों धाम की यात्रा करते हैं। हिन्दी की चारों धाम की यात्रा कहाँ है। सरकारी तौर पर हिन्दी के विद्वानों को अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में भेजने और उन क्षेत्रों के विद्वानों को हिन्दीभाषी क्षेत्रों में भेजने की योजना चलाई गई है। संपर्क, समस्या, समाधान का क्रम चलाया गया है। जिसे स्वयमागत होना चाहिए वह हठात्कृत हो, इसमें हिन्दी वालों की ही कमी का आभास लोगों को मिलता है। सरकार कितनों को भेजेगी। जहाँ जाने का चाव सभी को होना चाहिए, वहाँ कुछ विद्वान् चले गए तो संपूर्णता उससे न होगी। हिन्दी के अध्येता स्वेच्छा से जब अधिकाधिक वहाँ जाने लगेंगे तो सम्मिलन-सम्मेलन से हिन्दी और उसके साहित्य का संपोषण, संवर्धन, संचार और संस्कार यथोचित होगा। इसी प्रकार भारत के बाहर की यात्रा का संकल्प होना चाहिए।

यह तो हुई विधि। अब निषेध पर आइए। हिन्दी वालों को अप्रिय सत्य कहने से विरत होना चाहिए। मौन साधना अधिक फलप्रद मानी जाती है। इसे साधुधर्म की शिक्षा न समझें, हिन्दी वालों को वैरागी या बाबाजी बनने की सलाह नहीं दे रहा हूँ। आपको साहित्य की ही शिक्षा बता रहा हूँ। अभिधा में अधिक न बोलें, व्यंजना में ही विशेषतया कहें।

आप सबसे यह कह देना भी कर्तव्य समझता हूँ कि यहाँ जो कुछ कहा गया है वह गुरुकुल के आचार्य की दीक्षा का प्रभुसंमित आदेश नहीं है। इसी विश्व-विद्यालय के पुराने स्नातक के नाते, भाई के नाते, मित्र के नाते सुहृद्संमित मत व्यक्त कर रहा हूँ। इसी नाते यहाँ बुलाया गया हूँ और इसी नाते यह सब कह रहा हूँ। आपके समक्ष साधुमत, लोकमत, राजनीतिमत, शास्त्रमत का निचोड़ रखने का प्रयास किया गया है। इसमें से आपको जो रुचे उसे शक्ति-सामर्थ्य के अनुरूप अवश्य करें। बाहर जाने-आने का जो मुझ जैसा बहुत कम अभ्यासी हो, उसका अनुकरण न करें। किसी के सुचरित का ही अनुसरण ठीक होता है इतर चरित का नहीं। इसे दीक्षांत भाषण की औपचारिकता की पूर्ति भर न समझें, साहित्यिक उसका अभ्यासी नहीं होता। यह 'हृदय की बात' है, इस पर सहृदयता से, तुमुल कोलाहल से दूर होकर विचार करें।

जय भारत, जय भारती!



पुरस्कारार्थ पुस्तकें भेजने की अन्तिम तिथि १५ मार्च

उत्तरप्रदेश सरकार ने पुरस्कार प्रदान करने के लिए पुस्तक प्राप्त होने की तिथि १५ फरवरी से बढ़ाकर १५ मार्च कर दी है। हिन्दी, संस्कृत और उर्दू की मौलिक रचनाओं के लेखकों और उत्तम अनुवादों पर पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। देश के सभी भागों के लेखक पुरस्कार के लिए अपनी रचनाएँ भेज सकते हैं।

पुरस्कार हेतु पुस्तक प्रकाशन की तिथि, उस पुरस्कार का नाम जिसके लिए पुस्तक भेजी गयी है, तथा लेखक के नाम और पते के विवरण सहित प्रत्येक पुस्तक की आठ प्रतियाँ सचिव, पुरस्कार योजना समिति, शिक्षा 'ग' विभाग, उत्तर-प्रदेश सरकार, विधान भवन, लखनऊ को भेजनी चाहिएँ।

श्री गजानन माधव मुक्तिबोध के सहायतार्थ अपील

गत १ मार्च, १९६४ को काशी के साहित्यकारों की एक सभा हुई, जिसमें मध्य-प्रदेश के प्रसिद्ध मराठीभाषी कवि श्री मुक्तिबोध की अस्वस्थता पर बड़ी चिन्ता प्रगट की गयी तथा निम्न अपील प्रेषित की गयी--

"काशीके साहित्यकारोंकी यह सभा इस सूचनासे अत्यन्त चिन्ता का अनुभव करती है कि प्रसिद्ध कवि और समीक्षक श्री गजानन माधव मुक्तिबोध पर अचानक पक्षाघात का आक्रमण हो गया है और वे अब सर्वथा अशक्त हो गये हैं। मुक्तिबोध जी की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि वे अपनी चिकित्सा की समुचित व्यवस्था कर सकें। ऐसी स्थिति में यह सभा केन्द्रीय तथा हिन्दी-भाषी राज्यों की सरकारों से अनुरोध करती है कि वह कवि की चिकित्सा तथा पारिवारिक भरण-पोषण के लिए यथोचित आर्थिक सहायता की तत्काल व्यवस्था करें।"

१. नामवर सिंह	१२. कमलाप्रसाद सिंह
२. त्रिलोचन शास्त्री	१३. श्याम तिवारी
३. सुधाकर पाण्डेय	१४. रामबली पाण्डेय
४. चन्द्रकुमार	१५. देवेन्द्रनाथ द्विवेदी
५. मोहनलाल गुप्त	१६. श्रीप्रसाद
६. विष्णुचन्द्र शर्मा	१७. राधाविनोद गोस्वामी
७. रमाकान्त	१८. कंचनकुमार
८. विश्वनाथ त्रिपाठी	१९. राजेन्द्रकृष्ण
९. मार्कण्डेय उपाध्याय	२०. रत्नाकर पाण्डेय
१०. गोविन्दसिंह	२१. कृष्णनाथ
११. आनन्देश्वर प्रसाद सिंह	२२. कृष्णबिहारी मिश्र।

साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कार की घोषणा

साहित्य अकादमी ने अग्रांकित ११ विभिन्न भाषा की पुस्तकों को १९६३ के वर्ष में पुरस्कृत होने की घोषणा की है। पुरस्कार का वितरण आगामी १५ मार्च, १९६४ को दिल्लीमें किया जायेगा। १. बँगला घरे फेरार दीन (काव्य), २. अंग्रेजी—दी सरपेंट ऐंड दी रोप, (उपन्यास), ३. गुजराती—शान्त कोलाहल (काव्य), ४. हिन्दी—प्रेमचन्द : कलम का सिपाही (जीवन-चरित्र), ५. मलयालम—विश्वदर्शनम् (काव्य), ६. मराठी—रथचक्र (उपन्यास), ७. उड़िया—कविता १९६२ (काव्य), ८. संस्कृत—हिस्ट्री आफ दी द्वैत स्कूल आफ वेदान्त एंड इट्स लिट्रेचर, (अनुसंधान), ९. तमिल—वेंगाइन मंवान (उपन्यास), १०. तेलुगु—पंडित परमेश्वर शास्त्री वेलुनाय (उपन्यास), ११. उर्दू—आँधी में चिराग (रेखाचित्र)।

स्वीडेन सरकार भारत को पुस्तकें देगी

स्वीडेन की सरकार ने एशिया, अफ्रीका, एवं लैटिन अमेरिका के उन्नतिशील देशों को विज्ञान से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर कुछ पुस्तकें प्रदान करने की घोषणा की है। उन देशों में भारत का भी नाम है। सम्बन्धित पुस्तकें ५०,००० की संख्या में क्रय की जायेंगी एवं सभी १९६० के बाद की मुद्रित होंगी। ●

हमारे लोकप्रिय प्रकाशन

श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियाँ

- **सन्धिनी**
  महादेवी वर्मा — मूल्य : ४.५०
- **हिमालय**
  महादेवी वर्मा — मूल्य : ६.००
- **साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध**
  महादेवी वर्मा — मूल्य : ७.५०
- **प्रसाद, निराला, पन्त, महादेवी की श्रेष्ठ रचनाएँ**
  स० वाचस्पति पाठक — मूल्य : ४.५०
- **हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी**
  नन्ददुलारे वाजपेयी — मूल्य : ६.००

विश्वम्भर 'मानव' के नवीन समीक्षा ग्रन्थ

- **कामायनी की टीका**
  संशोधित छठा संस्करण — मूल्य : ६.५०
- **काव्य का देवता : निराला**
  निराला काव्य का विवेचन — मूल्य : ४.५०
- **हमारे प्रतिनिधि कवि**
  हिन्दी कविताका सम्पूर्ण इतिहास — मूल्य : ६.००
- **प्राचीन कवि**
  कबीर से लेकर घनानन्द तक — मूल्य : ३.००
- **आधुनिक कवि**
  भारतेन्दु से लेकर अज्ञेय तक — मूल्य : ४.००

लोकप्रिय कथा-साहित्य

- **दो एकान्त (उपन्यास)**
  नरेश मेहता — मूल्य : ५.००
- **प्यासी धरती प्यासे लोग (उपन्यास)**
  कृश्नचन्दर — मूल्य : ४.५०
- **फूल की तनहाई (कहानियाँ)**
  कृश्नचन्दर — मूल्य : ३.००
- **ग्राम-सेविका**
  अमरकान्त — मूल्य : ४.५०
- **१२ बंगला श्रेष्ठ कहानियाँ**
  अनुवादिका पुष्पा जैन — मूल्य : ७.५०

कुछ छात्रोपयोगी पुस्तकें

- **भारतीय दर्शन**
  वाचस्पति गैरोला — मूल्य : १०.००
- **मनोविज्ञान का इतिहास**
  डॉ० रामइकबाल पाण्डेय — मूल्य : ८.००
- **भारतवर्ष का सम्पूर्ण इतिसास (दो भाग)**
  श्रीनेत्र पाण्डेय — मूल्य : १३.५०
- **भारतीय धर्म-व्यवस्था**
  वाचस्पति गैरोला — मूल्य : ४.००
- **सात श्रेष्ठ एकांकी**
  स० गंगाप्रसाद पाण्डेय — मूल्य : ३.५०

लोकभारती प्रकाशन

५५-ए महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद–१

हिन्दी प्रचारक कार्यालय, सी० २१/३० पिशाचमोचन, वाराणसी-१ से श्री ओमप्रकाश बेरी द्वारा प्रकाशित एवं विद्या मन्दिर प्रेस (प्राइवेट) लि०, मानमन्दिर, वाराणसी-१ में श्रीकृष्णचन्द्र बेरी द्वारा मुद्रित।

हिन्दी प्रचारक

वर्ष : १२ • अंक : १-२
[मई : १९६४]

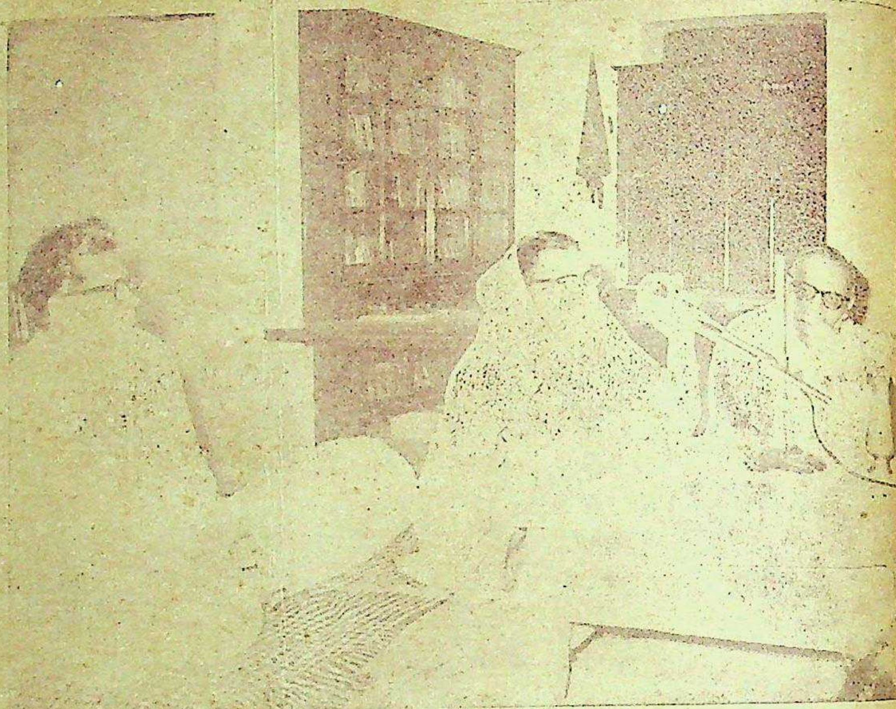


हिन्दी पुस्तक-व्यवसाय का मुख-पत्र

अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ

९ वाँ अधिवेशन, प्रयाग





श्रीमती महादेवी वर्मा लेखक-प्रकाशक गोष्ठी का समापन करते हुए। उनके बायें गोष्ठी के संयोजक श्री ओंकार शरद।





अध्यक्ष श्री ओंप्रकाश अपन अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत कर र हैं। बायें से बैठे श्री वी. पी. ठाकुर, श्री मलिक, श्री कृष्णचन्द्र बेरी, कविवर सुमित्रानन्दन पन्त तथा श्री लक्ष्मीचन्द जैन।



हिन्दी प्रचारक

वर्ष : १२; अंक : १-२

[मासिक]

सम्पादक
श्रीकृष्णचन्द्र बेरी

मई : १९६४

मूल्य
वार्षिक : ३.००
एक प्रति : २५ पैसे

हमारा दायित्व

अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ का नौवाँ वार्षिक अधिवेशन विगत मास प्रयाग में सम्पन्न हो गया। इस अवसर पर आयोजित लेखक-प्रकाशक गोष्ठी के भाषणों तथा सम्मेलन में पारित प्रस्तावों से एक निष्कर्ष स्पष्ट रूप से सामने आया कि शहरों और ग्रामों के पाठकों की पठन-रुचि का अनुशीलन कर स्वस्थ साहित्य का प्रकाशन किया जाय और उसका समुचित रूप से प्रचार-प्रसार हो। राष्ट्रभाषा हो जाने के बाद भी हिन्दी के साहित्यिक प्रकाशनों की बिक्री का आज जो स्वरूप है उसे बहुत उत्साहवर्धक नहीं कहा जा सकता। स्वाधीनतोत्तर काल में शिक्षा के प्रसार के कारण पठन-रुचि बढ़ी ही है, परन्तु हिन्दी के लेखकों और प्रकाशकों के सम्मिलित प्रयत्न के अभाव में इस स्थिति का विशेष लाभ नहीं उठाया जा सका। इसके दो प्रमुख कारण हैं—एक है अधिकांश प्रकाशकों का अपने सामाजिक दायित्व को न समझना और दूसरा, सुधी प्रकाशकों को पुस्तकों के प्रचार-प्रसार में साहित्यकारों तथा शिक्षाविदों का सहयोग न मिलना।

प्रकाशकों के दायित्व के विषय में कहा जा सकता है कि अधिकांश लोग आज भी समय और काल को न समझ पाने के कारण पुस्तक-प्रकाशन के इस पुनीत व्यवसाय को निखालिस बनिये की दूकान समझ बैठे हैं। ऐसे वर्ग को यह ज्ञात ही नहीं है कि तेजी के साथ बढ़ती हुई मानव-प्रगति में उन्हें ज्ञान-प्रसार की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी है। साहित्यकार और समाज, विशेषतः पाठकों के प्रति प्रकाशक एक कड़ी का काम करते हैं। यदि उन्होंने साहित्यकार द्वारा प्रस्तुत जीवन का समुचित मूल्यांकन नहीं किया, तो यह कड़ी एक खाई का रूप ले लेगी। हिन्दी का क्षेत्र जितना बृहत् है उसे देखते हुए हमारे प्रकाशकों की आर्थिक सीमा बहुत ही कम है। बहुत से प्रकाशक इस व्यापकता में आगे बढ़ने की चेष्टा न कर अपना दायरा घोर निजी स्वार्थ तक सीमित कर लेते हैं। उन्हें न तो साहित्यकार के पारिश्रमिक की चिन्ता होती है और न ही समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व का अनुभव। ऐसे ही लोगों ने निष्ठावान् प्रकाशकों के मार्ग में काँटे बिछा दिये हैं। अच्छा हो, ये प्रकाशक समय रहते अपने कर्त्तव्य को समझें और परस्पर सहकारिता का पथ अपनाकर प्रकाशक की सही भूमिका का निर्वाह करें। अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ इस दिशा में सभी प्रकाशकों का सही दिशा-निर्देश कर सकता है।

दो शब्द हमें अपने साहित्यकारों से भी कहने हैं। उन्हें भी प्रकाशकों के महत्त्व को समझना चाहिए। अच्छा हो कि आप अपनी कटु आलोचनाओं से इस अंग को कमजोर न बनायें। साथ ही यह समझने की चेष्टा करें कि प्रकाशकों की क्या-क्या कठिनाइयाँ हैं और आप उनके निवारण में कहाँ तक सहायक हो सकते हैं। राष्ट्रीय पुस्तक-समारोह अथवा अन्य ऐसे आयोजनों में प्रकाशकों को योग दें, जो साहित्य के प्रचार के लिए प्रकाशक-संघ अनुष्ठित करता है। लेखक का सबसे बड़ा योग है समाज के आवश्यकतानुसार साहित्य का सर्जन करना और प्रकाशक का कर्त्तव्य है उसे प्रकाशित कर सर्वसाधारण तक पहुँचाना। इस तरह दोनों ही एक-दूसरे के पूरक हैं। दोनों एक-दूसरे के असहयोगी रह कर नहीं चल सकते। सामान्य बात पर लेखक-प्रकाशक दुराव उचित नहीं है। प्रकाशक को इस व्यवसाय में लेखक को भी एक भागीदार मानना चाहिये। हमारे कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि प्रकाशक के ऊपर प्रकाशन के अतिरिक्त जो प्रचार का व्यय-भार है उसे न गिना जाय, वरन् हमारा स्पष्ट अभिप्राय यह है कि लाभांश में साहित्यकार को उसका उचित अंश रायल्टी के रूप में अवश्य मिलना चाहिए। आज हमारे अधिकांश लेखकों की स्थिति बड़ी ही दयनीय है। इस दिशा में प्रकाशकों को सद्भावना से काम लेना होगा। भगीरथ बनकर साहित्यकार की साहित्य-गंगा को समाज के शुष्क परिवेश में प्रवाहित कराना होगा, जिससे जन-मनोभूमि उर्वरा होकर पुष्पवती और फलवती हो सके।

९ वाँ अधिवेशन प्रयाग में अनुष्ठित

❖ कविवर सुमित्रानन्दन पन्त तथा श्री महादेवी वर्मा के भाषण ❖

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का ९वाँ वार्षिक अधिवेशन २६ और २७ अप्रैल, ६४ को इलाहाबाद में अनुष्ठित हुआ। श्री गिरिधर शुक्ल के मंगलाचरण गान से सम्मेलन की कार्यवाही आरम्भ हुई। स्वागताध्यक्ष के पद से बोलते हुए लीडर प्रेस के जेनरल मैनेजर श्री वी० पी० ठाकुर ने प्रयाग में आगत बन्धुओं का स्वागत किया। अपने भाषण में श्री ठाकुर ने अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के नेट बुक एग्रीमेण्ट की चर्चा की और कहा कि इसे जीवित किया जाना चाहिए। श्री ठाकुर ने कहा कि आज के हमारे प्रकाशन अधिकांशतः ललित साहित्य के हैं। अच्छा हो, हिन्दी के प्रकाशक विज्ञान, तकनीक, कानून आदि विषयों पर भी योजनाबद्ध रूप से प्रकाशन करें।

संघ के प्रधान मंत्री श्री कन्हैयालाल जी मलिक ने १९६३-६४ का वार्षिक लेखा-जोखा उपस्थित करते हुए बताया कि संघ ने दिल्ली में सभी पुस्तकों की उपलब्धि, मार्केट-रिसर्च, हिन्दी में उपलब्ध पुस्तकों का वृहद् सूचीपत्र, सामूहिक विज्ञापन, कागज की समस्या, राष्ट्रीय पुस्तक समारोह, पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण, पुस्तकों के रेलभाड़े में वृद्धि, आदि विषयों पर सम्बन्धित अधिकारियों से लिखा-पढ़ी की है और उपरोक्त कार्यक्रम को पूरा करने की चेष्टा भी संघ की ओर से हुई है। रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए श्री मलिक ने बताया कि संघ के पिछले वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर ऐसी योजना बनाने का प्रस्ताव हुआ था कि हिन्दी-पुस्तकें सर्वत्र सुलभ हों, जिससे उनकी बिक्री बढ़े और पाठकों को भी पुस्तकें प्राप्त करने में असुविधा न हो। सर्वप्रथम दिल्ली में सभी प्रकाशकों की हिन्दी-पुस्तकें उपलब्ध कराने की बात सोची गई। इस संबंध में विभिन्न प्रकाशकों से जो जानकारी कार्यालय को मिली उसकी सूचना 'हिन्दी प्रकाशक' के फरवरी, ४ अंकमें प्रकाशित की गई है।

मार्केट-रिसर्च का कार्य श्री कृष्ण-चन्द्र बेरी की देख-रेख में हो रहा है। जिन शोधार्थी के सहयोग से यह कार्य होना था, उनके साथ एक आकस्मिक दुर्घटना होने से, इसमें विलम्ब हो गया है।

हिन्दी में उपलब्ध पुस्तकों की वृहत सूची की आवश्यक रूप-रेखा तैयार कर ली गई है। यह कार्य काफी बड़ा है और इसके लिए काफी धन की आवश्यकता है। धन के अभाव में, योजना के महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी होते हुए भी, संघ इसे कार्यान्वित नहीं कर सका है। कार्यसमिति ने अपनी बैठक दिनांक ३ मार्च, ६४ में इस कार्य हेतु शिक्षा मंत्रालय से अनुदान प्राप्त करने तथा अनुदान मिल जाने पर इस योजना को अवश्य कार्यान्वित करने का निश्चय किया है।

पुस्तकों की बिक्री की समस्या सम्बन्धी सहकारिता तथा अन्य उपायों के विषय में सदस्यों से प्राप्त सुझावों पर कार्यसमिति ने विचार किया। काफी विचार-विमर्श के उपरान्त निश्चय किया गया कि विक्रय-सहकार की योजना अच्छी है, किन्तु यह कार्य संघ के तत्त्वावधान में न होकर, विभिन्न संस्थानों के समुदायों द्वारा किया जाय।

प्रकाशक संघ की प्रेरणा से १४ से २० नवम्बर, ६३ तक भारत के प्रमुख नगरों में राष्ट्रीय पुस्तक समारोह काफी उत्साह के साथ मनाया गया। प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं के साथ 'प्रतिभासम्पन्न साहित्यिकारों और प्रभावशाली समाचार-पत्रों ने भी इसमें रुचि ली।

इस अवसर पर संघ की ओर से पुस्तकों के पढ़ने, खरीदने और भेंट करने की रुचि को जागृत करने के लिए एक आकर्षक पोस्टर भारत के सभी प्रमुख पुस्तक-विक्रेताओं को छाप कर भेजा गया तथा सार्वजनिक स्थानों पर लगाया गया। इस सिलसिले में हिन्दी के प्रमुख दैनिक पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित कराए गए और सार्वजनिक सभाओं का आयोजन किया गया।

१ अक्तूबर, ६३ से रेलभाड़े में कम-से-कम किराये के सम्बन्ध में की गई वृद्धि का संघ ने विरोध किया और रेलवे-मन्त्रालय के अधिकारियों से भेंट करके, बढ़े हुए रेल-भाड़े से पुस्तक व्यवसाय को होनेवाली हानि और परिणामस्वरूप शिक्षा पर पड़नेवाले कुप्रभाव से अवगत कराया। फलतः यह स्पष्ट हो गया कि २५ क्यूबिक सेंटीमीटर आकार तथा २ किलो वजन तक के बंडलों पर भाड़ा १ रु० ही होगा। पुस्तकों के सभी वजन के बंडलों पर पूर्ववत् रेल-भाड़ा रखने के सम्बन्ध में रेलवे-मन्त्रालय से पत्र-व्यवहार जारी है।

जाली पुस्तकों की समस्या को भी संघ ने उठाया है। संघ की ओर से एक बुकलेट सभी संसद-सदस्यों को

सेवा में भेजा गया है और इस समस्या की ओर उन का ध्यान आकृष्ट किया गया है।

संघ का मुखपत्र 'हिन्दी प्रकाशक' भी नियमित रूप से संघ के सदस्यों और पुस्तक-जगत की सेवा करता रहा है। आर्थिक दृष्टि से भी यह आत्म-निर्भर रहा है। संघ पर इस का कोई भार नहीं पड़ा। इस वर्ष में इसके दो विशेषांक क्रमशः 'राष्ट्रीय पुस्तक समारोह विशेषांक' और 'सन् १९६३ के हिन्दी-साहित्य का परिचय' विशेषांक प्रकाशित किये गये हैं। इस की उपयोगिता का अनुभव तो आप स्वयं ही करते होंगे। मुझे इस विषय में कहने की आवश्यकता नहीं।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कविवर सुमित्रानन्दन पन्त ने कहा कि लेखक भूमि में बीज बोते हैं और प्रकाशक खेती करते हैं, जिससे उत्पादन होता है। पन्तजी ने कहा कि प्रकाशक संघ कोरी व्यावसायिक संस्था ही नहीं है, उसके कुछ और कर्तव्य भी हैं। प्रकाशक संघ को इस बात का अनुशीलन करना चाहिए कि पाठकों की रुचि क्या है? प्रकाशन व्यवसाय की वैज्ञानिक स्तर से खोज भी होनी चाहिये। आज जब कि भारत में अन्य भाषाओं के पाठक ज्यादा हैं, तो क्या वजह है कि प्रकाशक संघ ऐसा परिवेश नहीं तयार करता, जो हिन्दी के पाठकों तक हिन्दी-साहित्य को पहुँचाये। पन्तजी ने कहा, मेरा पूरा विश्वास है कि हिन्दी में पाठकों की कमी नहीं है और यह खोज प्रकाशक संघ का राष्ट्रीय कर्त्तव्य माना जायेगा। आवश्यकता इस बात की है कि हम ग्रामों में भी काम करें और ग्रामीणों की साहित्य पठन की रुचि देखें। आज का युग निर्माण का युग है, साहित्य की खपत इस युग में होनी चाहिए। वस्तुस्थिति यह है कि जनता की माँग की पूर्ति करने में प्रकाशक और लेखक दोनों असफल रहे हैं। हमें नगरों के साथ-साथ छोटे-छोटे कसबों की आवश्यकता पर ध्यान देना होगा। स्त्री और बाल-साहित्य का निर्माण अपने देश की क्षमता के अनुकूल करना चाहिए। लेखक और प्रकाशक दोनों ही मिलकर समाज के लिए उपयोगी साहित्य प्रस्तुत करें, पुस्तकों द्वारा नया पथ दिखायें, ताकि निष्क्रिय जनता को राहत मिले।

पुराने ग्रन्थों के अच्छे संस्करण प्रस्तुत करने की चर्चा करते हुए पन्त जी ने परामर्श दिया कि प्रकाशक सामूहिक रूप से इस दिशा में काम करें। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि विषयों का क्षेत्र निर्धारित कर लिया जाय और प्रत्येक प्रकाशक अपने-अपने क्षेत्र में किसी विषय-विशेष को स्पेशलाइज करे, इससे स्पर्धा में कमी होगी।

हिन्दी पत्रिकाओं की दयनीय दशा पर बोलते हुए उन्होंने बताया कि हम सामाजिक प्राणी के रूप में दुर्बल हो गये हैं और यही वजह है कि हमारी पत्रिकाओं के ग्राहक उतने नहीं हैं, जितने होने चाहिएँ। सोयी हुई वास्तविकता को हमें जगाना होगा। प्रकाशक राष्ट्रीय हित में अग्रणी हों। उन्हें चाहिए कि वे पुस्तकों के प्रचार-प्रसार के लिए ऐसी वैज्ञानिक प्रणाली खोज निकालें, जो साहित्य को जनमानस के समीप ला दे। विदेशी अनुवादों से बचने के लिए अपना सुझाव उपस्थित करते हुए उन्होंने बताया कि हम लोगों को लेखकों का ऐसा बोर्ड बनाना चाहिये, जो यह सुझाव दे कि किन पुस्तकों के अनुवाद हमारे देश में होने चाहिएँ। पन्तजी ने आगे चलकर कहा कि लेखकों और प्रकाशकों को एक मैत्रीपूर्ण संगठन बनाना चाहिए। इस संगठन के अभाव में प्रवृत्ति में विकृतियाँ आ रही हैं और आगे के दस साल तक यदि हम न चेते, तो गजब हो जायेगा। लेखकों और प्रकाशकों को आत्मबलपूर्ण संगठन का निर्माण करना चाहिए और अपनी संस्कृति को सम्हालना चाहिए। लेखक उपयोगी सामग्री दें और प्रकाशक देश के लिए उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित कर समाज का कल्याण करें।

अध्यक्ष-पद से बोलते हुए राजकमल प्रकाशन के श्री ओंप्रकाश ने विभिन्न प्रकाशकीय समस्याओं को उपस्थित किया और इस बात पर जोर दिया कि प्रकाशक आज के युग में अपना कर्तव्य समझें और समय के साथ चलें। श्री ओंप्रकाश का भाषण इस अंक में पृ. ५ पर पढ़ें।

पं० वाचस्पति पाठक ने संघ की ओर से पन्तजी और अन्य आगत व्यक्तियों को धन्यवाद दिया।

लेखक-प्रकाशक गोष्ठी

दूसरे दिन २७ अप्रैल को हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग के भवन में लेखक-प्रकाशक सम्बन्ध पर एक गोष्ठी श्रीमती महादेवी वर्मा के सभापतित्व में हुई। गोष्ठी का शुभारम्भ करते हुए प्रयाग विश्वविद्यालय के डॉ० रघुवंश ने कहा कि लेखन और प्रकाशन दोनों ही आज के युग में एक पेशा हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि प्रकाशकों को बाजार की माँग पर ध्यान देने के बजाय स्वस्थ साहित्य प्रस्तुत कर अपने कर्तव्य का निर्वाह करना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि आज का प्रकाशन-व्यवसाय मनोवैज्ञानिक रूप से विकसित नहीं हो पा रहा है और आज का प्रकाशक घुमावदार चक्करों से पुस्तकें बेचता है, जो कि अनुचित है। डॉ० एहतिशाम हुसैन ने कहा कि लेखक प्रकाशक-सम्बन्ध बहुत ही जटिल है। उनकी यह भी शिकायत थी कि प्रकाशक कापीराइट पर पुस्तकें ले लेते हैं। उन्होंने कहा कि यदि पुस्तकों की बिक्री अधिक है, तो लेखक कम रायल्टी भी स्वीकार करने में सहमत हो सकते हैं। आलोचकों के विषय में कहते हुए डॉ० हुसैन ने कहा कि यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक आलोचक पुस्तकों के संबंध में सही-सही आलोचना कर सके।

प्रकाशकों का पक्ष उपस्थित करते हुए श्री कृष्णचन्द्र बेरी ने कहा कि प्रकाशकों की नित्यप्रति निन्दा करने की प्रवृत्ति साहित्य के प्रचार-प्रसार में बाधक है। यदि ऐसा होता रहा, तो जो कतिपय अच्छे प्रकाशक इस क्षेत्र में हैं, उन्हें निरुत्साहित होना पड़ेगा। स्वाधीनतापूर्व के प्रकाशनों का इतिहास उपस्थित करते हुए श्री बेरी ने बताया कि उस युग में लेखक और प्रकाशक के सम्बन्ध बहुत ही अच्छे थे। वे दोनों ही साहित्य का सृजन और प्रकाशन सेवा की भावना से करते थे और जो कटुता आज देखने में आ रही है वह भौतिकवादी युग की देन है। इसका मूल कारण है आर्थिक संक्रमण के कारण साहित्यिक पुस्तकों की बिक्री में कमी, जिससे लेखकों को रायल्टी से अपेक्षित आय नहीं होती। श्री बेरी ने कहा कि लेखक को हर हालत में रायल्टी मिलनी चाहिए और प्रकाशकों को कम दामों में खरीदे हुए कापीराइट लेखकों को वापस कर देने चाहिएँ।

प्रयाग के सुप्रसिद्ध लेखक श्री-कृष्णदास ने कहा कि कभी-कभी प्रकाशकों को लेखकों के व्यवहार से कष्ट भी पहुँचता है। आपसी सहयोग से ही साहित्य का कार्य आगे बढ़ सकता है। लेखकों को उन का प्राप्य मिलना चाहिए और उन्हें कापीराइट किसी भी अवस्था में नहीं बेचना चाहिए। सरकार के पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण के औचित्य को ठीक बताते हुए उन्होंने यह मत व्यक्त किया कि छात्रों का लाभ इसी में है।

श्री हंसकुमार तिवारी ने अपना मत व्यक्त करते हुए कहा कि जब प्रकाशक और लेखक अपनी समस्याओं पर विचार करने के लिए एक जगह बैठ गये हैं, तो हमें इसे शुभ लक्षण मानना चाहिए। दोनों को पोषक होना चाहिए, शोषक नहीं। अच्छी पुस्तकों का प्रकाशन राष्ट्र के हित में होना चाहिए और यह तभी सम्भव है, जब लेखक और प्रकाशक सहानुभूतिपूर्वक काम करें।

श्री उपेन्द्रनाथ 'अश्क' ने पुस्तक-विक्रेताओं को अधिक कमीशन देने की

[शेष पृष्ठ २३ पर]

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ

९वाँ वार्षिक अधिवेशन

अध्यक्ष : श्री ओंप्रकाश का भाषण

माननीय पंत जी तथा बंधुओ,

प्रकाशन-जगत् की गतिविधियों का वार्षिक लेखा-जोखा देखने-जाँचने के लिए प्रतिवर्ष हम एक जगह एकत्रित होते हैं और उसी उद्देश्य से एक बार फिर मिल रहे हैं। यदि ऐसे अवसरों का उपयोग औपचारिक रूप से अनेकानेक प्रस्ताव स्वीकृत करने और कुछ जोशीले नारे लगाने के बजाय हम मिलकर अपने व्यवसाय की वस्तुस्थिति का सूक्ष्म निरीक्षण करने में किया करते तो अधिक लाभ होता।

प्रकाशन : एक सोद्देश्य व्यवसाय और टेक्नॉलोजी का प्रभाव

बहुत बार दोहराया जा चुका है कि प्रकाशन अनेक अन्य व्यवसायों की तरह केवल व्यवसाय ही नहीं है। यह एक ऐसा व्यवसाय है, जो समाज के लिए परम उपयोगी है, जिसका समाज पर प्रभाव पड़ता है। यह एक सोद्देश्य व्यवसाय है। समाज के प्रति अपने दायित्व को समझने वाला प्रकाशक नैतिक रूप से स्वयं अपने लिए यह व्यावसायिक सीमाएँ निर्धारित कर लेता है।

हमारे देश में उद्योगीकरण की प्रक्रिया जारी हो चुकी है। मुद्रण के क्षेत्र में अभी तक यह प्रक्रिया सीमित है। यहाँ का प्रकाशन-व्यवसाय भी अभी सुविकसित नहीं कहा जा सकता। शिक्षा, पुस्तकों के पठन-पाठन में रुचि और उपयुक्त क्रय-क्षमता के अभाव में हमारा प्रकाशन-व्यवसाय, पश्चिम की तरह, अभी बड़े व्यवसायों की गिनती में नहीं आ सका। लेकिन छपा हुआ अक्षर पढ़ने की क्षमता शिक्षा के प्रचार के साथ नए-नए वर्गों में पैदा हो रही है; देश के नेताओं के वक्तव्य सही मान लिए जाएँ, तो इन वर्गों की क्रय-क्षमता में भी एक-दो आगामी पंचवर्षीय योजनाओं की पूर्ति के बाद काफी वृद्धि हो जायगी। यदि इस बीच जनता की रुचि पुस्तकों के पढ़ने की ओर बढ़ी, तो पुस्तक की माँग में बहुत वृद्धि होनी चाहिए, और वे किस प्रकार की पुस्तकें पढ़ेंगे, यह एक हद तक हम प्रकाशकों पर निर्भर करेगा कि हम किस प्रकार की पुस्तकें छाप कर उनके लिए सुलभ

करते हैं। तब यह परखने का अवसर आयगा कि प्रकाशन हमारे लिए व्यक्तिगत लाभ का माध्यम मात्र ही है या एक सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने का महत्त्वपूर्ण माध्यम भी।

देश में प्रकाशन के दो पहलू

आज भी, समय की परिस्थितिजनित सीमाओं में, सभी प्रकार का प्रकाशन देश में हो रहा है। जहाँ अपने व्यवसाय को एक दायित्व समझने वाले प्रकाशक हैं, वहाँ उस के केवल व्यावसायिक पक्ष को देख कर, विकृतियाँ उभारनेवाली पुस्तकों को प्रकाशित करनेवालों की संख्या में भी कमी नहीं है। सच तो यह है कि सत्साहित्य का प्रचार-प्रसार मानव-व्यक्तित्व को पस्त, विकृत और पंगु बनानेवाले साहित्य की अपेक्षा कहीं कम है। ... अहानिकर मनोरंजन करनेवाले साहित्य क़ी ही बात होती तो ठीक था, लेकिन यहाँ तो उस साहित्य का अधिक बोलबाला है, जो विकृतियों को सहने की आड़ में विकृतियों को उभारता है और व्यक्ति के दृष्टिकोण को असामाजिक बनाता है। प्रकाशनों में केवल नंगी अश्लीलता न हो तो प्रकाशक को आज इस हद तक 'स्वतंत्रता' है कि वह समाज की स्वस्थ परंपराओं को चुनौती देने वाले साहित्य को छापे; अपराध और यौन-भूख को उत्तेजित करनेवाले सस्ते प्रकाशन निकाले और समाज की नींव प्रत्येक व्यक्ति के जिस नैतिक और स्वस्थ दृष्टिकोण पर निर्भर होती है उसे उखाड़ने में, चाहे अनजाने ... रहे। जिस विचार और व्यवहार की 'स्वतंत्रता' के लिए देश-देश के लोग महान् से महान् बलिदान देने के लिए प्रेरित रहते हैं, वहीं 'स्वतंत्रता' अर्थ-विकृति और दृष्टिकोणहीनता के कारण आज खतरा भी बन रही है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी और हिन्दी के प्रकाशकों का कर्त्तव्य

हिन्दी के राज्यभाषा पद पा लेने के बाद से हिन्दी-प्रकाशकों का दायित्व एक विशिष्ट दिशा में बहुत बढ़ गया है। राज्यभाषा होने के नाते हिन्दी में केवल ललित साहित्य ही नहीं, विभिन्न प्रकार के मानविकी, शास्त्रीय, वैज्ञानिक, तकनीकी और रचनात्मक साहित्य के प्रचुर भंडार की आवश्यकता है। न केवल विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों और

प्राध्यापकों के लिए सभी विषयों की पाठ्य और सन्दर्भ पुस्तकों की बड़ी संख्या में जरूरत है वरन् इन विषयों की जनरल पुस्तकों की भी, जिन्हें कि विद्यार्थी इनके गूढ़तर ज्ञान के लिए चाहें तो प्रयोग कर सकें। यह मान लेने में संकोच नहीं होना चाहिए कि विज्ञान और तकनीक की शिक्षा के लिए ही नहीं, मानविकी शिक्षा के लिए भी हिन्दी में प्रामाणिक ग्रन्थों की कमी है। अंग्रेजों से दो-सौ वर्षों के घनिष्ठ सम्पर्क की विरासत का आज भी प्रभाव है, और हम अंग्रेजी में सोचते-समझते, पढ़ना-पढ़ाते हैं। यह निर्विवाद सत्य है कि किसी भी देश की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और विकास अपनी ही भाषा के माध्यम से हो सकता है। देश की केवल राज्यभाषा के रूप में ही चाहे हिन्दी प्रतिष्ठित हो सके; पर वह देश के एक बड़े अंश की मातृभाषा भी है। अभी तक लगभग २० करोड़ के इस प्रदेश के नागरिकों के लिए भी हिन्दी के माध्यम से उच्चतर शिक्षा की व्यवस्था नहीं हो सकी है। इस असफलता के लिए एक हद तक जिम्मेवारी हिन्दी के प्रकाशकों पर भी है, जो पिछले २० वर्ष में [illegible] प्रकाशनों की दिशा का रुख अधिक नहीं मोड़ सके। आज भी हिन्दी के प्रकाशक अधिकांश में उपन्यास, कहानी, नाटक और कविता छाप कर संतोष कर रहे हैं। यदि उन्होंने गत वर्षों में अपनी पूँजी और समय का उपयोग हिन्दी पर आए हुए नए दायित्व की पूर्ति में सहायक हो सकनेवाले साहित्य के प्रकाशन में भी किया होता, तो हिन्दी उस निरीह स्थिति में नहीं होती जिसमें कि आज वह है। देश में अंग्रेजी ही शिक्षा का माध्यम बनी रहे, इस ओर केवल हमारे

देश के कुछ अहिन्दी-भाषी प्रदेश ही प्रयत्नशील नहीं हैं, कुछ अंतर्राष्ट्रीय शक्तियाँ भी हैं, जो सांस्कृतिक दृष्टि से हमें अंग्रेजी भाषा का गुलाम बनाकर रखना चाहती हैं। इस सांस्कृतिक गुलामी की पृष्ठभूमि में राजनीतिक स्वाधीनता भी बहुत हद तक सार्थक नहीं रह जाती। इस तर्क में कोई सार नहीं है कि विज्ञान और तकनीकी शिक्षा के लिए अंग्रेजी का देश में बना रहना आवश्यक है। विश्व के सब स्वतंत्र देश, जिनकी मातृभाषा अंग्रेजी नहीं है, उच्चतर शिक्षा के लिए अपनी मातृभाषा का ही उपयोग करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क के लिए भी देश में विश्व की एक या दो भाषाओं का सीखना आवश्यक होता है; अंग्रेजी की शिक्षा को इसी देश में केवल इस रूप में लिया जा सकता है।

अंग्रेजी में सस्ती पाठ्य-पुस्तकें

इस प्रसंग में एक बात ध्यान देने योग्य है। देश में अंग्रेजी का प्रभुत्व बना रहे, इसलिए इंगलैण्ड और अमरीका की सरकारें लाखों रुपयों की आर्थिक सहायता देकर अपने देश के अथवा खुद भारत के प्रकाशकों से विश्वविद्यालयों में प्रयोग के योग्य पाठ्य-पुस्तकों को भारी संख्या में और बहुत कम दामों में प्रकाशित और प्रचारित करवा रही हैं। यह नीति हिन्दी के प्रचार-प्रसार की वैधानिक और सरकारी नीति के एकदम विरोध में है और शायद उसे ही परास्त करने की दृष्टि से अपनाई गई है। अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के लिए उचित है कि विदेशी सहायता प्राप्त अंग्रेजी की पाठ्य-पुस्तकों के प्रश्न पर विचार करे और अपना मंतव्य सरकार तक पहुँचाए।

हिन्दी पाठ्य-पुस्तकों के लिए सरकारी सहायता

साथ ही एक प्रश्न उठता है। विदेशी सरकारें अंग्रेजी में छपी अपनी पाठ्य-पुस्तकें भारत के विद्यार्थियों के लिए सस्ते दामों में सुलभ करने को इतनी आतुर दिखाई पड़ती हैं; पर भारत की सरकार की क्यों कोई ऐसी ही नीति नहीं है? क्यों भारत का शिक्षा-मंत्रालय अनुदान की कोई ऐसी योजना नहीं बनाता कि विद्यार्थियों को हिंदी में प्रकाशित विभिन्न विषयों की पाठ्य-पुस्तकें कम दामों में उपलब्ध हो सकें?

यदि सरकार को यह अभीष्ट है कि देश के विद्यार्थियों और पाठकों को सस्ते दामों में पुस्तकें मिलें, तो कोई ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि प्रकाशकों द्वारा खरीदे गए कागज पर लगा उत्पादन-शुल्क उन्हें वापिस मिल जाया करे। कच्चे माल के दामों में लगातार वृद्धि होते रहने पर पुस्तकों का मूल्य किस प्रकार कम हो सकता है? और जब तक पुस्तकों का मूल्य कम न हो, देश की कम क्रय-क्षमता की जनता किस प्रकार उन्हें खरीद सकती है?

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय और वैज्ञानिक पुस्तकें

प्रकाशकों के सहयोग से हिन्दी में विभिन्न विषयों के प्रकाशन छापने की एक इसी प्रकार की योजना शिक्षा मंत्रालय के केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की भी है, लेकिन कई वर्षों से यह योजना अधिकांशतः कागजी उल्लेख तक सीमित रही है, कार्यान्वित नहीं हो सकी है। सरकारी काम-काज फाइलों और लाल फीताशाही से इतना ग्रसित है कि कोई, काम आगे नहीं बढ़ पाता; उद्देश्य नीति, कथ्य और व्यवहार में कहीं सामंजस्य नहीं हो पाता। यदि सरकार चाहे तो हिन्दी में उस साहित्य के प्रकाशन को, जिसके प्रकाशन के लिए अपने दामों के अनुसार वह चिंतित् और उत्सुक है, बहुत प्रोत्साहन मिल सकता है। पुस्तकालयों को पुस्तकें खरीदने के लिए केन्द्रीय कोष से लाखों रुपयों का अनुदान प्रतिवर्ष दिया जाता है। यदि ऐसा संकेत भर कर दिया जाता कि इस अनुदान का एक निश्चित भाग एक विशिष्ट प्रकार की पुस्तकें खरीदने में ही प्रयुक्त हो सकता है, तो शीघ्र ही वैसी पुस्तकें प्रकाशित होने लगेंगी। लेकिन नीति और नारा तो यह है कि हिन्दी के राष्ट्रभाषा और विश्वविद्यालयों की शिक्षा के लिए आवश्यक और वांछित साहित्य को प्रोत्साहन दिया जाय, आज के वैज्ञानिक और तकनीकी युग के अनुकूल वातावरण बनानेवाली पुस्तकें देश में छपें; लेकिन सरकारी अनुदान के उपयोग का जब वक्त आता है, तो उस नीति को व्यवहार में अपनाया नहीं जाता।

जनरल पुस्तकों की कम बिक्री

यह सर्वविदित है कि जिन्हें जनरल प्रकाशन कहा जाता है, उनकी व्यावसायिक सफलता कठिनसाध्य होती है। हिन्दी के प्रकाशक जनरल पुस्तकों के प्रथम संस्करणों की कभी एक हजार प्रतियाँ छापते थे और अब वे चाहे दो हजार प्रतियाँ छापें या तीन हजार, इनकी बिक्री में पिछले वर्षों में अधिक वृद्धि नहीं हुई है। पहले वर्ष औसत लेखक की किसी पुस्तक की औसत बिक्री पाँच-सात सौ, आठ सौ प्रतियों की ही होती है, बाद के वर्षों में यह औसत दो-तीन सौ या चार सौ प्रतियों की रह जाती है। सौ पुस्तकों में दस पुस्तकें भी मुश्किल से ऐसी छपती होंगी जिनकी बिक्री पहले वर्ष एक हजार या इससे अधिक प्रतियों की हो सकती है और बाद के वर्षों में पाँच-सात सौ

[शेष पृ. १८ पर]

राजस्थान में पुस्तक-चुनाव में धाँधली

श्री रामदत्त थानवी

उत्तर भारत में राजस्थान ही एक ऐसा प्रान्त है जहाँ पर पुस्तकों का साग-सब्जी की तरह चुनाव किया जाता है और साहित्य के सर्जनों के ज्ञान-विज्ञान के प्रति मखौल की जाती है। वस्तुतः जिन वस्तुओं के चुनाव की अपेक्षा है उनके चुनाव का काम तो विभाजित हो चुका है, जैसे—फरनीचर, ताले, अलमारियाँ, खेल-कूद का सामान तथा नक्शे व चार्ट प्रभृति। परन्तु यहाँ ध्यान रखने की बात तो यह है कि इन वस्तुओं का मूल्य निश्चित ही नहीं होता और इनके एक ही प्रकार पर अलग-अलग जिले या प्रमण्डल में अलग-अलग मूल्य निर्धारित तथा स्वीकृत होते हैं। इतना ही नहीं, इन वस्तुओं की स्वीकृति उपसंचालक शिक्षा-विभाग राजस्थान द्वारा न होकर विभिन्न जिलों के निरीक्षक शिक्षालय द्वारा ही दी जाती है। कहने का तात्पर्य यह है कि जिन वस्तुओं का दाम ही निश्चित नहीं हो, जिसके निर्माण में गड़बड़ी हो सकती है, जिसके क्रय-विक्रय में सरकार में भ्रष्टाचार बढ़ने की सम्भावना है, उन्हें स्वीकृत शिक्षा-विभाग ही करे। वे तो बन्धनमुक्त हैं और पुस्तकें जो छपे मूल्य पर ही बेची जा सकती हैं, लेखकों की उत्कृष्ट रचनाएँ होती हैं और जिनका कमीशन भी निश्चित है, उनकी स्वीकृति का बन्धन ही न्याय-संगत नहीं।

अब जिस गति से पुस्तकों की स्वीकृति राजस्थान सरकार में होती है वह भी हास्यास्पद ही है। प्रत्येक प्रकाशक को अपने प्रकाशन की प्रत्येक पुस्तक की पहले तीन-तीन प्रतियाँ भेजनी पड़ती थीं अब चार-चार प्रतियाँ संचालक, समाज-शिक्षा विभाग को भेजनी होती हैं। कमीशन-दर व सरकारी संस्थाओं में पुस्तकें भिजवाने की शर्तें भी लिखित भेजनी पड़ती हैं। इतना काम प्रकाशक को करना पड़ता है और प्रकाशकों को पुस्तकें बेचने की गर्ज है, अतः यह काम शीघ्रतम और त्रुटिरहित होता ही है, परन्तु सरकार क्या करती है वह देखने योग्य है। नियमानुसार तो सब ठीक है, व्यवहार में जो हो रहा है उसका नग्न चित्र यह है—पुस्तकों की पार्सल जो भेजी जाती है उसकी प्राप्ति की रसीद प्रकाशक को मिल जाती है, लेकिन इसके बाद उनकी पुस्तकों का क्या होता है?

कहते हैं कि सरकार द्वारा पुस्तक-चयन-उपसमिति बनाई गई है जो पुस्तकों के प्रकाशन-सौन्दर्य, पाठ्य-सामग्री और मूल्य पर विचार कर अपनी राय उप-संचालक को प्रेषित करती है और उन सुझावों के अनुसार पुस्तकों की स्वीकृति होती है तथा स्वीकृत पुस्तकों की तालिका उप-संचालक द्वारा प्रकाशित की जाती है। होता क्या है कि भेजी गई प्रकाशनों की पुस्तकें एक आय का स्रोत बन गई हैं और ऐसी कई पुस्तकों को बाजार में बिकते देखा गया है जिन पर स्पेसीमेन या नमूना की छाप लगी रहती है। जो अच्छे लेखकों की रचनाएँ हैं, उपसंचालक समाज-शिक्षा-विभाग की स्वीकृत तालिका में उनका नाम तक नहीं आता। इतना ही नहीं, कुछ हद तक पुस्तकें स्वीकृत करवाने के

सांस्कृतिक जागरण, साहित्यिक विकास-उन्नयन और

राष्ट्रीय ऐक्य एवं राष्ट्र-प्रतिष्ठा की साधिका

एवं

भारतीय भाषाओं की सर्वोत्कृष्ट सर्जनात्मक साहित्यिक कृति पर प्रतिवर्ष एक लाख रुपये पुरस्कार-योजना प्रवर्तिका

भारतीय ज्ञानपीठ

के

दो अनूठे, नयनाभिराम, कलात्मक प्रकाशन

परिणय-गीतिका

✤

- विवाह के विभिन्न अवसरों पर गाये जानेवाले गीतों का अपूर्व संकलन । पर ये गीत न प्रचलित गीतों जैसे हैं न निरे साधारण ही, ये गीत विशेष हैं ।
- इनमें एक ओर लोक-गीतों की मधुरता और मोहकता महकती मिलेगी, तो दूसरी ओर साहित्यिक सुषमा और काव्य का रस । परम्पराओं और भावनाओं के साथ आज की चेतना और काव्य का नया रस इनमें आ रमा है ।
- साथ ही, विवाह सम्बन्धी विभिन्न रसमों की संक्षिप्त जानकारी भी दे दी गयी है और प्रत्येक गीत की भरसक व्यवस्थित स्वरलिपि भी ।
- भारतीय ज्ञानपीठ का यह प्रकाशन साहित्य में अपने प्रकार की सर्वप्रथम कृति है : रुचिर, कलात्मक, उपयोगी । उपहार में देने-लेने योग्य ! घर-घर में प्रति होना आवश्यक !!

मूल्य : ५.००

शैशवांकन

✤

- शिशु के जन्मोत्सव पर होनेवाले आयोजनों की शोभा स्मरणीय होती है । बाल-विकास का प्रत्येक चरण विस्मयकर है ।
- इन आयोजनों की स्मृति को और शिशु की विकास-प्रगति को मोहक तथा कलात्मक ढंग से अंकित करके सुरक्षित रखने की इच्छा प्रत्येक माता-पिता के लिए स्वाभाविक है ।
- इन प्रयोजनों के लिए अभी विदेशी जीवन-पद्धति पर रचित अंगरेजी की 'बेबी बुक' का व्यवहार होता है । भारतीय ज्ञानपीठ को गर्व है कि इस कलात्मक प्रकाशन के द्वारा वह इस अभाव की पूर्ति कर रहा है ।
- शैशवांकन में जन्मोत्सव से सम्बन्धित अवसरों का तथा शिशु की उत्तरोत्तर प्रगति का लेखा आयोजित है । 'शैशवांकन' मधुर स्मृतियों एवं उपयोगी तथ्यों के संरक्षण के लिए तथा स्नेह-आशीष की अभिव्यक्ति के लिए सर्वथा नया और प्रतिकर उपहार है ।
- अपने शिशु के लिए स्वयं बरतें । और जो आपके अपने हैं, उन्हें उपयोग करने के लिए भेंट करें ।

मूल्य : १२.००

अपने यहाँ के अच्छे पुस्तक-विक्रेता से प्रतियाँ प्राप्त करें अथवा किसी निम्न स्थान से मँगायें

भारतीय  ज्ञानपीठ

प्रधान कार्यालय : ९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७

विक्रय-केन्द्र : ३६२०/२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली

टेलीफोन : कलकत्ता-[illegible] : टेलीफोन : दिल्ली–२७२५८२

लिए प्रच्छन्न रूप से दबाव तक डाला जाता देखा गया है। ऐसा करने पर पुस्तकों का चयन ही नहीं होता और वे सीधी स्वीकृत तालिका में आ जाती हैं, जिससे सरकारी नीति को धक्का लगता है। पुस्तकों की स्वीकृति में समय इतना अधिक लगता है कि स्वीकृत पुस्तकें कम-से-कम एक वर्ष की पुरानी हो जाती हैं और जब सरकारी पुस्तक खरीद का समय आता है तब उत्कृष्ट पुस्तकें हजारों की संख्या में बाजार में विक्रयार्थ होती हैं, जो नवीनतम होती हैं।

प्रश्न यह उठता है कि पुस्तकों का प्रेषण, चयन, स्वीकारोक्ति और विक्रय स्वीकृत तालिका का यह अभिनय क्या है? हजारों-लाखों रुपयों की पुस्तकों का अनैतिकता से विक्रय, उत्कृष्ट एवं प्रसिद्ध साहित्यकारों की रचनाओं पर साधारण स्तरीय विभागाधिकारियों द्वारा अच्छे या बुरे का निर्णय देना कहाँ तक उचित है, समिति के निर्माण के बिना ही सुलेख कापियाँ, कुञ्जियाँ, पाठ्य-पुस्तकों के पुराने संस्करणों की स्वीकृति किस न्याय की ओर इंगित करती है और इतना लम्बा समय लगाकर नवीन प्रकाशनों के महत्त्व को घटाकर उन्हें स्वीकृति देना किस कार्यक्षमता का उदाहरण प्रस्तुत करता है?

यह राजस्थान सरकार को भी सोचने की बात है कि पुस्तकों के साथ ही ऐसा भद्दा व्यवहार क्यों? केवल इनकी स्वीकृति ही उपसंचालक समाज शिक्षा विभाग राजस्थान क्यों करते हैं, जबकि अन्य क्रयोचित वस्तुएँ बन्धन-मुक्त हैं? साहित्यकारों का इस तरह अपमान क्यों किया जाता है? इतना ही नहीं, इससे भी ज्यादा चुभने वाली बात राजस्थान सरकार शिक्षा विभाग की पुस्तक-खरीद नीति की है, और वह है प्रकाशकों से कमीशन माँगकर उन्हें स्वीकृत कर, कमीशन की तालिका सभी शिक्षण-संस्थानों में भिजवाकर भी विभिन्न शिक्षा-अधिकारियों को यह आदेश देना कि वे स्वीकृत कमीशन-दर पर भी सात पुस्तक-विक्रेताओं से और टेण्डर माँगें और संचालक द्वारा स्वीकृत कमीशन पर और अधिक कमीशन माँग कर पुस्तकें खरीदें!

यह तमाशा क्या है? पुस्तकें—साहित्य, हिन्दी वाङ्मय का अमूल्य भण्डार, राष्ट्रभाषा की समृद्धि और शिक्षा का मूलाधार—उसके प्रति यह अनैतिकता और उसकी छीछालेदर राष्ट्रभारती रूपी द्रौपदी के राजस्थान शिक्षा-विभाग रूपी राज्य दरबार में चीरहरण के सिवाय क्या है? आवश्यकता है इसको रोकने की, साहित्यश्री की लज्जा बचाने की। शिक्षा-मन्त्री महोदय महाभारत का सादृश्य ही देखते न रहें, अभी रोकने का प्रयत्न करें। ✤

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

के

कुछ नवीन प्रकाशन

हिन्दी सगुण काव्य की सांस्कृतिक भूमिका डॉ. रामनरेश वर्मा मूल्य ११.००

हिन्दी सगुण काल हिन्दी साहित्य के इतिहास का स्वर्ण-युग माना जाता है। इस ग्रन्थ में सगुण काव्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का बड़े ही पांडित्यपूर्ण ढंग से तटस्थ जिज्ञासा के साथ औचित्यपूर्ण शोध एवं संयोजन किया गया है। सगुण काव्य की आन्तरिक पैठ के लिए पुस्तक अत्यन्त उपयोगी एवं मननीय है।

भारतेन्दु नाट्य-रूपक डॉ. भानुशंकर मेहता मूल्य ३.००

नाटयकला की दृष्टि से यह ग्रन्थ हिन्दी में एक नूतन प्रयोग है। इस प्रयोग में अनेक नए नाटच शिल्पों का विनियोग किया गया है। इसमें भारतेन्दु के जीवन की ऐसी झाँकी दिखाने की चेष्टा की गई है, जिसके द्वारा नाटककार की कला-प्रेरणाओं और साहित्य माध्यम से दिए गए संदेशों का अच्छा आभास मिल जाता है।

रसरतन सं० : डॉ. शिवप्रसाद सिंह मूल्य १०.००

यह ग्रन्थ 'पुहकर' कवि द्वारा कल्पित कथा के आधार पर रचित प्रबन्ध काव्य का सुसम्पादित संस्करण है। यह वही प्रसिद्ध ग्रन्थ है, जिस पर प्रसन्न हो कर बादशाह जहाँगीर ने इसके रचयिता कवि को बन्दीगृह से मुक्त कर दिया था।

गंगालहरी (पद्माकर कृत) सं० : सुधाकर पाण्डेय मूल्य १.२५

यह पुस्तक कई विश्वविद्यालयों के बी० ए० के पाठचक्रम में निर्धारित है। प्रस्तुत पुस्तक में कठिन शब्दों पर पाद-टिप्पणी, अलंकार तथा आरम्भ में भूमिका दे दी गयी है, जिस से छात्रों के लिये यह सुबोध एवं अत्यन्त उपयोगी हो गयी है।

नाटक के तत्व : मनोवैज्ञानिक अध्ययन श्री कमलिनी मेहता मूल्य ३.५०

इस कृति में विदुषी लेखिका ने मनोवैज्ञानिक दृष्टि से नाटक के तत्वों पर प्रकाश डालने का महत्वपूर्ण प्रयत्न किया है। सभी स्थलों पर विषयों का सुग्राह्य एवं मार्मिक विवेचन सरल भाषा में किया गया है एवं पूर्व और पाश्चात्य नाटच मानकों में सामंजस्य स्थापित किया है। पुस्तक नाटचशास्त्र के अध्येता के लिये संग्राह्य है।

हिन्दी विश्वकोश : खंड ३ सा० मूल्य १२.५०; वि० मूल्य १५.००

नागरी प्रचारिणी सभा : काशी



'कृपाराम' प्रणीत

हित-तरंगिनी

सम्पादक : सुधाकर पाण्डेय



डॉ. त्रिभुवन सिंह
एम. ए. पी-एच. डी.

प्रेम और संघर्ष जीव-जगतका अत्यन्त लोकप्रिय विषय रहा है जिसके अभाव में स्थायी सरस साहित्य की कल्पना ही नहीं की जा सकती। नायक और नायिका का अस्तित्व काव्य के अस्तित्व में आने के पूर्व ही विद्यमान था, जिसके आधार पर ही आगे चलकर काव्य की दृढ़भित्ति निर्मित हो सकी। भारतीय साहित्य के प्राचीनतम उपलब्ध ग्रंथों में भी नायक-नायिका अथवा इसके समानार्थी शब्दों का प्रयोग इस तथ्यका प्रमाण है कि मानव-सृष्टि एवं काव्यरचना के आरंभकाल से ही किसी न किसी रूप में मानवहृदय की यह शाश्वतवृत्ति किसी न किसी रूप में जीवित चली आ रही है। संस्कृत के नाट्यशास्त्र और कामशास्त्र जैसे आर्षवचन कहे जाने वाले ग्रंथों में भी नायक-नायिका का अत्यन्त सूक्ष्म एवं मनोवैज्ञानिक वर्णन मिल जाता है। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं देशी भाषाओं से छनकर नायक-नायिका के वर्णन की प्रवृत्ति हिन्दी तक पहुँची है, जिसका चरमोत्कर्ष उत्तर मध्यकाल अथवा रीतिकाल में दिखाई पड़ता है। अपनी कतिपय विशेषताओं के कारण हिन्दी का यह काल अपेक्षाकृत चर्चा का अधिक विषय भी बना, पर अनेक कठिनाइयोंके कारण हिन्दी के इतिहास-लेखक एवं समीक्षक रीतिकालीन काव्य प्रवृत्ति के स्वाभाविक विकासक्रम को प्रस्तुत कर सकने में उदासीन ही रहे। कभी तो वे आचार्य केशव को रीतिकाल का प्रथम आचार्य मानते रहे और कभी चिंतामणि से रीतिकाल का आरंभ, जबकि नवीन प्राप्त सामग्री के आलोक में दोनों ही तथ्यों पर प्रश्नवाची चिह्न लग गया है।

हिन्दी-जगत के सम्मुख अबतक जो सामग्री उपलब्ध है, उसमें कृपाराम कृत हित-तरंगिनी प्राचीनतम है। कृपाराम के पूर्ववर्ती आचार्यों की कृतियों की उपलब्धि न होने के कारण केशव तथा चिन्तामणि से बहुत पहले पायी जाने वाली नायिकाभेद की रचना कृपारामकृत हिततरंगिनी से ही हिन्दी-काव्यशास्त्र का इतिहास-सूत्र जोड़ना सम्भव हो पाता है। रही अखंड परम्परा की बात, वह निश्चित ही कृपाराम के पीछे जाती है। पर वे कौन हैं, इस सम्बन्ध में इतिहास मौन है। 'हित तरंगिनी' में रस, विभाग तथा नारी के भेदोपभेद का अत्यन्त सुलझा हुआ वर्णन है, जिससे आगे चलकर मतिराम जैसे रससिद्ध आचार्य भी किंचित् प्रभावित हुए हैं।

यह खेद और आश्चर्य का विषय रहा है कि आजतक हिन्दी के किसी मर्मज्ञ अन्वेषी विद्वान की दृष्टि 'हित

तरंगिनी' जैसी ऐतिहासिक महत्वसंपन्न कृति की ओर नहीं गई जो निश्चित ही हिन्दी में परम्परा-प्रवर्तन के गौरव की अधिकारिणी है। न जाने क्यों यह अनूठी काव्यसृष्टि पाठकों द्वारा उपेक्षित तथा आलोचकों द्वारा विवादग्रस्त बनी रही। प्रसन्नता का विषय है कि अब यह ऐतिहासिक महत्व की कृति श्री सुधाकर पांडेय द्वारा संपादित होकर हिन्दी-जगत के सम्मुख आ गई है। श्री सुधाकर पांडेय से हिन्दी जगत भली-भाँति परिचित है। यह संपादन वैज्ञानिक तो है ही साथ ही जटिल शब्दों का अर्थ, दुरूह पदावलियों पर पाद-टिप्पणी तथा विवादग्रस्त अंशों का विवेकपूर्ण पाठ संशोधन कर श्री पांडेय ने हिन्दी पाठकों के लिए इस सम्पादन का महत्व बहुत अधिक बढ़ा दिया है। कृपाराम तथा उनकी हित-तरंगिनी का रचना-काल निर्धारण इस सम्पादन का मार्मिक स्थल है, जो हिन्दी के अधिकारी विद्वानों की दृष्टि आकर्षित करके भी विवादास्पद ही रहा। सम्पादक ने प्रस्तावनाभाग में कृपाराम के जीवन काल, उनके निवास तथा रचना के निर्माण की समस्त सम्भावनाओं पर अपेक्षित विचार करने के लिए इतिहास के ग्रंथों का आलोड़न तो किया ही है, अभी तक अप्राप्य हस्तलेखों को भी सूक्ष्म दृष्टि से परखा है। अनेक पूर्ववर्ती आलोचकों की मान्यताओं पर सम्यक् और समानान्तर विचार प्रकट करते हुए इतिहास के प्रामाणिक एवं अकाट्य तथ्यों के आधार पर सम्पादक ने पूर्णतः सिद्ध कर दिया है कि कृपाराम सोलहवीं शती के कवि हैं और उनकी हित तरंगिनी इस काल की रचना है। चाहे जो भी हो, सम्पादक की तथ्यान्वेषिणी और अनुसन्धानपरक दृष्टि से उपलब्ध निष्कर्षों तक पहुँचते-पहुँचते पाठक को इस महत्वपूर्ण रचना की चतुर्दिक प्रामाणिकता पर विश्वास कर लेने की स्थिति आजाती है। अतः श्री पांडेय जी इस कृति के प्रामाणिक सम्पादन एवं मर्मग्राहिणी समीक्षा के लिए धन्यवाद के सहज अधिकारी हैं।



असम राष्ट्र भाषा प्रचार समिति गुवाहाटी का रजत-जयन्ती समारोह

बालेश्वर प्रसाद रैना

महात्मा गांधी के आदेशानुसार सर्वप्रथम बाबा राघवदास ने असम में हिन्दी प्रचार आरम्भ किया था, जिसे वे बाद में बरहज से ही बराबर चलाते रहे। ३ नवम्बर सन्'३८ को 'असम हिन्दी प्रचार समिति' नामक संस्था स्थापित की गई। असम के लोकप्रिय नेता स्व० गोपीनाथ जी बरदलै के आग्रह पर इसी संस्था का नाम अ० रा० प्र० स० रख दिया गया। स्व० बरदलै जी के प्रयत्न के फलस्वरूप इस संस्था को सरकारी वार्षिक वित्तीय अनुदान प्राप्त हुआ और वह क्रमशः उन्नति करती गई। हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु श्री काका कालेलकर, बाबा राघवदास, मोटूरी सत्यनारायण, दादा धर्माधिकारी, श्रीमन्नारायण अग्रवाल के असम भ्रमण से इस संस्था को अधिक बल मिला। सन् '४५ में गांधीजी असम आए और हिन्दी भाषा सम्बन्धी कई समस्याएँ सुलझीं और अप्रैल '४८ तक अ० रा० प्र० स० में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की परीक्षाएँ और उसकी प्रकाशित पुस्तकें असम राज्य में चलती रहीं। अक्टूबर '४८ से अ० रा० प्र० स० की अपनी परीक्षा-योजना कार्यान्वित की गई और अब केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय से अ० रा० प्र० स० की परीक्षाओं को मान्यता प्राप्त हो चुकी है। सन् '४८ में 'अखिल भारतीय हिन्दी परिषद्' की स्थापना होने पर राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार-कार्य को अधिक व्यापक रूप देने के हेतु अ. रा. प्र. स. ने अपने को उससे सम्बद्ध कर लिया और गुवाहाटी में 'हिन्दी विद्यापीठ' की स्थापना की। इस विद्यापीठ के अतिरिक्त असम के पहाड़ और भूयाम में स्वीकृत ११५, मणिपुर में १९, त्रिपुरा में ७ अर्थात् कुल १४१ प्रचार विद्यालय खोले गए हैं। सन् '५० में बरदलैजी का स्वर्गवास होने पर असम के तत्कालीनमुख्य मंत्री श्री विष्णु राम मेधी ने अ० रा० प्र० स० का अध्यक्ष पद ग्रहण कर इसकी और विकास में अपना योग दिया उन्नति सरकार की ओर से एक बीघा जमीन प्राप्त हुई जिस पर अ० रा० प्र० स० का 'राष्ट्रभाषा भवन' स्थापित हुआ। श्री मेधी के मद्रास चले जाने पर

श्री विमलाप्रसाद ने चलिहा असम का मुख्य मंत्री-पद एवं इस समिति का अध्यक्ष पद सँभाला। श्री चलिहा की छत्रछाया में यह समिति तब से उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रही है। अ० रा० प्र० स० ने असम, उर्वसीयम (N. E. F. A.) मणिपुर एवं त्रिपुरा में राष्ट्रभाषा हिन्दीके प्रचार-प्रसार हेतु एक विशाल योजना बनाई है। इसके प्रचारक, प्रचारिकाओं की संख्या ४५१ है। अब तक इसके पाँच समावर्तन समारोह हो चुके हैं।

रजत जयन्ती समारोह

हिन्दी के प्रचार-प्रसार का पुनीत कार्य करते हुए पच्चीस वर्ष पूर्ण होने पर अ० रा० प्र० स० का रजत जयन्ती महोत्सव दिनांक ८-९-१० अप्रैल '६४ को गुवाहाटी में सफलतापूर्वक मनाया गया।'

इस महोत्सव का शुभारंभ ८ अप्रैल ६५ को प्रातःकाल ७ बजे ध्वजोत्तोलन से हुआ। ध्वजोत्तोलन का कार्यक्रम 'एक हृदय हो भारत जननी' के तुमुल घोष के साथ समाप्त होकर प्रातःकाल ८ बजे राष्ट्रभाषा भवन में महात्मा गांधी के तैलचित्र का अनावरण असम के वयोवृद्ध कवि तथा अ० रा० प्र० स० के भूतपूर्व कार्याध्यक्ष श्री नीलमणि फुकन के कर कमलों द्वारा हुआ। प्रातःकाल १० बजे श्री भगवती द्वारा स्मृतिग्रंथ 'प्रकाशन' के बाद १०-३० बजे राष्ट्रभाषा प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ। इस प्रदर्शनी में हिन्दी भाषा-भाषियों से और अधिक सहयोग की अपेक्षा की जाती थी। प्रदर्शनी के संयोजक श्री दत्तात्रेय मिश्र तथा प्रधान सचिव श्री रजनीकान्त चक्रवर्ती के परिश्रम के फलस्वरूप प्रदर्शनी का आयोजन सफल रहा। इसी दिन २ बजे से जयन्ती महोत्सव की मूलसभा का आरंभ हुआ। इस सभा के सभापति थे श्री गोपालजी मेहरोत्रा, मुख्य न्यायाधीश, असम तथा नागालैण्ड उच्च न्यायालय और मुख्य अतिथि थे श्री विष्णु सहाय राज्यपाल, असम तथा नागालैण्ड। इस सभा के उद्बोधनकर्ता श्री हनुमान बक्स कनोई अस्वस्थता के कारण उपस्थित होने में असमर्थ रहे, अतः उनका भाषण पढ़ा गया, जिसमें हिन्दी के समर्थन और अंग्रेजी के विरोध की स्पष्ट झाँकी मिलती है।

"एकविदेशी भाषा किसी भी स्वाधीन देश का निजी गौरव नहीं बढ़ा सकती। भाषा की गुलामी शासन की गुलामी से बढ़कर है। प्रत्येक स्वतंत्र देश की एक निजी राष्ट्रीय भाषा होती है। गांधीजी ने भलीभाँति विचार कर स्वाधीनता के पूर्व ही यह बात हमें बताकर कि भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी होनी चाहिए, अपनी दूरदर्शिता का परिचय दिया था।"

मुख्य अतिथि का सारगर्भित भाषण

"हमारा देश बहुभाषी है। भारत के लिए सर्वोत्तम यही है कि पूरे देश की लिपि एक ही हो। इस प्रस्ताव से प्रान्तीय भाषा-भक्तों को यह भय होता है कि जिस भाषा की लिपि मुख्य-लिपि चुनी जायगी, वह भाषा अन्य प्रान्तीय भाषाओं को उदरस्थ कर लेगी। बंगाली और गुजराती, जिनकी लिपि हिन्दी से मिलती-जुलती है; इसी भय से अपनी लिपि छोड़ना नहीं चाहते।

यह समय हिंदी के उत्फुल्लन का है। नये विचार प्रकट करने हैं, नयी बातें कहनी हैं। बोलचाल में या पुराने साहित्य में उपयुक्त शब्दों की कमी है। कहीं-न-कहीं से शब्द-भण्डार को बढ़ाना है। इस हेतु संस्कृत शब्दों की उपयुक्तता स्पष्ट है। संस्कृत से उधार

लेने में सुविधा यह है कि इसकी शब्दावली अत्यन्त विशाल है। थोड़े से उलट-फेर से एक ही शब्द कई अर्थ प्रकट करता है और अहिन्दी भाषा-भाषियों की समझ में सरलता से आ सकता है। संस्कृत के अनेक शब्द क्षेत्रीय भाषाओं में पाए जाते हैं। संस्कृतनिष्ठ हिन्दी प्रायः अस्वाभाविक तो लगेगी; किन्तु धीरे-धीरे कानों को आदत पड़ जायेगी। भाषाओं का विकास प्रायः उधार ले कर हुआ है। हम लोग भाषा का विकास होने दें, व्यर्थ की जकड़ने वाली जंजीरें न जकड़ें। नयी आकृति, नयी शैली, नये शब्द आने दें। देश की दबी हुई प्रतिभा को फलने-फलने का अवसर दें।

सभापति का भाषण

"किसी भी राष्ट्र के गठन, विकास एवं सारे देश को एक सूत्र में बाँधने के लिए उसकी निजी भाषा होना आवश्यक है; वही राष्ट्रभाषा है। राष्ट्रभाषा वही भाषा हो सकती है, जिसे देश के अधिकांश व्यक्ति बोलते-समझते हों। हिन्दी ही हमारी राष्ट्रभाषा हो सकती है, इसमें दो मत नहीं हो सकते। विदेशी भाषा के प्रभाव से हमारी स्वतंत्र कल्पना और सृजन-शक्ति का लोप हो गया है। अंग्रेजी से राष्ट्रीयता की हानि होती है और राष्ट्रीय एकता को धक्का लगता है। गांधीजी ने सदैव इस बात पर बल दिया था कि राष्ट्रीय ऐक्य और स्वदेशवासियों में स्वतंत्र विचारों की आवृत्ति हेतु हिन्दी का राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित होना एक अनिवार्य आवश्यकता है। हिन्दी को राष्ट्रभाषा पद पर आसीन देखकर कुछ व्यक्तियों ने विवाद खड़ा कर दिया है। यह विवाद मिटाने में राष्ट्रभाषा प्रचार समितियाँ सहज ही सफल हो सकती हैं।"

९ अप्रैल को असम के लोकप्रिय नेता और अ० रा० प्र० स० के भूतपूर्व अध्यक्ष स्व० गोपीनाथ बरदलै के तैल-चित्र का अनावरण श्री अमियकुमार दास ने किया। ९ बजे जयन्ती भवन का शिलान्यास हुआ। सायं ४ बजे से समावर्तन समारोह आरंभ हुआ। सभापति श्री विमलाप्रसाद चलिहा के न आ पाने के कारण उन का भाषण पढ़ कर सुनाया गया। असम के वाग्मी कवि श्री नीलमणि फुकन को अभिनन्दन पत्र समर्पित किया गया, जिसके उत्तर में उन्होंने असमीया में धन्यवाद प्रकाश किया। श्री भक्तदर्शन, केन्द्रीय उप-शिक्षा मंत्री ने दीक्षान्त भाषण करते हुए कहा, "जिस प्रकार अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी पर बल दिया जा रहा है, उसी प्रकार हिन्दी भाषी क्षेत्रों में भारत की अन्य भाषाओं में से किसी एक की पढ़ाई पर बल दिया जाना चाहिए। इस प्रकार हिन्दी के प्रचार-प्रसार का मार्ग निश्चित रूप से अत्यधिक सुगम हो जायगा।"

१० अप्रैल '६४ को प्रातःकाल ८ बजे से श्री शरत्चन्द्र गोस्वामी के सभापतित्व में शैक्षणिक विदग्ध गोष्ठी हुई जिसके अध्यक्ष श्री नूरुल इस्लाम थे। दिन में २ बजे राष्ट्रभाषा कर्मी सम्मेलन के पश्चात् रजत-जयन्ती महोत्सव समाप्त हुआ।

[पृष्ठ ८ का शेषांश]

प्रतियों की। यह स्थिति हिन्दी में जनरल पुस्तकों के प्रकाशन पर गलघोंट फाँसी की तरह है।

पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन

जनरल पुस्तकों के दूभर प्रकाशन-व्यवसाय को दुनिया भर में अगर राहत मिलती है, तो पाठ्य-पुस्तकोंके प्रकाशन से प्राप्त लाभ से; लेकिन पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन का क्षेत्र देश की अधिकांश राज्य-सरकारों ने अपने हाथ में लेने की नीति अपना ली हुई है। यह परीक्षण देश में अनेक पिछले वर्षों से हो रहा है लेकिन क्या उसे सफल कहा जा सकता है? आए दिन देशभर के समाचार-पत्र इन खबरों से भरे रहते हैं कि राष्ट्रीयकृत पुस्तकें भूलों से भरी रहती हैं, वे भद्दे ढंग से छपती हैं, उनका मूल्य भी इतना अधिक रखा जाने लगा है कि राज्यों के शिक्षा-विभाग उनके प्रकाशन से मुनाफा कमाने के आदी होने लगे हैं, पुस्तकें विद्यार्थियों को समय पर नहीं मिल पातीं; फलतः उनमें चोरबाजारी होती है या उनके जाली और नकली संस्करण बाजार में छा जाते हैं। प्रकाशकों के हाथ से जब पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन छीना जाने लगा, तो आरोप यह था कि उनकी स्वीकृति में प्रकाशकों की पहले से भ्रष्टाचार पनपता है। यह नहीं है कि इस आरोप में सच्चाई नहीं थी। लेकिन यह भी सच ही था कि इस भ्रष्टाचार के लिए पुस्तकें स्वीकृत करने वाले बोर्ड स्वयं कम जिम्मेवार नहीं थे। लेकिन आज राष्ट्रीयकृत पुस्तकों की जो दशा हो गई है, वह उस भ्रष्टाचार से अधिक अनर्थकारी और दयनीय है।

देश के भावी नागरिकों के चरित्र-निर्माण और उनकी प्रारंभिक शिक्षा में पाठ्य-पुस्तकों का महत्त्व अत्यधिक है। यदि उन्हें बेहतर से बेहतर बनाना सरकार की नीति हो तो उसमें किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। इस ओर

जितनी भी कड़ाई बरती जाय, उसका स्वागत होगा। लेकिन पुस्तकों के सही मुद्रण और वितरण की व्यवस्था सरकारी विभागों के अधिकारियों के वश के बाहर की बात है; इसके लिए विशिष्ट अनुभव और निपुणता की आवश्यकता है। अच्छा हो कि पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की नीति की एक बार फिर से जाँच की जाए। क्या यह संभव नहीं है कि पांडुलिपि को स्वीकृत करने के पश्चात् निश्चित दामों पर उसके मुद्रण और वितरण का दायित्व अनुभवी प्रकाशकों पर डाल दिया जाय? व्यक्तिगत प्रकाशकों से इस प्रकार का सहयोग लेने में यदि कोई कठिनाई पेश आती है, तो प्रकाशकीय सहकारों को यह काम सौंपा जा सकता है। प्रकाशक संघ भारत की केन्द्रीय तथा राज्यों की सरकारों के शिक्षा-विभागों से इस दिशा में विचार-विनिमय करने के लिए तथा अपना सहयोग देने के लिए सदैव तत्पर मिलेगा। प्रकाशक संघ केन्द्रीय शिक्षा-मंत्री से विशेष रूप से अनुरोध करता है कि वे इस सुझाव पर मंत्रालय में विस्तार से विचार करवाएँ।

यदि शिक्षा-विभाग पाठ्य-पुस्तकों की पांडुलिपियाँ तैयार करने का तथा

प्रकाशक अथवा प्रकाशकीय सहकार निश्चित दामों पर उन के मुद्रण और वितरण का कार्य परस्पर बाँट लेते हैं, तो दो बड़े उद्देश्य एक साथ पूरे हो सकते हैं : (१) पांडुलिपियाँ सरकारी समझ-बूझ और आवश्यकतानुसार अच्छी से अच्छी बन सकेंगी; (२) वे निश्चित दामों पर, प्रकाशकीय अनुभवों के उपयोग से अच्छी ढंग से छप सकेंगी और वक्त पर विद्यार्थियों के हाथों में पहुँच सकेंगी।

एक और महत्त्वपूर्ण लाभ

इसका एक लाभ और भी होगा जो कि स्वयं में महत्त्वपूर्ण है। उन प्रकाशकों को, जो जनरल पुस्तकों का प्रकाशन करके एक कठिन लेकिन बहुत ही उपयोगी दायित्व निभा रहे हैं, बहुत सीमित लाभ का एक नया साधन भी मिल जायगा, जिससे वे जनरल प्रकाशनों के अपने कार्य में निरंतर साहस दिखलाने और जोखिम उठाने के अधिक योग्य बन सकेंगे। देश की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और विकास के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि देश में जनरल पुस्तकों के प्रकाशन के दूभर कार्य का क्षेत्र संकुचित न होता जाय। सरकार द्वारा पोषित कुछ प्रकाशन-संस्थाओं को जनरल प्रकाशन का कुछ-कुछ अनुभव प्राप्त हो चुका है।

अच्छी पुस्तकोंकी बिक्री और लेखकों का लाभांश

अच्छे साहित्य के प्रोत्साहन के पक्ष में एक और, और शायद अधिक प्रबल, तर्क इनके लेखकों के प्राप्य लाभांश से है। पंचवर्षीय योजनाओं के और केंद्रीय व राज्य सरकारों के कोषों से दिए गए लाखों रुपयों के अनुदान से ज्यादातर जो साहित्य खरीदा जा रहा है, वह वही है जिस पर अधिक कमीशन दिया जाता है। अधिक कमीशन तभी दिया जा सकता है, जबकि पुस्तक के मूल्य से लेखक का प्राप्य लाभांश गायब हो। सरकार जब नगर-नगर में खादी की बिक्री को अपना समर्थन देती है तो यह तर्क पेश करती है कि इससे कताई व बुनाई करनेवाले मजदूर के हाथ में एक रुपये में से अमुक हिस्सा आता है। लेकिन जब कलम के मजदूर लेखक का प्रश्न आता है तो वही सरकार, या उसके विभागीय अधिकारी, उन्हीं पुस्तकों को खरीदते हैं जिनसे कि उसे कुछ नहीं मिलता। भारत का लेखक, विशेषतः हिन्दी का लेखक, अपने लेखन से जीविका नहीं कमा सकता। उसकी स्थिति आज से कहीं बेहतर हो सकती है; यदि सरकारी अनुदान से ज्यादातर उन्हीं पुस्तकों की खरीद हुआ करे जिनसे कि लेखक को रायल्टी भी मिलती हो।

पुस्तकों का मूल्य-निर्धारण

मैं सोचता हूँ कि हिन्दी की पुस्तकें, मौजूदा कई कारणों से प्रतिबद्ध स्थितियों में भी, आज की अपेक्षा अधिक बिक सकती हैं; मूल्यों के उन्हीं स्तरों पर, जिन पर कि हम उन्हें आज बेचते हैं। पुस्तकों का मूल्य उनके लागत—व्यय तथा लेखक, पुस्तक-विक्रेता के और प्रकाशक के प्राप्य लाभांशोंको जोड़ कर रखा जाता है। लागत-व्यय दो प्रकार का होता है : एक—मूल व्यय (या प्लांट कॉस्ट) जो कि कागज, छपाई, जिल्दबंदी, और पुस्तक की डिजाइनिंग आदि से संबंधित है; दूसरा—व्यवस्था-व्यय (या मैनुफैक्चरिंग कॉस्ट) जो कि प्रकाशक के उन खर्चों—कर्मचारियों के वेतन, कार्यालय और पुस्तकें भेजने के रेल के भाड़े, गोदाम, बिजली, पैकिंग, पोस्टेज, ब्याज आदि—से संबंधित है, जिनके बिना कि पुस्तक के मुद्रण और प्रकाशन की व्यवस्था नहीं हो सकती। इन्हें 'ओवरहेड्स' या 'ट्रेडिंग एक्सपेंसिज' भी कहा जाता है। इन दोनों को मिलाकर ही लागत-व्यय का अनुमान किया जा सकता है।

पुस्तक-विक्रेता की कठिनाइयाँ

पुस्तकों की बिक्री में सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन पुस्तक-विक्रेता ही है। कोई प्रकाशक कितना ही समर्थ क्यों न हो, किसी पुस्तक की हजारों प्रतियाँ देश के कोने-कोने में पाठकों तक पहुँचा देना उसके बूते की बात नहीं है। यह कार्य केवल पुस्तक-विक्रेता द्वारा ही सम्पन्न हो सकता है, जो कि अपने क्षेत्र के पाठकों और खरीदारों से परिचित है या उन तक पहुँच सकता है। उसे दर्जनों प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित हजारों पुस्तकों में से प्रत्येक की दो-दो, चार-चार करके प्रतियाँ खरीदनी हैं; और बड़ी मेहनत से उनको निकालना है। प्रकाशक इस अर्थ में थोक व्यापारी है, उसे प्रति पुस्तक लाभ का अनुपात अधिक नहीं चाहिए; प्रत्येक बिक्री पुस्तक में से थोड़ा-थोड़ा करके भी उसका लाभ अधिक फैल जाता है। अपनी जीविका चलाने के लिए पुस्तक-विक्रेता को किसी पुस्तक की एक-एक प्रति से उस अनुपात में कहीं अधिक मात्रा में लाभ चाहिए। मैं समझता हूँ कि आज हिन्दी के औसत पुस्तक-विक्रेता को उचित लाभांश नहीं मिल रहा है। इसमें ध्यान देने योग्य बात यह भी है कि पुस्तकों के प्रकाशित मूल्य पर बिक्री के अभाव में, जब कि अधिकांश में पुस्तकालय ही खरीदार है, उसके हिस्से का १० या साढ़े १२ प्रतिशत तो वैसे ही निकल जाता है। और यदि प्रकाशक से मँगवाई हुई ३ प्रतियों में से १ भी अनबिकी रह गई तो उसे ३३ प्रतिशत की हानि एक साथ हो गई। पुस्तक-विक्रेता का रिस्क, इस कारण, कहीं अधिक है और वह निश्चित ही प्रत्येक पुस्तक के मूल्य में से अधिक लाभांश का हकदार है।

लेखक का लाभांश

आज प्रकाशक पुस्तक-विक्रेता को प्रायः २५ या ३० प्रतिशत कमीशन ही दे पाते हैं। इस के कारण शायद दो

हैं : एक—वे स्वयं लाभ का अधिक अंश अपने लिए सुरक्षित रख रहे हैं; दो—शायद लेखक को वे पुस्तक के मूल्य में से लाभ का अधिक अनुपात दे रहे हैं।

यदि मेरा यह विश्लेषण सही है, तो प्रकाशक स्वयं अपना और लेखकों का वास्तविक हित नहीं पहचान रहे हैं। लाभ का अनुपात चाहे आज प्रकाशक अथवा लेखक को अधिक मिल रहा हो, रुपयों-पैसों में लाभ की मात्रा उन्हें निश्चित ही कम मिल पा रही है क्योंकि पुस्तकों की निकासी गति से नहीं हो पा रही। अनबिकी पुस्तकों का जो स्टाक उनके गोदामों में इकट्ठा होता जाता है, उसे किन अर्थों में लाभ में गिना जा सकता है? अधिकांश पुस्तकों की जिन्दगी इतनी लम्बी नहीं होती कि वे आये वर्ष एक गति से बिकती जाएँ। लेखक के लिए रायल्टी की दर का १५ या २० प्रतिशत रहना क्या माने रखता है जबकि उसकी पुस्तकें अनबिकी प्रकाशक के पास धरी रह जाएँ और उसे वर्ष में अपनी बिक्री हुई पुस्तक से कुछ एक सौ रुपये या इससे भी कम प्राप्त हों? यदि अपने लाभ के अनुपात कम करने पर भी प्रकाशक और लेखक को पहले के बजाय वर्ष में अधिक रुपया मिल सके, तो क्या यह बेहतर नहीं है? दोनों को फायदा तभी है जबकि वर्ष में लाभ की मात्रा अधिक हो; लाभ का अनुपात ही अधिक होने में कोई तुक नहीं है।

हिन्दी-वर्तनी की एकरूपता

अब मुद्रित पुस्तकों के एक जटिल पक्ष की ओर आऊँ। वर्तनी की एकरूपता का अभाव एक जंगल के समान है और आज प्रत्येक लेखक, प्रत्येक प्रकाशक और प्रत्येक प्रेस अपनी-अपनी समझ के अनुसार वर्तनी के विभिन्न रूपों का प्रयोग कर रहा है। इससे हिन्दी छपाई की शुद्धता में कितनी खामियाँ रह जाती हैं, उसका अन्त नहीं है। हिन्दी के नए विद्यार्थियों को कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता होगा; अहिन्दी भाषी राज्यों के छात्र कितना भटकते होंगे। और फिर प्रत्येक पुस्तक में वर्तनी के अलग-अलग रूपों के प्रयोग को देखकर पाठकों की क्या हालत होती होगी।

प्रकाशक-संघ इस क्षेत्र में पहल करने की स्थिति में नहीं है। वह केवल यह अपील ही कर सकता है कि जहाँ देश में इतने सेमिनार आए दिन होते रहते हैं, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय वर्तनी की एकरूपता को स्थिर करने के लिए राज्य सरकारों के शिक्षा-विभागों, शिक्षाविदों, अध्यापकों, हिन्दी के गण्यमान्य लेखकों और कृतिकारों, कोशकारों, मुद्रण-संस्थाओं, टाइपराइटर बनानेवाली और टाइप ढालनेवाली कम्पनियों तथा प्रकाशकों का एक सम्मिलित सेमिनार बुलवाए, जहाँ कि तीन-चार दिनों में वर्तनी संबंधी एकरूपता के बारे में अंतिम निर्णय लिए जा सकें।

पुस्तकों के थोक-वितरण की व्यवस्था की कमी

थोक-वितरण के व्यक्तिगत प्रयासों को यदि प्रकाशक पर्याप्त समर्थन नहीं दे रहे, तो समय है कि पुस्तकों के थोक-वितरण का एक सहकारी प्रयास स्थापित किया जाय। यह प्रयास दिल्ली में सफलता से आरंभ किया जा सकता है। प्रकाशक-संघ को इस प्रयास की स्थापना पर विचार करने और उसे कार्यान्वित करने के लिए एक उप-समितिका आयोजन करना चाहिए; ताकि ऐसा पहला सहकारी प्रयास सफलता से कायम किया जा सके और बाद में अन्य स्थानों पर भी सहकारी थोक-वितरण केन्द्र खोले जा सकें।

प्रचार-प्रसार के सहकारी प्रयत्न

पुस्तकों के अधिक प्रचार-प्रसार में हम प्रकाशक जिन साधनों और समायोजनों का प्रयोग कर सकते हैं, उनमें प्रचार-प्रसार और विज्ञापन के सहकारी प्रयास को भी गिना जा सकता है। इससे पहले भी कई बार संघ के मंच से इस विषय में चर्चा हुई है। ऐसे प्रयासों द्वारा यदि पठन-पाठन की रुचि में विशेष वृद्धि नहीं की जा सकती, तो विशिष्ट अवसरों पर पुस्तकें खरीदने के लिए पाठकों को प्रवृत्त और प्रेरित तो किया ही जा सकता है। हिन्दी में विभिन्न शुभ अवसरों पर पुस्तकें भेंट करने का रिवाज नहीं के बराबर है। एक सुनियोजित विज्ञापन-अभियान द्वारा इस रिवाज की शुरुआत निश्चित रूप से की जा सकती है। इस प्रचार-कार्य के आरंभ से पहले यह देखना भी आवश्यक होगा कि हिन्दी में भेंट देने योग्य पुस्तकें पर्याप्त संख्या में हों। प्रत्येक पुस्तक भेंट में नहीं दी जा सकती। इसके लिए विशेषरूप से पुस्तकें प्रकाशित करनी होंगी, जो कि बहुत दूभर काम नहीं है।

विभिन्न शहरों के प्रकाशक अपनी सूचियाँ, परिपत्र और प्रतिनिधियों तक को एक साथ भेजने का काम मिल-जुल कर कर सकते हैं ताकि संबंधित खर्चों में कमी हो और परस्पर मेल-जोल भी बढ़े।

संघ द्वारा केन्द्रीय प्रचार-विभाग में एक बड़ा कोष इकट्ठा करने की जरूरत है। यदि प्रकाशक-संघ के सदस्य अपने प्रकाशनों की नेट बिक्री का २५ नये पैसे प्रतिशत मात्र के हिसाब से भी रुपया इस प्रचार-कोष में देने को तैयार हो जाएँ, तो प्रतिवर्ष काफी रुपया एकत्रित किया जा सकता है। इस कोष के लिए केन्द्रीय सरकार तथा यूनेस्को से भी इतनी आर्थिक सहायता ली जा सकती है कि एक अच्छा खासा प्रचार-अभियान चलाया जा सके और लोगों में पुस्तकें पढ़ने और खरीदने की प्रवृत्ति जगाई जा सके। नेट बिक्री के १ प्रतिशत का चौथाई भाग इस उद्देश्य से देना प्रकाशकों के लिए कोई बहुत बड़ा बलिदान भी नहीं है और हिन्दी के प्रकाशकों का स्वार्थ भी इसी में है कि हिन्दी में पुस्तकें पढ़ने, खरीदने और भेंट में देनेवालों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो। ★

आचार्य भास्करानन्द लोहनी, ४० कैसर बाग, लखनऊ।
१. कुमाऊँ की सैर : एक समीक्षा
२. प्राचीन भारत में राष्ट्ररक्षा और उसके साधन (निबन्ध-संग्रह)।
३. ज्योतिष-नवनीत (निबन्ध-संग्रह)।

श्री विलास डबराल, प्राध्यापक : भल्ला कॉलेज, हरिद्वार।
१. मौत की पूजा (कहानी-संग्रह)।
२. पर्वत और घाटी (कहानी-संग्रह)।
३. कुलवन्ती (उपन्यास)।
४. इन्द्रधनुष (कविता-संग्रह)।

श्री वृन्दावन राय, सिंगुर महामाया हाई स्कूल, सिंगुर, हुगली।
१. ममतामयी अस्पताल (नाटक)।
२. शृन्वन्तु (नाटक)।

श्री वीरेन्द्रकुमार जैन, सदर बाजार, शिवपुरी (म० प्र०)।
१. विविध-संस्मरण।

श्री त्रिलोकीनाथ अग्रवाल, ५५२/६६, चन्द्रनगर, आलमबाग, लखनऊ।
१. भौगोलिक शिक्षण व पाठ-संकेत।
२. समवाद पाठ संकेत।
३. बुनियादीशाला का प्रबन्ध।

श्री दीनदयाल सिंह, मीरनगंज, मझगवाँ, गोण्डा।
१. वेला है बलिदान की।

श्री सत्यभूषण खत्री, ११ निर्मला छावनी, हरिद्वार।
१. पवित्र का पिरामिड।
२. छिपा दगाबाज।
३. भीषण पापात्मा।
४. कैप्टेन राकेश।

श्री शिवकुमार दास वकील, सादिक मंजिल रोड, डालटनगंज सदर, पलामू।
१. उर्वशी।
२. नई लहर।
३. मायाजाल।
४. पिशाच की प्यास।

श्री राजेश्वर मिश्र 'रत्न', नगर उँटारी उच्च विद्यालय, पलामू।
१. संयुक्ता (प्रबन्ध-काव्य)।
२. माण्डवी।
३. कथांजली (कहानी-संग्रह)।
४. कनक (उपन्यास)।
५. एक-दो-तीन (उपन्यास)

श्री कृष्णविनायक फड़के, १४/६१ सिविल लाइन्स, कानपुर-१
१. शिशु-पालन।
२. बाल-मनोविकास।
३. शिशु शिक्षण सिद्धान्त।
४. शिशु शिक्षालय प्रबन्ध।
५. शिशु-शिक्षाविधियाँ।

श्री प्रमोद कुमार पाण्डेय, डी. एम. ई. टी., पी. १६ तारातल्ला रोड, कलकत्ता-५३।
१. गाँव एक मनःस्थिति (उपन्यास)।

श्री पी० जी० वासुदेव, प्रिंसिपल : नालन्दा हिन्दी कॉलेज, तेपानूर, तिरुवनंतपुरम्-१।
१. प्रतिध्वनि (नाटक)।

श्री प्रा० उ० भा० कोठारी, एम. ए., साहित्य विशारद, १८२ जलराय पेठ, जलगाँव।
१. हरिनारायण आप्टे : जीवन और कार्य (नवीन चरित्र)
२. हिन्दी, लेखन-प्रणाली (निबन्ध)।

[पृष्ठ ४ का शेषांश]

बात का पक्ष लिया और स्वीकार किया कि यदि पुस्तकों के अधिक संख्या में संस्करण हों, तो लेखकों की रायल्टी की दर वर्तमान दर से कम होनी चाहिए।

श्री लक्ष्मीचन्द जी जैन ने कहा कि मूल प्रश्न यह है कि किस तरह से पुस्तकों की बिक्री बढ़ायी जाय ? उन्होंने कहा कि इसका एकमात्र हल यह है कि दोनों ही पक्ष हिन्दी पुस्तकों के पाठकों की संख्या बढ़ाने के लिए सामूहिक रूप से प्रयास करें।

अध्यक्ष-पद से बोलते हुए श्रीमती महादेवी वर्मा ने कहा कि जो कुछ कहा गया है, उस पर गम्भीरतापूर्वक विचार होना चाहिए। प्रकाशन-व्यवसाय इस नये युग के साथ आया है। प्रकाशक और लेखक दोनों के ही भिन्न-भिन्न कर्तव्य हैं, जो कि एक-दूसरे के पूरक कहे जा सकते हैं और ये कर्तव्य ही भिन्नता को एक सूत्र में बाँधते हैं। लेखन वाङ्मय प्राचीन है। लिपि, ताड़पत्र आदि के रूप में पहले लेखन का कार्य चलता रहा है। आजके इस वैज्ञानिक युग में इसे प्रकाशन के रूप में माना गया है। प्रकाशन को सुदूर पहुँचाने का कार्य प्रकाशकों के कन्धे पर आ पड़ा है। उन्होंने कहा कि मुझे विश्वास है कि कुछ विवेकशील प्रकाशक इस बात को समझेंगे कि यह व्यवसाय जीवन में वह मूल्य नहीं ला सका है, जो कि सनातन है। लेखक तथा प्रकाशक प्रकाशन को निखालिस व्यापार न मानें, तभी इस उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है।

उन्होंने आगे चल कर बताया कि लेखक का जीवन आज असम्भव हो गया है। इसी लिए वह अन्य व्यवसायों में चला जाता है। ऐसी स्थिति पैदा की जानी चाहिए कि वह लिखे और उस की अभिव्यक्ति को पहुँचाने का कार्य प्रकाशक करे। लेखक और पाठकों के बीच प्रकाशक निश्चय ही एक कड़ी है।

महादेवी जी ने कहा कि आश्चर्य की बात है कि बँगला की पुस्तकें हिन्दी में अधिक बिकती हुई देखी जाती हैं। अहिन्दी भाषा-भाषी लेखक हिन्दी-भाषी लेखकों के मुकाबले अधिक रायल्टी पा जाते हैं। इस का एकमात्र कारण है कि हम अपने साहित्यिकारों के साहित्य का समचित रूप से जनता के बीच प्रचार नहीं कर पाते। आवश्यक है कि प्रकाशक जीवन के उस सत्य को समझें, जो लेखक प्रस्तुत करता है। अन्त में प्रकाशकों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि आप साहित्य के व्यापारी हैं, अतः आप का यह कर्तव्य

है कि आप सामान्य व्यापारियों की तरह जीवन के साथ खिलवाड़ न करें।

इसी दिन संघ का द्विदिवसीय अधिवेशन समाप्त हो गया। संघ ने पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण के बाद उन के प्रकाशन और वितरण के ढँग पर असन्तोष व्यक्त किया।

संघ के विचार में राष्ट्रीयकरण के बाद से पाठ्य-पुस्तकों के स्तर में गिरावट आयी है। सरकार को सुझाव दिया गया है कि सरकार पाठ्य-पुस्तकों की पाण्डुलिपियाँ चाहे स्वयं तैयार कराये, परन्तु उनका प्रकाशन और वितरण निजी प्रकाशकों पर छोड़ दिया जाना चाहिये।

उपर्युक्त आशय के एक प्रस्ताव में प्रकाशकों से भी सहकारी प्रकाशन खोलकर पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन और वितरण में सरकार को सहयोग देने की अपील की गयी।

एक अन्य प्रस्ताव में संघ ने अपनी कार्यसमिति से सहकारी आधार पर पुस्तकों के थोक वितरण की एक योजना ३ महीने के अन्दर बनाने के लिए कहा। कार्य-समिति से वैज्ञानिक, प्राविधिक तथा विज्ञानेतर साहित्य की पुस्तकें हिन्दी में प्रकाशित करने तथा शिक्षाविदों और विश्वविद्यालय अधिकारियों की सहायता से संदर्भ-पुस्तकों की सूची तैयार कर उनके प्रकाशन और वितरण की व्यवस्था करने के लिए भी कहा गया।

संघ ने सरकार से सस्ते मूल्य पर हिन्दी पुस्तकें प्रकाशित करने की व्यवस्था करने की भी माँग की; ताकि हिन्दी पुस्तकों का उसी प्रकार व्यापक प्रचार हो सके, जिस प्रकार विदेशों की अंग्रेजी पुस्तकें यहाँ सस्ते मूल्य पर मिलती हैं।

सम्मेलन के अन्त में अध्यक्ष की अपील पर चार हजार रुपये, सदस्यों ने संघ का एक पृथक् कार्यालय दिल्ली में स्थापित करने के लिये, चन्दे के रूप में दिये। स्वागत-समिति की ओर से सर्वश्री पं० वाचस्पति पाठक, राधेनाथ चोपड़ा, दिनेशचन्द, ओंकार शरद, आदि ने आगत प्रतिनिधियों का यथोचित सम्मान किया। मेसर्स मित्रा प्रकाशन प्रा० लि०, साहित्य भवन लि०, ए० एच० ह्वीलर एंड कम्पनी, किताब महल आदि संस्थाओं की ओर से विभिन्न अवसरों पर प्रतिनिधियों को भोज आदि से आप्यायित किया गया। अधिवेशन के अन्त में अध्यक्ष श्री ओंप्रकाश ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा की; जोकि इस प्रकार है :—

अध्यक्ष : श्री ओंप्रकाश (राजकमल प्रकाशन)।

उपाध्यक्ष : श्री लक्ष्मीचंद जैन (भारतीय ज्ञानपीठ)।
श्री रामलाल पुरी (आत्माराम एंड संस)।
श्री मदनमोहन पांडेय (ज्ञानपीठ पटना)।
श्री दीनानाथ (राजपाल एंड संस)।
श्री श्रीमती सूरजमुखी अग्रवाल (किताब महल)।

प्रधान मंत्री : श्री कन्हैया लाल मलिक (नेशनल पब्लिशिंग हाउस)।

संयुक्त मंत्री : श्री कृष्णचन्द्र बेरी (हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय)।
श्री रघुवीरशरण बंसल (बंसल एंड कम्पनी)
श्री राधेनाथ चोपड़ा (लोक-भारती)।

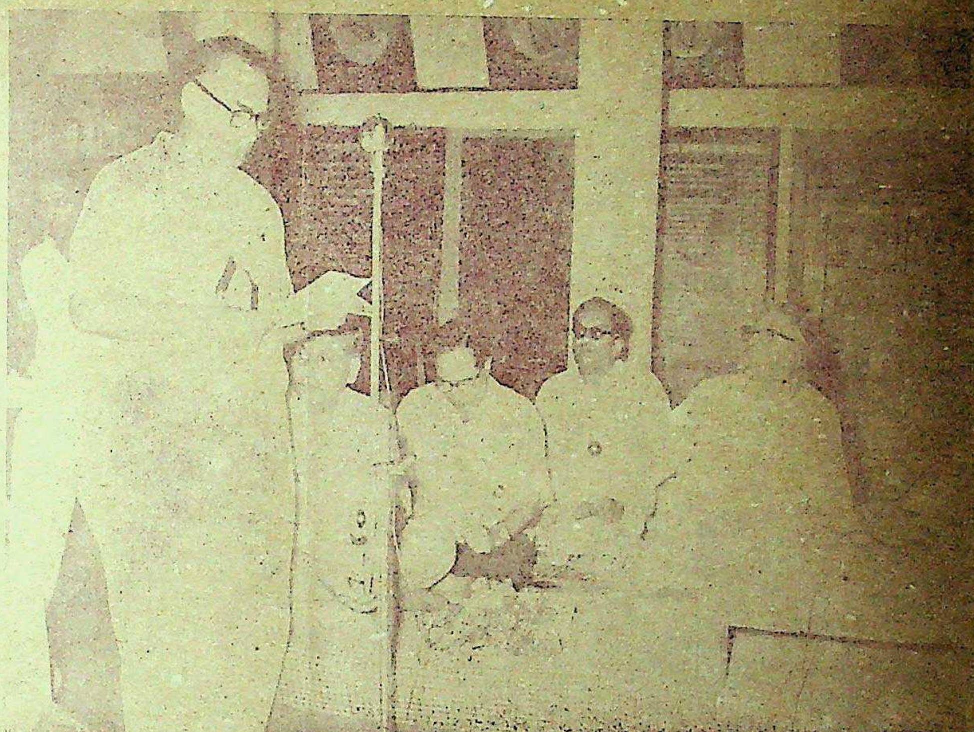
कोषाध्यक्ष : श्री दयानन्द वर्मा (पंजाबी पुस्तक भंडार)।

कार्यकारिणी के सदस्य

श्री वाचस्पति पाठक (भारती भंडार)।
श्री देवनारायण द्विवेदी (ज्ञानमंडल लिमिटेड)।
श्री मार्तण्ड उपाध्याय (सस्ता साहित्य मंडल)।
श्रीमती कौशल्या अश्क (नीलाभ प्रकाशन)।
श्रीमती प्रकाशवती पाल (विप्लव कार्यालय)।
श्री ओंकार शरद (साहित्य भवन लि०)।
श्री त्रिलोकीनाथ भार्गव (नन्दकिशोर एंड ब्रदर्स)।
श्री तेजनारायण टंडन (हिन्दी साहित्य भंडार)।
श्री भोलानाथ अग्रवाल (विनोद पुस्तक मंदिर)।
श्री सीताशरण सिंह (पुस्तक भंडार पटना)।
श्री रामकुमार कपूर (अतरचंद कपूर एंड संस)।
श्री रामतीर्थ भाटिया (राजधानी ग्रन्थागार)।
श्री श्यामलाल गुप्त (एस. चाँद एंड. कं.)।
श्री पुरुषोत्तम मोदी (विश्वविद्यालय प्रकाशन)।



प्रकाशक सम्मेलन की झाँकियाँ



श्री मलिक वार्षिक रिपोर्ट उपस्थित कर रहे हैं। बायें से स्वागताध्यक्ष श्री वी. पी. ठाकुर, श्री ओंप्रकाश, श्री कृष्णचन्द्र बेरी, कविवर सुमित्रानन्दन पन्त एवं श्री लक्ष्मीचन्द जैन।



भोज में लीन : बायें से दूसरे श्री राधेनाथ चोपड़ा, श्री बिनेश, श्री रघुवीर शरण बंसल तथा श्री कन्हैयालाल मलिक।

हिन्दी प्रचारक कार्यालय, सी० २१/३०, पिशाचमोचन, वाराणसी-१ से श्री ओमप्रकाश बेरी द्वारा प्रकाशित एवं
विद्या मन्दिर प्रेस (प्राइवेट) लि०, मानमन्दिर, वाराणसी-१ में श्रीकृष्णचन्द्र बेरी द्वारा मुद्रित।

हिन्दी प्रचारक

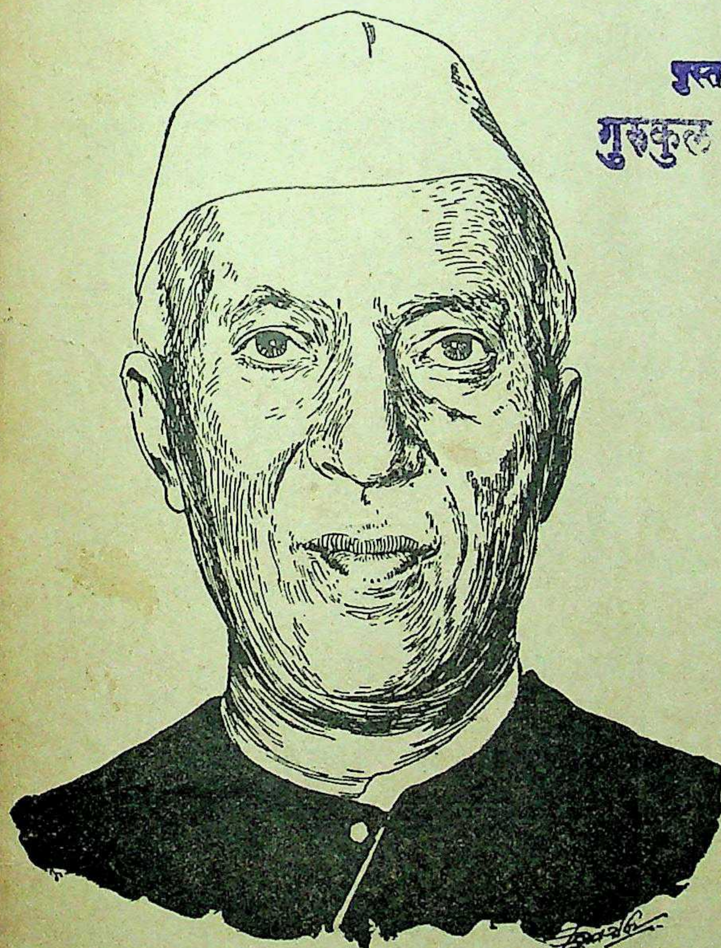
वर्ष : १२ • अंक : ३
[जून : १९६४]



हिन्दी पुस्तक-व्यवसाय का मुख-पत्र

जन्म : १४ नवम्बर १८८९

निधन : २७ मई १९६४



पिछली आधी सदी
पं. जवाहरलाल नेहरू का युग रही है।
यह इतिहास का स्वर्ण-युग है।
जवाहरलाल के आकस्मिक निधन ने
हमें हतप्रभ कर दिया है। 'हिन्दी
प्रचारक' अत्यन्त शोक-संतप्त हृदय
से इस युगपुरुष को अपनी श्रद्धाञ्जलि
अर्पित करता है।

★



पं० जवाहरलाल नेहरू की पुण्य स्मृति

में



हम प्रस्तुत करते हैं—

उनके विचारों, उनके रूप को अपने पाठकों के समक्ष; ताकि इस प्रकाश में उनके नेतृत्व का अभाव कुछ तो पूरा हो !

✣

नेहरूजी की सूक्तियाँ

सम्पादक : गोविन्दसिंह

★पं. जवाहरलाल नेहरू के भाषण अपनी शैली और विशिष्टता के कारण अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। उन का लेखन भी बहुत व्यापक है। जवाहरलाल की सूक्तियाँ किसी सागर की लहरों से कम नहीं हैं। उन की कुछ सूक्तियों का संकलन अकारादि क्रम से इस पुस्तक में प्रस्तुत है।

जय जवाहरलाल

सम्पादक : सुधाकर पाण्डेय

भूमिका : रघुनाथसिंह, एम. पी.; मंत्री : कांग्रेस संसदीय दल

★पं० नेहरू का महान व्यक्तित्व एवं कृतित्व इतिहास की अमूल्य निधि है। उनके इसी प्रेरणात्मक रूप का गुणगान प्रसिद्ध कवियों के हृदय से प्रसूत है। जवाहरलाल नेहरू पर लिखी गयी ये कविताएँ उनके अभावजन्य घने अन्धकार को कम करने में सहायक सिद्ध होंगी।

✣

प्रत्येक का मूल्य : एक रुपया मात्र

✣

प्रचारक पाकेट-बुक्स के दो अनमोल रत्न

दोनों पुस्तकों की ५० प्रतियाँ एक साथ मँगाने पर रेल-भाड़ा फ्री।
कमीशन ३३⅓%



हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पो० बॉक्स नं० ७०,
पिशाचमोचन : वाराणसी-१

हिन्दी प्रचारक

वर्ष : १२; अंक : ३

[मासिक]

सम्पादक
श्रीकृष्णचन्द्र बेरी

जून : १९६४

मूल्य
वार्षिक : ३.००
एक प्रति : २५ पैसे

युग पुरुष नेहरू के प्रति श्रद्धाञ्जलि

विश्व के किसी भी भाग में जब-जब मानवता की ऊपरी दिखाऊ वेश-भूषा में दानवता बलवती हुई, तब-तब उसके उच्छेद के लिए वहाँ किसी देव-शक्ति-विशिष्ट मानव की अवतारणा होती देखी गई। भारतीय सभ्यता का इतिहास अन्य देशों के इतिहास की अपेक्षा कहीं अधिक प्राचीन है, अतः यहाँ ऐसे अवसर बार-बार आए। यह भी देखने में आता है कि ऐसे देव-शक्ति-विशिष्ट असाधारण मानव के निर्माण में, उसकी अन्तर्निहित शक्ति के भविष्यद्-द्रष्टा, किसी लोकोत्तर ऋषि या महात्मा का विशेष योग रहा है। जैसे भगवान् राम के निर्माण में ब्रह्मर्षि वशिष्ठ का, भगवान् कृष्ण के निर्माण में ऋषि सान्दीपनि का, परशुराम के निर्माण में देवाधिदेव शिव का और चन्द्रगुप्त के निर्माण में आचार्य चाणक्य का। इधर भारत के उत्तरवर्ती इतिहास में छत्रपति शिवाजी के निर्माण में समर्थ गुरु रामदास का और महाराज छत्रसाल के निर्माण में स्वामी प्राणनाथ का योग था।

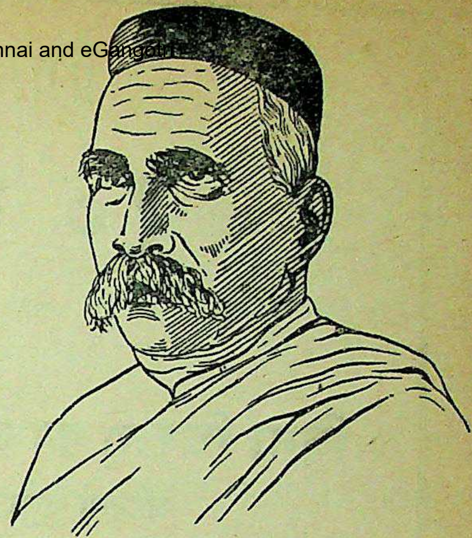
छत्रपति शिवाजी तथा महाराज छत्रसाल के पश्चात् भारत की शक्ति का उत्तरोत्तर अपकर्ष ही होता गया। भारत की अन्तिम महाज्योति के रूप में महारानी लक्ष्मीबाई एकाएक क्षितिज पर उदित हुईं, किन्तु उनका अल्पकाल में ही तिरोधान हो गया, तथापि आधुनिक भारत को अपना मार्ग निर्धारित करने में उस महाज्योति ने कुछ कम योग नहीं दिया। धीरे-धीरे सम्पूर्ण भारत विदेशी शक्ति द्वारा आक्रान्त हो गया। भारत स्वतन्त्र राष्ट्र न रहकर गुलाम देश हो गया। किन्तु सुप्त भारत को जगाने के लिए किसी अन्तर्हित महाशक्ति की प्रेरणा से अनेक वैतालिक अवतरित होते गए। लोकमान्य तिलक, गोखले, लाला लाजपत राय आदि का एक साथ उदय भारत के स्वर्ण प्रभात का सूचक ही था। इन्हीं के पश्चात् महात्मा गान्धी का अवतार हुआ, जिनकी वाणी और तेजस्विता ने जीवन्मृत देश में नवीन प्राणों का सञ्चार किया। देश के उद्बोधन में उनके महान् व्यक्तित्व ने जादू का काम किया। वस्तुतः गान्धी जी महामानव थे, महात्मा थे। तब भारतराष्ट्र के शासन-संचालन के लिए किसी तेजःपुञ्ज समर्थ तरुण को उनकी सतत जागरित दृष्टि खोज रही थी। उस समय भी भारत में तेजस्वी और देश-प्राण युवकों की कमी नहीं थी, किन्तु जिस तरुण पर जाकर उनकी दृष्टि रुक गई, वह सर्वाधिक तेजस्वी, शक्ति-सम्पन्न, अदम्य उत्साही, त्यागी और प्रभावशाली था। उन्होंने उसे भारत के भावी कर्णधार के रूप में चुन लिया और उसके निर्माण में सतत यत्नवान् रहे। उनके ही प्रयत्न के फल-स्वरूप भारत-हृदय-सम्राट् नेहरू इस देश को प्राप्त हुए। भारत को स्वतन्त्रता दिलाने में पण्डित जवाहर लाल नेहरू का जो महान् योग रहा है, उसका मूल्यांकन नहीं हो सकता। स्वतन्त्रता-संग्राम-काल में ही पण्डित नेहरू की मूर्ति देश के प्रत्येक व्यक्ति के मानस-पट पर अमिट रूप में अंकित हो चुकी थी। वे भारत-भूमि के शासक होने के बहुत पहले ही भारत-हृदय के शासक बन चुके थे।

सन् १९४७ में भारत स्वतन्त्र हुआ। नेहरू जी राष्ट्र के सञ्चालक हुए। उसी वर्ष महात्मा गान्धी का देह-पात हुआ। राष्ट्र को एक महान् आघात सहन करना पड़ा। किन्तु राष्ट्र-प्राण नेहरू ने इतनी योग्यता के साथ शासन-संचालन किया कि महात्मा जी का अभाव भारत झेल गया, वह पुनः सँभल गया। श्री नेहरू ने देश में गणतन्त्र की प्रतिष्ठा की और देश के प्रत्येक व्यक्ति को समान महत्त्व प्रदान किया। उन्होंने ऊँच-नीच, छूत-अछूत, सबल-निर्बल, शोषक-शोषित और शासक-शासित के भेद-भाव और अन्तर को दूर करने का अभूतपूर्व प्रयास किया। उनके महान् व्यक्तित्व के समक्ष संसार की पशु-शक्तियाँ नत-मस्तक होती थीं। उन्होंने बाह्य शक्ति से अधिक उस आन्तरिक शक्ति के संवर्द्धन पर बल दिया, जिसके द्वारा मानवता के विकास की भावी सम्भावनाएँ अक्षुण्ण रहती हैं। उन्होंने न केवल स्वदेश के, अपितु सम्पूर्ण विश्व के मङ्गल के लिए जीवन-पर्यन्त संघर्ष किया। वे अशान्ति का शमन शान्ति द्वारा, हिंसा का दमन अहिंसा द्वारा और दानवता का उच्छेद पूर्ण मानवता की प्रतिष्ठा द्वारा करने के समर्थक थे। विश्व की सभी लोक-कल्याणकारी शक्तियों ने नेहरू जी के आदर्श का हृदय से समर्थन किया। अपने महत्कर्मों द्वारा वे विश्व-पुरुष और युग-पुरुष हो गए। उन पर देश का इतना अखण्ड विश्वास था कि उनके रहते भारत की किसी प्रकार की क्षति की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

उनके सहसा हम सब को छोड़ कर चले जाने से सारा देश सूना-सा हो गया है। एक व्यक्ति के न रहने से जैसे सारा भारत वीरान हो गया है। जिस नेहरू के बिना भारत की बात सोची नहीं जाती थी, उसके अकस्मात् तिरोधान से दिशाएं प्रकाश-हीन अन्धकाराच्छन्न दिखाई पड़ती हैं। देश की ऐसी अद्वितीय विभूति के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हुए हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवङ्गत आत्मा को शान्ति दे, उनके परिवारवालों को शक्ति दे तथा आगे के अन्धकारमय पथ में उन का अमिट प्रकाश हमें सही राह दिखाए और हम देश के भावी निर्माण के लिए अपेक्षित उत्साह और साहस का वरण कर सकें। ***

दौलतपुर : एक साहित्यतीर्थ

—ओमप्रकाश बेरी



हिंदी साहित्य के महान् साहित्यकार आचार्य पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी के प्रति, उनकी जन्मशती पर, श्रद्धांजलि अर्पित करने का आयोजन उनके गाँव दौलतपुर में किया गया था। इस आयोजन में एक प्रकाशक के नाते मुझे भी भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आचार्य द्विवेदी जन्म-शताब्दी समारोह १५-१६ मई को मनाया गया। मैं काशी से डॉ० शंभूनाथ सिंह जी के साथ ही १५ ता० को रायबरेली पहुँच गया। स्टेशन पर स्वागत समिति के श्री शिवप्रसाद 'भदौरिया' जी ने हमलोगों का स्वागत-सत्कार किया और हमें सारी व्यवस्था समझाई। हमलोग शाम के कार्यक्रम के लिए दौलतपुर समय से पहुँच गये। १५ ता० की शाम को बाहर से श्री सनेही जी, श्री गिरीशचन्द्र त्रिपाठी, श्री श्यामाचरण तिवारी (स० सम्पादक नवजीवन) आदि तथा कतिपय और साहित्यिक वहाँ आ उपस्थित हुए। अन्य लोगों के आगमन का इन्तजार किया जाने लगा।

रायबरेली से दौलतपुर तक १८ मील के मार्ग में स्वागतार्थ लगभग ३० फाटक वहाँ के स्थानीय प्राइमरी विद्यालयों के प्रयास से बनाये गये थे। वहाँ गाँव तक पहुँचने के सभी मार्गों की सफाई देखकर चित्त प्रसन्न हो गया।

गाँव के बाहर आम और महुए के वृक्षों से घिरे सुरम्य स्थान पर निर्मित विशाल पंडाल के नीचे सायंकाल ५ बजे से समारोह प्रारम्भ हुआ और १० बजे रात्रि तक चलता रहा। इस दिन के समारोह की अध्यक्षता श्री सनेही जी ने की। जिले के प्रमुख विद्यालयों के बाल गीत-कलाकारों ने इसमें भाग लिया तथा गीत, काव्यगान, आल्हा और एकांकी प्रस्तुत किये। इस बीच श्री शम्भूनाथ सिंह जी और मेरे अनुरोध पर प्रतियोगिता को भी कार्यक्रम में स्थान दिया गया। इसमें वहाँ के विद्यालयों के पुरस्कृत विद्यार्थियों को हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय की पुस्तकें पुरस्कार रूप में दी गईं। आज के समारोह में श्री सनेही जी का योगदान विशेष श्लाघ्य था, जो शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद भी वहाँ पहुँचे और कार्यक्रम के अन्त तक डटे रहे।

दूसरे दिन प्रातः आचार्य द्विवेदी जी द्वारा निर्मित स्मृति-मन्दिर में, जो कि उनके घर के सामने ही है, एक प्रार्थना-सभा का आयोजन किया गया। इस स्मृति-मन्दिर में श्री द्विवेदी जी ने अपनी पत्नी की प्रतिमा के दायें और बायें सरस्वती और लक्ष्मी देवी की मूर्तियों की स्थापना की है। श्वेत संगमर्मर से निर्मित वे जीवन्त मूर्तियाँ लगती हैं। इस प्रार्थना-सभा का संचालन श्री सनेही जी ने किया। स्थानीय लोगों ने देवस्तुतियों और कविताओं का पाठ भी किया।

श्रद्धांजलि-सभा

शाम को श्रद्धांजलि-सभा का आयोजन हुआ। आसपास के ग्रामों की लगभग १० हजार जनता जिले के समस्त अधिकारियों सहित समारोह में उपस्थित थी।

इस समारोह के पूर्व माननीय डॉ० रामनारायण पाण्डेय ने स्वर्गीय द्विवेदी जी की इच्छा के अनुरूप एक कन्या-पाठशाला का शिलान्यास किया और आशा व्यक्त की कि दौलतपुर में यह कन्या पाठशाला फले-फूलेगी तथा श्री द्विवेदी जी की आन्तरिक इच्छा पूर्ण होगी।

साथ ही द्विवेदी जन्मशती समारोह पर दौलतपुर ग्राम में दो दिवसीय मेले का आयोजन किया गया था। इसमें बैसवारे से सम्बन्धित सामग्रियों का प्रदर्शन था। जनता ने पूरे उत्साह के साथ इसमें भाग लिया।

सभा का आयोजन ठीक ५ बजे प्रारम्भ हुआ। इसका प्रारंभ कविवर श्री ब्रजनन्दन पाण्डेय ने मंगलाचरण पढ़ कर किया। जन्मशती समारोह के स्वागताध्यक्ष और रायबरेली जिला परिषद के अध्यक्ष पं० रामशंकर त्रिपाठी ने दौलतपुर आए हुए सभी साहित्यकारों एवं अतिथियों का स्वागत किया। रायबरेली की प्राचीनता और उसकी महान् साहित्यिक विभूतियों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि प्रसिद्ध

प्रचारक पॉकेट बुक्स की

१० नवीन पुस्तकें

★

★ **बिना चिराग़ का शहर**
आचार्य चतुरसेन शास्त्री

★ **काशीनाथ**
शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय

★ **कृष्णकान्त का वसीयतनामा**
बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय

★ **लहरें और प्रवाह**
ऋषि कुमारी

★ **परिचित निगाहें**
रामविनायक सिंह

★ **टूटी हुई लड़की**
रामप्रकाश कपूर

★ **उड़े पन्ने**
सरस्वतीसरन 'कैफ़'

★ **नेहरू जी की सूक्तियाँ**
सं० गोविन्द सिंह

★ **आरज़ू की शायरी**
सं. राजबहादुर सिंह 'नसीब'

★ **स्वस्थ रहना सीखें**
धर्मचन्द सरावगी

प्रत्येक का मूल्य **1/-** मात्र

★



प्रचारक पॉकेट बुक्स

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय : पो. बॉ. नं. ७०
पिशाचमोचन, वाराणसी–१

सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी, रीतिकाल के आचार्य सुखदेव मिश्र, कविवर गिरधारी लाल तथा आचार्य द्विवेदी जैसी प्रतिभाओं को जन्म देने का गौरव इस जिले को प्राप्त है।

इस अवसर पर देश के कोने-कोने से शुभकामना के सन्देश प्राप्त हुए थे। श्री उपेन्द्र बहादुर ने सन्देश भेजनेवालों में राष्ट्रपति डॉ० राधाकृष्णन, उपराष्ट्रपति डॉ० जाकिर हुसेन, प्रधानमन्त्री पं० नेहरू, राजस्थान के राज्यपाल डॉ. सम्पूर्णानन्द, केन्द्रीय उप-शिक्षामंत्री श्री भक्तदर्शन, केन्द्रीय कृषिमंत्री डॉ० रामसुभग सिंह, उत्तर-प्रदेश की मुख्य मंत्री श्रीमती सुचेता कृपालानी, राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त, श्री हरिभाऊ उपाध्याय, पं० कमलापति त्रिपाठी, कविवर "बच्चन" आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

श्रद्धांजलि समारोह का प्रारम्भ होते ही सर्वप्रथम उत्तर-प्रदेश के उप-शिक्षा मंत्री डाक्टर रामनारायण पांडेय ने युगनिर्माता द्विवेदी जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि राष्ट्रभाषा तथा राष्ट्र को आज आचार्य जी जैसे एकनिष्ठ तपस्वी साधकों की विशेष आवश्यकता है। हिन्दी को आगे बढ़ाने और उसे समुन्नत अवस्था में पहुँचाने के लिए साधना की आवश्यकता है। यदि एक भी सच्चा साधक हमें मिल जाय तो कोई भी बाधा हमें इस मार्ग से विचलित नहीं कर सकती।

आचार्य द्विवेदी जी की प्रेरणा से कवित्त, सवैयों को खड़ी बोली में प्रयुक्त करने वाले सफल सुकवि पं० गयाप्रसाद शुक्ल "सनेही" ने अपने मार्मिक शब्दों में श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आचार्यप्रवर ने हमारी तुतलाती हिन्दी को शिष्ट और सम्पन्न बनाया। इसके बाद उनके अपने प्रति आशीर्वाद का जिक्र भी किया, जिसमें "जीवेः शरदः शतम्" आचार्य जी द्वारा कहा गया था।

सुविख्यात साहित्यकार एवं उपन्यासकार श्री अमृतलाल नागर ने श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए आचार्य जी की लगन और निष्ठा का उदाहरण देते हुए उसका अनुसरण करने के कर्तव्य को प्रेरित किया। साथ ही उनसे ३ शिक्षाएँ लेने का लोगों से आग्रह किया। प्रथम जो ठान लिया उसे कर के रहें, द्वितीय यह कि हमें मातृ-भाषा के लिये लगन होनी चाहिए, वही राष्ट्र स्वाभिमानी हो सकता है। तीसरी यह कि उन्होंने हमारे अंग्रेजीदाँ हिन्दी-भाषियों को भी हिन्दी में लिखने के लिए प्रेरित किया। अब इन तीनों शिक्षाओं को ग्रहण करते हुए कार्य को आगे बढ़ाने की बहुत आवश्यकता है।

साथ ही नागर जी ने उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा विधान सभाओं और अन्य विशिष्ट स्थानों पर हिन्दी के साहित्यकारों की उपेक्षा की भर्त्सना की और इस अपमान को असह्य बताते हुए हिन्दी-साहित्यकार की आस्था से खिलवाड़ न करने की चेतावनी दी।

वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष तथा सुकवि डॉ० शम्भूनाथ सिंह ने कहा कि आचार्य द्विवेदी जी के अपने कुछ विशेष आदर्श थे। हिन्दी के प्रत्येक विषय पर द्विवेदी जी ने लेख लिखे। उनके सत्य और न्याय पर हम अटल रहें यही प्रेरणा हमें आचार्य प्रवर से ग्रहण करनी चाहिए।

दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के प्राध्यापक डॉक्टर देवीशंकर अवस्थी ने कहा कि आचार्य द्विवेदी की जन्मशती-समारोह के प्रति उपस्थित जनता का अपूर्व उत्साह देख प्रतीत होता है कि बैसवारे की धरती अपनी जागरूक अपील का निर्वाह कर रही है। हम सभी द्विवेदी जी के मानसपुत्र हैं और उनकी बनायी हिन्दी पढ़ और लिख रहे हैं। द्विवेदी जी ने हमें गद्य की भाषा दी। उन्होंने कहा कि हिन्दी में हर प्रकार का साहित्य निर्मित हो, यही द्विवेदी जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

हिन्दी की नवीन पीढ़ी के कहानीकार श्री ठाकुर प्रसाद सिंह ने बड़े ही मार्मिक शब्दों में अपील की और द्विवेदी जी के भावनानुसार ऐक्यबद्ध हो हिन्दी के साहित्यकारों से हिन्दी-सेवा करने की राय देते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

इसके उपरान्त क्षेत्रीय विधायक ठाकुर गुप्तार सिंह ने भावमयी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा अन्य कई लोगों ने विशेष रूप से श्रद्धांजलियाँ दीं। उनमें उल्लेखनीय दक्षिण भारत हिन्दी-प्रचार सभा के श्री योगेश सैलानी, श्री गिरीशचन्द्र त्रिपाठी, श्री लक्ष्मी शंकर 'निशंक' आदि थे। अन्त में समारोह के अध्यक्षपद से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए 'सरस्वती' के वर्तमान सम्पादक श्रीनारायण चतुर्वेदीजी ने दौलतपुर को 'साहित्यिक-तीर्थ' की संज्ञा दी और कहा कि आज हिन्दी के साहित्यकारों को श्री द्विवेदी जी के चरण-चिह्नों पर चलने की जरूरत है। उन्होंने बताया जिस समय श्री द्विवेदी जी ने 'सरस्वती' का सम्पादन अपने

हाथ में लिया, उस समय हिन्दी में लेखक बहुत ही थोड़े थे, इसलिए 'सरस्वती' के ७५ प्रतिशत लेख उन्हें स्वयं लिखने पड़ते थे। 'सरस्वती' में जो भी रचनाएँ छपने आतीं, उनका बहुत अधिक संशोधन और परिष्कार भी उन्हें करना पड़ता था। परन्तु 'सरस्वती' से अवकाश लेने के समय तक हिन्दी की खड़ी बोली का गद्य और पद्य इस स्थिति तक पहुँच चुका था कि लेखकों की कृतियों के परिष्कार की आवश्यकता न रह गयी थी—यह सब उनकी एकनिष्ठा और लगन का ही मूल था। आधुनिक हिन्दी के जनक और उद्भट विद्वान द्विवेदी जी की जन्मभूमि दौलतपुर तक स्वतंत्रता-प्राप्ति के सत्रह वर्ष पश्चात् भी एक पक्की सड़क न बनवाने के कारक अधिकारियों पर श्री नारायणजी ने कटाक्ष करते हुए कहा कि दौलतपुर एक साहित्यिक तीर्थ है और तीर्थ होने के नाते मार्ग के कष्ट और असुविधाएँ सहन कर कठिन यात्रा की जाती है, तभी सच्चा पुण्य प्राप्त होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि इसी को ध्यान में रख कर ही अधिकारियों ने तीर्थ की यात्रा को कष्टमय बना रखा है। साथ ही उन्होंने मार्मिक अपील करते हुए कहा कि जिस प्रकार इंग्लैंड की सरकार ने शेक्सपियर के भवन को राष्ट्रीय स्मारक का रूप दिया है, उसी प्रकार हमारी सरकार को भी आचार्य द्विवेदी जी के भवन को राष्ट्रीय-स्मारक की संज्ञा देते हुए राष्ट्रीय-सम्पत्ति घोषित कर उसकी सुरक्षा पर पूरा ध्यान देना चाहिए। श्रद्धांजलि-समारोह के अन्त में आचार्य द्विवेदी जी के १४ वर्षों की सरपंच-काल की सारी कृतियों पर प्रकाश डालनेवाली एकमात्र पुस्तक "द्विवेदी जी गाँव में", (जिसके लेखक श्री अमरेश बहादुर सिंह 'अमरेश' हैं) का प्रामाणिक पुस्तक के प्रकाशक के रूप में मैंने श्री नारायण चतुर्वेदी जी के कर-कमलों में समर्पित किया। बाद में वहाँ के सभी विशिष्ट साहित्यकारों को यह पुस्तक भेंट-स्वरूप दी गई। सब ने पुस्तक के प्रकाशन पर बधाइयाँ दीं।

कवि-सम्मेलन

रात्रि में ९ बजे से सुकवि पं० गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' की अध्यक्षता में विराट कवि-सम्मेलन हुआ, जो रात्रि में ३ बजे तक चलता रहा। कवि सम्मेलन में अध्यक्ष श्री सनेही जी के अतिरिक्त पं० व्रजनन्दन पांडेय (लालगंज), डॉ० शम्भूनाथ सिंह (वाराणसी), श्री चन्द्रकुमार अवस्थी (कलकत्ता), श्री योगेश सैलानी (मद्रास), श्री रमाकान्त श्रीवास्तव (कानपुर), श्री भवानी शंकर अग्निहोत्री (कानपुर), श्री चक्रेश जी (प्रतापगढ़), श्री प्रभाशंकर, श्री कालिका प्रसाद 'द्विजहंस', श्री शिव बहादुर सिंह भदौरिया, श्री उपेन्द्र बहादुर सिंह, श्री बालकृष्ण मिश्र, श्री द्वारिका प्रसाद त्रिपाठी 'प्रेमी', श्री उमादत्त मिश्र, श्री चक्रपाणि पांडेय, श्री कामता प्रसाद वाजपेयी 'प्रमोद', श्री फूलचन्द्र मिश्र, श्री राजेन्द्र नाथ अवस्थी, श्री शेखर जी आदि अनेक कवियों ने अपनी सरस, रोचक एवं सुमधुर कविताओं का पाठ किया। कवि-सम्मेलन का संचालन लालगंज के सुविख्यात गीतकार एवं बैसवारा कालेज के प्राध्यापक श्री शिव बहादुर सिंह भदौरिया ने किया।

सारे समारोह में प्रबन्धकर्ता के रूप में जिले के उप-विद्यालय निरीक्षक श्री राजकेश्वर त्रिपाठी जी ने जो सेवाएँ कीं, वे अविस्मरणीय रहेंगी।

***

गोपालराम गहमरी : कुछ संस्मरण

श्री निहालचन्द वर्मा

श्री गोपालरामजी गहमर के रहने वाले थे, इसलिए उनके नाम के आगे 'गहमरी' विशेषण लगा। लोग उन्हें प्रायः गोपालराम गहमरी ही कहते थे। बातचीत में लोग गहमरीजी भी कहा करते थे।

श्री गोपालराम जी हिन्दी के भक्त थे। वह छोटी अवस्था से ही अखबारों में अपने लेख भेजा करते थे। उनके लेख कलकत्ते के 'भारतमित्र' साप्ताहिक अखबार में प्रायः निकला करते थे। जब 'भारतमित्र' बालमुकुन्द गुप्त के हाथ में आया, तब उन्होंने गहमरी जी को उसके सम्पादकीय विभाग में काम करने की प्रेरणा दी। कुछ लिखा-पढ़ी के बाद वह 'भारतमित्र' के सम्पादकीय विभाग में काम करने के लिए कलकत्ता पहुँच गये और बाबू बालमुकुन्द गुप्त से राय मिला कर उस में लेख, टिप्पणी आदि लिखने लगे।

गहमरी जी की भाषा बहुत सीधी थी। उसके पढ़ने और समझने के लिए कोश की कभी भी आवश्यकता न पड़ती थी। 'भारतमित्र' में जैसे लेख बाबू बालमुकुन्द गुप्त के रहते थे, वैसे श्री गोपालराम जी गहमरी के रहते थे, भाषा दोनों की मिल जाती थी। 'भारतमित्र' के पाठक गहमरी जी के लेख आदि पढ़ने को बड़े इच्छुक रहते थे।

श्री बालमुकुन्द जी की मृत्यु के बाद श्री गोपालराम जी अपने घर गहमर चले गये और वहाँ जाकर उन्होंने जासूसी उपन्यासों का एक मासिक-पत्र निकाला, जिसका नाम 'जासूस' था। उनका वह मासिक-पत्र दो-तीन वर्ष में खूब चल गया। उसके प्रायः दो हजार ग्राहक बन गये। उस समय जिस मासिक-पत्र के इतने ग्राहक हो जाते थे, उसे अच्छा समझा जाता था।

मेरा उनसे पहले-पहल साक्षात्कार तब हुआ, जब मैं अपनी आर० एल० बर्मन एण्ड कम्पनी के क्रोड़पत्र जासूस में बटवाने गहमर गया था।

मैं वहाँ कुछ रात बीते उनके मकान पर पहुँचा। वह इस समय भोजन कर उठे ही थे। यह सुन कर कि कोई आदमी कलकत्ता से आया है, शीघ्रता के साथ अपने घर से बाहर निकल आये और मुझे पहचान कर झट बोल उठे, 'आइये निहालचन्द जी', मुझे उनके मुँह से अपना नाम सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। बात-बात में मालूम हो गया कि उन्होंने मुझे 'भारतमित्र' आफिस में देखा था। वह बड़ी प्रसन्नता के साथ मुझे अन्दर ले गये। मेरा सब सामान भी उन्होंने अपने जासूस आफिस में रखवा लिया। मेरे लिए उसी समय भोजन तैयार करवाया। मेरे सोने के लिए आफिस के पास ही मैदान में पलंग बिछवा दिया। उसी पर बैठ कर हम दोनों अनेक प्रकार का वार्तालाप करते रहे। दूसरे दिन उन का 'जासूस' मासिक पत्र पैक हुआ। उसी रोज रात को मैं वहाँ से विदा हो कर कलकत्ता चला आया। वह स्टेशन पर आये और आदरपूर्वक उन्होंने मुझे विदा किया।

गहमरी जी प्रायः कलकत्ते के बंगभाषा के लेखक बाबू पाँचकौड़ी दे के जासूसी उपन्यासों का अनुवाद जासूस में निकाला करते थे। श्री पाँचकौड़ी दे ने उन्हें उदारतापूर्वक अपने 'जासूस' में निकालने की अनुमति दे दी थी। उस समय वह एक हजार रुपये का माल लेने पर आधे दाम में देते थे। हम लोगों ने ३-४ बार उससे एक-एक हजार रुपये का एक साथ माल मँगाया था।

श्री गोपालराम जी छोटे कद और गोरे बदन के थे। वह प्रायः ढीली बाँह का कुर्ता पहनते थे, परन्तु सभा-सोसाइटी में जाते समय सिर पर पगड़ी और कन्धे पर डुपट्टा भी डाल लेते थे। वह बात बहुत कम और मतलब की करते थे। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन में वह अवश्य जाते थे। उनकी वेश-भूषा से लोग उन्हें तुरन्त पहचान जाते थे, चाहे वह कितनी ही दूर क्यों न बैठे हों।

बहुत वर्ष बाद उन्होंने 'जासूस' निकालना बन्द कर दिया और काशी चले आये। यहाँ आ कर इन्होंने बेनिया पार्क के पास अपना मकान बनवा लिया और काशी-वास करने लगे। उनका पुस्तकों का स्टाक भी सब यहीं आ गया। यहाँ भी अपने हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय की तरफ से दो-तीन हजार रुपये का माल खरीदा गया।

वह मेरे साथ बड़े प्रेम का व्यवहार रखते थे। मिलने पर बड़े प्रसन्न होते थे और अगली पिछली बहुत-सी बातें हम लोगों में हो जाती थीं। जब उनकी काशी में मुक्ति हुई, तब मैं यहाँ नहीं था। यह संवाद सुन कर मुझे बड़ा ही दुःख हुआ।

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

के

कतिपय उत्कृष्ट प्रकाशन

कालिदास के ग्रंथों पर आधारित तत्कालीन भारतीय संस्कृति १०.००
डॉ० गायत्री वर्मा

गीतिकाव्य का विकास १०.००
लालधर त्रिपाठी 'प्रवासी'

बिहारी का नया मूल्यांकन ३.५०
डॉ० बच्चन सिंह

महाकवि मतिराम १०.००
डॉ० त्रिभुवन सिंह

कामायनी की व्याख्यात्मक आलोचना ८.००
विश्वनाथ लाल 'शैदा'

हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप-विकास १२.००
डॉ० शंभुनाथ सिंह

बीसलदेव रासो ६.००
डॉ० तारकनाथ अग्रवाल

भारतीय प्रेमाख्यान काव्य १०.००
डॉ० हरिकांत श्रीवास्तव

नाटक और रंगमंच १०.००
राजकुमार

सूरपूर्व ब्रजभाषा और उसका साहित्य १२.५०
डॉ० शिवप्रसाद सिंह

राष्ट्र-कवि मैथिलीशरण गुप्त 'अभिनन्दन ग्रन्थ' ३०.००
सं० मं० : डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल, डॉ० मोतीचन्द, आदि

दरबारी संस्कृति और हिन्दी मुक्तक ४.५०
डॉ० त्रिभुवन सिंह

कहानी का रचना-विधान ६.००
डॉ० जगन्नाथप्रसाद शर्मा

विद्यापति ५.००
डॉ० शिवप्रसाद सिंह

मधुमालती (मंझन कृत) ८.००
डॉ० शिवगोपाल मिश्र

चित्ररेखा (जायसी कृत) २.५०
सं० शिवसहाय पाठक

रवीन्द्र कविता-कानन ०.६७
'निराला'

कबीर और जायसी का मूल्यांकन २.२५
पुरुषोत्तमचन्द वाजपेयी

प्रसाद के नाटक ४.५०
परमेश्वरीलाल गुप्त

रस-साहित्य और समीक्षाएँ ४.००
'हरिऔध'

हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद ८.००
डॉ० त्रिभुवन सिंह

साहित्य-परिचय ३.००
डॉ० एस० पी० खत्री

सूर के सौ कूट ५.००
चुन्नीलाल 'शेष'

श्रीराधा का क्रम-विकास ८.००
डॉ० शशिभूषण दास गुप्त

डॉ० इकबाल और उनकी शायरी ०.६७
डॉ० हीरालाल चोपड़ा

हिंदी लिटरेचर (अंग्रेजी) ५.००
डॉ० रामअवध द्विवेदी

संक्षिप्त हिन्दी साहित्य और साहित्यकार ०.६७
सुधाकर पाण्डेय

हिन्दी-साहित्य २.२५
सुधाकर पाण्डेय

हिन्दी साहित्य की रूपरेखा १.६०
कृष्णदेव प्रसाद गौड़

लोकधर्मी नाट्य परंपरा ५.००
डॉ० श्याम परमार

दिग्विजय-भूषण १५.००
डॉ० भगवती प्रसाद सिंह

समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द ५.००
डॉ० महेन्द्र भटनागर

भोजपुरी लोक-साहित्य का अध्ययन १०.००
डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय

हिन्दी के मुसलमान कवियों का प्रेमकाव्य २.५०
गुरुदेव प्रसाद वर्मा

काव्य रूपों के मूल स्रोत और उनका विकास १०.००
डॉ० शकुन्तला दूबे

हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास ६.००
डॉ० जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन
(सं० डॉ, किशोरीलाल गुप्त)

आधुनिक हिन्दी कविता की स्वच्छन्द धारा ५.००
डॉ० त्रिभुवन सिंह

रत्नाकर और उनका काव्य ५.००
उषा जायसवाल

छायावाद के गौरव चिह्न ६.००
प्रो० 'क्षेम'

बाबू श्यामसुन्दर दास व्यक्तित्व और कृतित्व २.२५
रामनाथ पाण्डेय

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पो० बॉक्स नं० ७०, पिशाचमोचन, वाराणसी-१
१६५/१ महात्मा गांधी मार्ग, कलकत्ता-७



आदर्श अवसाद और आस्था——रचयिता——**बालकृष्ण बलदुवा** : प्रकाशक—**स्वस्तिक प्रकाशन प्रतिष्ठान, कानपुर।** मूल्य : २ रु०।

कविताओं, गद्य-गीतों, चिन्तन स्मृतियों तथा सूत्रों के इस संग्रह में हिन्दी के एक नवीन सूत्र की योजना है, जिसमें मन की भावनाओं, श्रद्धा और अवसाद आदि का भावपूर्ण तथा सरस शैली में चित्रण हुआ है। इसमें केवल कल्पना और भावुकता नहीं है, वरन् दोनों का अपूर्व समन्वय है और वह भी यथार्थ की भूमि पर टिका है। कवि द्वारा अपनाए गये भावों का वर्णन इसलिए प्रभावात्मक है कि उन्हें कवि ने केवल बौद्धिक स्तर पर ही स्वीकार नहीं किया है, वरन् झेला और जिया है।

लगता है, रचयिता उत्कृष्ट गद्य-काव्य-लेखक है। उसने जीवन में प्राप्त विभिन्न अनुभूतियों और भावनाओं का विश्वस्त चित्रण किया है। यों इसमें उसका जीवन-दर्शन है, जीवन-समीक्षा है। कठिनाइयाँ, उलट-पुलट, एकाकीपन, भय और निराशा सर्वभक्षी अवसाद को जन्म देते हैं, पर वे ही आदर्श के प्रति हमारी आस्था दृढ़ करने में भी सहायक होते हैं। हम एकदम उड़ कर आदर्श तक नहीं पहुँच सकते। आदर्श की स्थापना के लिए, आदर्श तक पहुँचने के लिए हमें यथार्थ के रास्ते चलना पड़ता है, जीवन की विभिन्न अनुभूतियों में से कोई भी बेकार नहीं जाती। हमारे नये गणतंत्र में ईमानदारी, सचाई, सिद्धान्त-निष्ठा और आदर्श को अधिक महत्व मिलना चाहिये, यही उसका अपने देशवासियों के लिए संदेश है। उसकी भाषा सब के मन में रम जाने की ताकत है। उसके इस गद्य में सच्ची कविता की पूरी-पूरी मुग्धता और लयात्मकता है।

लेखक की दृष्टि व्यापक, हृदय विस्तृत तथा विचार-धारा समष्टिमूलक है। भावों को इस प्रकार से अंकित किया गया है कि पाठक उनसे शीघ्र ही अपनत्व अनुभव करने लगता है। इस अपनेपन में केवल रसानुभूति ही नहीं होती, अपितु उसमें हमें जीवन-दर्शन के महत्वपूर्ण सूत्र मिलते हैं, पथ-निर्देशक संकेत प्राप्त होते हैं। "सांकेतिकता अधुनातन साहित्य-शिल्प की आत्मा है।" आदर्श, अवसाद और आस्था" में लेखक बड़ी कुशलता से संकेतों के सहारे पाठक के हृदय और मस्तिष्क को गतिमान करता है। वह जीवन के अति निकट है। उसकी भावनायें वैयक्तिक कुण्ठाएँ नहीं बनती हैं, बल्कि दृष्टिकोण की व्यापकता के कारण सम्पूर्ण मानवता की हो उठती हैं। पुस्तक के पढ़ने में वही आनंद आता है, जो खलील जिब्रान की रचना के पढ़ने में आता है। इसमें यथार्थ और आदर्श, भावों तथा विचारों का रमणीय संयोग है।

लेखक का भाषा-गठन अथवा व्यंजना-लाघव जहाँ गाँधी और विनोबा के सारल्य से ओत-प्रोत है, पंत और महादेवी की सुकुमारता से भी वंचित नहीं है। रस-सिद्ध प्रयोगों द्वारा चिंतन के भार को महसूस न होने देना शब्द-पारखी का ही लक्षण है।

रजत जयन्ती महोत्सव स्मृति ग्रन्थ——प्रकाशक—**असम राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति, गुवाहाटी** : प्रधान सम्पादक-**श्री रजनीकान्त चक्रवर्ती** : मूल्य ४.००।

असम राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति ने पिछली ८, ९ और १० अप्रैल ६४ को अपना रजत-जयन्ती महोत्सव मनाया है। भारत के विभिन्न प्रान्तों के प्रतिनिधि और साहित्यिक तथा राजनेता भी इसमें सम्मिलित हुए थे। इसी पवित्र अवसर पर यह स्मृति-ग्रन्थ रजत-जयन्ती-महोत्सव की स्वागत-समिति की ओर से प्रकाशित हुआ। जो विशिष्ट राजनेता और समिति के कार्यों के प्रशंसक राष्ट्रभाषा के प्रगतिकामी महानुभाव इसमें सम्मिलित नहीं हो सके, उन्होंने अपनी शुभ कामनाएँ भेज दी थीं। इस ग्रन्थ के आरम्भ में वे शुभ कामनाएँ एकत्र कर दी गई हैं। इनके अतिरिक्त सम्पादकीय के साथ कुल ४६ विशिष्ट लेख इस ग्रन्थ में संगृहीत हैं, जिनके द्वारा असमीया भाषा और साहित्य के संक्षिप्त परिचय के साथ राष्ट्रभाषा के वैशिष्टय और असम में समिति द्वारा उसके प्रचार और प्रसार के लिए किए गए स्तुत्य प्रयासों का भी सुन्दर परिचय प्राप्त हो जाता है। महात्मा गांधी, काका कालेलकर, अमियकुमार दास, रजनीकान्त चक्रवर्ती, उपेन्द्रनाथ गोस्वामी, महानन्द पाठक, गोपाल सिंह 'शान्त', रामधारी सिंह 'दिनकर', वीरेन्द्रकुमार भट्टाचार्य——जैसे विशिष्ट पुरुषों और साहियकारों के लेख राष्ट्रभाषा-साहित्य की बहुमूल्य निधि हैं। इस स्मृतिग्रन्थ का स्वागत प्रत्येक राष्ट्रप्रेमी एवं राष्ट्रभाषा-प्रेमी करेगा यह विश्वास है।

कागज, मुद्रण और आकार-प्रकार सभी दृष्टियों से यह ग्रन्थ संग्रहणीय हो गया है। हम समिति के इस महत्प्रयास के हृदय से प्रशंसक हैं।

गीतांकुर—सं० रामगोपाल परदेशी । प्रकाशक—प्रगति प्रकाशन, मंडी सईद खाँ, आगरा । मूल्य ३.०० । आकार—डबल क्राउन । पृ० २१३ ।

इसमें हिन्दी के प्रसिद्ध और अप्रसिद्ध कुल एक-सौ-एक कवियों की एक-दो कविताएँ संकलित हैं । कुछ गीत अत्यन्त प्रभविष्णु और मर्म-स्पर्शी हैं । हिन्दी में ऐसे अनेक संकलनों के प्रकाशित होने की आवश्यकता है, जिनसे हिन्दी के काव्य-साहित्य की प्रगति और विभूति का पता लोगों को हो । इस दृष्टि से संकलयिता हमारी बधाई का पात्र है । मुद्रण की अशुद्धियाँ खटकनेवाली हैं । छपाई, कागज, मुख पृ० सभी अच्छे और आकर्षक हैं ।

जागरण—ले० श्रीमती जनककुमारी वर्मा एम० ए० । **प्रकाशक** : सुषमा प्रकाशन, सुरेन्द्रनिवास, जौनपुर । पृ० १४४ । आ० : डबल क्राउन । मू० २.५० ।

प्रस्तुत पुस्तक की लेखिका जौनपुर में बाल-शिक्षा-निकेतन की अवैतनिक संचालिका हैं । नारी-जीवन के अतीत को पृष्ठ-भूमि में रखकर उसके वर्तमान की रूप-रेखा का अध्ययन करते हुए भावी आदर्श की रूप-कल्पना अनुभूति और अध्ययन के धरातल पर की गई है । यह सच है कि आधुनिक भारतीय नारी पहले-सी दकियानूस और संकीर्णता की उपासिका नहीं रह गई है, तथापि उसके जीवन को व्यवस्थित रूप अभी तक प्राप्त नहीं हो सका है । अधिकारी व्यक्ति , चाहे वे पुरुष हों या स्त्रियाँ, अपने अनुभव और अध्ययन के आधार पर इस महत्कार्य में योग-दान कर सकते हैं । श्रीमती वर्मा ने अनुभव और विवेक से इस समस्या के समाधान के लिए समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में जो लेख लिखे थे, उन्हीं में से उन्नीस लेखों का संकलित रूप जागरण नामक पुस्तक है । निश्चय ही यह पुस्तक नारी-जीवन के व्यवस्थित निर्माण में प्रेरक सिद्ध होगी, ऐसा विश्वास इन लेखों को देख कर बँधता है ।

अधूरे सपनों का देश—ले० श्री दीनानाथ 'शरण' एम० ए० और श्री रामचन्द्र शर्मा 'किशोर' । **प्रकाशक** साहित्यसंगम-प्रकाशन, पटना । पृ० १११ । आ०—डिमाई । मू० ३.७५ ।

रांगेय राघव, राजेन्द्र यादव आदि हिन्दी के दस लेखकों के सम्मिलित प्रयत्न द्वारा प्रस्तुत और भारतीय ज्ञानपीठ, काशी द्वारा प्रकाशित 'ग्यारह सपनों का देश' नामक उपन्यास के उत्तर में प्रस्तुत उपन्यास लिखा गया है । 'ग्यारह सपनों का देश' शरण जी की दृष्टि में 'हिन्दी का एक छिछला और भद्दा उपन्यास है । इसमें तथ्य कम है, व्यर्थ अधिक ।... न तो कहानी ही तगड़ी है और न कहानी कहने का ढंग ही । ...ग्यारह सपनों के देश का निश्चय ही कोई उदात्त, चिरंतन और महत्त्वपूर्ण लक्ष्य नहीं है ।' उस उपन्यास में कल्पित रूप में समस्याएँ तो खड़ी कर दी गई हैं, किन्तु उनका कोई भी समाधान प्रस्तुत नहीं किया गया है । अतः उन्हीं पात्रों के आधार पर उसके आगे की कथा-कल्पना द्वारा प्रस्तुत उपन्यास में तत्तद् समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने का सुन्दर प्रयास लेखकद्वय ने किया है और उसे अभिनव दिशा दी है । मानवता के विकास का शोभन सन्देश इसके द्वारा व्यञ्जित होता है । जैसे पूर्व-चर्चित उपन्यास हिन्दी-जगत् का नूतन प्रयोग था, भले ही वह असफल रहा हो, उसी प्रकार उत्तर और समाधान रूप में प्रस्तुत दो लेखकों का मंगलोन्मुखी यह प्रयास भी हिन्दी-उपन्यास-जगत् का अभिनव प्रयोग ही है ।

मुस्कुराते सपने – ले० : श्री मुक्तिनारायण त्रिवेदी 'वसन्तपुरी' । **प्रकाशक—राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल**, मछुआ टोली, पटना—४ । पृ० ६८ । आ० : डबल क्राउन । मू० १.५० ।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक की ग्यारह कहानियाँ संगृहीत हैं । ग्रामीण वातावरण में उगने, बढ़ने और परिपुष्ट होनेवाले पात्रों को लेकर ये कहानियाँ सृष्ट हुई हैं । कहानियों में कथाकार की प्रतिभा और उत्साह की छाप तो मिलती ही है, लेखक का उद्देश्य भी उदात्त है । हास्य-व्यंग्यपूर्ण कहानियाँ विशेष रोचक हैं । यह लेखक का अभिनव प्रयास है । इसके द्वारा यह आशा बँधती है कि वह भविष्य में उच्च कोटि की कहानियाँ देने में समर्थ होगा ।

महाकवि तिलक का 'कालिदास'—ले०—प्रो० दीनानाथ 'शरण' । प्र०—साहित्य संगम, द्वारा—शंकर मारवाड़ी होटल, सब्जी बाग; पटना-४ । पृ० ११५ । आ०—डबल क्राउन । मू० २.७५ ।

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, कविवर तिलक-रचित 'कालिदास' नामक प्रबन्ध काव्य के वैशिष्टय को उद्घाटित करनेवाली यह समीक्षा-पुस्तक है । कविवर तिलक का नाम हिन्दी-जगत् में यद्यपि ख्यात नहीं है, तथापि उनके द्वारा रचित प्रबन्ध के प्रस्तुत मूल्यांकन से उनकी प्रतिभा का पता चलता है । लेखक ने उचित सहृदयता के साथ 'कालिदास' काव्य का,—रस-व्यंजना, चरित्र-चित्रण, संवाद, प्रकृति-वर्णन, देश-काल का निर्वाह, चित्र-विधान और दृश्ययोजना, शैली, युग-सन्देश और विश्व-महाकाव्येतिहास में महत्त्व—विविध पक्षों के अध्ययन द्वारा मूल्यांकन किया है । पुस्तक द्वारा लेखक की अध्ययनशीलता और परिष्कृत रुचि का परिचय मिलता है, यद्यपि प्रस्तुत समीक्षा-पुस्तक में गुण-दर्शन (अप्रिसिएशन) की मात्रा ही अधिक है ।



इंग्लैंड के अस्पतालों के लिये पुस्तकें

आॅल इंडिया विमेन्स कांग्रेस की एक प्रमुख कार्यकर्त्री श्रीमती कुप्पूस्वामी ने निवेदन किया है कि इंग्लैंड के अनेक अस्पतालों में भारतीय रोगी दाखिल होते हैं। ऐसे अनेक रोगी अंग्रेजी नहीं पढ़ सकते। अतः प्रकाशक बन्धु हलकी फुलकी पुस्तकें दें, तो बड़ी कृपा होगी। प्रकाशक बन्धुओं से निवेदन है कि वे इसम उदारता से सहयोग दें और पुस्तकें प्रकाशक संघ के दिल्ली कार्यालय को भेजने की कृपा करें।

श्रीलंका बुक्सेलर्स संघ के उपाध्यक्ष भारत में

सिलोन बुक्सेलर्स एसोसिएशन के उपाध्यक्ष श्री डब्लू० डी० ई० बैस्टिन यूनेस्को के क्षेत्रीय कार्यालय की ओर से प्रदत्त स्कालरशिप पर अध्ययन भ्रमण के सिलसिले में भारत पधारे हैं। उन्होंने अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के उपाध्यक्ष श्री रामलाल पुरी से दिल्ली में भेंट की और संघ के संयुक्त मंत्री श्री कृष्णचन्द्र बेरी ने वाराणसी में भारतीय प्रकाशन के विषय पर वार्ता की। अपने दौरे में श्री बैस्टिन ने कलकत्ता में बंगाल पब्लिशर्स एसोसिएशन तथा बंगाल प्रिन्टर्स ऐसोसिएशन के अध्यक्ष श्री सैलेन गुहा राय से भी भेंट की। श्री बैस्टिन का पता निम्नलिखित है—

श्री डब्लू० डी० ई० बैस्टिन, डब्लू ई० बेस्टिन एंड कम्पनी, २३, कैनल रो, फोर्ट, पो० बा० नं० १०।

श्री मंगल प्रकाशन सलाहकार नियुक्त।



ज्ञात हुआ है कि 'राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम) ने इस वर्ष श्री उमराव सिंह मंगल को अपना प्रकाशन सलाहकार नियुक्त किया है। यह पहला अवसर है जबकि किसी प्रकाशक को सरकारी साहित्य अकादमी में प्रकाशन सलाहकार नियुक्त किया गया है।

राहुल संग्रहालय

उन लेखक तथा कवि बन्धुओं से भी विनम्र अनुरोध है कि जब कभी वे स्वर्गीय राहुलजी के सम्बन्ध में लेख-कविताएँ लिखें, प्रकाशित हो जाने पर उसकी एक छपी प्रति अथवा नकल 'राहुल संग्रहालय' (२१ कचहरी रोड, दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल) के लिए भेजना न भूलें। पिछले वर्ष इस तरह के कतिपय लेख प्रकाशित हुए। यह स्थान हिन्दी क्षेत्र से दूर और भारत के एक कोने में होने के कारण यहाँ सभी तरह की पत्र-पत्रिकाएँ उपलब्ध नहीं है और न ही इसकी जानकारी मिलती है कि कौन-कौन से पत्र में स्वर्गीय महापण्डित जी के सम्बन्ध में क्या-क्या छप रहा है। अतः लेखक बन्धुओं से अनुरोध है कि वे सहायता करें।

तीन नये विश्वविद्यालय

मध्यप्रदेश में स्थापित तीन नये विश्वविद्यालयों के लिये उपकुलपतियों के नामों की अधिकृत घोषणा कर दी गई है जो आगामी जुलाई माह से आरम्भ शैक्षणिक सत्र से अपना कार्य आरम्भ करेंगे। रायपुर के रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के लिये इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डा. बाबूराम सक्सेना इन्दौर विश्वविद्यालय के लिये मध्यप्रदेश सरकार के भूतपूर्व मुख्य सचिव श्री एच. एस. कामथ तथा ग्वालियर के जिवाजी विश्वविद्यालय के लिये श्री एम. एस. भंडारकर को उपकुलपति नियुक्त किया गया है।

श्री चन्द्रहासन डीन मनोनीत

केरल विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो. ए. चंद्रहासन, हाल ही में केरल विश्वविद्यालय के 'फैकुल्टि आॅफ ओरियेन्टल स्टडीज' के डीन मनोनीत किये गये हैं।

श्री रामकुमार चौबे २१ वीं बार एम.ए.

ज्ञात हुआ है कि श्रीरामकुमार चौबे ने इस बार पुनः एम. ए. की डिग्री प्राप्त कर ली है। इस प्रकार अब तक २१ विषयों में एम. ए. हो चुके हैं। स्मरणीय है कि विश्व में आप ही पहले व्यक्ति हैं, जिन्हें यह गौरव प्राप्त है।

राहुल साहित्य पर शोध

महापंडित राहुलजी की दिवंगत हुए एक वर्ष हो रहा है। इसी अवधि में उनकी साहित्यिक कृतियों के विविध अंगों पर विभिन्न विश्वविद्यालयों से अनुसंधानकार्य कर रहे हैं। अबतक

मिली जानकारी अनुसार जिन विषयों पर जिन विश्वविद्यालयों से शोध-कार्य हो रहा है, उनका ब्योरा इस प्रकार है—

विषय	विश्वविद्यालय
पं० राहुलजी व्यक्तित्व एवं कृतित्व	कुरुक्षेत्र
राहुलजी का कथा-साहित्य	लखनऊ
राहुलजी का रचनात्मक साहित्य	जबलपुर
राहुलजी का गद्यशैली की समीक्षात्मक अध्ययन	अलीगढ़
राहुलजी की जीवनी और उनके यात्रा-साहित्य का अनुशीलन	उज्जैन, (विक्रम वि० वि०)
राहुलजी का सृजनात्मक साहित्य	पंजाब वि० वि०
राहुलजी का सृजनात्मक साहित्य (सद्यः प्रस्तावित मात्र)	दिल्ली

इनके अतिरिक्त अन्य कई सज्जन राहुल साहित्य पर अनुसंधान करने के लिए उत्सुक हैं।

सम्पादक के नाम पत्र

अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ ने एक पुस्तिका द्वारा संसद-सदस्यों का ध्यान अवैध पुस्तकों के प्रचलन की ओर आकर्षित किया है। कोई मार्ग निकलेगा, यह अपेक्षा है। इस सम्बन्ध में यह एक सुझाव है कि यदि पुस्तक-विक्रेता से पुस्तक लेते समय पुस्तक-विक्रेता के हस्ताक्षर तथा उसकी दूकान के नाम-पते की मुहर ले ली जाय तो नकली पुस्तक कहाँ से आई, कहाँ छपी आदि सूत्रों का पता लगाने में सहायता मिल सकती है। अमुक पुस्तक अमुक विक्रेता से ली गई है—यह मालूम होते हुए भी यह सूत्र प्रमाणित कर पाना कठिन है तथा तस्कर-व्यापार के लिए यह एक वरदान है। तस्कर-व्यापारी क्यों स्वीकार करेगा कि वह अवैध पुस्तक बेचता है, यदि वह भली प्रकार जानता है कि [illegible] प्रमाणित नहीं किया जा सकता। हस्ताक्षर और दूकान के नाम-पते आदि की मुहर से वह स्वयं प्रमाण होगा कि अमुक पुस्तक का वह विक्रेता है। यदि वह पुस्तक अवैध है तो उसका पता लगाने का वह उत्तरदायी है। इस प्रयोग की प्रतिक्रिया यह होगी कि तस्कर-व्यापारी अवैध-पुस्तक की बिक्री से सावधान हो जायगा।

पाठ्य-पुस्तकों पर यह प्रयोग तत्काल आवश्यक है। थोड़े-से समय में अगणित पुस्तकों की बिक्री, पाठ्य-पुस्तकों का अभाव आदि कारणों से यह व्यापार पनप रहा है। हस्ताक्षर करने में कुछ व्यावहारिक कठिनाई आ सकती है; किन्तु नकली-पुस्तक के प्रचलन से उत्पन्न हानि पर विचार करते हुए पुस्तक-विक्रेता और ग्राहक दोनों धैर्य से काम लें। शासन इस दिशा में अन्य प्रयासों के साथ यह नियम बनावे कि "कोई पुस्तक-विक्रेता कोई पाठ्य-पुस्तक जिस पर उसके हस्ताक्षर और नाम-पते आदि की मुहर न हो, न बेचे अन्यथा ऐसी पुस्तक चोरी की समझी जायगी तथा उसे खरीदने वाला इस अवैधानिकता का उत्तरदायी होगा। पुस्तकों पर अनिवार्य रूप से यह छपा रहना चाहिये कि पुस्तक विक्रेता के मुहर पुस्तक पर लेकर पुस्तक खरीदी जाय अन्यथा यह पुस्तक पास रखना अपराध है।"

इस प्रयोग में पुस्तक-विक्रेता, जन-साधारण तथा शासन के पारस्परिक सम्मिलित सहयोग आवश्यक है।

देश-विदेश के महान् साहित्यकारों की उत्कृष्ट कृतियाँ



प्र चा र क पॉकेट बुक्स

★ [illegible]उपन्यास ★

झाड़-फानूस	आरिग[illegible]ड	कस्तूरी	'शानी
गुलाब कुमारी	निहालचंद व[illegible]	काठ के ताब[illegible] [illegible]र जिन्दा [illegible]शें	
मोरझाल	डॉ० श्याम पर[illegible]		प्रकाश दीक्षित
साँचा	डॉ० प्रभाक[illegible] मा[illegible]वे	क्लीयोपेट्रा	एमिल लुडविग
सपने बिकाऊ हैं	राधा[illegible]ष्ण	अशान्त	विनोदशंकर व्यास
तिब्बत का रहस्य	[illegible]	अन्त[illegible] के मेहमान	डॉ. शिवप्रसाद सिंह
युद्ध और प्रेम (मराठी)	[illegible]झाक	सपनों की जंजीरें	'परदेशी'
नदी तट से	लालज[illegible] सिंह	बेगम और गुलाम	रामकुमार 'भ्रमर'
बन्दे मातरम् (बँगला)	बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय	हिना के हाथ	'अमरेश'
पवित्र पापी (पंजाबी)	नानकसिंह	दशकुमार चरित	महाकवि दण्डी
एक सड़क : सत्तावन गलियाँ	कमलेश्वर	प्रणय	देवनारायण द्विवेदी
बिखरे काँटे	लीला अवस्थी	पाषाण-पंख (पंजाबी)	नानकसिंह
वनमाला	'कैफ'	इन्द्रजाल	रघुनाथसिंह
समर्पण	तुर्गनेव	कौन जानता था	राजबहादुर सिंह
कादम्बरी	बाणभट्ट	वन-पाँखी	गुरुवचन सिंह
भाग्यवती	श्रद्धाराम फिल्लौरी	जूही (मराठी)	मालती बाई बेडेकर
लाल पंजा	दुर्गाप्रसाद खत्री	माँ (असमिया)	वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य
काले कारनामे	'निराला'	कुब्जा-सुन्दरी	ठाकुरप्रसाद सिंह
मैडेलीन	मुद्राराक्षस	मरने के बाद	ब्रजकिशोर 'नारायण'
पंकज	गुरुदत्त	एक आवारे की डायरी	तुर्गनेव
गवर्नेस	हर्षनाथ	राजसिंह (बँगला)	बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय
नारी : एक पहेली	मोपासाँ	बादलों के आर-पार	राजेन्द्र अवस्थी 'तृषित'
धर्मचेता	हिमांशु श्रीवास्तव	सीताराम (बंगला)	बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय
मीठी लगन	शिवकुमार ओझा		

★ शायरी-कविता ★

दाग की शायरी	सं० मसीहुज्जमाँ	तेरे सुर मेरे गीत	भरत व्यास
इक़बाल की शायरी	डॉ० हीरालाल चोपड़ा	चीन को चेतावनी	सं० 'रुद्र' काशिकेय
जौक की शायरी	सरस्वती सरन 'कैफ'	रजतपट के प्रणय-गीत	सं. पी. वी. भानुशाली

★ कहानी-संग्रह ★

नया-स्वर	मोहनसिंह सेंगर	रूपी	राहुल सांकृत्यायन
गोरी हो गोरी !!	सैयद रफीक हुसैन	द्वा-सुपर्णा	जगदीश, एम. ए.

सात उपन्यास : सात कहानियाँ   हरिवंश एम. ए.

★ विविध ★

काम-मनोविज्ञान तथा यौन-व्याधियाँ	द्वारका प्रसाद, एम. ए.	चमत्कारिक अनुभूतियाँ	संतराम, बी. ए.
		पीड़ारहित प्रसव	सावित्री देवी वर्मा
स्त्री-रोग-चिकित्सा	डॉ. केवल धीर	भाग्य और नवग्रह	शिवमूर्ति 'शिव'
सुभाषित	आनन्द कुमार	स्वयं डाक्टर बनें	डॉ० केवल धीर

प्रत्येक का मूल्य : एक रुपया मात्र



हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय : पिशाचमोचन : वाराणसी-१.

दक्षिण भारत के
अनन्य हिन्दी साहित्यकार
श्री एम० चन्द्रहासन
का

काशी आगमन पर 'हिन्दी प्रचारक' कार्यालय में स्वागत किया गया। उस अवसर पर लिया गया प्रचारक-परिवार, नागरी प्रचारिणी सभा के नेतृवृन्द तथा श्री चन्द्रहासन के साथ आगत लोगों का सामूहिक चित्र।



हिन्दी प्रचारक कार्यालय, सी० २१/३०, पिशाचमोचन, वाराणसी–१ से श्री अमिप्रकाश बेरी द्वारा प्रकाशित एवं विद्या मन्दिर प्रेस (प्राइवेट) लि०, मानमन्दिर, वाराणसी–१ में श्रीकृष्णचन्द्र बेरी द्वारा मुद्रित ।

हिन्दी प्रचारक

अगस्त
[१९६४]

प्रचारक पॉकेट बुक्स की

१० नवीन पुस्तकें

बिना चिराग़ का शहर
आचार्य चतुरसेन शास्त्री

काशीनाथ
शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय

कृष्णकान्त का वसीयतनामा
बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय

लहरें और प्रवाह
ऋषि कुमारी

परिचित निगाहें
रामविनायक सिंह

टूटी हुई लड़की
रामप्रकाश कपूर

उड़े पन्ने
सरस्वतीसरन 'कैफ़'

नेहरू जी की सूक्तियाँ
सं० गोविन्द सिंह

जय जवाहर
सं० सुधाकर पाण्डेय

स्वस्थ रहना सीखें
धर्मचन्द सरावगी

प्रत्येक का मूल्य **1/-** मात्र

★



प्रचारक पॉकेट बुक्स

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय : पो. बॉ. नं. ७०
पिशाचमोचन, वाराणसी-1

हिन्दी प्रचारक

[मासिक]

वर्ष : १२ : अंक ४-५

सम्पादक
श्रीकृष्णचन्द्र बेरी

अप्रैल : १९६४

मूल्य
वार्षिक : ३.००
एक प्रति : २५ पैसे

विश्वविद्यालय-स्तर की सस्ती पाठ्य-पुस्तकें

भारत देश की स्वतन्त्रता के साथ-साथ भारत राष्ट्र का नए रूप में उद्भव हुआ। देखते-देखते यह राष्ट्र-शिशु सत्रह वर्ष का नवयुवक हो गया। किन्तु जिस प्रकार मानव-शिशु के संवर्द्धन के लिए उसके माता-पिता को उसके समुचित पोषण की व्यवस्था करनी पड़ती है, उसी प्रकार राष्ट्र के संवर्द्धन और पुष्टि के लिए समुचित व्यवस्था करना राष्ट्र के कर्णधारों का अनिवार्य कर्त्तव्य होता है। अन्यथा उसके अभाव में कोई भी शक्तिशाली शत्रु उस राष्ट्र का अपमान कर सकता है और वह अपनी रक्षा हेतु दूसरों की सहायता के लिए चीख-पुकार मात्र मचा सकेगा। शत्रु का दर्प-दलन स्वयं नहीं कर सकेगा। इसके लिए राष्ट्र के विविध अङ्गों की ओर सजग दृष्टि रखनी पड़ती है। उन अंगों में मस्तिष्क और हृदय का, जो शरीर के महत्त्वपूर्ण आभ्यन्तर अंग है, यथोचित विकास समुचित शिक्षा द्वारा ही सम्भव होता है। जिस व्यक्ति के मस्तिष्क और हृदय सुचारु रूप से दक्षता के साथ क्रियाशील रहते हैं, वह सदा स्वस्थ रहता है। यदि किसी राष्ट्र के अधिकांश निवासी अशिक्षित रहें, तो उसकी सुरक्षा निश्चित रूप से खतरे में समझनी चाहिए। अधिक-से-अधिक व्यक्ति शिक्षित हों, इसके लिए आवश्यक हो जाता है कि देश में शिक्षा सस्ती हो। भारत देश को स्वतंत्र हुए इतने वर्ष हो गए, किन्तु अभी तक यहाँ की शिक्षा किञ्चित् मात्र भी सस्ती नहीं हो सकी है। देश के शुभेच्छु कर्णधारों को इधर अविलम्ब ध्यान देना होगा। शिक्षा के विविध क्षेत्र होते हैं और उन सब की ओर उन्हें सतर्क दृष्टि रखनी होगी।

यहाँ की पाठ्य-पुस्तकों को ही लीजिए, अभी भी वे महार्घ होती हैं और उनका क्रय करना शिक्षार्थियों के लिए एक विकट समस्या हो जाती है। दूसरी ओर, जब हम उन सस्ती पाठ्य-पुस्तकों को देखते हैं जिनका संस्करण पी० एल० ४८० के अमेरिकी अनुदान से भारत में होता है, तब आश्चर्य होता है। उनके सस्तेपन के कारण अपने यहाँ की पाठ्य-पुस्तकें विदेशी पाठ्य-पुस्तकों के समक्ष टिक नहीं पातीं। यही विशेषता ब्रिटिश सरकार की सहायता से प्रकाशित उन सस्ती पाठ्य-पुस्तकों की भी है, जिनका भारतीय संस्करण होता है। इस बात को गम्भीरता-पूर्वक ध्यान में रखकर भारत सरकार के हिन्दी-विभाग के निदेशालय का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह समुचित सहायता द्वारा विश्वविद्यालय-स्तर की पाठ्य-पुस्तकों के सस्ते संस्करण निकाले, तभी वह शिक्षा-क्षेत्र के विकास-मार्ग की एक बहुत बड़ी बाधा दूर कर सकेगा। राष्ट्रभाषा हिन्दी के सम्यक् विकास और प्रसार की दृष्टि से भी यह प्रश्न अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यदि उच्च स्तर की पाठ्य-पुस्तकें सस्ती नहीं हुईं, तो भारत राष्ट्र दुर्बल ही रह जायगा। राष्ट्रभाषा राष्ट्रीयता की पोषिका एवं रक्षिका होती है। उसके अभाव में राष्ट्र असुरक्षित रहता है, इतिहास इसका साक्षी है। शुद्ध हृदय और मुक्त मस्तिष्क से काम लेकर भारत सरकार के शिक्षा-विभागीय निदेशालय को अविलम्ब इधर ध्यान देना चाहिए। हम आशा करते हैं कि तत्सम्बद्ध मनीषी अधिकारी हमारे विनीत परामर्श को शीघ्र कार्य-रूप में परिणत करने के लिए समुचित कदम उठाएँगे।

★

भैया जी बनारसी की पचासवीं वर्षगाँठ

श्री मोहनलाल गुप्त "भैयाजी बनारसी" हिन्दी के माने-जाने हास्यव्यंग्य लेखक हैं। पिछले दिनों उनकी ५०वीं वर्षगाँठ पर काशी में अनक समारोह आयोजित किये गये। एक समारोह में उनके व्यक्तित्व का संक्षिप्त परिचय इस रूप में दिया गया था।

"श्री मोहनलाल गुप्त ने लेखक और संपादक दोनों रूपों में साहित्य की सेवा की और न स्वयं लिखा वरन् उदीयमान कवियों, लेखकों और लेखिकाओं को प्रोत्साहन देकर एक नये युग के निर्माण के साथ सदैव सबमें आगे बढ़ने का चाव पैदा किया। अपनी भाषा और काव्य को एक नये पथ की ओर प्रगति के साथ चलानेवाले सारथी के रूप में उन्होंने 'हिन्दी की' सेवा की है। 'आज' के साहित्य-संपादक के रूप म आपने सुगठित, नियोजित और कुशल पत्रकारिता का जो परिचय दिया वह किसी से छिपा नहीं है। आप भाषा के शिल्पी तो हैं ही, सम्पादन कला के भी आचार्य हैं। आपकी 'हिन्दी-सेवा प्रेरणाप्रद वाणी, निर्भीक न्यायप्रियता ने हिन्दी के उपासकों के मन म उनके प्रति अगाध श्रद्धा पैदा कर दी है।

"भैयाजी बनारसी हिन्दी साहित्य के हास्यरस के प्रमुख स्तम्भ हैं। भाषा हो चाहे भाव, सबमें सादगी है, किन्तु युग की समस्त जटिलता और पेचीदगी को यदि आप किसी एक हास्य-व्यंग के कवि में विदग्धता, विनोद व्यंग, पैरडी के रूप लेते हुए देखना चाहते हैं तो भैयाजी की 'अरबी न फारसी' का पारायण करना होगा।

मोहन जी की हास्य एवं व्यंगपूर्ण कृतियों म हम वह यथार्थवाद विशेषरूप से प्रतिष्ठित दिखाई देता है जो काशी की सांस्कृतिक धारा की अपनी देन है। हास्य-व्यंग म सामाजिक एवं नैतिक मर्यादाओं की रक्षा सामान्यतः एक दुःसाध्य साधना ही मानी जाती है किन्तु यह गौरव की बात है कि मोहन जी को इसम पूर्ण सफलता मिली है। पुरातन मूल्यों में जो कुछ उत्तम और प्राणवान् है, उसकी वकालत करने में उनकी प्रतिभा बराबर अग्रसर रही है। उनके हृदय में सामाजिक और राजनैतिक विकृतियों के विरुद्ध एक विद्रोहाग्नि सुलग रही है।"

शिशु-साहित्य में मोहनजी की देन निराली ही है। 'आज' के "बाल-संसद" में वे 'दादा' के नाम से बच्चों के [illegible] और मनोरंजनकारी के रूप में सदैव अविस्मरणीय रहेंगे। "आज" के इस 'बाल-संसद' के सदस्यों में भी प्रतिभा पैदा करने का श्रेय मोहन जी को ही है।

इस अवसर काशी की अनेक संस्थाओं की ओर से [illegible] का अभिनन्दन किया गया, जिनमें फिल्म क्लब, [illegible]ठा क्लब, काशी पत्रकार संघ और वरुणा गोष्ठी के नाम प्रमुख रूप में लिए जा सकते हैं। वरुणा गोष्ठी की ओर से नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के विशाल हाल में सुन्दर आयोजन हुआ था। इसकी अध्यक्षता श्री कृष्णदेव प्रसाद गौड़ 'बेढब' बनारसी ने की।

श्री मोहनलाल गुप्त काशी के सम्मान्य हास्य-लेखकों में हैं। 'हिन्दी प्रचारक'—परिवार ने भी सोत्साह गुप्त जी का अभिनन्दन किया और उनकी दीर्घायु की कामना की।

रायबरेली के त्रिपाठी जी

★

--ओम्प्रकाश बेरी

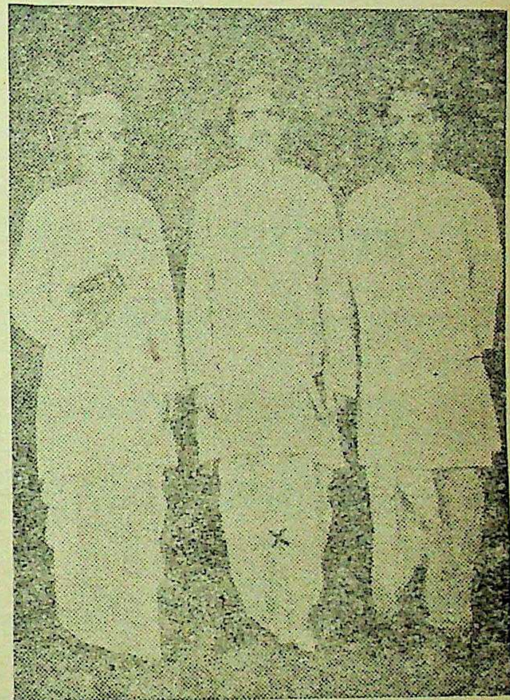
त्रिपाठी जी से मिलिये। सौम्य व्यक्तित्व, साहित्य और साहित्यकारों के प्रति अगाध निष्ठा, आचार्य द्विवेदी का असाधारण स्मारक बनाने की महान् उत्कण्ठा आदि उनके ऐसे गुण हैं जो पहली भेंट में ही परिलक्षित हो जाते हैं। रायबरेली में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का स्मारक बनाने में त्रिपाठीजी का बहुत बड़ा हाथ है। आपकी कल्पना है कि द्विवेदी जी का स्मारक उनकी ख्याति के अनुकूल हो। वे चाहते हैं कि रायबरेली द्विवेदी स्मारक के कारण पर्यटकों की स्थली बन जाय। उनकी कल्पना है, राय बरेली के नाम का स्मरण ही आचार्य द्विवेदी का स्मरण हो जाय। द्विवेदी स्मारक और रायबरेली का उन्नयन दोनों ही उनके दिमाग और दिल में समानान्तर रूप से घूमते रहते हैं।

श्री रामशंकर त्रिपाठी ने सन् १९१७ में एक अत्यन्त साधारण कृषक परिवार में बिलकुल देहात के एक छोटे से गाँव में जन्म लिया। मिहीलाल खेरा-निवासी उनके पिता पं० रामस्वरूप त्रिपाठी एक साधारण काश्तकार थे।

शिक्षा : हाई स्कूल तक शिक्षा श्री केदारनाथ डाइमण्ड जुबली स्कूल मौरावा जिला उन्नाव में हुई। इसके पश्चात् लखनऊ में सन् १९४० में एम० ए० तथा सन् ४१ में एल-एल० बी० किया। विद्यार्थी जीवन में ही स्वावलम्बी होना पड़ा। इसी जीवन-काल में क्षेत्र के त्यागी एवं कर्मठ नेता श्री चन्द्रिका प्रसाद जी का प्रभाव पड़ा, जिससे सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन में दिलचस्पी बढ़ गई। विद्यार्थी जीवन में ही अनेक संस्थाओं में कार्य करने का अवसर मिला। जिस समय बी० ए० की शिक्षा चल रही थी प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य हो गये थे और समय-समय पर होनेवाले राजनैतिक आन्दोलनों में सक्रिय योगदान करते रहे।

सन् ५२ में जिला बोर्ड रायबरेली के निर्विरोध अध्यक्ष चुने गये और मई सन् ५८ से अन्तरिम जिला परिषद् के होने के पश्चात् परिषद् के उपाध्यक्ष हुए। सन् ५२ में जिला बोर्ड के चेयरमैन चुने जाने के समय जिला बोर्ड की दशा अत्यन्त खराब थी, उसके सुधारने का श्रेय आपको मिला, और जिले में आपका काफी सम्मान बढ़ा। तत्पश्चात् सन् ५४ में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य हुए। इस समय जिले की कई शिक्षा-संस्थाओं की प्रबन्ध-कारिणी-समिति के सदस्य एवं पदाधिकारी हैं। सन् ५७ में जिला सहकारी बैंक रायबरेली के प्रबन्ध-संचालक चुने गये। आपके कार्य-काल में इस जिले के सहकारी आन्दोलन की ख्याति सारे प्रान्त में हुई। जिसकी सराहना प्रान्त तथा केन्द्र के अधिकारियों ने मुक्तकंठ से की है। तब से आप बराबर जिला सहकारी बैंक के प्रबन्ध-संचालक और लगभग जिला स्तर की सभी सहकारी संस्थाओं के संचालक हैं। जिला-भ्रष्टाचार निरोधक समिति के आरम्भ से ही लगातार अध्यक्ष हैं।

सन् ५७ तथा सन् ६२ के दो विधान-सभाओं के चुनाव में आर्थिक कठिनाइयों, जातीयता एवं कांग्रेस के अन्दर की गुटबन्दी के शिकार हुए और असफल रहे। पुनः नवम्बर



लेखक, श्री रामशंकर त्रिपाठी (मध्य में)
श्री बद्रीनाथ त्रिपाठी "बच्चन" (बायें)

सन् ६३ में जिला परिषद् के अध्यक्ष विशाल बहुमत से निर्वाचित हुए।

त्रिपाठी जी जिले के उन इने-गिने व्यक्तियों में हैं जिनका निर्मल चरित्र जनजीवन को सदैव प्रेरणा देता रहा है। कर्मठता, सच्चरित्रता एवं नैतिकता का जो आदर्श आपने प्रशासकीय जीवन में रखा है, वह अनुकरणीय है। संक्षेप में त्रिपाठी जी उन व्यक्तियों में हैं जो बवंडर के साथ उछलते नहीं, प्रत्युत उसकी उछालों को अपने में समेट कर अपनी गति से चले जाते हैं।

गोरखपुर विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग

—रामचन्द्र तिवारी

गोरखपुर नगर में विश्वविद्यालय की स्थापना एक महती सांस्कृतिक घटना है। उत्तर-प्रदेश का यह पूर्वी अंचल शताब्दियों से सभी दृष्टियों से उपेक्षित रहा है। विश्वविद्यालय की स्थापना इसके सर्वतोमुखी विकास को संभव बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। यों तो इस विश्वविद्यालय का विधिवत् संचालन जुलाई सन् १९५७ ई० से ही होने लगा था, किन्तु इसके अन्तर्गत हिन्दी-विभाग का संघटन जुलाई सन् १९५८ में हुआ। विश्वविद्यालय की स्थापना के पूव नगर में दो डिग्री कालेज—सेंट ऐंड्रूज और महाराणा प्रताप—चल रहे थे। इन दोनों विद्यालयों के हिन्दी-विभाग म अनुभवी एवं योग्य अध्यापक थे। १ जुलाई सन् १९५८ ई० को सेंट ऐंड्रूज कालेज के तीन अध्यापकों—डा० गोपीनाथ तिवारी, डॉ० आनन्द प्रकाश दीक्षित, डॉ० श्रीपति शर्मा—ने गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग में पदार्पण किया। १३ जुलाई १९५८ को सेंट ऐंड्रूज कालेज के ही चौथे अध्यापक पं० विष्णुदेव द्विवेदी और १६ जुलाई १९५८ को महाराणा प्रताप कालेज के चार हिन्दी-अध्यापकों पं० बालगोविन्द मिश्र, डॉ० रामचन्द्र तिवारी, श्रीसत्यनारायण त्रिपाठी तथा श्रीमती शान्ता सिंह ने इस विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग की श्री-वृद्धि की। डा० गोपीनाथ तिवारी ने कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में पूरी निष्ठा एवं लगन के साथ विभागीय व्यवस्था सँभाली।

अगस्त १९५८ में हिन्दी-विभाग के प्रथम प्रोफेसर एवं अध्यक्ष के रूप में डॉ० रामशंकर शुक्ल 'रसाल' की नियुक्ति हुई। इसके पूव डॉ० 'रसाल' प्रयाग विश्वविद्यालय में प्राध्यापक तथा सागर विश्वविद्यालय में रीडर रह चुके थे। डॉ० 'रसाल' ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली के लब्ध-प्रतिष्ठ कवि एवं हिन्दी के मान्य विद्वान् हैं। इसी वर्ष विभाग की आवश्यकता को दृष्टि में रखकर दो अन्य योग्य अध्यापकों—डा० भगवती सिंह तथा डॉ० देवर्षि सनाढ्य की नियुक्ति हुई।

१ अगस्त सन् १९६० ई० को डॉ० 'रसाल' ने अवकाश ग्रहण किया और पुनः डॉ० गोपीनाथ तिवारी कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त हुए। डॉ० तिवारी ने लगभग दो वर्षों तक कुशलतापूर्वक हिन्दी-विभाग की देख-भाल की। इस बीच विभागीय दृष्टि से दो महत्वपूर्ण घटनायें हुईं। एक तो श्री बालगोविन्द मिश्र अमेरिका के कार्नेल विश्वविद्यालय में हिन्दी-अध्यापक होकर चले गए। दूसरे डॉ० आनंद प्रकाश दीक्षित की नियुक्ति जयपुर विश्वविद्यालय में रीडर के पद पर हो गई। विभागीय व्यवस्था पूर्ववत् चलती रही।

२० अक्टूबर सन् १९६२ ई० को डॉ० केसरी नारायण शुक्ल ने प्रोफेसर और अध्यक्ष के रूप में हिन्दी-विभाग के संचालन का दायित्व ग्रहण किया। डॉ० शुक्ल काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के एम० ए०, डी० लिट्० हैं। आप देश विदेश के कुल चार विश्वविद्यालयों—काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लंदन विश्वविद्यालय तथा मास्को विश्वविद्यालय में अध्यापन का गौरव प्राप्त किया है। इस दृष्टि से आपका व्यक्तित्व हिन्दी अध्यापक-जगत् में अन्यतम है। इस वर्ष हिन्दी-विभाग में दो नवीन सुयोग्य अध्यापकों डॉ० त्रिलोचन पाण्डेय तथा डॉ० जगदीश श्रीवास्तव की नियुक्ति हुई है। इस प्रकार सम्प्रति हिन्दी-विभाग में कुल ११ (ग्यारह) सुयोग्य एवं अनुभवी अध्यापक कार्य कर रहे हैं। यदि अर्द्धकालिक अध्यापकों को भी मिला दिया जाय तो यह संख्या १३ हो जाती है। इन में प्रायः सभी ने महत्वपूर्ण शोध-कार्य प्रस्तुत किया है।

हिन्दी-विभाग के वर्तमान अध्यक्ष डॉ० केसरी नारायण शुक्ल ने १९४०

व्यक्ति समाज और राष्ट्र के हित की दृष्टि से लिखी प्रबुद्ध पाठकों, विद्यालयों एवं पुस्तकालयों की मनचाही पुस्तकें

लोकप्रिय कथा-साहित्य

व्यावर्तन	श्री प्रतापनारायण श्रीवास्तव	८.००
वंचना	,, ,,	७.००
बन्धनविहीना	,, ,,	५.००
विपथगा	,, ,,	३.००
विसर्जन	,, ,,	८.००
बयालीस	,, ,,	(प्रेस में)
राजपथ	श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी	६.००

आगामी प्रकाशन

यौनविज्ञान के प्रसिद्ध लेखक डॉ० केवल धीर की	पाँच पुस्तकें
प्रसिद्ध प्राकृतिक चिकित्सक डॉ० हीरालाल की	चार पुस्तकें
बाल-साहित्य के विशेषज्ञ डॉ० विभु की	पाँच पुस्तकें

सर्वोदय-विचार पुस्तक माला

गाँधी : धर्म और समाज	श्री शंभूरत्न त्रिपाठी	३.५०
गाँधी : स्तरण और समाज	,, ,,	३.००
गाँधी : परिवार और समाज	,, ,,	(प्रेस में)
गाँधी : ग्राम और समाज	,, ,,	(प्रेस में)
गाँधी : शिक्षा और समाज	,, ,,	(प्रेस में)

खेल और व्यायाम

वालीबाल कैसे खेलें ?	२.००
बैडमिण्टन कैसे खेलें ?	२.००
हाकी कैसे खेलें ?	२.००
क्रिकेट कैसे खेलें ?	२.००
फुटबाल कैसे खेलें ?	२.००
स्वस्थ कैसे रहें ?	२.००
भारतीय खेल कैसे खेलें ?	(प्रेस में)
तैराई कैसे करें ?	(प्रेस में)

जिज्ञासा प्रकाशन

[सर्वप्रिय एवं शालीन साहित्य के प्रकाशक]

८६/३३७, देवनगर, कानपुर—३

ई० में अपने महत्वपूर्ण शोध-कार्य डेवलपमेण्ट ऑव माडर्न हिन्दी-पोयट्री के उपलक्ष में काशी हिन्दू-विश्वविद्यालय से डी० लिट्० की उपाधि प्राप्त की थी। यह ग्रन्थ 'आधुनिक काव्य-धारा' के नाम से प्रकाशित है। इसके अतिरिक्त 'आधुनिक काव्यधारा का सांस्कृतिक स्रोत', 'रूसी-साहित्य का इतिहास' 'मानस की रूसी भूमिका', 'भारतेन्दु के निबन्ध', 'पाश्चात्य साहित्यालोचन' आदि कई महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना आपने की है। हिन्दी और अँगरेजी के अतिरिक्त आपने रूसी भाषा का भी अध्ययन किया है। आपके दीर्घकालीन अनुभव तथा गंभीर ज्ञान से हिन्दी-विभाग निश्चित रूप से लाभान्वित होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

वरिष्ठता के क्रम से हिन्दी-विभाग में डॉ० गोपीनाथ तिवारी का स्थान दूसरा है। आपने 'भारतेन्दुकालीन नाटक-साहित्य' पर शोध-कार्य किया है। 'हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास', 'ऐतिहासिक उपन्यासकार वृन्दावन लाल वर्मा', 'साहित्य सरोवर' आदि आपकी अन्य महत्वपूर्ण आलोचनात्मक कृतियाँ हैं। 'नेता जी', 'अभिनय', 'हराफीता', आदि आपके कई एकांकी संग्रह भी प्रकाशित हैं। आपने अबतक सब मिलाकर १५० से अधिक ललित तथा आलोचनात्मक निबंधों की रचना की है। इस समय आप 'हिन्दी नाट्य शास्त्र' के निर्माण में रत हैं। आपके निर्देशन में अबतक कई शोध-प्रबन्ध स्वीकृत हो चुके हैं। डॉ० जयराम मिश्र द्वारा प्रस्तुत 'गुरु ग्रंथ साहब का सांस्कृतिक एवं दार्शनिक अध्ययन', डॉ० श्रीमती इन्दिरा ग्रोवर द्वारा प्रस्तुत 'हिन्दी-उपन्यासों में नारी चित्रण', डॉ० श्रीमती सरला सोती द्वारा प्रस्तुत 'मध्यकालीन काव्य पर बौद्ध प्रभाव', तथा डॉ० रामदेव ओझा द्वारा प्रस्तुत 'नाथ पंथ तथा उसका मध्यकालीन हिन्दी-भाषा और साहित्य पर प्रभाव' जैसे शोध-प्रबन्ध आपके ही निर्देशन के परिणाम हैं।

विभाग के अन्य वरिष्ठ सदस्यों में डॉ० श्रीपति शर्मा, श्री विष्णुदेव द्विवेदी, श्री सत्यनारायण त्रिपाठी, डॉ० देवर्षि सनाढच तथा डॉ० भगवती सिंह प्रमुख हैं। डॉ० शर्मा ने 'हिन्दी-नाटकों पर पाश्चात्य प्रभाव' शीर्षक शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया है। 'कहानी-कला और प्रेमचन्द' तथा 'हिन्दी-कहानी इतिहास और विकास' आपकी अन्य उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। डॉ० देवर्षि सनाढच ने 'हिन्दी के पौराणिक नाटक' शीर्षक शोध-प्रबन्ध पर पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की है। 'बीसवीं शताब्दी : प्रतिनिधि कवि' आपकी अन्य महत्वपूर्ण आलोचनात्मक कृति है। आप बहुत दिनों से लिखते आ रहे हैं और आपकी ख्याति कवि-रूप में भी कम नहीं है। डॉ० भगवती

History of Education

१. भारतीय शिक्षा का इतिहास
बी० पी० जौहरी
पी० डी० पाठक ७.००

२. भारत में शिक्षा
(इतिहास, समस्याएँ,
तथा प्रयोग) ,, ८.००

३. भारतीय शिक्षा की
रूपरेखा ,, ५.००

४. भारतीय शिक्षा की
समस्याएँ ,, ६.००

5. An Outline of
Indian Education ,, 9.00

६. भारतीय शिक्षा की
आधुनिक समस्याएँ ,, ६.००
(आगरा विश्वविद्यालय के नवीन
पाठ्यक्रमानुसार)

Educational Psychology

७. शिक्षा मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर १२.५०

8. Edueational Psychology
(English Edition)
—Dr. S. S. Mathur 16.00

९. शिक्षा मनोविज्ञान की नई रूपरेखा
डी० एस० रावत ६.००

Principles of Education

१०. शिक्षा-सिद्धान्त के मूलाधार
पी० डी० पाठक
गुरुसरनदास त्यागी ८.००

11. Basic Principles of
Education (English Edition)
—B. P. Johri
—P. D. Pathak 10.00

१२. शिक्षा सिद्धान्त
(शिक्षा के दार्शनिक तथा
सामाजिक आधार)
डॉ० एस. एस. माथुर ६.००

१३. शिक्षण कला
(Methods of Teaching)
डॉ० एस० एस० माथुर ७.००

१४. कक्षाध्यापन एवं
पाठ-संकेत निर्माण
भाई योगेन्द्रजीत ५.००

School Organization

१५. विद्यालय : संगठन एवं संचालन
बी० डी० सिंह
भूदेव शास्त्री ६.००

School Hygiene

१६. स्वास्थ्य शिक्षा
जी० पी० शेरी ८.००
Health Education
—S. P. Chaube 10.00

Comparative Education

१७. सोवियत जन शिक्षा का स्वरूप
प्रो० नरेन्द्रसिंह चौहान
प्रो० राजेन्द्रपाल सिंह ४.००

१८. इंगलैण्ड की शिक्षा प्रणाली
एच० एन० सिंह ४.५०

Measurement

१९. मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन
एवं मूल्यांकन
आर० एन० अग्रवाल ११.००

20. Educational and Psycho-
logical Measurement
(English Edition) ,, 12.5[illegible]

२१. व्यक्तित्व : प्रकृति एवं मापन
आर० एन० अग्रवाल २.५[illegible]

२२. बुद्धि : प्रकृति, सिद्धान्त एवं मापन
,, ३.०[illegible]

General

२३. महान पश्चिमी शिक्षा-शास्त्री
डॉ० रामशकल पांडेय ५.०[illegible]

२४. राष्ट्रभाषा और हिन्दी
राजेन्द्रमोहन भटनागर २.०[illegible]

Methods

२५. हिन्दी-भाषा शिक्षण
भाई योगेन्द्रजीत ४.५[illegible]

२६. इतिहास शिक्षण
गुरुसरनदास त्यागी ४.५[illegible]

२७. सामाजिक अध्ययन तथा
नागरिक शास्त्र शिक्षण
गुरुसरनदास त्यागी ४.०[illegible]

२८. भूगोल शिक्षण
एच० एन० सिंह ४.०[illegible]

प्रकाशक : **विनोद पुस्तक मन्दिर**

की श्रेष्ठ-पुस्तकें

२९. विज्ञान शिक्षण
डी० एस० रावत ४.००

३०. गणित शिक्षण
एम० एस० रावत
मुकुट बिहारीलाल अग्रवाल ४.००

३१. गृह-विज्ञान शिक्षण
जी० पी० शेरी ६.००

३२. अर्थशास्त्र शिक्षण
गुरुसरनदास त्यागी ४.००

३३. संस्कृत-शिक्षण
(प्रेस में)

34. Essentiales of English teaching
—R. K. Jain
—P. D. Pathak 6.00

for J.T.C. & H.T.C. Students

३५. सरल शिक्षा सिद्धान्त तथा शिक्षण-कला
डी० सी० भारद्वाज ४.००

३६. सरल शिक्षा मनोविज्ञान
,, ४.००

३७. पाठशाला प्रबन्ध, सामुदायिक संगठन तथा स्वास्थ्य विज्ञान
डी० सी० भारद्वाज ४.००

३८. चर्मकला शिक्षण (Leather Crafts)
मानकचन्द गुप्त १.२५

for Basic Training Students

३९. बुनियादी शिक्षा-शास्त्र
राममोहन तिवारी ४.५०

४०. बुनियादी शिक्षा-सिद्धान्त
बी० डी० शर्मा
राममोहन तिवारी २.५०

४१. बुनियादी पाठन-पद्धतियाँ
,, २.५०

प्रश्नोत्तर शैली में

४२. शिक्षा सिद्धान्त
भाई योगेन्द्रजीत ३.००

४३. शिक्षा मनोविज्ञान
,, ३.००

४४. भारतीय शिक्षा का इतिहास
कपूरचन्द जैन ४.००

४५. पाठशाला प्रबन्ध
डी० सी० भारद्वाज ३.५०

४६. स्वास्थ्य विज्ञान
,, ३.००

४७. शिक्षण विधियाँ
,, ५.००

४८. शिक्षण-कला
,, ५.००

४९. हिन्दी भाषा शिक्षण
,, ३.००

५०. इतिहास शिक्षण
जी० डी० सत्संगी २.००

५१. सामाजिक अध्ययन शिक्षण
,, २.००

५२. नागरिक-शास्त्र शिक्षण
,, २.००

५३. अर्थशास्त्र शिक्षण
,, २.००

History of Pcsyhology

५४. मनोविज्ञान का इतिहास
डॉ० जे० डी० शर्मा
डॉ० जी० डी० सारस्वत १०.००

General Psychology

५५. सामान्य मनोविज्ञान
डॉ० एस० एस० माथुर ७.००

Social Psychology

५६. समाज मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर १२.५०

57. Social Psychology (English Edition)
Dr. S. S. Mathur 14.00

Educational Psychology

५८. शिक्षा मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर १२.५०

59. Educational Pschology (English Edition)
,, 16.00

६०. शिक्षा मनोविज्ञान की नई रूपरेखा
डी० एस० रावत ६.६०

Applied Psychology

६१. व्यावहारिक मनोविज्ञान
सुरेशचन्द्र शर्मा एम. ए. ६.००

Physiological Psychology

62. Physiological Psychology (English Edition) (दैहिक मनोविज्ञान)
Dr. J. D. Sharma 10.00

Child Psychogy

६३. बाल मनोविज्ञान
भाई योगेन्द्रजीत ८.००

Experimental Psychology

६४. प्रयोगात्मक मनोविज्ञान
डी० एस० रावत ३.००

हास्पिटल रोड, आगरा

सिंह ने 'उन्नीसवीं शती के रामकाव्य के संदर्भ में महात्मा बनादास के अध्ययन विषय पर पी० एच० डी० तथा 'रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय' पर डी० लिट्० की उपाधि प्राप्त की है। आपने 'दिग्विजय भूषण' जैसे अलभ्य संदर्भ ग्रन्थ का सम्पादन भी किया है। डॉ० सिंह के निर्देशन में दो महत्वपूर्ण शोध-ग्रन्थ—रामसनेही (श्री राधिका प्रसाद त्रिपाठी द्वारा प्रस्तुत) तथा 'मध्यकालीन हिन्दी-कविता में भारतीय संस्कृति' (श्री सुरेन्द्र बहादुर त्रिपाठी द्वारा प्रस्तुत)— भी प्रस्तुत हुए हैं। आपके पास हिन्दी की हस्तलिखित पोथियों का अच्छा संग्रह है। डॉ० सिंह इस संग्रह के सदुपयोग के लिए प्रयत्नशील हैं। पं० विष्णुदेव द्विवेदी सफल अध्यापक तथा लब्धप्रतिष्ठ कवि हैं। 'ज्वाला' नामक आपका काव्य-ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है। आप हिन्दी में मनोवैज्ञानिक आलोचना' विषय पर शोधग्रन्थ कर रहे हैं। पं० सत्यनारायण त्रिपाठी 'केशव की भाषा' पर कार्य कर रहे हैं। 'हिन्दी भाषा और नागरी लिपि' नामक आपकी भाषा-विज्ञान सम्बन्धी महत्वपूर्ण कृति शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है। आप एक सुरुचि सम्पन्न भावुक कवि भी हैं। श्रीमती शान्ता सिंह 'भक्तमाल' का गवेषणात्मक अध्ययन कर रही हैं।

इस वर्ष जो दो नई नियुक्तियाँ हुई हैं उनमें श्री डॉ० त्रिलोचन पाण्डेय ने गढ़वाली भाषा एवं साहित्य पर शोध-कार्य किया है। आप भाषा-विज्ञान एवं लोक-साहित्य के विशेष अध्ययन के लिए अमेरिका भी हो आए हैं। डॉ० जगदीश श्रीवास्तव ने 'प्रसाद काव्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि' विषय पर

नागरी प्रचारिणी सभा
काशी

हिन्दी शब्दसागर

और

संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर

के उपरान्त

लघु शब्दसागर मूल्य ११.००

लघुतर शब्दसागर मूल्य ६.००

प्रकाशित

तथा

हिन्दी विश्वकोश : प्रथम खण्ड

(परिवर्द्धित एवं संशोधित) यंत्रस्थ



शोधकार्य किया है। 'पंत काव्य का विवेचन' नामक आपका एक आलोचनात्मक ग्रन्थ भी प्रकाशित है। आप एक सफल गीति काव्यकार भी हैं।

पार्ट टाइम अध्यापकों में श्रीमती तुलसी मिश्र 'बाल्मीकि एवं तुलसी के नारी-पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर शोध कर रही हैं और श्रीमती गिरीश रस्तोगी 'आधुनिक हिन्दी-नाटकों में संगीत' विषय पर अपना मौलिक शोध ग्रन्थ प्रस्तुत करने वाली हैं।

हिन्दी-विभाग को संचालित होते हुए अभी कुल ५ वर्ष कुछ महीने हुए हैं। उपर्युक्त उपलब्धियों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि इस अल्प अवधि में ही इसने आशातीत प्रगति की है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की भाँति हम यह दावा तो नहीं कर सकते कि आधुनिक हिन्दी-साहित्य के विकास में हमारा अद्भुत योग है, किन्तु हम यह अवश्य कह सकते हैं कि हमारे यहाँ के अध्यापकों और शोध-छात्रों ने अनेक असुविधाओं एवं सीमित साधनों के बावजूद अध्ययन अध्यापन की दिशा में वाञ्छित प्रगति की है।***

श्री रामचन्द्र सिंह सागर : १४५, मेमारान, बिहारीपुर, बरेली (उ० प्र०)

१. भारत के लोक-नृत्य ।

२. प्रशासनिक पारिभाषिक शब्दावली ।

आचार्य भास्करानन्द लोहनी : निदेशक अश्वाज्योसा शोध-परिषद्, ४०, कैसरबाग, लखनऊ-१

१. भारतीय ऋतु-विज्ञान । (रचना)

श्री सुरेश प्रसाद 'बिमल' : ग्राम : कोरैला, पो० जमुई, जिला : पटना ।

१. छलिया

२. बरसते नयन

३. हथकड़ियाँ ।

लाल बहादुर दुबे 'लाल' : सहायक शिक्षक, जू० हाई स्कूल महुआपाटन, जिला : देवरिया ।

१. धरती के पूत (कविता-संग्रह)

२. मनुआ की माँ (कहानी संग्रह)

३. खंडहर के नीचे (ऐतिहासिक उपन्यास)

४. एक थी नर्स (उपन्यास)

५. नदिया किनारे (उपन्यास)

रमेश शर्मा 'एकांकी' : विद्या भवन स्कूल, उदयपुर ।

१. पुष्पांजलि

२. अर्चन के फूल (कविता-संग्रह)

३. तू-तू मैं-मैं (हास्य कविताएँ)

४. बाल शिक्षा (लेख)

तीर्थराज झा : व्याख्याता, शासकीय उ० मा० विद्यालय, मुंगेली ।

१. वैश्वानर (महाकाव्य)

मदनमोहन जावालिया : अध्यापक, राजस्थान उ० मा० (एम० ए०, शास्त्री, बी० एड०) विद्यालय, अहणोद, जि० चित्तौरगढ़ (राजस्थान)

१. ज्योतिर्लास (कविता-संग्रह)

२. मेघदूत (अनु०)

३. राजस्थानी मुहावरे

डॉ० केवलधीर, बी० ७७, श्रीगंगानगर (राजस्थान)

१. युग-पुरुष नेहरू

श्री राजेश दीक्षित, : बेलगंज, आगरा ।

१. हिन्दी-गुजराती-शिक्षक

२. सम्पूर्ण रामचरित मानस अन्त्याक्षरी कोष-अकारादि क्रम से

श्री हरिकृष्ण देवसरे : आकाशवाणी, भोपाल ।

१. चिराग और अँधेरा (एकांकी)

डॉ० कमल कुमारी जौहरी, एम०ए०, पी०एच-डी०, महारानी लक्ष्मीबाई कन्या महाविद्यालय, भोपाल

१. हिन्दी के स्वच्छन्दतावादी उपन्यासों का अनुशीलन (शोध-प्रबन्ध)

श्री शिवकुमार शर्मा शैल, शास्त्री : तहसील आफिस, मुंगली, जिला : बिलासपुर

१. छत्तीसगढ़ की प्रमुख कहानियाँ (लोककथा)

श्री रामजी पाठक 'राज', द्वारा तहसील आफिस, मुंगेली, जिला : बिलासपुर ।

१. बासन्ती आँचल (कविता-संग्रह)

श्रीमती कुन्तल गोयल, एम० ए०, द्वारा उत्तमचन्द्र गोपाल, गवर्नमेण्ट डिग्री कालेज सीधी, सीधी (म० प्र०)

१. हम देश के हैं (कहानी-संग्रह)

२. स्वस्थ जीवन की कला

३. बघेलखण्ड के लोकगीत (लोकगीत)

श्री हरगोविन्द गुप्त : बृहस्पति प्रकाशन, चिरगाँव, झांसी ।

१. मुखिया के सपने

२. श्रम की सिद्धि

३. चौपाल के चुटकुले

सूचनाएँ एवं समाचार

सूर-सागर के सम्पादन की नयी योजना

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने क० मु० हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ के लिए ब्रजभाषा के एक महान ग्रंथ सूरसागर के संपादन की योजना स्वीकृत की है। इस ग्रंथ के सम्पादन में लगभग ७५ हजार रु० व्यय होंगे। इसका सम्पादन डॉ० माता प्रसाद गुप्त के निर्देशन में होगा जो विद्यापीठ के निर्देशक हैं और पाठालोचन के प्रसिद्ध विद्वान् हैं। आशा की जाती है कि सूरसागर के प्रामाणिक संपादन का यह कार्य लगभग तीन वर्ष में पूरा होगा।

हिन्दी सलाहकार समिति

हिन्दी के विकास और प्रचार के लिए भारत सरकार ने ४३ सदस्यों की एक समिति का गठन किया है। समिति में मुख्यतः गैरसरकारी लोग हैं। इसके अध्यक्ष स्वराष्ट्रमन्त्री श्री नन्दा हैं। समिति का नाम 'हिन्दी सलाहकार समिति' है। केन्द्र के शिक्षा-मन्त्री और विधि-मन्त्री समिति के उपाध्यक्ष होंगे। समिति के अन्तर्गत एक कार्यकारी दल होगा जिसके अध्यक्ष श्री नन्दा और संयोजक श्री सिद्धेश्वर प्रसाद होंगे।

समिति में कई संसद सदस्य हैं, जिनमें श्री गंगाशरण सिंह, प्रोफेसर हीरेन मुखर्जी, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, डाक्टर हरेकृष्ण मेहताब, श्री दिवाकर और सेठ गोविन्ददास का नाम प्रमुख हैं। अन्य लोगों में श्री दिनकर, श्री गोपालचन्द्र सिंह और केरल के श्री चन्द्रहासन हैं।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के उप-कुलपति के उद्गार

नागरी प्रचारिणी सभा के ७२वें शिलान्यास एवं डॉ. श्यामसुन्दर दास के ८९वें जन्म शती समारोह के अवसर पर भाषण करते हुए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के उप-कुलपति डॉ० एन० एच० भगवती ने डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी की सेवाओं की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि उनके यहाँ से चले जाने से विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग की क्षति हुई है।

हिन्दी नाटकों में नारी

'हिन्दी नाटकों में नारी' अनुसंधान ग्रंथ शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाला है। १९५२ के पश्चात् के प्रकाशित नाटकों के अध्ययन और उनके विश्लेषण के लिए प्रकाशक तथा लेखक अपने प्रकाशन या अपनी कृतियों को शीघ्र ही निम्नलिखित पते पर भेज दें, ताकि अनुसंधान ग्रन्थ में हाल तक प्रकाशित नाटकों के नारी पात्रों का उल्लेख एवं विश्लेषण हो सके।

(डॉ० लीला अवस्थी) आकाशवाणी, लखनऊ।

उत्तर-भारत मुद्रण तकनीकी विद्यालय को 'रूस' द्वारा एक छपाई-मशीन भेंट

उत्तर भारत मुद्रण तकनीकी विद्यालय के प्राचार्य श्री एल० आर० नागपाल ने सूचित किया है कि २३ अगस्त को विशेष समारोह के अवसर पर रूस के भारतस्थित राजदूत श्री एम० आई० ए० बेंडिक्टोव उपहार-स्वरूप छपाई की एक मशीन विद्यालय को भेंट करेंगे। इस अवसर पर उत्तर-प्रदेश की मुख्य मंत्री श्रीमती सुचेता कृपलानी विशेष अतिथि होंगी।

डॉ० शशिभूषण दास गुप्त का निधन



डॉ० शशिभूषण दास गुप्त का देहान्त ५३ वर्ष की अवस्था में उनके निवास स्थान चारुचन्द्र एवेन्यु, कलकत्ता में हो गया। आप कैन्सर रोग से पीड़ित थे। आप कलकत्ता विश्वविद्यालय में बंग-भाषा के विभागाध्यक्ष थे। आपके देहान्त से साहित्य-क्षेत्र में एक अपूरणीय क्षति हुई है। डॉ० दासगुप्ता की प्रसिद्ध कृति 'राधा का क्रम विकास' उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत है।

केरल विश्वविद्यालय द्वारा हिन्दी पर विचार-गोष्ठी

केरल विश्वविद्यालय ने आगामी २३ अगस्त से ३० अगस्त तक हिन्दी भाषा पर एक विचार-गोष्ठी का आयोजन किया है। इस अवसर पर पुस्तकों की एक प्रदर्शनी भी लगाई जायेगी। जो प्रकाशक इस प्रदर्शनी में भाग लेना चाहें 'निदेशक, हिन्दी-विचार गोष्ठी (Kerala University)' से पत्र व्यवहार करें।

सफलता के शिखर : लेखक—मनमोहन सहारिया, **प्रकाशक** : मानक चन्द बुकडिपो, उज्जैन; पृष्ठ संख्या : १४८; **मूल्य** : २.५० ।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने आधुनिक युग की वैज्ञानिक प्रगति का विवरण कथात्मक ढंग से किया है । भाषा सरल और सुबोध है । प्रत्येक आविष्कारों के नामांकन भी रोचक हैं । पुस्तक की छपाई साफ और सुन्दर है तथा स्थान-स्थान पर एकरंगे चित्र भी विषय को स्पष्ट करते हैं । पुस्तक की उपयोगिता निर्विवाद है ।

जिन्दगी के रंग : लेखक—पंकज, **प्रकाशक**, : दिल्ली पुस्तक सदन, पटना ।

प्रस्तुत पुस्तक विभिन्न पात्रों के जीवन की तरह-तरह की घटनाओं को लेकर एक औपन्यासिक सूत्र में जोड़ती है । समाज की बुराइयों की ओर संकेत करनेवाला यह एक घटना-प्रधान उपन्यास है ।

हमारा आहार : **प्रकाशक** : गणेश एण्ड कम्पनी; प्रा. लि., मद्रास; **मूल्य** : २.०० मात्र ।

केन्द्रीय खाद्य प्रौद्योगिक अनुसंधानशाला, मैसूर, खाद्य-पदार्थों के खोज-बीन के प्रयोगों में संलग्न तीन विद्वान् प्रोफेसरों के प्रयोगों और अनुभवों से प्रसूत यह पुस्तक एक बहुत बड़ी आवश्यकता की पूर्ति करती है । विभिन्न खाद्यतत्वों के मेल से अल्प मूल्य तथा स्थानीय साधनों से किस तरह हमारे राष्ट्र का स्वास्थ्य सुदृढ़ रह सकता है इसका विवरण सरल तथा बोधगम्य भाषा में प्रस्तुत किया गया है । ऐसी उपयोगी पुस्तक का प्रकाशन एक श्रेष्ठ कार्य है ।

ईसपकी कहानियाँ : **प्रकाशक** : शिक्षाभारती दिल्ली; **रूपान्तरकार** : जहूरबख्श ।

ईसपकी कहानियाँ सदियों से बाल-साहित्य तथा शिक्षा-प्रद सरल कथा साहित्य के रूप में अपना स्थान बनाये हुए हैं । रूपान्तरकार अपनी मँजी हुई भाषा के लिए विख्यात हैं । पुस्तक की छपाई प्रशंसनीय है । अच्छे कागज और गेटअपयुक्त १०८ पृष्ठों के इस सजिल्द बाल साहित्य का मूल्य १.५० मात्र है ।

मेजर शैतान सिंह तथा लेखक : सीताराम पारीक; **प्रकाशक** : अजमेर बुक कम्पनी सीमा के प्रहरी, जयपुर, **मूल्य** : ०.४५ मात्र ।

चीन के विरुद्ध सीमा-संघर्ष में त्रिशूल के मोर्चे पर भारत के गौरव की रक्षा करनेवाले इस वीर का परिचय बाल-साहित्य के रूप में उपस्थित किया गया है । 'सीमा के प्रहरी' पुस्तक में चीन के विरुद्ध सीमा की रक्षा करने में अपने प्राणों की बाजी लगा देनेवाले सत्रह वीरों के पराक्रम का परिचय है । सीमा का संघर्ष हमारे देश के गौरव का प्रमुख प्रश्न है । उस संघर्ष भावना को जागृत रखने के लिए इस तरह की सस्ती पुस्तकों का प्रकाशन और घर-घर में प्रसार आवश्यक है ।

बन्द दरवाजा : लेखिका : अमृता प्रीतम; **प्रकाशक** : राजपाल एण्ड सन्स; दिल्ली ।

प्रस्तुत कृति लेखिका का एक श्रेष्ठ लघु उपन्यास है । समर्पण में लेखिका ने 'यह बन्द दरवाजा अपनी खोई हुई चाबी के नाम' देकर जैसे एक प्रश्न-चिह्न उपस्थित किया है । पिता, पति, प्रेमी सभी से प्रताड़ित जिसके सामने के सभी द्वार बन्द हों । जो सब कुछ छोड़ने पर भी अपनी कोख को बन्ध्या नहीं रख सकती । प्रायः १२० पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २.५० मात्र है ।

साहित्य के स्वर : लेखक : उदयशंकर भट्ट : **प्रकाशक** : आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली; **मूल्य** : ३.५० मात्र ।

साहित्य के प्रौढ़ लेखक की इस वैचारिक कृति में, साहित्य की समस्या, सृजन, मूल्यांकन, नवीन और प्राचीन आदि विषयों पर विद्वत्तापूर्ण लेखों और विचारों के चयन के साथ कुछ लेख व्यक्तिगत हैं, पर उनमें पुरानी अनुभूतियों के ऐसे विवेचन हैं जो वर्तमान के लिए हितकर हैं ।

बेला सुबह की : कवि महेन्द्र कार्तिकेय, चितरंजन प्रकाशन; बम्बई; रायल साइज : पृष्ठ संख्या ५६ मात्र । **मूल्य** : ३.०० ।

प्रस्तुत संग्रह में नयी कविता की कुछ आकर्षक कृतियाँ बन पायी हैं । चक्र यूह, ओ लघुमानव, हमारी आत्मायें, आदि कवितायें एक पूर्णता का संकेत देती हैं । उन्हें नयी या पुरानीन कहकर खुले हृदय से कविता कहा जा सकता है । पुस्तक की साज-सज्जा आकर्षक है ।

कुतबन कृत मृगावती : संपादक शिवगोपाल मिश्र; **प्रकाशक** : हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग; **मूल्य** : ६.००

प्राचीन लुप्त और अनउपलब्ध कृतियों की खोज और प्रामाणिक प्रकाशन की परम्परा में यह कृति एक नयी कड़ी है । हिन्दी के प्रमुख प्राचीन प्रेमाख्यान काव्यों की समय-तालिका साहित्य के इतिहास का एक पृष्ठ है । मृगावती कथा के विभिन्न रूपों का एकत्रीकरण और प्रकाशन एक महत्व का कार्य है ।

रक्त का प्रमाण दो : कवि देवीसिंह चौहान; **प्रकाशक** : उदय प्रकाशन; वाराणसी,

प्रस्तुत कविता संग्रह आज के सीमा संघर्ष की विजय के इच्छुक भारतीय आत्मा के लिए एक ललकार और आह्वान है । रायल साइज की ८२ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य ३.००; आकर्षक गेटअप ।

हमारे प्रकाशन

आधुनिक काव्य : रचना और विचार
आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ३.५०
विभिन्न विश्वविद्यालयों की हिन्दी साहित्य एम. ए. एवं बी. ए. की परीक्षा की अनिवार्य पुस्तक।

सामयिक जीवन और साहित्य
डॉ० रामरतन भटनागर ७.००
भारतीय विश्वविद्यालयों की एम. ए., बी. ए. स्वतंत्र, हिन्दी निबन्ध की परीक्षा के प्रश्न-पत्र के लिये सुपाठ्य पुस्तक।

रूपायन (एकांकी संकलन)
डॉ० रामरतन भटनागर ३.००
भारतीय विश्वविद्यालयों की बी. ए., बी. एस. सी. हिन्दी प्रश्न-पत्र के लिये पाठ्य-पुस्तक।

परम्परा (कहानी संकलन) ३.००
बी. ए. द्वितीय वर्ष हिन्दी निबंध प्रश्न-पत्र के लिये पाठ्य-पुस्तक।

हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास
डॉ० रामरतन भटनागर ६.००
भारतीय विश्वविद्यालयों की हिन्दी साहित्य परीक्षा की अनिवार्य पुस्तक।

निराला और नवजागरण
डॉ० रामरतन भटनागर १०.००
हिन्दी साहित्य : एम. ए.

मध्यदेशीय संस्कृति और हिन्दी साहित्य
डॉ० रामरतन भटनागर ८.००
हिन्दी साहित्य : एम. ए.

[illegible]ध्ययन डॉ० रामरतन भटनागर २.००
अहिन्दी भाषा भाषी विभिन्न विश्वविद्यालयों की विविध परीक्षाओं के लिये पाठ्य पुस्तक।

निराला डॉ० रामरतन भटनागर ५.००
महाकवि निराला पर अपूर्व पुस्तक।

फ्राइडवाद डॉ० मोहनचन्द्र जोशी
मीरा जोशी ७.००
मनोविज्ञान विषय की असामान्य मनोविज्ञान प्रश्न-पत्र के लिये विभिन्न विश्वविद्यालयों में पाठ्य-ग्रन्थ।

नव्य फ्राइडवाद डॉ० मोहनचन्द्र जोशी
मीरा जोशी प्रेस में

नई कविता : संस्कार और शिल्प रामशंकर मिश्र ५.००
हिन्दी साहित्य एम. ए.

मातृत्व और बालसंगोपन
डॉ० मालती श्रीखंडे ३.००
उच्चतर माध्यमिक, प्रौढ़ शिक्षा एवं उपाधि परीक्षाओं के गृह-विज्ञान विषय की अनिवार्य पुस्तक।

शरीर-विज्ञान की रूपरेखा
डॉ० मालती श्रीखण्डे ३.००
उच्चतर माध्यमिक, प्रौढ़-शिक्षा, उपाधि परीक्षाओं के गृह-विज्ञान एवं शरीर शास्त्र प्रश्न-पत्र के लिये अनिवार्य पाठ्य-पुस्तक।

आधुनिक निबंध (विश्लेषणात्मक समीक्षा)
नरेन्द्र वर्मा, बी. ए. २.७५
हिन्दी निबंध में स्वीकृत पाठ्य पुस्तक की सहायक पुस्तक।

काव्य निकष लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी १.००
विभिन्न परीक्षाओं, साहित्य शास्त्र प्रश्न-पत्र, रस छन्द अलंकार के लिये अनिवार्य पुस्तक।

वीरांगना (नाटक) डॉ० मालती श्रीखण्डे ३.००
विभिन्न विश्वविद्यालयों की विविध परीक्षाओं के लिये।

राजनीतिक विचारक डॉ० नारायणप्रसाद दुबे ७.००
राजनीतिशास्त्र की बी. ए. एवं एम. ए. के लिये पाठ्य-पुस्तक।

राजनीतिशास्त्र के सुप्रसिद्ध लेखक डॉ० सुशीलचन्द्र सिंह की कृतियाँ।

राजनीति १०.००
बी. ए. राजनीतिशास्त्र प्रश्न-पत्र की अनिवार्य पुस्तक।

महत्वपूर्ण शासन प्रणालियाँ १०.००
बी. ए. एवं एम. ए. की अनिवार्य पुस्तक।

भारतीय शासन और राजनीति के सौ वर्ष १०.००
बी. ए. के लिये अनिवार्य पुस्तक।

स्वतन्त्र राष्ट्रों के सम्बन्ध १५.००
एम. ए. की अनिवार्य पुस्तक।

कूटनीति के सिद्धान्त
एम. ए. के लिये अनिवार्य पुस्तक। (प्रेस में)

Hindu Revivalism & Indian Nationalism Dr. B. R. Purohit 15.00

साथी प्रकाशन | सागर, म. प्र.



टेलीफोन : २११४ रजि० नं० : L १०३४ टेलीग्राम : प्रचारक

हिन्दी प्रचारक

हिन्दी पुस्तक-व्यवसाय का मुख-पत्र

हमारे चार अभिनव प्रकाशन

हम सब एक हैं!
—डॉ० लल्लनजी गोपाल—

संस्कृति और संस्कृतियाँ
—डा० लल्लनजी गोपाल—

सामुदायिक विकास
—लालजी सिंह—

हमारी बिरादरी
—डा० लल्लनजी गोपाल—



हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय | पो० बॉ० नं० ७०, पिशाचमोचन | **वाराणसी-१**



हिन्दी प्रचारक कार्यालय, सी. २१/३०, पिशाचमोचन, वाराणसी-१ से श्री ओमप्रकाश बेरी द्वारा प्रकाशित एवं विद्या मन्दिर प्रेस (प्राइवेट) लि. मानमन्दिर, वाराणसी-१ में श्रीकृष्णचन्द्र बेरी द्वारा मुद्रित।

हिन्दी प्रचारक

सितम्बर ...६४

घर - घर की शोभा

नेहरू साहित्य

नेहरू विचार माला

(सम्पादक राजकुमार)

- नियोजन
- पंचशील
- पंचवर्षीय आयोजन
- पाकिस्तान
- समाजवादी ढंग का समाज
- राष्ट्रमंडल
- परराष्ट्र नीति
- सहकारिता

प्रत्येक का मूल्य : ०.५० पैसे

अन्य प्रकाशन

…हरूजी की सूक्तियाँ (सं० गोविन्द सिंह)	१.००
जय जवाहर (नेहरू जी पर लिखी कविताओं का संकलन सुधाकर पाण्डेय द्वारा सम्पादित)	१.००
…मेरिका में नेहरू (ले० राजकुमार)	१.७५
नेहरू की रूसयात्रा (ले० राजकुमार)	१.५०



हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

[illegible] …-१

हिन्दी प्रचारक

[मासिक]

वर्ष : १२ : अंक : ६

मूल्य

सम्पादक
श्रीकृष्णचन्द्र बेरी

सितम्बर : १९६४

वार्षिक : ३.००
एक प्रति : २५ पैसे

हिन्दी-दिवस

१४ सितम्बर को सारे भारत में हिन्दी-दिवस मनाया जायगा और इस अवसर पर भारतवासी हिन्दी की सेवा का व्रत लेंगे। देश में भावनात्मक एकता की आवश्यकता को देखते हुए यह परमावश्यक है कि देश की एक ऐसी राष्ट्रीय भाषा हो जिसे प्रत्येक देशवासी जाने और समझें। हिन्दी ही एक ऐसी भाषा थी जिसे राष्ट्रीय भाषा का स्थान मिलना चाहिये था और संविधान में उसे राष्ट्रभाषा स्वीकार भी किया गया है। १४ सितम्बर हमारे लिए आत्म-परीक्षण का अवसर है। हमें प्रत्येक स्तर पर यह देखना है कि हिन्दी के लिये हिन्दी सेवियों ने अब तक क्या-क्या किया है?

लेखक, प्रकाशक, संस्थायें, पुस्तकालय तथा सरकार ये पाँच ऐसे सूत्र हैं, जिनके द्वारा साहित्य के रथ की परिचालना होती है। हमें यह देखना है कि ये पाँच सूत्र हिन्दी के लिए कहाँ तक कुछ कर पाये हैं। वैसे तो इन पाँचों के विषय में कहा जा सकता है कि अपने-अपने क्षेत्र में सभी ने प्रगति की है, परन्तु यह निर्विवाद है कि ये पाँचों सूत्र उस गति से नहीं चल पाये हैं जिससे हिन्दी १९६५ तक संविधान के अनुसार राष्ट्रभाषा हो जाती और अंग्रेजी के लिए भाषा विधेयक संसद में नहीं आता। स्थिति यह है कि हिन्दी के लेखकों ने हिन्दी के वाङमय को साहित्येतर विषयों में अभी इतना समृद्ध नहीं किया है जितना उन्हें विगत १७ वर्षों के बीच कर लेना चाहिये था। इसके दो कारण हैं—एक, हिन्दी के अधिकांश मनीषी साहित्यकार साहित्येतर विषयों के लेखकों को हिन्दी के लेखक समाज में समादृत होते देखना नहीं चाहते और कभी भी यह चिंतन नहीं करते कि साहित्य के परे भी कुछ ऐसे विषय हैं जो आज के समाज के लिए आवश्यक हैं। दूसरी, कमी जो हमारे साहित्यकारों में आ गयी है वह है दलगत राजनीति में प्रवेश की। इससे लिखने-पढ़ने के बजाय उनकी शक्ति राजनीतिक दाँव-पेंच और गुटबाजी की ओर लग जाती है। जो थोड़े बहुत सेवी बचते हैं वे सरकार और प्रकाशकों की छाया से प्रकाश में ही नहीं आ पाते।

प्रकाशक पहले की अपेक्षा समझदार और सूझबूझ वाले अवश्य हो गये हैं, परन्तु उनमें से अधिकांश अभीतक पुस्तक-व्यवसाय की पवित्रता को समझने में असमर्थ हैं। यदि वे सेवा की किंचित् भावना से चलें तो उन्हें सामाजिक महत्व भी मिलेगा और उनका व्यवसाय भी समृद्ध होगा। हिन्दी की जितनी संस्थायें अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हैं, उनका कार्य तो स्तुत्य है, परन्तु हिन्दी-भाषी क्षेत्र की हिन्दी संस्थायें उतना कार्य नहीं कर पा रही हैं, जितना उन्हें करना चाहिये। संस्थाओं में सरकार मुखापेक्षी होने की आदत सेवा-भावना में कमी ला रही है। संस्थाओं के विवाद सैद्धान्तिक न होकर वैयक्तिक हो जाते हैं।

पुस्तकालयों में हिन्दी की पुस्तकें रखने के बजाय अंग्रेजी की पुस्तकें खरीदना ज्यादा गौरव की बात माना जाता है। वस्तुतः होना यह चाहिये कि हिन्दी और क्षेत्रीय भाषा की पुस्तकें प्रत्येक पुस्तकालय में खरीदने का अनिवार्य बजट होना चाहिये। परन्तु हो इसके ठीक विपरीत रहा है।

सरकार के सम्बन्ध में आलोचना रोज हम अखबारों में पढ़ते हैं, परन्तु यह कहा जा सकता है कि हमारी सरकार ने हिन्दी के संवर्धन के लिए अनेकानेक सुप्रयत्न किये हैं। आवश्यकता है सिर्फ लालफीताशाही को खत्म करने की। हिन्दी-दिवस पर आत्म-परीक्षण हम कर सकें तो निश्चय ही इस दिवस का महत्व उत्तरोत्तर बढ़ता जायगा।

★

पाठ्य पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की रूपरेखा

–कृष्णचन्द्र बेरी

पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण से उत्पन्न विवाद हमारे देश में कभी भी इतने व्यापक रूप में नहीं छिड़ा, जितना कि आज देखने में आ रहा है। कहा जाता है कि सरकार को राष्ट्रीयकरण की नीति जनता के हित में अपनानी पड़ी। दूसरी ओर इसके विरोध में यह तर्क दिया जा रहा है कि सरकार ज्ञान के क्षेत्र को परिसीमित कर रही है। आर्थिक दृष्टि से भारत के दस लाख नागरिकों की जीविका का प्रश्न भी सरकार की पुस्तकों की राष्ट्रीयकरण की नीति से सम्बद्ध है। सरकार की इस नीति से प्रभावित हुए हैं: लेखक, प्रकाशक, मुद्रक, पुस्तक-विक्रेता, चित्रकार तथा जिल्दसाज। इसे किसी प्रकार उचित भी माना जा सकता था, यदि पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण से सामान्य जनता का हित सम्भव होता, परन्तु स्थिति ठीक इसके विपरीत है।

स्वतंत्रता के बाद सन् १९५७ में तत्कालीन केन्द्रीय शिक्षामंत्री मौलाना आजाद ने देश के सभी राज्यों के शिक्षामंत्रियों का एक सम्मेलन बुलाया था, जिसमें पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण पर विचार-विमर्श हुआ। प्रकाशकों के विरुद्ध अभियोग उपस्थित किये गये कि वे रद्दी कागज पर पुस्तकें छापते हैं, पुस्तकों की छपाई अच्छी नहीं करते, उनके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की आवरण-सज्जा निकृष्ट कोटि की होती है, मूल्य अनाप-शनाप रखे जाते हैं, जिससे गरीब छात्र तथा अभिभावक पुस्तकें खरीदने में अपने को असमर्थ पाते हैं, पुस्तकों में अशुद्धियाँ भरी रहती हैं और कभी-कभी तो पुस्तकों में विषय-वस्तु तक गलत रहती है। इसी सम्मेलन में बम्बई के शिक्षा-मंत्री श्री दिनकर राव देसाई पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण के विचार से असहमत थे। कुछ शिक्षा-शास्त्रियों ने इसी सम्मेलन में यह भी कहा था कि अच्छी पुस्तकें भी बाजार में सामने हैं और उनमें विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत विषय भी उपयोगी पाये जाते हैं, मुद्रण का स्तर भी अच्छा है, ऐसी स्थिति में ज्ञान को सीमा में बाँधना और प्रकाशन के क्षेत्र में सरकार का प्रवेश उचित नहीं। परन्तु बहुमत इस पक्ष में था कि पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण का निर्णय विभिन्न राज्यों के शिक्षामंत्रियों तथा शिक्षाविभागों पर ही छोड़ दिया जाय। केन्द्र के इस निर्णय में कुछ ऐसी ध्वनि थी कि वह राज्य में पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण का समर्थक है, परिणामस्वरूप राज्य सरकारों ने इसे केन्द्र का सुझाव समझते हुए अपने राज्य में राष्ट्रीयकरण का निश्चय किया।

इसके बाद ही प्रधान मंत्री की अध्यक्षता में एक उच्चस्तरीय कमेटी ने यह निर्णय किया कि पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण अवश्य किया जाय और आदर्श पुस्तकें प्रस्तुत की जायँ। इस कमेटी में शिक्षाशास्त्री विभिन्न विश्व-विद्यालयों के उपकुलपति, राज्यों के शिक्षा मंत्री आदि उपस्थित थे। कुछ लोगों ने इस विचार का विरोध भी किया, जिनमें कर्नाटक विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री डी० सी० पावटे भी थे, परन्तु प्रधान मंत्री के निश्चय के कारण निर्णय राष्ट्रीयकरण के ही पक्ष में रहा।

जिन परिस्थितियों में राष्ट्रीयकरण का प्रश्न उठा, उनका उल्लेख ऊपर हो चुका है। अब समस्या के दो पहलुओं पर विचार करने से ही पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण के औचित्य और अनौचित्य को समझा जा सकता है। पहला प्रश्न है, जनहित के दृष्टिकोण को सामने रख कर यह देखना कि सरकार की राष्ट्रीयकरण की नीति कहाँ तक सफल हुई है। दूसरा प्रश्न है, यदि सरकार की यह नीति असफल रही है तो इस व्यवसाय में लगे दस लाख व्यक्तियों की जीविका छीन लेने का दायित्व सरकार की नासमझ नीति पर लादा जाय?

पुस्तकों के प्रकाशन और वितरण के प्रश्न पर पाँच विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार करने की आवश्यकता है:—

१–पुस्तकों की विषय वस्तु, २–छपाई-सफाई, ३–वितरण व्यवस्था, ४–मूल्य और ५–आर्थिक पक्ष।

पाठ्य-पुस्तकों में विषयवस्तु (सब्जेक्ट मैटर) का प्रश्न सबसे महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीयकृत पुस्तकें सरकार द्वारा गठित लेखक बोर्डों द्वारा सम्पादित और रचित होती हैं। इसमें सन्देह नहीं है कि ये बोर्ड कुशल शिक्षाशास्त्रियों को लेकर गठित होते ह। इनके द्वारा किया हुआ संकलन और सम्पादन उच्चकोटि का होगा, ऐसी आशा भी की जाती है। यहाँ एक प्रश्न उठता है कि जो लेखक-बोर्ड सरकार द्वारा गठित होगा, क्या वह सरकारी विचारधारा से प्रभावित नहीं होगा? यदि वह बोर्ड सरकारी विचारधारा से प्रभावित है, तो क्या यह सम्भव है कि वह बच्चों के लिये ऐसी चीजें दे सकेगा जो दलगत राजनीति से अलग हो। केरल की कम्युनिस्ट सरकार की मिसाल हमारे सामने है। जब केरल में कम्युनिस्ट सरकार बनी, तो वहाँ की पाठ्य-पुस्तकों म ऐसे पाठ दिये गये जो कम्युनिस्ट विचारधारा के प्रतीक थे। राजनीति पाठ्य-पुस्तकों में छा गयी थी जबकि उसे इसके ठीक विपरीत होना चाहिए। यदि पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण न हो और विभिन्न लेखकों द्वारा लिखित एक ही स्तर की कई पाठ्य-पुस्तक प्रकाशित हों, तो इसम सन्देह नहीं कि ज्ञान की सीमा का प्रसार होगा और उसमें किसी बन्धन या किसी विशेष वाद का प्रभाव नहीं होगा। विद्यालय अपनी मनपसन्द पुस्तक चुन सकेंगे और स्वाभाविक है कि लेखकों के विभिन्न दलों द्वारा सम्पादित ये पुस्तकें कम-से-कम उन सरकारी पुस्तकों से तो अच्छी ही होंगी जिनके विषय में आज यह कहा जाता है कि कोई भी सरकार हो वह निश्चय ही अपनी मतधारा को थोपने की चेष्टा करेगी। यदि पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण न हो और यह कार्य विद्वन्मंडली तथा सुयोग्य प्रकाशकों पर छोड़ दिया जाय, तो ये पुस्तकें सच्चे अर्थों में गणतंत्र भारत की प्रतिनिधि रचनायें मानी जायेंगी। आज का समाज जागरूक है और अपने को सरकारी बन्धन में रखना आज के आचार्यों, शिक्षकों की रुचि या प्रकृति के अनुकूल नहीं है। वे चाहेंगे कि छात्रों की रुचि के अनुकूल अनेकानेक पुस्तकों में से कोई एक पुस्तक चयन करने का उन्हें अवसर मिले। राष्ट्रीयकरण की स्थिति म उन्हें विवश होकर वे ही चीजें पढ़ानी होंगी, जो सरकार द्वारा तैयार होंगी। अमेरिका और ब्रिटेन को लीजिए। वहाँ पाठ्य-पुस्तकों के तैयार करने की वैज्ञानिक विधि इतनी समुन्नत हो गई है कि नित्य नये-नये संशोधन पाठ्य-पुस्तकों में आने लग गये हैं। यदि हमारे देश में पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण कर लिया गया, तो क्या लेखक प्रतिवर्ष उन पाठ्य पुस्तकों में समय के अनुसार संशोधन, संपादन तथा नई रचनायें भी संकलित करने में समर्थ होंगे? इस व्याधि से त्राण पाने का एकमात्र उपाय है, पुस्तकों की रचना म किसी तरह का सरकारी हस्तक्षेप न हो और विभिन्न लेखकों द्वारा लिखी पुस्तक विभिन्न प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित हों। प्रकाशन की स्पर्धा में इस विधि से अच्छी पुस्तकें बाजार में जायेंगी और आचार्य तथा शिक्षकगण छात्रों की रुचि के अनुकूल पुस्तकों का चयन कर सकेंगे।

कतिपय प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की छपाई-सफाई के प्रश्न का उपयोग राष्ट्रीयकरण के पक्ष के समर्थन में किया गया। यह बात बार-बार उठाई गयी कि प्रकाशक पाठ्य-पुस्तकों में रद्दी कागज का व्यवहार करते हैं, रद्दी छपाई करते हैं, पुस्तकों में उचित स्थान पर चित्र नहीं देते और उनकी पुस्तकों की बंधाई आदि अच्छी नहीं होती। सरकारी दृष्टिकोण को सर्वथा समुचित मान लेना ठीक नहीं होगा। यह स्वीकार किया जाता है कि कतिपय प्रकाशकों (जो कि प्रकाशकीय मर्यादा नहीं समझते) ने लापरवाही से पुस्तकों का प्रकाशन अवश्य किया, परन्तु यह तर्क उन सभी प्रकाशकों के लिये लागू नहीं होता जिनकी पुस्तक आज के राजकीय प्रकाशनों के मुकाबले में कई गुना अच्छी हैं। सरकारी प्रकाशन-व्यवस्था में बंगाल, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश के सरकारी प्रकाशनों को छोड़कर पंजाब, बिहार, उड़ीसा, मैसूर, राजस्थान, आन्ध्र आदि राज्यों के जो प्रकाशन हुए हैं, वे निम्न स्तर के हैं और इनके विषय में यही कहा जा सकता है कि सामान्य-से-सामान्य प्रकाशक इन प्रकाशनों से अच्छे प्रकाशन प्रस्तुत कर सकता है। बिहार सरकार की पुस्तकों को लीजिये—भोंडी छपाई, टूटी मात्रायें, रद्दी बँधाई आदि इनकी विशेषताएँ हैं। आन्ध्र, उड़ीसा, राजस्थान और मैसूर के प्रकाशन भी प्रायः इसी श्रेणी के हैं। इसका कारण है कि इन प्रदेशों में उन्नत स्तर का मुद्रण-कार्य नहीं हो पा रहा है। जल्दी-जल्दी में या तो सरकारी प्रेसों में पुस्तकें छपती हैं या टेण्डर द्वारा ऐसे प्रेसों में दे दी जाती हैं, जो आधुनिक उपकरणों के अभाव में अच्छा मुद्रण नहीं कर पाते, परन्तु कम दिये टेण्डर के कारण छपाई का काम पा जाते हैं। यह मसला तभी हल हो सकता है, जब सरकार करोड़ों की मशीनरी मँगावे और सरकारी प्रेसों को सुदृढ़ करे। दूसरा पक्ष भी सामने है। प्रकाशकों के हाथ में जब यह कार्य रहा, तो इन

प्रदेशों में अधिकांश पुस्तकें कलकत्ता, बम्बई के सुप्रसिद्ध प्रेसों म मुद्रित होती रहीं, अथवा जो प्रकाशक थे, वे बड़े-बड़े शहरों में जहाँ अच्छी मुद्रण संस्थायें हैं, अपनी पुस्तक प्रकाशित करवाते रहे। यदि पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण न हो, तो स्वाभाविक है कि प्रकाशक नई मशीनें स्वयं खरीदेंगे और जो कार्य सरकार के खजाने की रकम से होगा वह विभिन्न प्रकाशक अपने पर दायित्व लेकर करने लगेंगे। आज के युग का प्रकाशक छपाई-सफाई के मामले में बहुत ही सचेष्ट है। इसका एक ज्वलन्त प्रमाण देखना चाहें, तो सरकारी पुस्तकों की तुलना प्रकाशकों की साहित्यिक पुस्तकों से कीजिये, स्पष्ट हो जायेगा कि प्रकाशकों की प्रकाशन-क्षमता कितनी आगे है। कम बिकनेवाली साहित्यिक पुस्तकें जब प्रकाशक इतनी सुन्दर प्रकाशित कर सकते हैं, तब कोई कारण नहीं कि अधिक बिकनेवाली स्कूली पुस्तकें प्रकाशक अच्छी प्रकाशित न करें। हिन्दी तथा बँगला पुस्तकों के कतिपय प्रकाशकों न प्रकाशन का जो मानदण्ड स्थापित किया है, वह इस बात का प्रतीक है कि हमारे देश की प्रकाशन व्यवस्था विदेशों के समकक्ष होने जा रही है। सरकार के पास अभी ऐसी मशीनरी का नितान्त अभाव है, जो पुस्तकों की छपाई-सफाई और उसके उत्पादन को नई दिशा दे सके। इसके ठीक विपरीत आज का लिखा-पढ़ा अनुभवी प्रकाशक अच्छी पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित कर सकता है जो कि छात्रों के लिये आकर्षक होने के साथ-साथ उनकी रुचि का परिष्कार भी करेंगी।

पाठ्य-पुस्तकों के आवरण के सम्बन्ध में भी आलोचनायें सामने आयी हैं। राजकीय प्रकाशनों के आवरण अच्छे प्रकाशित हुए हों, यह तो देखने में नहीं आया। इसका पुष्ट प्रमाण यह है कि मुद्रण-प्रतियोगिता में आजतक सरकारी पुस्तकों के कवरों के मुकाबले प्राइवेट प्रकाशकों के कवर ही पुरस्कृत हुए हैं।

पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण हो जाने के बाद इन पुस्तकों की वितरण-व्यवस्था इतनी रद्दी हो जाती है कि सामान्य छात्रों को इनका मिलना कहीं कठिन-सा हो जाता है। सरकारी पुस्तकें प्राप्त करने के लिये कतिपय प्रदेशों में पुस्तक-विक्रेता परेशान हो जाते हैं, उन्हें महीनों पहले रुपये जमा करने पड़ते हैं और तब भी पुस्तकें समय पर नहीं मिलतीं। कभी-कभी सरकारी प्रकाशन बाजार म बहुत विलम्ब से उपलब्ध होते हैं और समय पर पुस्तक-विक्रेताओं को न मिलने के कारण छात्रों को पुस्तकें मिलने में बहुत ही असुविधा होती है। इसके ठीक विपरीत प्रकाशकों की वितरण-व्यवस्था सरकारी व्यवस्था से बहुत ही उत्तम होती है। आपस में स्पर्धा होने के कारण प्रत्येक प्रकाशक यह चाहता है कि उसकी पुस्तक बाजार में सुलभ हो और शीघ्र बिक जाय। वह अपने एजेण्टों को स्थान-स्थान पर नियुक्त करता है और उन एजेण्टों द्वारा पुस्तकों का वितरण कराता है। प्रकाशक अपनी पुस्तकों के प्रचार के लिये, विक्रेताओं को १५ से २५ प्रतिशत तक कमीशन देता है। अधिकांश राष्ट्रीयकरणवाले प्रकाशन १० प्रतिशत पर विक्रेताओं को उपलब्ध होते हैं, ऐसी स्थिति में विक्रेताओं को आर्थिक क्षति तो होती ही है, साथ ही कभी-कभी छात्रों को मूल्य भी अधिक देना पड़ता है। एक विक्रेता जो १० प्रतिशत पर सरकारी

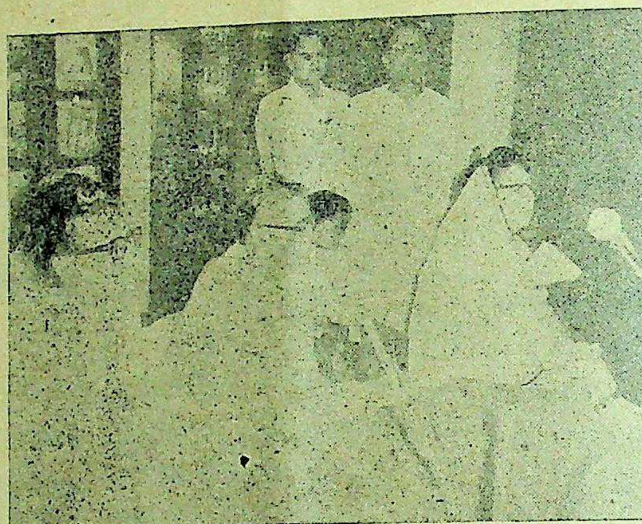
पुस्तकें खरीदता है उसे माल भाड़ा, पैकिंग आदि देने पर सवा छः से साढ़े सात प्रतिशत तक खर्च पड़ जाता है, अतः यह उचित ही है कि वह पुस्तक का मूल्य अधिक ले। एकाधिकार का यह व्यापार इस दुर्गुण को उत्पन्न करता है जिससे पुस्तकें बाजार में मँहगी मिलती हैं। यदि यहाँ पर खुली स्पर्धा हो, तो पुस्तकों के मूल्य बढ़ने का प्रश्न ही न उठे। वितरण-व्यवस्था के अभाव में सरकार द्वारा प्रकाशित पुस्तकें गोदामों में सड़ जाती हैं और उनकी जगह नकली पुस्तकें छपकर बाजार में बिक जाती हैं। पुस्तकों के इस जाली व्यवसाय की जितनी भी निन्दा की जाय, थोड़ी है। परन्तु उसी के साथ सरकारी पुस्तकों के वितरण की त्रुटियों पर ध्यान देना होगा। यदि सरकारी वितरण-व्यवस्था सुदृढ़ हो और पुस्तकें सहज सुलभ हों, तो कोई वजह नहीं कि नकली पुस्तकों को बाजार में स्थान मिले। पुस्तकों के मूल्य को लेकर भी राष्ट्रीय-करण को युक्तिसंगत ठहराया गया है। जनहित की दृष्टि से पुस्तकों का मूल्य निश्चय ही कम होना चाहिए। परन्तु राष्ट्रीयकरण के बाद सरकारी पुस्तकें जिन कीमतों पर बाजार में आयीं और सरकार ने पुस्तकों के व्यापार में लाभ उठाने का निश्चय किया उससे उस उद्देश्य की पूर्ति नहीं हुई जो राष्ट्रीयकरण के नाम पर कहा गया था। सदैव ऐसा होता आया है कि सरकार पाठ्यपुस्तकों का मूल्य स्थिर कर देती है और प्रकाशक उसी मूल्य पर बेचते हैं। आज सरकार ने विभिन्न देशों से गिफ्ट के रूप म कागज तथा पुस्तक छापने के लिये प्रेस की मशीन प्राप्त की हैं। कहा जाता है कि इससे पाठ्य-पुस्तक सस्ती हो जायेंगी, परन्तु यह बात समझ में नहीं आती कि पाठ्य-पुस्तकों को सस्ता करने के लिये हम अपनी आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ न कर, कब तक भिक्षा के कागज और मशीनों पर आश्रित रहेंगे ? बाजार म सरकार द्वारा स्वीकृत प्रकाशकों की पाठ्य-पुस्तकों के समकक्ष सरकारी प्रकाशनों को रखा जाय, तो स्पष्ट प्रतीत होगा कि प्रकाशकों के प्रकाशन वर्तमान सरकारी-व्यवस्था के अन्तर्गत प्रकाशित पुस्तकों से कहीं अच्छे हैं और उनका मूल्य सरकारी प्रकाशनों के मूल्य से अधिक न होकर उनसे कम है।

पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण के सम्बन्ध में सरकार की आफिशियल मशीनरी के खर्च को कभी कूता नहीं जाता। यदि कहा जाय कि इस सरकारी धन्धे म लाखों रुपये अकारण व्यय हो जाते हैं, तो अनुचित न होगा। प्रकाशकों का प्रतिष्ठापन अपने इसी काम के लिये होता है। उनके अपने अनुभव भी होते हैं। अपने इन्हीं अनुभवों के कारण उनका उत्पादन का खर्च कम पड़ता है। ठीक इसके विपरीत सरकारी कार्यालय करदाताओं की रकम का दुरुपयोग करते हैं और इतनी राशि अकारण बह जाती है जिसका सदुपयोग यदि सरकार पुस्तकालय-योजना में करें तो अधिक लाभकर होगा।

मद्रास के दि मेल, स्टेट्समैन, अमृत-बाजार पत्रिका, ट्रिब्यून आदि विख्यात राष्ट्रीय पत्रों ने अपने सम्पादकीय में सरकार की पुस्तकों की राष्ट्रीयकरण की नीति के औचित्य को समय-समय पर अस्वीकार किया है। पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण पर मुदालियर कमेटी तथा दूसरी एक अन्य कमेटी ने भी इस बात पर बल दिया था कि यदि पाठ्य-पुस्तकों के क्षेत्र में स्पर्धा का अभाव रहा और विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति को रोका गया तो अच्छी पुस्तकों का अभाव हो जायेगा। इन कमेटियों ने स्पष्ट शब्दों में पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण का विरोध भी किया है। मद्रास में यूनेस्को के तत्वावधान में आयोजित दक्षिण पूर्व एशिया के देशों की पठन-सामग्री की क्षेत्रीय गोष्ठी ने स्पष्ट रूप में यह प्रस्ताव पारित किया था कि इस क्षेत्र में पुस्तकों का राष्ट्रीय-करण नहीं होना चाहिए। भारत भी इस गोष्ठी में भाग लेनेवाले देशों में एक था। अभी हाल में ११ मार्च, १९६४ को पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन के सम्बन्ध में प्रसिद्ध शिक्षाविद् संसद सदस्य श्री मीनू मसानी ने लोकसभा में जो वक्तव्य दिया है उसमें आँकड़ों और विभिन्न तथ्यों से यह प्रमाणित हो गया है कि आज तक सरकार ने पाठ्य-पुस्तकों के कार्य में क्षति ही उठायी है। सस्ती और अच्छी पुस्तकों के देने का जो उद्देश्य लेकर सरकार चली थी उसमें वह बुरी तरह असफल रही है। देश में ऐसे अनेकानेक काम पड़े हुए हैं, जिन्हें सरकार को करना चाहिए और बेकार युवकों को काम देना चाहिये। परन्तु दैव-दुर्विपाक से पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण को लेकर इस उद्योग म लगे हुए दस लाख व्यक्तियों को सरकार बेकार बनाने जा रही है। अच्छा होता कि सरकार आदर्श पाठ्य-पुस्तक प्रकाशित करती और प्रकाशकों को भी साथ-साथ प्रकाशन का कार्य करने देती जिससे स्पर्धा में अच्छी पाठ्य-पुस्तकें छात्रों को सरलतापूर्वक उपलब्ध होती रहतीं।

१७ अगस्त १९६४ की एक घटना . . .

ओंकार शरद की पचासवीं कृति 'देश, काल, पात्र' के प्रकाशनोत्सव पर प्रयाग में आयोजित एक गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ॰ राममनोहर लोहिया ने की और उद्घाटन किया श्रीमती महादेवी वर्मा ने।



गोष्ठी का एक दृश्य—ओंकार शरद, डॉ॰ लोहिया, श्रीमती महादेवी वर्मा



महादेवीजी ने कहा—इस छोटी उम्र में शरद ने जितना काम किया वह हिन्दी के लिये एक उदाहरण है.....।

डॉ॰ लोहिया ने कहा—ओंकार शरद गद्य के राजकुमार हैं....।



ओंकार शरद की पचासवीं कृति

देश, काल, पात्र

अपनी विशेषताओं के लिए प्रसिद्धि प्राप्त कर रही है।

संस्मरणों, रेखाचित्रों और बीती बातों का ऐसा अनूठा संकलन अन्यथा दुर्लभ है। बहुमूल्य चित्रों से सुसज्जित

मूल्य ४.०० मात्र।

ओंकार शरद की अन्य कृतियाँ भी हमसे प्राप्त करें।





प्रकाशक

राजरंजना प्रकाशन

ऋषि कुटी, जीरो रोड, इलाहाबाद—३

अखिल भारत हिन्दी संस्था संघ

[युगप्रभात से साभार]

५ अगस्त को दिल्ली में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में लगी विभिन्न सरकारी-गैर सरकारी संस्थाओं का एक सम्मेलन हुआ। इसका आयोजन केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने किया था।

इस सम्मेलन में गैर सरकारी हिन्दी संस्थाओं के २६ और राज्य सरकारों और संघीय शासन प्रदेश के १३ प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।

इस सम्मेलन का आयोजन इसलिए किया गया था कि हिन्दी-अहिन्दी प्रदेशों में हिन्दी के प्रचार के लिए काम करनेवाली संस्थाओं में एकता लाए।

आज हिन्दी-प्रचार का यह हाल है कि जो चाहे अपनी अलग हिन्दी-प्रचार-संस्था खोल सकता है और सरकार से अनुदान पा सकता है। हिन्दी-प्रचार को प्रोत्साहन देने के लिए ही सरकार ने यह नीति अपनायी है। मगर इस के कारण कई ऐसी संस्थाएँ उठ खड़ी हुई हैं, जिनका लक्ष्य सहोदरी संस्थाओं को तंग करना है। अपने प्रभाव-विस्तार के लिए ये संस्थाएँ उचित-अनुचित उपायों से काम करने लगती हैं। ऐसी संस्थाओं की तरफ से तरह-तरह की परीक्षाएँ भी चलायी जा रही हैं। इन परीक्षाओं के नाम व स्तर ऐसे हैं कि हिन्दी-परीक्षाओं के बारे में काफी भ्रम पैदा हो गया है।

इसीलिए सम्मेलन का उद्घाटन करते समय केन्द्रीय उपशिक्षा-मंत्री श्री भक्तदर्शन ने सुझाव दिया था कि देश की विभिन्न संस्थाओं द्वारा-संचालित परीक्षाओं के समान स्तर और समान नाम होने चाहिए और चाहिए कि वे एक दूसरे के क्षेत्र में अपने कार्यों का विस्तार न करें। इससे व्यर्थ का मतभेद बढ़ता है और परीक्षाओं का स्तर भी गिर जाता है।

उपशिक्षा-मंत्री ने उन लोगों को लक्ष्य कर जो उचित-अनुचित उपायों से अखिल भारतीय क्षेत्र पर अपने परीक्षा-साम्राज्य का विस्तार करना चाहते हैं और ऐसा करके हिन्दी की सेवा के बदले हिन्दी का द्रोह करते हैं, कहा था कि कुछ संस्थाएँ उस भाषा को भी जिसका प्रचार-प्रसार वे करती हैं, क्षति पहुँचा कर अपनी परीक्षाओं में अपने क्षेत्र के बाहर के उम्मीदवारों को सुविधाएँ प्रदान करती हैं। यह ठीक नहीं है ?

इस सम्मेलन ने अखिल भारत हिन्दी संस्था संघ का संविधान स्वीकार किया था। संघ का दफ्तर दिल्ली में होगा। संघ में १५ हिन्दी संस्थाओं के दो-दो प्रतिनिधि होंगे और राज्य सरकार और संघ-शासन प्रदेश के एक-एक। केन्द्र सरकार के दो नामजद प्रतिनिधि भी इस संघ में रहेंगे। यही संघ की कार्यकारिणी समिति है।

हिन्दी विद्यापीठ, देवघर के श्री गंगाशरण सिंह इस संघ के अध्यक्ष, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार स ा, पूने के श्री जे. पी. नेने मंत्री और दक्षिण भारत हिन्दी-प्रचार-सभा के श्री भालचन्द्र आप्टे कोष अध्यक्ष चुने गये।

हिन्दी-शिक्षा-समिति

६ अगस्त को दिल्ली में केन्द्रीय हिन्दी-शिक्षा-समिति की १६वीं बैठक का समारंभ करते हुए केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री छागला ने कहा था कि प्रत्येक भारतीय को कम-से-कम एक सामान्य भाषा जरूर ही जाननी चाहिए और वह भाषा है हिन्दी। क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हिन्दी को आगे बढ़ना चाहिए। तभी वह सचमुच राजभाषा के सिंहासन पर बैठ पाएगी। यह बड़ी खुशी की बात है कि दक्षिण भारत में लोग उमंग के साथ हिन्दी सीख रहे हैं। पुरुषों से अधिक स्त्रियाँ इसमें दिलचस्पी ले रही हैं।

भाषाई झगड़ों के बारे में श्री छागला ने कहा कि हमारे यहाँ भाषाओं का मसला अन्य देशों की अपेक्षा सुलझाना आसान है। सोवियत देश में एक समान भाषा है और पचास क्षेत्रीय भाषाएँ, जब कि भारत में क्षेत्रीय भाषाएँ सिर्फ १६ हैं।

श्री छागला ने शिक्षा-समिति के सदस्यों से कहा कि देशों के विभिन्न भागों में जो हिन्दी परीक्षाएँ चलायी जा रही हैं, वे उनमें एकरूपता लाने में सरकार की सहायता करें।

उन्होंने वादा किया कि अहिन्दी प्रदेशों में हिन्दी के प्रचार के लिए सदस्य जो सुझाव पेश करेंगे, उन को सरकार जरूर ही अमल में लाने की कोशिश करेगी।

—:०:—

आचार्य द्विवेदी शतायु हों

कुँवरपाल सिंह

विगत १८ अगस्त को अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की आर्ट्स फैक्टरी के स्टाफ लॉज में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की ५७वीं जन्म-तिथि मनाई गई। इस अवसर पर अलीगढ़ की विभिन्न संस्थाओं के आचार्य तथा कई भाषाओं के विद्वान् उपस्थित थे।

आयोजन के सम्बन्ध में आरंभिक वक्तव्य देते हुए डॉ० रवीन्द्र भ्रमर ने कहा—आचार्य द्विवेदी के सम्मान में किसी भी प्रकार का आयोजन करके हम वस्तुतः भारतीय साहित्य और उसकी एक महान् कारयित्री प्रतिभा का सम्मान करते हैं, हिन्दी साहित्य के प्रति आचार्य द्विवेदी जी की जो सेवायें हैं तथा उन्होंने सभी भाषाओं के साहित्य का जिस उदारता के साथ अध्ययन और मूल्यांकन किया है, उन सबको दृष्टि में रखते हुए उनका व्यक्तित्व सहज प्रणम्य है।

प्रो० हरवंशलाल शर्मा (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग), ने कहा—आचार्य द्विवेदी का व्यक्तित्व और कृतित्व हमारे समाज और साहित्य के लिए गौरव की वस्तु है, द्विवेदी जी एक उच्चकोटि के लेखक, विद्वान् और विचारक तो हैं ही, साथ ही उनके व्यक्तित्व में मनुष्य के सहज-समर्थ रूप की अभिव्यक्ति हुई है।

आचार्य द्विवेदी से अपने व्यक्तिगत सम्बन्धों की चर्चा करते हुए प्रो० आल-ए-अहमद सुरूर (अध्यक्ष, उर्दू-विभाग) ने बताया कि, आचार्य द्विवेदी का व्यक्तित्व अत्यन्त लोकप्रिय है और यही स्थिति उनके साहित्य की भी है। प्रो० सुरूर ने साहित्य एकेडेमी की कई विशिष्ट बैठकों का उल्लेख करते हुए कहा कि, विभिन्न भाषाओं के विद्वान द्विवेदी जी के विचारों को बहुत महत्त्व देते हैं। अनेक विवादास्पद मसलों पर कभी-कभी एक-दूसरे के प्रति अविश्वास-की भावना गहरी हो जाती है, किन्तु द्विवेदी जी तब भी सबके विश्वासपात्र बने रहते हैं। यह हम सबके लिए और हिन्दी के लिए विशेष गौरव की बात है।

इस्लामी इन्स्टीट्यूट के डाइरेक्टर प्रो० अब्दुल अलीम ने आचार्य द्विवेदी को अत्यन्त स्नेहपूर्ण शब्दों में स्मरण करते हुए कहा कि, वे द्विवेदी जी को विगत २२ वर्षों से जानते हैं कि उन्हें उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को देखने, समझने और परखने के काफी अवसर मिले हैं। वे बहुत अच्छे साहित्यकार और बहुत बड़े इंसान हैं। ये दोनों गुण साथ-साथ कम ही दिखाई देते हैं। डॉ० अलीम ने फारसी का एक शेर पढ़ते हुए उसका मतलब स्पष्ट किया—

'जो लोग वफा का जाम पीकर अपने कर्त्तव्य-क्षेत्र में कार्यशील हैं, उन तक हमारा सलाम पहुँचा दिया जाय।'

व्याख्यानों के उपरान्त काव्य-पाठ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। काव्य-पाठ करने वालों में—श्री शैलेश जैदी, डॉ० रवीन्द्र भ्रमर, डॉ० राही मासूम रजा एवं प्रो० आल-ए-अहमद सुरूर के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

—:०:—



१. गान्धी-विचार-रत्न : संकलनकर्ता : माईदयाल जैन, । **प्रकाशक**—मार्तण्ड उपाध्याय, मन्त्री, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, । **मूल्य :** ३·५० मात्र ।

विविध विषयों पर गान्धी जी द्वारा प्रकट किए गए विचारों का संग्रह यह ग्रन्थ है। संकलयिता ने विषयानुसार दर्शन, धर्म मार्ग, चरित्र, समाज, ज्ञान और संस्कृति, राजनीति, अर्थशास्त्र, शरीर और स्वास्थ्य, सत्याग्रह तथा विविध—इन ग्यारह खण्डों में लेखों को अनुबद्ध किया है। इससे पाठकों को विषय विशेष पर गान्धी जी के विचार जानने के लिए काफी सहूलियत हो गई है। यह पुस्तक अनेक दृष्टियों से भावी मानवता के नव-निर्माण में उपादेय सिद्ध होगी, इसमें सन्देह नहीं। देश में इसका जितना ही प्रचार हो, उतना ही कल्याणकारी होगा।

२. बापू-स्मरण : लेखक : श्री जमनालाल बजाज, **प्रकाशक :** जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट, वर्धा की ओर से मार्तण्ड उपाध्याय, पृ० : ३४१। **मूल्य :** सजिल्द ५.००, जिल्द ४.०० ।

स्वर्गीय श्री जमनालाल, गान्धी जी के अनन्य भक्त थे। इस किताब में उनकी डायरी और पत्रों के उद्धरण सङ्कलित हैं। सब उद्धरण गान्धी जी से सम्बद्ध हैं, इसलिए इनकी उपयोगिता अपना निजी वैशिष्ट्य रखती हैं। साज-सज्जा और मुद्रण आकर्षक।

३. विनोबा के पत्र : सम्पादक—श्री रामकृष्ण बजाज। **प्रकाशक**—जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट, वर्धा। **मूल्य :** ४.०० ।

प्रस्तुत पुस्तक तीन खण्डों में है। पत्र-व्यवहार, डायरी के अंश और संस्मरण। इसमें विनोबा जी के वे पत्र हैं जो उन्होंने बजाज-परिवार को समय-समय पर लिखे हैं। दूसरे खण्ड में बजाज की डायरी का वह अंश है, जिससे विनोबा जी का सम्बन्ध है। तीसरा खण्ड बजाज-परिवार के सदस्यों द्वारा लिखे विनोबा जी-सम्बन्धी संस्मरण हैं। विनोबा जी से सम्बद्ध होने के कारण पुस्तक का महत्व स्वतः व्यक्त है। विनोबा जी के विचारों का मनन करनेवालों के लिए पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।

४. स्वतन्त्रता के बाद की सर्वश्रेष्ठ हिन्दी-कहानियाँ : संकलनकर्ता : श्री विजयचन्द। **प्रकाशक :** प्रगतिशील प्रकाशन, १९७६, कटरा खुशाल राम, किनारी बाजार, दिल्ली-६। **मूल्य :** ९.०० रु० ।

सम्पादक के मतानुसार स्वतन्त्रता के बाद हिन्दी में लिखी गई कहानियों में सर्वश्रेष्ठ बीस कहानियों का यह संग्रह है। आज का हिन्दी-कहानी-साहित्य इतना विपुलाकार हो गया है कि उन्हें पढ़ डालना सबके वश की बात नहीं। ऐसी स्थिति में उनमें से छाँटकर विशिष्ट कहानियों के संग्रह का महत्व आज खास मानी रखता है। अधिकांश लेखक हिन्दी के नामी-गरामी कथाकार हैं। इस संकलन द्वारा पाठकों को आधुनिक कहानी के विषय, लेखकों की रुचि के परिचय के साथ-ही-साथ कहानी की विविध विधाओं के साक्षात्कार का भी सुयोग मिलेगा। मुखावरण, मुद्रण आदि आकर्षणपूर्ण।

५. सरल रूपक-मञ्जरी—संकलयिता : श्री विराज एम. ए.। **प्रकाशक**-नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 'चन्द्रलोक' जवाहरनगर, दिल्ली। पृष्ठ : १४०। **आकार**:डबल क्राउन। **मूल्य :** २.००

इस पुस्तिका में महाकवि भास के तीन लघुरूपक-मध्यमव्यायोग, दूतघटोत्कचम् और कर्णभारम्-सङ्कलित हैं। यह सर्वविदित है कि कालिदास से पूर्व साहित्य-जगत् में भास को मूर्धन्य स्थान प्राप्त था। वे अप्रतिम कवि माने जाते थे। कुछ समय पूर्व ही भास का नाटक-चक्र दक्षिण में उपलब्ध हुआ है और उनका प्रकाशन भी हो चुका है। उनके तीन प्रख्यात रूपकों को यहाँ इसलिए एकत्र कर दिया गया है, जिससे कि सामान्यतया संस्कृत-साहित्य के प्रमीजन इनका केवल पाठ्य-रूप में ही नहीं, दृश्य रूप में भी रसास्वादन कर सकें। इनकी भाषा अत्यन्त सरल है, उसमें किसी प्रकार की दुर्बोधता नहीं है, साथ ही सभी सरलतापूर्वक अभिनेय भी हैं। अन्त में संकलनकर्ता ने तीनों का हिन्दीकरण भी कर दिया है। अतः इसकी उपादेयता का क्षेत्र और भी विस्तृत हो गया है। प्रयास सर्वथा प्रशंसनीय है।

६. सम्राट विक्रमादित्य—लेखक श्री विराज। नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली। पृष्ठ : १३०। **आकार** : डबल-क्राउन। **मूल्य :** २.०० ।

सम्राट् विक्रमादित्य के चरित पर आधृत यह ऐतिहासिक नाटक है। लेखक ने ऐतिहासिक वृत्त का आश्रय लेते हुए युगानुसारिणी कल्पना का भी सुन्दर विनियोग किया है और उसने सम्राट् विक्रमादित्य को महान जन-नेता के रूप में उपस्थित किया है। नाटक में अभिनयशीलता पूर्णतया विद्यमान है। यह नाटक-साहित्य की संवृद्धि की दिशा में अच्छा योगदान है।

कवितामयी (कविता-संग्रह)——**लेखक** : डॉ० हरिमोहन मिश्र। **प्रकाशक** : साहित्यालय, आलम नगर, सहरसा, पृष्ठ संख्या : ७८, मूल्य : २ रु० मात्र।

कवि डॉ० हरिमोहन मिश्र की यह कृति अपनी प्रेरणाओं को समर्पित है और प्रत्येक कविता में वे प्रेरणायें अलग-अलग रूपों में प्राचीन दर्शन के अध्ययन के साथ उपस्थित हुई हैं। कवि का आत्म-निरीक्षण समाज का बन गया है। अध्ययन से प्रभावित यह कृति पाठकों के विशिष्ट वर्ग के लिए है।

हेमवती उमा (कविता)——**लेखक** : डॉ० हरिमोहन मिश्र, **प्रकाशक** : साहित्यालय, सहरसा, । पृष्ठ संख्या : ४४, मूल्य : १ रुपया।

केनोपनिषद के 'हेमवती : उमा' की ज्योति रश्मियों से कवि की दार्शनिक चेतना को एक आधार मिला और कवि के मानव की भावना स्वर बनकर फूट पड़ी है।

'अन्तर्दाह-पीड़ित जिज्ञासु की उपेक्षा' की घुटन और वास्तविक ज्योति का सत्य कवि की आत्मा का स्वर बन गये हैं। कवि ने कविताएँ हिन्दी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं में लिखी हैं। कवि के अनुसार यद्यपि अंग्रेजी कविता हिन्दी अंश का अनुवाद है पर उसमें भी भावना के स्वतंत्र स्वर फूटे हैं।

निषध नरेश(देवी दमयंती)काव्य——**लेखक** : श्री रामपुनीत श्रीवास्तव, एम० ए०, साहित्यरत्न। **प्रकाशक** : पुनीत प्रकाशन, टांड़ा, (वाराणसी), **प्राप्ति-स्थान** : हरि प्रेस, बाग बरियार सिंह, वाराणसी। **मूल्य**:७ रु० **सजिल्द**: ७.५० पै०।

कवि ने कुल इक्कीस सर्गों और ३३२ पृष्ठों में प्राचीन "नल-दमयंती" कथा को काव्य का रूप दिया है। कवि के अनुसार काव्य-लेखन १९३७ में समाप्त हुआ और प्रकाशन १९६३ में हुआ। इसलिए बीच की अवधि का प्रभाव काव्य की भाषा और शैली पर पड़ना स्वाभाविक है। प्राचीन कथा के सौंदर्य ने काव्य रूप में उभड़कर पुस्तक को आकर्षक बना दिया है। २० पृष्ठों में पुस्तक की अनुसूची और भूमिका है।

प्रवीन राय (ऐतिहासिक उपन्यास) **लेखक** : अमर बहादुर सिंह 'अमरेश', **प्रकाशक** : भारतीय प्रकाशन, लखनऊ। **मूल्य** : ३.५० पै. : **पृष्ठ संख्या** : २१६।

राय प्रवीन का चरित्र और कवित्व प्राचीन इतिहास की एक ऐसी कहानी है जिसमें शक्ति के ऊपर साहित्यिक कला ने विजय पायी है। लेखक ने उस आख्यान को केशव आदि आचार्यों की साधना के साथ जोड़ कर इतिहास, कथा-साहित्य और काव्य को एक सूत्र में पिरोने का सफल प्रयत्न किया है। यदि वातावरण और चरित्रों के चित्रण में थोड़ा और गहरा रंग भरा गया होता, तो यह कृति

थोड़े और बड़े कलेवर में अनमोल ... लेखक ने कथा को पूर्णता देने में निस्संदेह सफलता पाई है। छपाई, कागज तथा उचित साजसज्जा की कमी थोड़ा खटकती है।

साँठ-गाँठ : (उपन्यास)——**लेखक :** आरिगपूडि, **प्रकाशक :** भारती साहित्य-सदन, नई दिल्ली। **सजिल्द मूल्य :** ५ रुपये।

सफल उपन्यास आरिगपूडि, की यह कृति वर्ग-संघर्ष की एक सफल कहानी है। पतनोन्मुख वर्ग भी समाज पर कितना हावी है, और वह सामाजिक प्रगति के लिए किस तरह नये-नये रूपों में रोड़ा बन कर सम्मुख आता है, इसका सफल चित्रण इस कृति में हुआ है। ग्रामीण जीवन की छोटी से छोटी पारिवारिक, सामाजिक और राजनैतिक स्थितियों का चित्रण इस उपन्यास में अपनी विशिष्ट शैली में हुआ है। कृति पठनीय है।

जवानी और छः एकांकी——**लेखक :** उदय शंकर भट्ट। **प्रकाशक :** आत्माराम एण्ड सन्ज दिल्ली। प्रस्तुत पुस्तक भट्टजी की प्रौढ़ लेखनी द्वारा प्रसूत सात एकांकियों का सुन्दर संग्रह है। पौराणिक और ऐतिहासिक इन सभी विचार-धाराओं की पुस्तक पठनीय है।

माध्यम-पत्रिका (प्रवेशांक, मई १९६४)——**प्रकाशक :** हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

साहित्यिक आलोचना और निबंध क्षेत्र में माध्यम का प्रवेश हिन्दी-साहित्य की एक बहुत बड़ी कमी की पूर्ति का संकेत है। विश्वास है कि संपादक बालकृष्ण राव के संपादन का अनुभव वर्तमान स्तर को उठायेगा ही। आवरण, विषय-वस्तु, छपाई सभी सुन्दर हैं। इस पत्रिका के प्रति हमारी शुभकामना है।

छोटी-बड़ी लहरें : (बाल उपन्यास)——**लेखक :** राजेन्द्र अवस्थी; **प्रकाशक :** बम्बई प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई। **मूल्य :** २·५० पै.।

प्रस्तुत बालकथा समुद्र के किनारे के मछुआ-जीवन से सम्बन्धित कहानी है। जिसमें छोटी-छोटी मछलियों के साथ काजू आदि फल, लाइट हाउस, नाव, जालें, मछली का शिकार, मछुओं की पूजा, बालकों का श्रम आदि का परिचय देते हुए भोला और बालु तथा उसके दादा और मछुआ परिवार के माध्यम से कथा गढ़ी गयी है। छोटे वाक्य और सरल भाषा इस पुस्तक की विशेषताएँ हैं।

दिल, दौलत और दुनिया : (कहानी-संग्रह)——**लेखक :** कृशनचन्दर। **प्रकाशक :** राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली। **पृष्ठ संख्या :** १२४, **सजिल्द। मूल्य :** २ रुपये ५० पैसे।

कथा-साहित्य में कृशनचंदर का नाम एक अपना स्थान रखता है। प्रस्तुत संग्रह में लेखक की कुछ प्रमुख कहानियों का संकलन है। कृशनचंदर की सम्पूर्ण कथा में ही नहीं प्रत्येक वाक्य में समाज के अन्धकारमय दायरे पर एक चोट है। घुटन और चोट, दाव और पलायन, दिल और ईमान की कमजोरी हर क्षेत्रपर टाँकियों और हथौड़ियों की चोट करनेवाले इस कथाकार की यह पठनीय कृति है।

एक चेहरा : (कहानी संग्रह)——**लेखक :** रामकुमार। **प्रकाशक :** राजपाल एण्ड सन्स। **पृष्ठ संख्या :** १४२ **सजिल्द मूल्य :** २ रुपये ५० पैसे।

लेखक की दस कहानियों का ऐसा संग्रह, जिनमें प्रायः सभी पारिवारिक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक हैं। कहानियों में कोई शिक्षण नहीं है, पर दिशा का संकेत है जो नयी कहानी की विशेषता है।

मेरी कौन सुनेगा : संस्मरण : **लेखक :** महावीर त्यागी, **प्रकाशक** राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, **पृष्ठ संख्या :** १४० **सजिल्द मूल्य :** २ रु० ५० पैसे।

पुस्तक के आवरण पृष्ठ पर 'मेरी कौन सुनेगा' नाम का तेहरा प्रकाशन उस ललकार का द्योतक है जो एक मुनादी वाले के स्वर से झंकृत होता है। श्री महावीर त्यागी के इन संस्मरणों का आरम्भ उन दिनों से हुआ है, जब स्वतंत्रता-आन्दोलन अपनी आरम्भिक अवस्था में था। सरल बोल-चाल तथा कहानी की भाषा में लेखक ने अपने अनुभवों के बहाने उन महापुरुषों के महान चरित्रों का संकेत किया है जिनके त्याग और तपस्या से हमने आजादी पायी है। आज की बढ़ती सामाजिक कुरूपता के विरुद्ध प्रस्तुत पुस्तक एक चेतावनी और आत्मविश्लेषण की प्रेरणा देती है।

लेखकीय मंच [पाण्डुलिपि तैयार है, प्रकाशक सम्पर्क स्थापित करें।]

श्री बाबूलाल शर्मा "साहित्य रत्न", अकौदिया मण्डी, शाजापुर, म० प्र०।

१. निर्मल कुसुम (कहानी संग्रह)
२. आयुर्वेद पथ-प्रदर्शक।
३. सूरदास : एक अध्ययन।

श्री बच्चन पाठक 'सलिल', करीम सिटी कॉलेज, साकची, जमशेदपुर।

१. मधु और कुनैन (कविता-संकलन)।
२. सेमर के फूल (उपन्यास)।

डॉ० कृष्णचन्द्र वर्मा, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल।

१. रीति स्वच्छंद काव्यधारा (शोध प्रबन्ध)।

श्री ब्रजगोपालदास अग्रवाल, गवर्नमेन्ट लोहिया कालेज, चूरू (राजस्थान)

१. आवरण (हिन्दी अनुवाद)
२. विचित्र कहानियाँ (हिन्दी अनुवाद)

राष्ट्रबंधु, बण्डा बेलई, सागर

१. डिंग डांग [नये शिशु-गीतों (नर्सरी राइम्स) का संकलन]
२. यह मत सोचो तुम गरीब हो (२० युग-निर्माताओं की संघर्षमयी जीवन घटनाएँ)
३. ये सिर दर्द (बालक-प्रेरक बाल-कथाएँ)

प्रत्येक पुस्तकालय एवं शिक्षण-संस्था के लिए संग्रहणीय

हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन



कालिदास के ग्रन्थों पर आधारित तत्कालीन भारतीय संस्कृति	डॉ० गायत्री वर्मा	१०.००
गीतिकाव्य का विकास	लालधर त्रिपाठी 'प्रवासी'	१०.००
बिहारी का नया मूल्यांकन	डॉ० बच्चन सिंह	३ ५०
महाकवि मतिराम	डॉ० त्रिभुवन सिंह	१०.००
कामायनी की व्याख्यात्मक आलोचना	विश्वनाथ लाल 'शैदा'	८.००
हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप-विकास	डॉ० शंभुनाथ सिंह	१२.००
बीसलदेव रासो	डॉ० तारकनाथ अग्रवाल	६.००
भारतीय प्रेमाख्यान काव्य	डॉ० हरिकांत श्रीवास्तव	१०.००
कवि निराला की वेदना तथा अन्य निबन्ध	विष्णुकान्त शास्त्री	४.००
नाटक और रंगमंच	राजकुमार	१०.००
सूरपूर्व ब्रजभाषा और उसका साहित्य	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	१०.००
दरबारी संस्कृति और हिन्दी मुक्तक	डॉ० त्रिभुवन सिंह	४.५०
कहानी का रचना-विधान	डॉ० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा	६.०
विद्यापति	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	५.००
मधुमालती (मंझनकृत)	डॉ० शिवगोपाल मिश्र	८.००
रवीन्द्र कविता-कानन	'निराला'	०.९७
प्रसाद के नाटक	परमेश्वरी लाल गुप्त	४.५०
रस-साहित्य और समीक्षाएँ	'हरिऔध'	४.००
हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद	डॉ० त्रिभुवन सिंह	८.००
साहित्य-परिचय	डॉ० एस० पी० खत्री	३.००
सूर के सौ कूट	चुन्नीलाल 'शेष'	५.००
श्रीराधा का क्रम-विकास	डॉ० शशिभूषण दास गुप्त	८.००
हिन्दी का लिटरेचर (अंग्रेजी)	डॉ० रामअवध द्विवेदी	५.००
हिन्दी साहित्य की रूपरेखा	कृष्णदेव प्रसाद गौड़	१.७०
लोकधर्मी नाट्य परम्परा	डॉ० श्याम परमार	५.००
दिग्विजय-भूषण	डॉ० भगवती प्रसाद सिंह	१५.००
समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द	डॉ० महेन्द्र भटनागर	५.००
भोजपुरी लोक-साहित्य का अध्ययन	डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय	१०.००
काव्यरूपों के मूल स्रोत और उनका विकास	डॉ० शकुन्तला दुबे	१०,००
हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास	डॉ० जार्ज इब्राहम गियर्सन (सं० डॉ० किशोरीलाल गुप्त)	९.००
आधुनिक हिन्दी कविता की स्वच्छन्द धारा	डॉ० त्रिभुवन सिंह	५.००
रत्नाकर और उनका काव्य	उषा जायसवाल	५,००
छायावाद के गौरव-चिह्न	प्रो० 'क्षेम'	९.००
बाबू श्यामसुन्दर दास : व्यक्तित्व और कृतित्व	रामनाथ पाण्डेय	२.२५



हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पो. बॉ. नं० ७०, पिशाचमोचन
वाराणसी—१

सूचनाएँ एवं समाचार

राष्ट्रीय पुस्तक-प्रदर्शनी

नेशनल बुक ट्रस्ट की ओर से आगामी नवम्बर के अन्तिम सप्ताह में रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली में एक अखिल भारतीय पुस्तक-प्रदर्शनी का आयोजन किया जायेगा। इस अवसर पर प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओं का एक राष्ट्रीय सम्मेलन भी आयोजित होगा, जिसमें लेखक तथा लाइब्रेरियन भी भाग लेंगे। जो भी प्रकाशक अपनी पुस्तकें इस प्रदर्शनी के लिए भेजना चाहें, वे निम्नलिखित पते पर पत्र-व्यवहार करें।

श्री एम. सी. मिनोचा, मंत्री : नेशनल बुक ट्रस्ट
२३, निजामुद्दीन ईस्ट, नई दिल्ली—१३.

गोष्ठी

ओंकार शरद की पचासवीं कृति 'देश, काल, पात्र' के प्रकाशनोत्सव पर प्रयाग में आयोजित एक गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ० राममनोहर लोहिया ने की और उद्घाटन किया श्रीमती महादेवी वर्मा ने। महादेवी जी ने कहा कि इस छोटी उम्र में शरद ने जितना काम किया वह हिन्दी के लिए एक उदाहरण है और डॉ० लोहिया ने कहा कि ओंकार शरद गद्य के राजकुमार हैं।

अहिन्दी क्षेत्र की हिन्दी संस्थाओं एवं हिन्दी स्कूलों को अनुदान

भारत-सरकार अहिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र की हिन्दी संस्थाओं एवं उन स्कूलों को जिनमें हिन्दी माध्यम से पढ़ाई होती है। प्रोत्साहन के लिए आर्थिक अनुदान देगी। इससे सम्बन्धित सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए निर्धारित आवेदन-पत्र शिक्षा मंत्रालय, (लैंग्वेज डिवीजन) रीजनल आफिसर्स, सेन्ट्रल हिन्दी डाइरेक्टरेट, कलकत्ता अथवा मद्रास के पास ३१ अक्तूबर, १९६४ तक राज्य सरकारों के माध्यम से भेजा जा सकता है।

श्री बी० एस० स्याल की पदोन्नति

उत्तर प्रदेश के उप-शिक्षा निदेशक श्री बी० एस० स्याल की पदोन्नति शिक्षा-निदेशक उत्तर प्रदेश के पद पर हुई है।

हिन्दी के अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति

सम्पूर्ण भारत में अहिन्दी भाषा-भाषी राज्यों में हिन्दी के अध्ययन को प्रोत्साहन देने के लिए भारत सरकार ने १९६४-६५ में १००० छात्रवृत्तियाँ देने का निश्चय किया है।

पूर्ण जानकारी एवं आवेदन-पत्र डाइरेक्टर आफ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन, पश्चिमी बंगाल, राइटर्स बिल्डिंग्स, ब्लाक नं० ३, फोर्थ फ्लोर, कलकत्ता-१ से प्राप्त किया जा सकता है।

केन्द्रीय हिन्दी-संस्थान

केन्द्रीय हिन्दी-संस्थान के लिए आगरा नगर में भवन निर्माण के लिए भूमि मिलने में कठिनाई सामने आ रही है। यदि भूमि प्राप्त न हुई, तो इस संस्थान के आगरा से बाहर चले जाने की सम्भावना है।

केन्द्रीय हिन्दी-शिक्षण-मण्डल की परिषद् ने अपनी ८ अगस्त की बैठक में यह निश्चय किया कि भवन-निर्माण के लिए भूमि प्राप्त करने का एक बार पुनः प्रयत्न करने के पश्चात् ही कोई अन्तिम निश्चय करना चाहिए।

हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में पुस्तकों के प्रकाशन के लिए केन्द्रीय ब्यूरो

शिक्षा-मन्त्रालय पुस्तक-प्रकाशन के एक केन्द्रीय ब्यूरो की स्थापना करने के प्रस्ताव पर विचार कर रहा है, जो हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अच्छी पाठ्यपुस्तकों एवं अन्य पुस्तकों के अनुवाद एवं प्रकाशन में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

इस योजना द्वारा हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को समृद्ध करने का विचार है। ब्यूरो हिन्दी के उन वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दों को भी व्यापक बनाने का प्रयत्न करेगा जिन्हें मन्त्रालय ने गत १० वर्षों के अन्दर तय किया है।

यदि योजना-आयोग ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया, तो उस पर सम्भवतः चौथी योजना में अमल किया जायगा। चौथी योजना में सम्भवतः गैरहिन्दी क्षेत्रों में हिन्दी के प्रसार के लिए हिन्दी माध्यमवाले स्कूलों एवं कालजों की स्थापना होगी।

कहा जाता है कि प्रस्तावित ब्यूरो विश्वविद्यालय-स्तर की अच्छी पुस्तकों के प्रकाशकों तथा अकादमिक संस्थाओं द्वारा अनुवाद तथा प्रकाशन सम्बन्धी वर्तमान दो योजनाओं का स्थान लेगा, क्योंकि यह अनुभव किया गया है कि इन योजनाओं ने कुछ कठिनाइयों के कारण, जिनमें कापीराइट भी है, कोई विशेष प्रगति नहीं की है।

श्री वी. बलरामन सभापति निर्वाचित

फेडरेशन ऑफ पब्लिशर्स एण्ड बुक्सेलर्स इन इंडिया के वार्षिक अधिवेशन में हिगेनबाथम्स प्रा० लि० के श्री वी० बलरामन आगामी वर्ष ६४-६५ के लिए सभापति निर्वाचित हुए हैं।

भारतेन्दु दिवस

९ सितम्बर, १९६४ को भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म दिवस विभिन्न हिन्दी संस्थाओं द्वारा सारे भारत में मनाया गया।

शिक्षक-दिवस

राष्ट्रपति राधाकृष्णन के जन्म-दिवस के उपलक्ष में विगत ५ सितम्बर को सारे देश में शिक्षक दिवस मनाया गया। इस अवसर पर अनेकानेक स्थानों पर पुस्तक प्रदर्शनियाँ भी हुईं।

राष्ट्रीय मुद्रण प्रतियोगिता समारोह

विगत १ सितम्बर को उपराष्ट्रपति जाकिर हुसैन ने मुद्रण तथा आकल्पन की प्रतियोगिता में विजयी प्रतिष्ठानों को पुरस्कार वितरित किया। इस अवसर पर सूचना तथा प्रसारण-मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने मुद्रण और प्रकाशन के महत्व पर बोलते हुए कहा कोई भी मुद्रित चीज जितनी सुन्दर लगती है, अच्छा न छपने पर उस में उतना ही भद्दापन भी दिखाई देता है।

यह अनुभव किया गया है कि एक ऐसा काम करने वाला कोई स्वतन्त्र विभाग हो जिसमें अनुभवी और योग्य अनुवादक हों, हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को समृद्ध बनाने में सहायक हो सकता है। इसके लिए २ करोड़ रुपये निश्चित करने का सुझाव दिया गया है।

नवसाक्षरों के लिए पुस्तकों की प्रतियोगिता

केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्रालय ने नवसाक्षरों के लिए लिखी गयी पुस्तकों की चौथी पुरस्कार-प्रतियोगिता के लिए पुस्तकें माँगी हैं। इस प्रतियोगिता का आयोजन यूनेस्को ने किया है और इसमें ११-११ सौ रुपये के १७ पुरस्कार दिये जायेंगे। हिन्दी की पुस्तकों को चार पुरस्कार और असमिया, बंगला, गुजराती, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, पञ्जाबी, सिन्धी, तमिल, तेलुगु और उर्दू की पुस्तकों पर एक-एक पुरस्कार दिया जायगा।

प्रतियोगिता के लिए भेजी जानेवाली पुस्तकें निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर हो सकती हैं। अन्तर-राष्ट्रीय सहयोग, सामुदायिक विकास, सामान्य विज्ञान, आर्थिक और सामाजिक विकास और सामान्य सांस्कृतिक विषय। पुस्तक का लेखक और प्रकाशक भारतीय होना चाहिए और पृष्ठ संख्या ९६ से लेकर १४४ तक होनी चाहिये। पुस्तक की प्रकाशन तिथि १ जनवरी, १९६३ से लेकर ३० दिसम्बर, १९६४ के बीच होनी चाहिए।

सरल पौराणिक साहित्य का अनुवाद भी इस प्रतियोगिता में भेजा जा सकता है किन्तु उस पुस्तक की पृष्ठ संख्या १६० से २५६ के बीच ही होनी चाहिए।

जो व्यक्ति इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपनी पुस्तकों की पाँच प्रतियाँ और १० रुपये प्रवेश शुल्क खजाने के चालान के रूप में एस० डब्ल्यू० २ सेक्शन, शिक्षा-मन्त्रालय को ३१ मई, १९६५ तक अवश्य भेज दें।

विद्यावती 'मालविका' सम्मानित

हिन्दी की सुप्रसिद्ध लेखिका तथा कवयित्री श्रीमती विद्यावती 'मालविका' को आगरा विश्वविद्यालय ने उनके 'बौद्ध धर्म का मध्ययुगीन हिन्दी सन्त-साहित्य पर प्रभाव' शीर्षक शोध-प्रबन्ध पर पी-एच० डी० डिग्री प्रदान करने का निश्चय किया है। मालविका जी ने सारनाथ के भिक्षु धर्मरक्षित के निर्देशन में उक्त शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया है।

श्री ओम्प्रकाश बेरी की विशिष्ट व्यक्तियों से भेंट

माननीया श्रीमती लेखवती जैन डिप्टी चेयरमैन, लेजिस्लेटिव कौंसिल पंजाब ने पंजाब में हिन्दी भाषा के प्रश्न पर पंजाब सरकार की नीति की चर्चा की तथा भविष्य में हिन्दी को सरकार द्वारा बल दिये जाने के निश्चय से अवगत कराया।

उत्तर-प्रदेश के सोशल एण्ड हरिजन वेलफेयर विभाग के राज्य-मंत्री माननीय डॉ० सीताराम जी ने हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय के प्रकाशनों को बड़े ही चाव से देखा और मुक्त-कंठ से सराहना की। उन्होंने हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय के उत्तर प्रदेश में हिंदी के एक प्रकाशन संस्थान होने के नाते गौरव-प्रकाश किया तथा सरकार द्वारा अधिकाधिक सहयोग की आशा भी व्यक्त की।

माननीय डॉ० रामनारायण पाण्डेय उप-शिक्षा मंत्री उत्तर प्रदेश ने प्रचारक के नवीन प्रकाशनों को देखते हुए हिन्दी में प्रकाशन का एक उच्चस्तर स्तर स्थापित करने में हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय की सराहना की। हिन्दी को सबल और प्रायोगिक सरकारी-भाषा के रूप में देखने की श्री पाण्डेय जी ने इच्छा व्यक्त की तथा अब से अंग्रेजी के पत्रों आदि को पढ़ने में अरुचि प्रगट की।

उत्तर प्रदेश सरकार के सभा-सचिव श्री पांडेय विगत माह प्रचारक कार्यालय में पधारे। उन्हें प्रचारक के प्रकाशन भेंट किये गये।

श्री माहेश्वरीजी स्वदेश लौटे

श्री द्वारकाप्रसाद माहेश्वरी विशेष पदाधिकारी, पाठ्य-पुस्तक, उत्तर प्रदेश, राष्ट्रमण्डल (Commonwealth Countries) द्वारा प्रदत्त भारत से एकमात्र शिक्षार्थी होकर १ वर्ष के लिए (Text Books Planning & Preparation & Publication) विषय पर यूनिवर्सिटी आॅफ लन्दन के इन्स्टीट्यूट आॅफ एजूकेशन में गये थे। इस अवसर पर राष्ट्रमण्डल के अनेक देशों से शिक्षार्थी आए थे। शिक्षण-काल में आपने उक्त विषय पर एक अध्ययन के रूप में पुस्तक भी लिखी जिसकी पाश्चात्य शिक्षाविदों ने मुक्त-कंठसे प्रशंसा भी की। श्री माहेश्वरी जी अध्ययन कर अगस्त, १९६४ के प्रथम सप्ताह में लौटे हैं।

उदयाचल की नई व्यवस्था

दिनकर-साहित्य के प्रकाशक और विक्रेता 'उदयाचल' की नई व्यवस्था १ सितम्बर, १९६४ ई० से चालू हो गई है। डाक्टर रामधारी सिंह 'दिनकर' के कनिष्ठ पुत्र श्री केदारनाथ सिंह, रजिस्टर्ड लिखा-पढ़ी द्वारा इस प्रतिष्ठान के एकमात्र स्वत्वाधिकारी हुए हैं। केदार बाबू व्यापार-कुशल और उत्साही युवक हैं और आशा की जाती है कि अपने यशस्वी पिता की देख-रेख में प्रकाशन का काम करके वे हिन्दी साहित्य की गौरव-वृद्धि करेंगे।

प्रो० कृपाशंकर गौड़, एम. ए. लिखित

भूगोल-शास्त्र पर अनुपम पाठ्यग्रन्थ

(विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं शिक्षा-परिषदों द्वारा स्वीकृत)

★ विश्वविद्यालय की उच्च कक्षाओं के लिये--

भारत की भौगोलिक समीक्षा (१९६४ का संस्करण)	१५.००
(यह संस्करण अक्टूबर में उपलब्ध होगा)	
उत्तरी अमेरिका की भौगोलिक समीक्षा	१५.००

★ इण्टरमीडिएट कक्षाओं के लिये--

माध्यमिक विश्व भूगोल	५.५०
माध्यमिक एशिया : संशोधित	५.५०
माध्यमिक भारत-भूमि	६.२५
माध्यमिक प्रक्रियात्मक भूगोल	३.७५

★ राजस्थान हायर सेकेंडरी की नवीं-दसवीं कक्षा के लिये स्वीकृत--

पूर्व माध्यमिक भूगोल : भाग १	२.८७
पूर्व माध्यमिक भूगोल : भाग २	२.८७

●



हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पो. बॉक्स नं. ७० ✤ पिशाचमोचन ✤ वाराणसी-१

यूनेस्को के संरक्षण में प्रकाशित

ज्ञान - विज्ञान, संस्कृति,

विश्वबंधुत्व विषयिक

अन्ताराष्ट्रीय महत्व के प्रकाशन



तत्व और यौगिक	हमारी बिरादरी
कृत्रिम ग्रह और उपग्रह	हम सब एक हैं !
मौसम और मौसम की भविष्यवाणी	संस्कृति और संस्कृति
परमाणु का विखंडन	सामुदायिक विकास

प्रत्येक का मूल्य १.२० पैसा मात्र

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

वाराणसी–१

... द्वारा प्रकाशित ... वाराणसी-१ में श्रीकृष्णचन्द्र बेरी द्वारा मुद्रित ।

हिन्दी प्रचारक

अक्टूबर १९६४
४.१०.६४.

जय जवाहर



सुधाकर पाण्डेय

भारतीय विश्वविद्यालयों की उच्च कक्षाओं के लिए हमारा

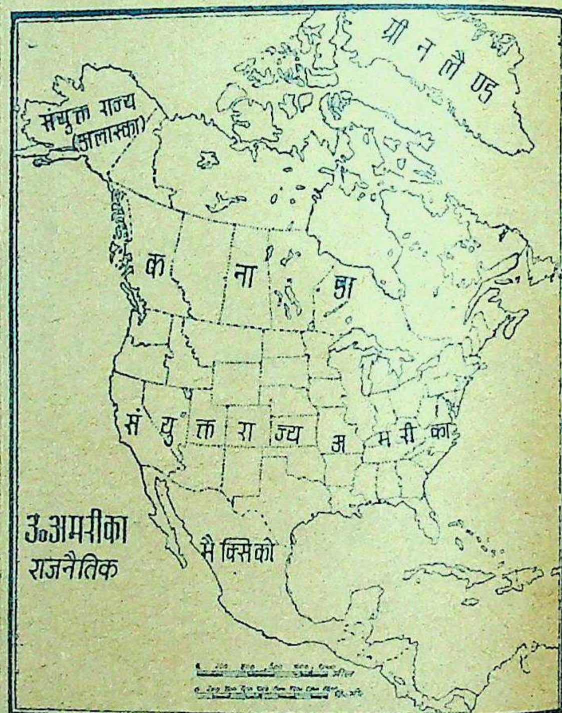
विशिष्ट भौगोलिक प्रकाशन

उत्तरी अमेरिका की भौगोलिक समीक्षा

लेखक

कृपाशंकर गौड़, एम. ए., साहित्यरत्न

हमें यह शुभ सूचना देते हुए हर्ष हो रहा है कि भूगोल शास्त्र के पाठक-समुदाय द्वारा प्रतीक्षित उपरोक्त ग्रंथ प्रकाशित हो गया है। इस रचना का मुद्रण-कार्य हाथ में लिये एक वर्ष से भी अधिक समय हो गया और इस बीच विभिन्न राज्यों से अनेक प्राध्यापकों एवं छात्रों ने इसके बाजार में आने के बारे में बार-बार पूछताछ की है। कागज न मिल पाने अथवा अन्य कतिपय कारणों से जो विलम्ब हुआ उसके लिये हम क्षमाप्रार्थी हैं। अब शीघ्र ही हमारा यह प्रकाशन आपके हाथों में पहुँचेगा। हमें आशा और विश्वास है कि आपको हमारे लेखक प्रो० गौड़ की यह रचना उनकी अन्य रचनाओं की भाँति पसन्द आयेगी। विद्वान लेखक ने इसके प्रथम खंड में उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के सामान्य भूगोल की व्याख्या की है। आगे के खंडों में संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, मध्य अमेरीका इत्यादि के भूगोल को स्थान दिया है और अंतिम खंड में उत्तरी अमेरीका के प्रादेशिक भूगोल की विवेचना की है। पुस्तक की भाषा सरल और विषय सुबोध है। पर्याप्त संख्या में मानचित्रों, चित्रों एवं आरेखों का प्रयोग किया गया है और नवीनतम प्राप्य आँकड़ों का समावेश किया गया है।



[५०० से अधिक चित्र; पृ. सं. लगभग ५५०, डबल-क्राउन अठपेजी आकार; सुपर-कैलेंडर कागज; मोनो-टाइप में मुद्रित; पक्की जिल्दबन्दी तथा डस्ट-कवर से युक्त। मूल्य: १५.०० मात्र

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि हमारे प्रकाशन **'भारत की भौगोलिक समीक्षा'** को शीघ्र ही वृहत् रूप में प्रस्तुत किया जायेगा। इस हेतु पुस्तक का आद्योपान्त संशोधन किया जा रहा है। इस अवसर पर आपका सहयोग प्रार्थनीय है। आशा है कि आप अपने अमूल्य सुझाव भेजने का अनुग्रह करेंगे। इसके लिये हम आपके आभारी होंगे।

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय : पो. बॉ. नं. ७०
पिशाचमोचन, वाराणसी–१

हिन्दी प्रचारक

[मासिक]

वर्ष : १२ : अंक : ७

मूल्य

वार्षिक : ३:००
एक प्रति : २५ पैसे

सम्पादक
श्रीकृष्णचन्द्र बेरी

अक्तूबर : १९६४

स्वर्गीय गजानन राव मुक्तिबोध

गत ११ सितम्बर '६४ को हिन्दी की नयी पीढ़ी के यशस्वी कवि, कथाकार तथा लेखक श्री गजानन राव मुक्तिबोध की नयी दिल्ली के 'ऑल इंडिया इंस्टीच्यूट ऑव मेडिकल साइन्सेज' अस्पताल में पक्षाघात के प्रबल आक्रमण स्वरूप मृत्यु हो गयी।

श्री गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म १३ नवम्बर १९१७ ई० को शिवपुरी मध्यप्रदेश में हुआ था। वे आधुनिक हिन्दी कविता आन्दोलन के संस्थापकों में से थे। १९४३ ई० में ७ कवियों के काव्य संग्रह 'तार सप्तक' में श्री मुक्तिबोध की कविताएँ प्रकाशित होने पर वे प्रथम प्रकाश में आये। महाराष्ट्रीय परिवार में जन्म लेने पर भी उन्होंने हिन्दी की सेवा को लक्ष्य बनाया।

मुक्तिबोध जी ने थोड़ा ही लिखा है, लेकिन जो भी लिखा वह महत्त्वपूर्ण है। उनकी रचनाओं में नयी पीढ़ी का दर्द और अनेक संभावनाएँ परिलक्षित होती हैं। वे एक अत्यन्त संघर्षशील और आशावान कवि थे। वे हमेशा संघर्षों से जूझते रहे और कभी धीरज नहीं खोया। उनका आर्थिक जीवन संतोषजनक नहीं रहा। मुक्तिबोध जी नये युग के प्रतीक थे। उन्होंने समाज की कटुता और विवशता के विष को हँसते-हँसते पान किया था। अपने युग के रोग-शोक को सही-सही अनुभव किया था। मुक्तिबोध जी ने अनेक विधाओं में हिन्दी-संसार को साहित्य दिया है।

श्री मुक्तिबोध जी ने अपनी रचनाओं में हमेशा सामाजिक व मानवीय मूल्यों पर जोर देकर हिन्दी लेखकों की युवा पीढ़ी को प्रभावित किया। उन्होंने दो सौ से अधिक लम्बी कविताएँ, साहित्य समीक्षाएँ तथा छोटी कहानियाँ लिखीं।

श्री गजानन राव मुक्तिबोध इस संसार में नहीं रहे, किन्तु उनकी रचनाएँ और उनका संघर्षशील जीवन तरुण साहित्यकारों को बहुत दिनों तक प्रेरणा देता रहेगा, इसमें सन्देह नहीं।

मुद्रण एवं प्रकाशन में प्रूफरीडर का कर्तव्य

सत्यप्रकाश गोस्वामी 'गिरीश'

एक लेखक ने कहा, "क्या बताएँ, एक बड़े अच्छे प्रकाशक के यहाँ से मेरी यह पुस्तक प्रकाशित हुई है। प्रूफरीडिंग की सैकड़ों अशुद्धियाँ रह गयी हैं।" इसी तरह एक प्रूफरीडर दिखाने लगे, "यह देखिए, एक पाण्डुलिपि है। कितना संशोधन करना पड़ा है! अब कहीं कम्पोज़ होने दी जायगी। लेखक पुस्तक तो लिख देते हैं, पर भाषा के विषय में ऐसे ही होते हैं।"

यहाँ तो दोनों ने ही सच कहा। पर एक दायित्व प्रूफरीडर का है; उसे प्रूफरीडर निभाते भी नहीं हैं और निभाने भी नहीं पाते—कहीं-कहीं निभाने भी नहीं दिया जाता।

इस देश का प्रकाशक अपनी लापरवाही की परम्परा में, अपने व्यापार की सफलता के लिए मशीन पर जल्दी फार्म करने की शीघ्रता में तथा सस्ते केवल आथर की कापी को या पिछली छपी हुई मूल प्रति को ब्रह्म-वाक्य समझने वाले प्रूफरीडर रखने की वजह से, बहुत बड़ी सीमा में अनबूझ होने के कारण; प्रकाशक प्रूफरीडर को उसकी जिम्मेदारी निभाने में कोई सहयोग नहीं देता।

कानपुर के एक बड़े मुद्रक (Govt. Approved Printer) के यहाँ एक पुस्तक 'पद्य भारती' (यू. पी. बोर्ड की इंटर कक्षा के पाठ्य-क्रम में निर्धारित) छप रही थी। इससे पहले एडीशन (सन ६० या ६१) में बिहारी के एक दोहे में 'पावस निशि अँधियार मँह' छपा था। जब कि वहाँ 'पावस घन अँधियार मँह' होना था। 'निशि' होने से कोई अर्थ-संगति नहीं बैठती थी। एक प्रूफरीडर ने संशोधन चाहा। वहाँ के परम्परागत प्रूफरीडर ने कहा, "अब तक जो छपता आ रहा है क्या वह गलत ही छपता आ रहा है? जो कापी में है वही ठीक है।" प्रकाशक ने आदेश दिया, "आप आथर क्यों बनते हैं? क्या आप आथर से भी ज्यादा जानते हैं? जो है, सो ठीक है; चलने दीजिए।" आथर की बात भी सही मानी जा सकती है। पर आथर ने बिहारी सतसई से यह दोहा संकलित करते समय यह गलती शायद ही की हो, पर 'घन' के स्थान पर 'निशि' का छपता आना प्रूफरीडर की कृपा से ही हुआ। एक ने अपना दायित्व निभाया नहीं; निभा भी नहीं सकता था। दूसरे को निभाने नहीं दिया।

अलीगढ़ के एक प्रकाशक जूनियर हाई स्कूल कक्षाओं में पठनीय पुस्तकें छापते हैं। अपने अध्ययन-अध्यापन सम्बन्धी मासिक पत्र से, अध्यापकों-छात्रों की अनवरत सेवा कर रहे हैं। वहाँ से (General Hindi) की एक पुस्तक जो उच्च कक्षाओं में भी पठनीय है, का अष्टम संस्करण छपा। उसके स्वर्गीय लेखक के बाद उसका संशोधन भी हुआ। उस पुस्तक में शुद्धाशुद्ध शब्दों का एक प्रकरण दिया है। यहाँ शुद्ध-अशुद्ध का तात्पर्य सही और गलत से था—तद्भव-तत्सम से नहीं। प्रकरण के प्रारम्भ में स्व० लेखक महोदय की ओर से एक शीर्ष टिप्पणी इस प्रकार दी हुई थी:

"अधिकांश विद्यार्थी ही नहीं, कभी-कभी अच्छे लेखक और पत्रकार भी शब्दों के लिखने में भारी भूल कर जाते हैं। इसलिए नीचे कुछ ऐसे अशुद्ध शब्दों के शुद्ध रूप दिये जा रहे हैं"—

अशुद्ध शब्द	शुद्ध रूप
प्रदर्शनी	प्रदर्शिनी

इस संस्करण के संशोधक और प्रूफरीडर एक ही व्यक्ति थे। अपने दायित्व की संशोधक बनाम प्रूफरीडर इससे भयंकर अवहेलना और क्या करेगा? शुद्ध को अशुद्ध और अशुद्ध को शुद्ध बनाने का जादुई कमाल श्लाघनीय है। कमाल यह है कि जान-बूझ कर और सीना जोरी के साथ। जिस समय यह पुस्तक छप रही थी तब इसे ठीक करने का प्रयास किया गया, पर पुराने प्रूफरीडर, सम्पादक और इस पुस्तक के लेखक स्वरूप अधिकृत संशोधक-परिवर्द्धक होने के कारण 'प्रदर्शिनी' को शुद्ध रूप निर्णीत किया गया। प्रकाशक उक्त संशोधक के वाक्य को 'शब्द कोश' से अधिक प्रामाणिक—ब्रह्म वाक्य मानते थे, इसलिए उनका पक्ष लेकर यह छपाया गया। लेखक-संशोधक ने अलीगढ़ प्रदर्शनी के द्वार पर 'प्रदर्शिनी' लिखा दिखाकर तथा दो-एक समाचारपत्रों में यह शब्द उसी प्रकार छपा दिखा कर स्वयं ही अपने पक्ष में निर्णय कर लिया।

इस पुस्तक को पढ़ने वाले प्रत्येक छात्र व पाठक के मन में अशुद्ध (प्रदर्शिनी) को शुद्ध समझने का स्थायी भ्रम बैठना असंभव नहीं है।

इसका दुष्परिणाम—मान्य भाषाविद लेखक की पुस्तक होते हुए भी अक्षर-विन्यास (Spelling) की दृष्टि से सही किंवा शुद्ध मानना चाहें तो दावे से उसे सही नहीं मान सकते। गलत का सही में स्थायी भ्रम हो जाता है। एक बात मन में बैठ जाती है। उपर्युक्त पुस्तक की शीर्ष टिप्पणी (Head note) को पढ़कर भाषा का 'प्रविष्ट छात्र' उसे शुद्ध ही मानेगा और जब उसे पता लगेगा कि अशुद्ध को शुद्ध किया है तो व अन्य शब्दों को शुद्ध होते हुए भी उनके शुद्ध होने में सन्देह करेगा। कितना खेद है कि अनेक पुस्तकों में एक सी वर्तनी (Spelling) छपी होने पर भी उन्हें शुद्ध होने का दावा नहीं कर सकते। प्रूफ संशोधक की लापरवाही, असावधानी के कारण यह कहने में हम झिझकते हैं—"यह शब्द सही है, अनेक पुस्तकों में मैंने इसका यही रूप देखा है।"

दो बातें पाठ्य-पुस्तक अधिकारी (O. S. D. Lucknow) के यहाँ की सुनिए। ये पुस्तकें शिक्षा निदेशक उत्तर प्रदेश के सम्पादन में छपती हैं। कक्षा ८ तक की इन पुस्तकों में राष्ट्रीय गान तथा तिरंगा झंडा छपा होता है। एक बार एक बंगाली (O.S.D.) के आने पर—'पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा' में अपनी व्यक्तिगत रुचि के कारण 'गुजरात' का 'गुजराट' कर दिया। बाद में अन्य उत्तरप्रदेशीय (O. S. D.) के आने पर उसे फिर 'गुजराट' से 'गुजरात' कर दिया राष्ट्रीय गान में भी, जो एक बार निश्चित हो जाता है; अपनी मनपसन्द उलट-फेर होना सामान्य बात समझी जाती है। दूसरी बात झंडे के विषय में। झंडे में तीन रंगों के अतिरिक्त श्वेत रंग में बने हुए चक्र का रंग काला दिया जाता है, जबकि राष्ट्र ने, देश ने उसका रंग 'नेवी ब्ल्यू' निश्चित किया है। या तो पूरा झंडा ही काली स्याही में प्रिंट करायें या फिर जब तीनों रंग अलग-अलग देते हैं तो चक्र का रंग भी राष्ट्र-स्वीकृत क्यों नहीं दिया जाता? इसका कारण है सिर्फ एक प्रिंटिंग की बचत। एक प्रिंटिंग के लोभ में कितनी बड़ी भूल, कितना बड़ा राष्ट्र-द्रोह कि राष्ट्र की भावी आशा को, उसके होनहार छात्र को अपनी राष्ट्र-ध्वजा से भी पूर्ण परिचित न कराया जाय। कराया भी जाय तो एक तरफ पूर्ण दूसरी तरफ अपूर्ण, अधकचरा। सिर्फ एक प्रिंटिंग (नीली छपाई) के लोभ में, शिक्षा निदेशक उत्तर प्रदेश की सम्पादित पुस्तकों में यह सब होता है।

इसी तरह ओ० एस० डी० के यहाँ से स्वीकृत कक्षा ८ में पाठ्य, सन् १९५१ के संस्करण 'नव प्रभात' में पृष्ठ ७५ पर कविवर बिहारी के चित्र के स्थान पर अब्दुर्रहीम खानखाना का चित्र दिया है। कक्षा ८ के छात्र रहीम के चित्र को बिहारी का चित्र समझ कर बिहारी के दोहे पढ़ते हैं। इस तरह कभी-कभी लापरवाही अपनी सीमा तोड़ देती है।

कक्षाओं के जनरल अध्ययन के लिए ऐसी पुस्तकें छापने वाले पूरी मनमानी करते हैं। कानपुर की 'पद्य भारती' (सन् ६० के संस्करण, में १०० से ऊपर अशुद्धियाँ थीं। जिनमें बहुत-सी भयंकर तथा अक्षम्य थीं। संभव है आगामी संस्करण में उनका सुधार हो गया हो। अलीगढ़ से प्रकाशित 'अपठित मीमांसा' के स्वर्गीय लेखक का प्रयास स्तुत्य है। पर संशोधक-परिवर्द्धक महोदय ने तो उसे मटियामेट ही कर दिया है—मनमानी रद्दोबदल की है—रसलीन के दोहे को रसखान का दोहा लिखा है। उक्त प्रकाशक से निवेदन है कि यदि ये पंक्तियाँ उसकी निगाह पड़ जायँ तो एक शुद्धि-पत्र अवश्य लगवा दें।

× × ×

किस्त और किश्त दो शब्द हैं। अंग्रेजी के इन्स्टालमेंट अथवा अंशों के भुगतान के लिए क़िस्त है। पर अधिकांशतः किश्त ही लिखते हैं। यहाँ किश्त उसके अर्थ को ही बदल देती है—किश्त का अर्थ है, शतरंज की शह। सूचना विभाग उत्तर प्रदेश के प्रामाणिक 'उर्दू-हिन्दी शब्दकोश' (संकलनकर्ता मु० मुस्तफा खाँ 'मद्दाह') म दोनों के अर्थ इस प्रकार दिये हैं।

किश्त—फारसी, स्त्रीलिंग—कृषि, खेती; शतरंज की शह।

क़िस्त—अरबी, स्त्रीलिंग—न्याय, इंसाफ; भाग, अंश, हिस्सा, टुकड़ा; अदायगी का एक जुज़।

आयुर्वेद में दवा के अर्थ में दो शब्द प्रयोग में आते हैं—औषध तथा ओषधि।

औषध—(मेडीसिन) निर्माणशाला में तैयार की जाती है, यथा—रस, रसायन, अर्क, पिष्टी, चूर्ण, आसव, अरिष्ट, भस्म, बटी आदि। इसी से बना औषधालय (औषध + आलय)।

ओषधि (Herbs)—जड़ी बूटियाँ—गोखरू, ग्वारपाठा, तुलसी के बीज आदि ओषधियाँ हैं।

अश्वगन्धा (असगन्ध) औषधि है तथा अश्वगन्धारिष्ट औषध है। प्रयोग के अनुसार औषध का बहुवचन, औषधें तथा औषधों होगा (मैं चार औषधें ले चुका; इतनी औषधों का क्या होगा?) एक तरफ मेडीकल हाल का अर्थ औषधालय दिया जाता है दूसरी तरफ मेडीसिन का अर्थ 'औषधि' लिखा जाता है। बड़े-बड़े आयुर्वेदाचार्य एक तरफ औषधालय दूसरी तरफ औषधि, औषधियाँ लिखते हैं। यह गलती हम पुस्तकों में पढ़ते हैं, छपाते हैं, बराबर दुहराते आ रहे हैं। इसका दायित्व प्रूफरीडर पर नहीं तो और किस पर है? प्रूफरीडर को इतना विज्ञ, भाषा का जानकार होना चाहिए जो इतने बड़े—कुछ सीमाओं में लेखक से भी बड़े दायित्व को निभा सके ताकि पढ़ने-पढ़ाने वालों की पीढ़ी उसके सही रूप से वंचित न रहे।

अपनी भाषा में दूसरी भाषा के शब्द लेना एक बात है, पर अपनी भाषा के शब्दों को दूसरी भाषा से प्रभावित कर उसके रूप को बिगाड़ कर प्रयोग करना दूसरी ही बात है। राम प्रसाद को उर्दू जबान वाले रामपरशाद कहने लगे। इसी तरह 'सिर' को सर कहा जाने लगा। उर्दू के प्रभाव से 'स' के स्थान पर 'श' का प्रयोग कई शब्दों पर हुआ। कैलास शुद्ध रूप है। पर कैलाश इतना बहु प्रचलित हुआ है कि लोग कैलाश को ही शुद्ध व सही मानते हैं और पुस्तकों में यही छपाते हैं। भावी शिक्षार्थी उन्हीं पुस्तकों से पढ़कर कैलाश ही सही समझेंगे। यह दायित्व प्रूफरीडर का है जो उसने नहीं निभाया। यहाँ इतनी गनीमत रही कि स के स्थान पर श के प्रयोग से अर्थ भेद नहीं हुआ। पर कहीं-कहीं स और श के प्रयोग में ध्यान नहीं दिया जाता और यह स व श अर्थ भेद उत्पन्न करके (यथा—किस्त व क़िश्त) अर्थ का अनर्थ कर देते हैं। ऐसे कुछ शब्द देखिए :

शक्ति (बल), सक्ति (आसक्ति); शङ्कर (शिव), सङ्कर (दोगला, मिश्रित); श्वजन (कुत्ता), स्वजन (कुटुम्बी); शत (सौ), सत् (अच्छा), श्व (कल), स्व (अपना); शव (मृतक), सव (यज्ञ); दाश (केवट), दास (सेवक); शरण (स्थान, रक्षक), सरण (चलना-फिरना); श्रोतृ (कान), स्रोत (झरना); अशन (भोजन), असन (पियावाँसा); शमीर (छोंकर), समीर (वायु); काश (काँस), कास (खाँसी); श्रवण (कान, सुनना), स्रवण (टपकना); अभ्याश (समीप), अभ्यास (मश्क); शार (चित्र-विचित्र), सार (तत्त्व); शाक (साग), साक (साथ); शित (तीव्र), सित (श्वेत); शूर (वीर), सूर (सूर्य); शर (बाण), सर (तालाब); मिश्र (मिला हुआ); ब्राह्मण की एक पदवी), मिस्र (एक देश विशेष)।

एक सामान्य सी बात है कि अनुनासिक उच्चारण में हर वर्ण में उसके वर्ग का पाँचवाँ अक्षर मिलाते हैं, यथा—गंगा में क वर्ग का ङ (गङ्गा); पंचायत में च वर्ग का ञ (पञ्चायत)। लेकिन कुछ विज्ञ प्रूफरीडर इण्टर में न मिलाकर इन्टर लिखते हैं और अपना एक तर्क देते हैं, 'इन्टर अंग्रेजी का शब्द है। अंग्रेजी में न (N) मिलाते हैं। इसलिए अंग्रेजी का शब्द उसी की स्पैलिंग के अनुसार अपनी लिपि में भी लिखना चाहिए।' इसके समाधान के लिए एक सीधी-सी बात है—अंग्रेजी में ङ, ञ, ण के स्थान पर N (न) ही है। मानने को हम अंग्रेजी में न (N) को चन्द्रबिन्दु मानकर कुनवर (Kunwar) को कुँवर पढ़ भले ही लें, पर लिखते कुनवर ही हैं। देवनागरी के अनुनासिक, उच्चारण की वैज्ञानिकता पर बने हैं। हम उच्चारण अपनी भाषा में करते हैं और अपनी लिपि में लिखते हैं; उसका उच्चारण भी इण्टर होता है, इन्टर नहीं। लेकिन अंग्रेजी में ण न होने पर न (N) मिलाते हैं और ण का उच्चारण करते हैं। जिस तरह ँ चन्द्रबिन्दु न होने पर न (N) मिलाते हैं और उच्चारण में चन्द्रबिन्दु ही बोलते हैं। अतः अंग्रेजी के अनुनासिक उच्चारण में भी देवनागरी में लिखते समय अपने उच्चरित अनुनासिकों का प्रयोग करना चाहिए।

कभी-कभी ऐसे गलत प्रचलन भी चलने लगते हैं कि हम सन्धि के सामान्य नियम को भूलकर उसके अशुद्ध प्रयोग को अपनाये चले जाते हैं। पुनरावृत्ति Revision (पुन + आवृत्ति) के आधार पर पुनरावलोकन लिखते हैं, जब कि शब्द पुनरवलोकन Review (पुनः + अवलोकन) है।

उपन्यास या कहानी में छह तत्त्व माने जाते हैं। पहला कथानक (Plot) दूसरा कथोपकथन (Dilogue)। जिस तात्पर्य से हम डायलाग प्रयोग करते हैं, 'कथोपकथन' से उस तात्पर्य का निर्वाह नहीं होता—कथा+उपकथन=कथोपकथन ऐसे असंगत शब्द को पात्रों के संवाद (Dilogue) का पारिभाषिक शब्द मान लिया गया है। कथोपकथन—पात्रों के कथन-प्रति-कथन, वार्त्तालाप को

[शेषांश पृष्ठ १३ पर]

सुप्रसिद्ध गद्य काव्य लेखक

श्री हरिमोहनलाल श्रीवास्तव



बाबूलाल गोस्वामी

हिन्दी संसार में गद्य का प्रादुर्भाव कब हुआ, इसे निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। पूर्व में पद्यबद्ध वर्णन ही विद्वत्ता का आदर्श माना जाता था। 'गद्यकाव्य' की आधुनिक शैली को कतिपय विद्वानों ने पाश्चात्य अतुकान्त रचनाओं के अनुकरण का प्रतिफल व्यक्त किया है, पर इसमें सत्यांश नहीं जान पड़ता। हिन्दी की जननी संस्कृत में बाणभट्ट और दंडी ने इससे पूर्व ही सुललित उन्मुक्त 'गद्यकाव्य' का सृजन किया है। १४ वीं विक्रमी शताब्दी के अन्तिम चरण में गुरु गोरखनाथ के ग्रन्थों में हिन्दी गद्य दृश्यमान होता है। बुन्देलखंड में भी इसी काल से श्रीमद्भागवत महाभारतादि ग्रंथों का रूपान्तर हिन्दी भाषा में होना पाया जाता है, जिसे अलंकारहीन नीरस गद्य की संज्ञा दी जाय तो अनुचित न होगा। सेवा, भक्ति-प्रधान गद्य रचना का क्रम अबाध गति से चलता रहा। १९वीं शताब्दी के प्रारंभ में हिन्दी लेखकों के हृदय में स्वतंत्र अभिव्यक्ति की ज्योति जगी और भावलोक से मुक्त होकर भावना प्रधान उन्मुक्त गद्य-काव्य रचना की ओर वे अग्रसर हुए। प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य पर रीझ, भावना माधुर्य को आत्मसात कर हिन्दी के उपासक ने जब लेखनी चलाई तो स्वाधीन अभिव्यंजना का नवीन स्वरूप लेकर 'गद्यकाव्य' का अंकुर प्रस्फुटित हुआ। भावुक हृदय में क्षण प्रतिक्षण उत्पन्न निर्झरिणी की वारिधारा से नवांकुरित 'गद्यकाव्य' की नन्हीं सी सुकोमल काया का अभिसिंचन हुआ, तभी चिर निद्रा, सौन्दर्य, मादकता और उद्भ्रान्त प्रेम में रँगे बहुरंगी परिधान धारण किये हिन्दी साहित्य स्वर्ग में तन्मयता के उच्चतम शिखर सिंहासन पर प्रतिष्ठित 'गद्य काव्य' की सजीव स्वर्णिम काया के हृदयग्राही दर्शन हुए। हिन्दी वाणी ने 'भाषा' के रूप में अवतरित हो 'गद्यकाव्य' का आलिंगन कर वरण कर लिया।

हिन्दी साहित्य के इस विवेचनीय अति गम्भीर विषय पर किसी विद्वान ने अभी तक यथेष्ट श्रम नहीं किया था। हिन्दी साहित्य जगत में विचरण करने वालों को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि 'गद्यकाव्य' के सुप्रसिद्ध लेखक श्री हरिमोहन लाल श्रीवास्तव द्वारा आज से एक युग पूर्व ही 'हिन्दी गद्यकाव्य का आलोचनात्मक इतिहास" लिखा जा चुका है। कितने ही श्रेष्ठ विद्वानों ने इस अथक परिश्रम की भरपूर सराहना की है। डॉ० रामकुमार वर्मा तथा श्री रामनाथ सुमन जैसे चोटी के विद्वानों ने इस अद्वितीय ग्रंथ की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। हिन्दी प्रेमियों को यह जान कर खेद भी होगा कि अर्थाभाव के कारण श्रीवास्तव जी अभी तक इस ग्रंथ को प्रकाशित कराने में समर्थ नहीं हुए हैं। श्रीयुत श्रीवास्तव ने अपने इस ग्रंथ में गद्यकाव्य के अनेक रचयिताओं का सुन्दर परिचय देकर



'गद्य' को विवेचना का विषय बनाया है।

श्रीयुत हरिमोहन लाल श्रीवास्तव का जन्म १३ अक्टूबर, सन् १९१७ को राजस्थान की राजधानी जयपुर में 'व्यावत' पदवी धारी फर्रुखाबाद के प्रतिष्ठित कायस्थ कुल में हुआ। इनके पिता बाबू बंशीलाल जी वकील दतिया रियासत के दीवान थे। ९ वर्ष की अवस्था में ही शिशु हरिमोहन का पिता से विछोह हो जाने से इनका बाल्यकाल कष्ट में बीता। अनेक विपत्तियों के बीच रह कर भी इन्होंने अध्ययन नहीं छोड़ा। सन् १९३३ में दतिया हाईस्कूल से मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कर ये आगे शिक्षा प्राप्त करने ग्वालियर चले गये। सन् १९३५ में इंटर तथा १९३७ में बी० ए० की परीक्षाएँ पास कर नौकरी की खोज में भटकने लगे। भाग्य से दतिया के हाई स्कूल में अध्यापक नियुक्त हुए। अध्यापन कार्य करते हुए सन् १९४४ में एम० ए० (हिन्दी) तथा इलाहाबाद से १९४५ में एल० टी० परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं।

विद्यार्थी जीवन से ही आपने 'मोहन वर्मा' उपनाम से कहानी, निबन्ध और कविता लिखना प्रारंभ किया। आचार्य गुरुप्रसाद जी टंडन से इन्हें गद्यकाव्य और समालोचना लिखने की प्रेरणा मिली।

श्रीवास्तव जी की गद्यकाव्य रचनाएँ भी उत्कृष्ट हैं। राष्ट्रीय गद्यकाव्यों के क्षेत्र में तो इनका स्थान बेजोड़ है। भाव व्यक्त करने में उनकी लेखनी सधी हुई है, शब्दों का प्रयोग भी उन्होंने सोच समझ कर किया है, जिससे उनका 'गद्यकाव्य' अन्तर को छू देता है। 'बिखरी पूँजी' 'रोटी' आदि गद्यकाव्यों में रोचकता की यथेष्ट मात्रा है। लेखक यत्र-तत्र बिखरे हुए समाज के अनमोल मोतियों को लिए नई कल्पनाओं की विचार-धाराओं में बहता हुआ आकांक्षाओं और भिन्न-भिन्न भावनाओं को एक ही 'संगठन' रूपी धागे में पिरोना चाहता है।

मानव जीवन में व्याप्त सुख और दुख के वर्णन में श्री श्रीवास्तव ने सत्य को छिपाया नहीं है। भाषा की शिष्टता एवं संस्कृत शब्दों का प्रयोग भी इस प्रकार किया है कि भाव-भिन्नता न हो पाये।

उन्होंने अपने साहित्यिक दीर्घ जीवन में अनेक आपदाओं को गले लगाया है और कुछ ऐसी भी घटनाएँ घटीं, जिनसे उनका हृदय बैठ गया। नैराश्य की भावना में बहते हुए 'उदासी' शीर्षक गद्यकाव्य में वे निज के जीवन की झाँकी प्रस्तुत करते हैं।

आज भी वे जटिल जीवन संग्राम की कठोरताओं से निरंतर संघर्ष करते हुए उन्होंने असमय में ही वृद्धावस्था को आमंत्रण दिया है। यह ख्यातिप्राप्त साहित्यकार पारिवारिक कठिनाइयों से घिरकर जीवन से भारी संघर्ष कर रहा है। केन्द्रीय सरकार ने अर्थाभावग्रस्त साहित्यकारों को अपनी योजनाके अन्तर्गत श्रीवास्तव जी की जो थोड़ी सहायता दे रखी है, वह नितान्त अपर्याप्त है।●●●



नेहरू : अन्तिम यात्रा—सम्पादक: के० पी० गुप्त; प्रकाशक : इंडिया पब्लिकेशन्स, लखनऊ। मूल्य : १.५०; आकार : फुलस्केप।

युग पुरुष पंडित जवाहर लाल नेहरू के अन्तिम दर्शन की चित्रावली का सम्पादन श्री के० पी० गुप्त ने अच्छे ढंग से किया है। लगभग सभी आवश्यक चित्र का संकलन इस पुस्तिका में सुन्दर ढंग से किया गया है।

पुस्तिका का कवर सुन्दर आकर्षक एवं संग्रहणीय है।

भारत के मनीषी (दार्शनिक)—लेखक : रामलाल; प्रकाशक : बोरा एण्ड कं० बम्बई। मूल्य : २ रुपये। पृष्ठ संख्या १३६।

लेखक ने पुस्तक के अल्प कलेवर में प्राचीन भारत के छः महान मनीषियों महर्षि कपिल, पतञ्जलि, गौतम, कणाद, जैमिनी, व्यास आदि का न केवल प्राचीन शास्त्रों का उद्धरण देकर परिचय और प्रामाणिकता सिद्ध की है बल्कि उनके दार्शनिक विचारों को भी उद्धरण-बद्ध करते हुए प्राचीन भारतीय दर्शन, न्याय, मीमांसा, सगुण, निर्गुण, कैवल्य, मोक्ष आदि विषयों पर प्राचीन मनीषियों के विचारों को बड़ी सफलता और सूक्ष्म रूप से व्यक्त किया है।

भेरी (कविता)—कवि : गजेन्द्र पाल सिंह, प्रकाशक : रतन प्रकाशन, अलीगढ़। मूल्य : २.५० रुपये पृष्ठ संख्या : ६०।

कवि की कुछ प्रोत्साहनपूर्ण कविताओं का संग्रह जो सीमा संघर्ष की पृष्ठभूमि में लिखी गयी हैं। 'सीमा भेरी बजा रही है' या 'यह समर' प्रस्तुत हुआ है', 'माँग अब इसकी चुकाना', 'धर्म है पहला हमारा' आदि कविताओं के भावना की पृष्ठभूमि होते हुए भी भेरी के स्वर जैसे विचारक के स्वर बन गये हैं और कवि उचित अनुचित के उहापोह में पड़ कर भेरी की हुंकार के बीच-बीच में विवेचना-सा करने लगा है। गेटअप, आवरण तथा कलेवर का अति साधारणपन खटकता है। लगता है कि रक्षा कोष में जाने वाली आय की राशि अधिक नहीं हो सकेगी।

धर्म (तुलनात्मक दृष्टि में)—लेखक : डॉ० राधाकृष्णन्। प्रकाशक राजपाल एंड सन्स, दिल्ली। सजिल्द, मूल्य : ५ रुपये। रायल साइज। पृष्ठ : संख्या १३२।

भारत के राष्ट्रपति और भारतीय दर्शन के प्रकाण्ड पंडित की प्रसिद्ध अंग्रेजी पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद श्री विराज एम. ए. ने कर के हिन्दी भाषा को एक नयी और समाज के लिए आवश्यक कृति दी है। आज के बदलते युग में प्राचीन निधियों को जो हमारे भविष्य की धरोहर तथा आलम्बन हैं, हम खो न दें मात्र इसी दृष्टि से नहीं बल्कि तुलनात्मक धार्मिक चेतना के अध्ययन और पूर्वीय और पश्चिमी दार्शनिक विचारधारा के सम्यक अध्ययन के लिए इस कृति का विशेष मूल्य है। ऐसी कृति के प्रकाशक बधाई के पात्र हैं।

उड़ते फूल—लेखक : काका कालेलकर; प्रकाशक : बोरा एंड कम्पनी, बम्बई। पृष्ठ संख्या : एक सौ बारह। मूल्य : दो रुपये।

प्रसिद्ध गाँधीवादी विचारक काका कालेलकर कहते हैं कि वे लेखक नहीं अध्यापक हैं, प्रस्तुत पुस्तक में इस

महान् अध्यापक ने फूल, पत्ते, बिजली, आग, अन्धकार, पक्षी के कलरव आदि के माध्यम से सरल भाषा और कथा की शैली में अध्ययन के देखने में जो छोटे-छोटे पाठ प्रस्तुत किये हैं, उनमें उच्च अध्ययन की इतनी वैचारिक सामग्री है कि उसका विवेचन एक मोटे ग्रन्थ में करने पर भी कमी रह जायगी। लेखों का प्रशंसनीय चयन हुआ है।

हमारे आदिवासी—लेखक : राजेन्द्र अवस्थी 'तृषित' ; प्रकाशक : बम्बई प्रकाशन प्रा० लि०, बम्बई। रायल साइज। पृष्ठ संख्या : ८८। मूल्य : २ रुपये ५० पै०।

लेखक ने अपनी इस कृति में प्रौढ़ साहित्य के रूप में १६ पा० टाइप में भारतके आदिवासियों के प्रायः हर क्षेत्र का परिचय दिया है। इस तरह यह पुस्तक प्रौढ़ साहित्य, बाल-साहित्य और इतिहास का काम कर रही है। स्थान-स्थान पर एकरंगे चित्र विषय को समझाने में सहायक होंगे।

प्रतिनिधि रचनायें—लेखक : परशुराम ; प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, काशी ; भाषान्तरकर्ता: प्रबोधकुमार मजूमदार।

परशुराम बंगकथा साहित्य के सर्वश्रेष्ठ हास्य और व्यंगकार कथाकार हैं। प्राचीन व्यंगमय और नवीन समाज का स्वरूप सांकेतिक रूप लेकर इनके व्यंगों और हास्य कथाओं में जो कलात्मकता और निखार लाता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। इस कृति में उक्त कथाकार की १२ कहानियों तथा 'निबन्धों' का संग्रह है। १६२ पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३.०० रुपये है।

सुन्दर कहानियाँ—श्री माता जी, प्रकाशक : श्री अरविन्द सोसायटी पांडिचेरी-२; अनुवादिका : लीलावती अरविन्द आश्रम की श्री माताजी।

आज के युग में प्राचीन कथा वर्णित देवियों सी पूज्या हैं। स्वयं लेखिका ने कहा है, "ये कहानियाँ इसलिए लिखी गई थीं कि इन्हें पढ़कर बच्चे अपने आपको जानना तथा सत्य और सौन्दर्य के मार्ग का अनुसरण करना सीखें। अनुवादिका ने जिस सरल भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया है, वह स्तुत्य प्रयास कहा जायगा। १२४ पृष्ठ की सचित्र पुस्तक का मूल्य १.५० पैसे मात्र है।

रिमझिम—लेखक : भरत व्यास। प्रकाशक : राजस्थान कलामन्दिर, बम्बई।

श्री भरत व्यास के गीतों ने हिन्दी चित्रपट से उभर कर जन-जन की जिह्वा पर अपना स्थान बना लिया है। प्रस्तुत कविता संग्रह में उन गीतों में पर्याप्त वैचारिक सामग्री और सौन्दर्य है। पर पुस्तक के आवरण, कागज, टाइप और छपाई आदि कमियों ने पुस्तक का मूल्य घटा दिया है। १०० पृष्ठों की कविता-पुस्तक का मूल्य १ रुपये २५ पैसे मात्र है।

सूर्पणखा की प्रेम-कथा—लेखक परशुराम; अनुवादक : ओंकार शरद। प्रकाशक : राजरंजना प्रकाशन, इलाहाबाद।

प्रस्तुत पुस्तक बँगला के प्रमुख व्यंगकार श्री परशुराम की छः प्रमुख व्यंग कथाओं का संग्रह है। संग्रह की प्रायः सभी कहानियाँ काफी प्रसिद्धि पा चुकी हैं। एक सौ आठ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य दो रुपये है।

मेज पर टिकी हुई कुहनियाँ—(कहानी संग्रह)—रमेश बक्षी; प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, काशी। पृष्ठ संख्या २०४। सजिल्द, मूल्य : ३ रुपये ५० पै०।

प्रस्तुत संग्रह प्रसिद्ध कथाकार श्री रमेश बक्षी की इक्कीस प्रमुख कहानियों का संग्रह है। अधिकांश कहानियाँ कथानक न होकर चित्र या स्थिति को देखने के दृष्टिकोण और संकेतों में निर्मित हैं। अधिकांश कहानियाँ मैं में लिखी गयी हैं। पर विशेषता यह है कि उनका एक सामाजिक उद्देश्य है। नवीन कथा-शिल्प के रूप में पुस्तक का निस्संदेह अपना स्थान है।

पुजारी (उपन्यास)—लेखक : नानक सिंह। प्रकाशक : राजपाल एंड सन्ज, दिल्ली। पृष्ठ संख्या : २३६। मूल्य : ४ चार रुपये मात्र।

प्रसिद्ध आदर्शवादी और सामाजिक उपन्यास लेखक नानक सिंह का नया उपन्यास है। देश के बँटवारे के पूर्व और बाद की आर्थिक स्थिति और अनाचारों को कथात्मक दृष्टि से सामने रखने में नया दृष्टिकोण अपनाया है। व्यक्ति के साथ समाज के दुःखों-सुखों की अनुभूतियों का वर्णन बड़े सुलझे ढंग से हुआ है।

इन्दुमती—लेखक : सेठ गोविन्द दास। प्रकाशक : हिन्द पाकेट बुक्स, दिल्ली। पृष्ठ संख्या : १२४। मूल्य : १ रु० मात्र।

प्रस्तुत पुस्तक सेठ गोविन्द दास के प्रसिद्ध उपन्यास 'इन्दुमती' का संक्षिप्त संस्करण है। घटना-प्रधान चरित्र के पात्रों के संघर्ष के सम्पूर्ण चित्रण का संक्षिप्तिकरण कठिन होता है, जब कि इस उपन्यास में सन् १९१६ से लेकर आजादी के समय की घटनायें और विभिन्न चरित्र के पात्र सम्बद्ध हैं। फिर भी प्रयत्न सराहनीय बन पड़ा है।

सलोनी—लेखक : विमल अहिल्यायन। प्रकाशक : पूनम प्रकाशन, मुक्तापुर, दरभंगा। क्राउन। पृष्ठ संख्या : मात्र ६८। मूल्य : १ रु०।

लेखक का यह लघु उपन्यास एक लम्बी सामाजिक कहानी मात्र है, जिसमें पति-पत्नी की उस समय हत्या करने का प्रयत्न करता है, जब उसे बोध होता है कि कुमारी जीवन में वह दूसरे की प्रेमिका रही है। पत्नी मरती नहीं तो अदालत के कटघरे में पत्नी का हाथ उसके पूर्व प्रेमी को पकड़ा देता है।

लेखकीय मंच

[पाण्डुलिपि तैयार है, प्रकाशक सम्पर्क स्थापित करें।]

विष्णुकुमार भारद्वाज 'विभु' :
संचालक केन्द्रीय हिन्दी परीक्षणालय, उझानी।

१. आलोक : खण्ड-काव्य
२. प्रदीप : कविता-संग्रह

श्रीकृष्ण प्रसाद गुप्त 'शशिकर' :
सीताराम श्यामनारायण पंथ, चक्रधरपुर।

१. खड्ग खम्भ में राम : कविता संकलन
२. मंथन : खंड काव्य

डॉ० भीमसेन निर्मल, एम. ए., पी.-एच. डी. :
अध्यक्ष हिन्दी विभाग, आर्ट्स एंड साइंस कालेज, तक्कल गुड्डा, हनुमान कोण्डा (आन्ध्र प्रदेश)

१. जिसका इंतजार था तेलुगु की श्रेष्ठ कहानी-संग्रह
२. ये मरद भी कैसे हैं? " "
३. आन्ध्र प्रतिभा तेलुगु साहित्य विषयक निबन्ध-संग्रह
४. दीक्षितुलु तेलुगु उपन्यास
५. नदी सुन्दरी तेलुगु एकांकी

श्री राजेन्द्र च्यवन, एम. ए., एल-एल० बी०
एडवोकेट, सिविल कोर्ट, शाहजहाँपुर।

१. काले कमरे सफेद दीवारें : उपन्यास
२. धान का खेत : कहानी-संग्रह
३. निर्वेद : गीतिकाव्य

श्री चित्रभूषण श्रीवास्तव,
आचार्य, शासकीय उच्चतर माध्यमिकशाला, वारासिवनी।

१. 'मेघदूत' का हिन्दी पद्यानुवाद।

श्री रामचरन सोनी 'शिखर'
सम्पादक : जबलपुर पत्रिका ६२४, उपरैन गंज, जबलपुर (म० प्र०)

१. एक प्रेम-एक पाप : सामाजिक उपन्यास
२. पुण्य का प्रायश्चित : "
३. नयी बस्ती : "
४. इंसानियत के पुतले : "

श्रद्धांजलियाँ

आधुनिक समीक्षा के सिद्धान्तों के प्रकाश में
एक नया हस्ताक्षर
जो प्रभाववादी, विश्लेषणात्मक और मार्क्सवादी समीक्षा
से आगे लाकर,
कवि-मन को युग के केन्द्र में खड़ा कर देता है
कीलित-चेतना और जकड़े साहित्य-बोध से
ऊपर, सौंदर्य-बोध के ऐसे गन्तव्य
जो हमें नए काव्य-संस्कार और शिल्प के सम्बन्ध में जागरूक
होने के लिए निमंत्रित करते हैं।

नयी कविता : संस्कार और शिल्प
रामशंकर मिश्र

रचनातत्व और शिल्प का एक ऐसा इतिहास, जो तीस वर्षों के समीक्षा साहित्य में, स्वर्ण युग को प्रतिष्ठित करता है।
रचनाओं की स्वतन्त्र, निरपेक्ष और निजी व्यक्तिव्य की सौंदर्य-मूल्यों के आधार पर एक ऐसी समीक्षा, जो शाश्वत सौंदर्य-बोध और आत्मनुभूति के उच्चतम संदर्भों के शिखर पर पहुँचकर, इतिहास के ऋणी और उधार दृष्टि के समीक्षकों को चुनौती सिद्ध होगी।
पश्चिम और विज्ञान की बैसाखियों पर चल रही, आधुनिक समीक्षा के लिए एक दिशा, जिसे परिपार्श्व, संस्कार, प्रकृति, विधान और शिल्प:प्रयोग से नैक्टय अनुभव कर, प्रस्तुत कृति को हम जीवन धर्मी पायेंगे।

अर्पित करते हैं,

सार्थी प्रकाशन

सागर, मध्य प्रदेश

मूल्य ५.००

नयी कविता के एक और महान शिल्पी
काव्य संस्कार के एक और महान प्रणेता
एक और वेद मानव
गजानन माधव मुक्तिबोध को
समर्पित

[पृष्ठ ४ का शेषांश]

कथोपकथन कहते हैं । पता नहीं कथा, उपकथन से (Dilogue) कैसे हो गया और उसकी परिभाषा भी यह कैसे बन गयी । दरअसल शब्द है—कथनोपकथन (कथन + उपकथन) पीढ़ियों से उसके असली रूप को भूलकर उसके स्थान पर एक शब्द गढ़ लिया है और वही चला आता है ।

इसी तरह एक प्रयोग-रूढ़ि प्रूफ-संशोधक की कृपा से बनी है और बनती चली जा रही है । संभव है अधिक दिन बीतने पर, भविष्य में कोई सोचे भी नहीं कि यहाँ इस शब्द का प्रयोग अशुद्ध है । बड़े-बड़े विज्ञ महानुभावों के कार्डों पर छपा रहता है—" . के उपलक्ष्य में आपकी उपस्थिति सादर 'प्रार्थनीय' है ।" 'प्रार्थनीय' शब्द गलत नहीं है पर उसका प्रयोग सर्वथा अर्थहीन है । 'नीय' प्रत्यय 'योग्य' का अर्थ देने के लिए लगता है, यथा प्रशंसनीय, वन्दनीय । अर्थात् "आपकी उपस्थिति प्रार्थना के योग्य (प्रार्थनीय) है।" वस्तुतः आपकी उपस्थिति याचित, निवेदित है अर्थात् प्रार्थित है । प्रार्थित का प्रयोग संगत व सार्थक है—"...के उपलक्ष्य में आप की उपस्थिति सादर प्रार्थित है ।"

कुछ ऐसे शब्द हैं जिनका अशुद्ध प्रचलन भरपूर चल रहा है । प्रकाशक इसलिए चलवा रहे हैं कि वे व्यवसायी ही तो होते हैं । पाण्डुलिपि (Manuscript) के आधार पर—(Follow Copy no mistake) के सिद्धान्त अर्थात् मूलप्रति का अनुकरण करो गलती नहीं होगी को लेकर सस्ते प्रूफरीडर भाषा के शुद्धत्व की ओर ध्यान नहीं देते । इस तरह के शब्दों की बानगी देखिए, जिनका अशुद्ध रूप दिनों-दिन अपनाया जा रहा है—शुद्ध रूप कोष्ठक में दिये हैं :— अहिल्या (अहल्या), अनुमानित (अनुमित), औषधि (औषध), उपरोक्त (उपर्युक्त), आधीन (अधीन), बृज (ब्रज), नर्क (नरक), तदानुसार (तदनुसार), सन्यास (संन्यास), मुर्ली (मुरली), वाण (बाण), सम्वाद (संवाद), सारिणी (सारणी—तालिका), अत्योक्ति (अत्युक्ति), महानता (महत्ता), अनाधिकार (अनधिकार), कटोक्ति (कटूक्ति), पुनरावलोकन (पुनरवलोकन), एकत्रित (एकत्र), आवश्यकीय (आवश्यक), सतयुग (सत्ययुग), बद्रीनाथ (बदरीनाथ), हरिद्वार (हरद्वार), द्वारिका (द्वारका), वनोवास (वनवास), सतोगुण (सत्त्वगुण), परिणिति (परिणत), मान (मान्य), सालिगराम (शालग्राम), जागृति (जाग्रत्ति), कथोपकथन (कथनोपकथन), पूज्यनीय (पूजनीय) आदि ।

'जागता हुआ' के अर्थ में 'जाग्रत्' तथा 'जागा हुआ' के अर्थ में 'जागृत' लिखना चाहिए । अन्तर्प्रान्तीय अन्तर्प्रवास तथा अन्तर्कथा अशुद्ध हैं । क्रमशः अन्तःप्रान्तीय, अन्तः प्रवास तथा अन्तः कथा शुद्ध रूप हैं । प्रत्येक वर्ग के पहले दो वर्णों, यथा—'क' वर्ग के क ख, 'प' वर्ग के प फ! के पहले विसर्ग आवे तो विसर्ग का लोप होकर सन्धि रूपी विकार पैदा करने वाला अन्य कोई वर्ण नहीं आता । विसर्ग ज्यों का त्यों रहता है ।

एक बात और जो थोड़ी सी अप्रासंगिक है । यह बात व्यक्तिगत श्रेणी में भी आती है । प्रायः कुछ जातियाँ अपनी जातिगत पदवी के आगे महिला नामों के साथ दीर्घ 'आ' जोड़ देते हैं ; यथा—शुक्ल से शुक्ला । कुछ जातियों में पुरुष-महिला दोनों ही दीर्घ होते हैं, यथा:—शर्मा, वर्मा । पर कहीं-कहीं जातिगत पदवियों के आगे महिला नामों के आगे 'आ' दीर्घ करने से अनर्थ हो जाता है । शुक्ल की पत्नी शुक्ला लिखें तो कोई बात नहीं है । पर वैश्य जातिवालों की महिलाओं को 'गुप्त' के अतिरिक्त 'गुप्ता' कदापि नहीं लिखना चाहिए—पुरुषों के लिखने का तो कोई प्रश्न ही नहीं है । शुक्ला शब्द का अन्य एक सुअर्थ भी है । शब्दकोष में गुप्त का अर्थ; गुह्य, छिपा हुआ के अतिरिक्त 'वैश्यों की एक पदवी' भी है । पर गुप्ता का अर्थ बहुत बुरा है । गुप्ता का अर्थ है—रखैला स्त्री, वह नायिका जो स्वप्रेम को गुप्त रखती है । अतः वैश्य महिलाओं को गुप्ता नहीं गुप्त ही लिखना चाहिए ।

अन्त में एक बात और है । प्रायः सभी भाषाओं की वर्तनी (Spelling) निश्चित होती है । अंग्रेजी में सी—ए—टी, कैट (बिल्ली) होता है; सी—ई—टी कैट नहीं कर सकते । यों दोष हर भाषा, हर लिपि में होते हैं । पर वहाँ (Spelling) की जरा सी हेर-फेर नहीं होती । वहाँ गलत को गलत माना जाता है । यहाँ हिन्दी में इस ओर बड़ी उदासीनता है । यहाँ सही भी सही और गलत भी सही । कुछ लोग इसे हिन्दी की विशेषता समझते हैं और मनपसन्द अक्षर विन्यास करने में भी विशेषता समझते हैं । प्रकाशकों-मुद्रकों ने अपने मनपसन्द प्रचलन बना लिये हैं । हुए भी शुद्ध और हुये भी शुद्ध । कोई रोक-टोक करने वाला है ही नहीं । इसके अतिरिक्त ये के स्थान पर ए का प्रयोग एक लंगड़ा तर्क देकर किया जाता है—'जब हमारा स्वरों से काम चल जाय तो व्यञ्जनों का सहारा क्यों लें ? एक

तरफ गया लिखते हैं दूसरी तरफ हम तर्क के आधार पर 'गए' लिखते हैं। एक ही शब्द में एक रूप में य और दूसरे रूप में ए। समझ में नहीं आता ऐसी ऊँची नाक वाले किसी का सहारा नहीं ताकते तो 'गआ' क्यों नहीं लिखते। यह बिल्कुल वैसी ही बात है—'गुड़ खायँ गुलगुले की आन करें अथवा छाछ (मट्ठा) माँगने चली पीठ पीछे कमोरी' माँगने के निकृष्ट स्तर पर उतर आने में लाज नहीं है, पर भिक्षा पात्र पीछे छिपाकर रखेंगे कि कोई देख न ले। भला यह भी कोई बात हुई कि स्वरों से काम चले तो व्यंजनों का सहारा क्यों लें। गए में सबसे पहले व्यंजन का ही सहारा लेना पड़ता है। फिर भाषा में पूरी वर्णमाला का महत्त्व है। व्यंजनों से ऐसी नाराजगी क्यों? या फिर व्यंजनों के बिना ही काम चलायें। इस बेतुके तीखेपन के कारण भाषा की सही (Spelling) के निश्चित होने में हम कितने बाधक हैं? क्या व्यंजन किसी से उधार लेने जाना पड़ता है या उनका किराया देना पड़ता है। इस सन्दर्भ में एक बात और दृष्टव्य है। इस तरह स्वर-व्यंजन के प्रयोग से शब्दों के रूपों में अन्तर हो जाता है। उपर्युक्त (Invalid arguement) के आधार पर 'छपायी' के स्थान पर 'छपाई' लिखेंगे तो गलत होगा। वस्तुतः छपायी के स्थान पर 'छपायी' (Got Printed) तथा छपाई के स्थान पर 'छपाई' (Printing) छपाने की मजदूरी) लिखना चाहिए। इस तरह 'ई' और 'यी' के प्रयोग से शब्दों के रूपों में भी अन्तर हो जाता है। 'छपायी' क्रिया तथा छपाई संज्ञा है, यथा—'मैंने यह पुस्तक छपवायी है इसकी छपाई सिर्फ १० रु० दी है।'. हिन्दी एक सीधी पालतू गाय की तरह है। जैसे चाहो रखो, कुछ भी खिलाओ, कोई आश्रय दो, मत दो—वह आपको दूध देगी। भले ही आप उसे चोकर-चूनी का अच्छा आहार न दें, सुखी घास खिलाएँ, पर पूँछ काटकर, सींग तोड़कर उसे बेरूप तो मत बनाओ। गाय जैसी सीधी सरल भाषा को भी बेरूप बनाने में हम कोई कसर नहीं रख रहे। अन्य भाषा के शब्दों से उसका भंडार भरो पर उसके शब्दों को वर्ण संकर तो मत बनाओ।

भाषा सम्बन्धी ज्ञान तथा प्रूफ रीडिंग की जानकारी का क्षेत्र विस्तृत तथा बहुत बड़ी चीज है। यहाँ कुछ सामान्य व व्यावहारिक बातें मजबूर होकर लिखी हैं। हिन्दी को जल्दी ही अपने राष्ट्र की पटरानी के रूप में आना है। हम सभी का—प्रकाशक, मुद्रक, लेखक और उससे भी अधिक प्रूफरीडर का यह दायित्व है कि सजग होकर उसके रूप को साजें-सँवारें।

सूचनाएँ एवं समाचार

हिन्दी नाट्य समारोह का आयोजन

कलकत्ते की प्रसिद्ध नाट्य संस्था आगामी २५ दिसम्बर से १ जनवरी १९६५ तक अपने दसवें प्रवेश वर्ष के अवसर पर एक 'हिन्दी नाट्य स[...] करेगी। इस अवसर पर हिन्दी भाषा[...]पुस्तक के मुद्रित नाटकों की ग्रन्थ पुटी (Bibliography) के प्रकाशन की भी एक योजना है। अतः समस्त प्रकाशकों एवं लेखकों का सहयोग आवश्यक है। विशेष जानकारी के लिए सम्पादक श्री कृष्णाचार्य, अध्यक्ष हिन्दी विभाग, राष्ट्रीय ग्रन्थालय, १३०, वेलवेडियर इस्टेट, कलकत्ता-२७ से पत्र-व्यवहार करें।

श्री मामा वरेरकर का निधन

मराठी साहित्य के प्रसिद्ध नाटककार श्री मामा वरेरकर का देहान्त ८१ वर्ष की अवस्था में नई दिल्ली के विलिंगडन नर्सिंग होम में हो गया।

आपका जन्म २७ अप्रैल १८८३ को चिप्लुन, जिला रत्नागिरि (महाराष्ट्रप्रान्त) में हुआ था। अपने जीवन के १७ वर्ष १९२३-४० तक चित्रपट जगत् में लेखक-निर्देशक के रूप में बिताये। सन् १९२० में कांग्रेस में सम्मिलित हो गये। आपकी सेवाओं से प्रभावित होकर भारत सरकार ने १९५९ में पद्म भूषण की उपाधि से विभूषित किया।

२६ जनवरी को दो कानून पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित होगा

भारत सरकार २६ जनवरी, १९६५ को भारतीय दण्डविधिसंहिता का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित कराना चाहती है। हिन्दी अनुवाद साक्षी कानून का भी प्रकाशित कराने की योजना है।

राजभाषा (विधायन) आयोग की २१ दिवसीय बैठक में उपर्युक्त कानूनों के हिन्दी रूपान्तर को अन्तिम रूप दिया जायगा, हिन्दी रूपान्तर पर विभिन्न राज्यों की टिप्पणियाँ प्राप्त हो गयी हैं जिनको ध्यान में रखते हुए रूपान्तर को अन्तिम तूलिका दी जायगी।

आयोग के अध्यक्ष श्री सी. पी. सिनहा ने अपने प्रारंभिक भाषण म कहा कि हिन्दी रूपान्तर अगले मास के अन्त तक विधि मन्त्रालय को अर्पित कर देने की योजना है।

स्व० महापंडित राहुल सांकृत्यायन के पत्रों का प्रकाशन

स्वर्गीय महापंडित राहुल सांकृत्यायन जी का दर्जनों संस्थाओं तथा असंख्य लोगों से सम्बन्ध रहा। उनके पत्र चारों ओर बिखरे हैं। श्रीमती कमला सांकृत्यायन उनके पत्रों का संग्रह कई खंडों में प्रकाशित कराना चाहती हैं। जिन सज्जनों तथा संस्थाओं के पास उनके पत्र हों उनकी प्रतिलिपि या मूल भेज दें। विशेष जानकारी के लिए श्रीमती कमला सांकृत्यायन, राहुल संग्रहालय, दार्जिलिंग (प० बं०) से पत्र-व्यवहार करें।

पाठ्य पुस्तकों के चयन हेतु पुस्तकें आमंत्रित

अखिल भारतीय ज्योतिर्विज्ञान तथा सांस्कृतिक शोध परिषद् विद्यापीठ (शासन से रजिस्टर्ड तथा माननीय राज्यपाल के संरक्षण में संस्थापित) ४०, कैसरबाग, लखनऊ—१. राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से अखिल भारतीय स्तर पर शास्त्री (२ वर्ष) आचार्य (२ वर्ष) और २ वर्ष वर्ष का शोध पाठ्यक्रम का संचालन कर रही है। प्रका-शकों से अनुरोध है कि पाठ्यक्रम में पुस्तकें स्वीकृत कराने के हेतु विचारार्थ राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखित या मूल संस्कृत के साथ हिन्दी में टीका सहित उत्कृष्ट पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ (ज्योतिष-गणित व फलित, वेद, पुराण, उपनिषद, दर्शन, उपवेद, मंत्रशास्त्र, धर्मशास्त्र, स्मृति, ऋतुविज्ञान, सामुद्रिक शास्त्र—इन विषयों की)। रजिस्टर्ड डाक से ३० दिसम्बर तक उपर्युक्त पते पर निःशुल्क भेज दें।

मीरा जयन्ती समारोह

आगामी १३ अक्तूबर से २० अक्तूबर '६४ तक अखिल भारतीय स्तर पर मीरा जन्मदिन, उनकी जन्मभूमि मेड़ता, राजस्थान में मनाया जायेगा। इस अवसर पर मीरा बाई से संबन्धित अनेक साहित्य एवं उनके चित्रों की एक प्रदर्शनी भी आयोजित है।

प्रथम राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी

प्रथम राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी २६ नवंबर १९६४ को राष्ट्रपति भवन के रवीन्द्र कक्ष में लगायी जायेगी। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन राष्ट्रपति डॉ० राधाकृष्णन् करेंगे। आशा की जाती है लगभग इस प्रदर्शनी में विभिन्न भारतीय भाषा एवं अंगरेजी की १५,००० पुस्तकें रहेंगी। अब तक ३६० पुस्तक प्रकाशन संस्थानों से ३००० पुस्तकें नेशनल बुक ट्रस्ट ने प्राप्त कर ली हैं।

इस अवसर पर पुस्तक पढ़ने की ओर लोगों की रुचि और बढ़े इस पर नेशनल बुक ट्रस्ट २९ नवंबर से २ दिसं-बर '६४ तक लेखक, प्रकाशक, पुस्तक विक्रेता, मुद्रक एवं पुस्तकालयाध्यक्षों से कुछ विचार-विमर्श भी करेगी।

हिन्दी दिवस पर पश्चिम रेलवे द्वारा एक विराट समारोह

१४ सितंबर १९६४, हिन्दी दिवस के दिन पश्चिम रेलवे अजमेर मंडल ने रेलवे बीसेट इंस्टीट्यूट में हिन्दी पुस्तकों की प्रदर्शनी एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का एक विराट आयोजन किया। इसका उद्घाटन राजस्थान के शिक्षा-मंत्री श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने किया।

'हिन्दी प्रचारक' में पत्रकार श्री हागा का स्वागत

सुप्रसिद्ध जापानी पत्रकार श्री हागा जो सद्भावना यात्रा पर भारत आये हुए हैं, १ अक्तूबर को वाराणसी आये। विशिष्ट ऐतिहासिक स्थानों को देखने के बाद वे हिन्दी प्रचारक कार्यालय में पधारे। श्री ओम्प्रकाश बेरी ने उनका स्वागत किया। श्री हागा ने हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय के प्रकाशनों को देखकर बड़ी प्रसन्नता व्यक्त की।

प्रत्येक पुस्तकालय एवं शिक्षण-संस्था के लिए संग्रहणीय

हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन



कालिदास के ग्रन्थों पर आधारित तत्कालीन भारतीय संस्कृति	डॉ० गायत्री वर्मा	१०.००
गीतिकाव्य [illegible] विकास	लालधर त्रिपाठी 'प्रवासी'	१०.००
बिहारी का न[illegible] मूल्य	डॉ० बच्चन सिंह	३.५०
महाकवि मतिराम	डॉ० त्रिभुवन सिंह	१०.००
कामायनी की व्याख्यात्मक आलोचना	विश्वनाथ लाल 'शैदा'	८.००
हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप-विकास	डॉ० शंभुनाथ सिंह	१२.००
बीसलदेव रासो	डॉ० तारकनाथ अग्रवाल	६.००
भारतीय प्रेमाख्यान काव्य	डॉ० हरिकांत श्रीवास्तव	१०.००
कवि निराला की वेदना तथा अन्य निबन्ध	विष्णुकान्त शास्त्री	४.००
नाटक और रंगमंच	राजकुमार	१०.००
सूरपूर्व ब्रजभाषा और उसका साहित्य	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	१०.००
दरबारी संस्कृति और हिन्दी मुक्तक	डॉ० त्रिभुवन सिंह	४.५०
कहानी का रचना-विधान	डॉ० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा	६.०
विद्यापति	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	५.००
मधुमालती (मंझनकृत)	डॉ० शिवगोपाल मिश्र	८.००
रवीन्द्र कविता-कानन	'निराला'	०.६७
प्रसाद के नाटक	परमेश्वरी लाल गुप्त	४.५०
रस-साहित्य और समीक्षाएँ	'हरिऔध'	४.००
हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद	डॉ० त्रिभुवन सिंह	८.००
साहित्य-परिचय	डॉ० एस० पी० खत्री	३.००
सूर के सौ कूट	चुन्नीलाल 'शेष'	५.००
श्रीराधा का क्रम-विकास	डॉ० शशिभूषण दास गुप्त	८.००
हिन्दी का लिटरेचर (अंग्रेजी)	डॉ० रामअवध द्विवेदी	५.००
हिन्दी साहित्य की रूपरेखा	कृष्णदेव प्रसाद गौड़	१.७०
लोकधर्मी नाट्य परम्परा	डॉ० श्या[illegible]मार	५.००
दिग्विजय-भूषण	डॉ० भगवती प्रसाद सिंह	१५.००
समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द	डॉ० महेन्द्र भटनागर	५.००
भोजपुरी लोक-साहित्य का अध्ययन	डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय	१०.००
काव्यरूपों के मूल स्रोत और उनका विकास	डॉ० शकुन्तला दुबे	१०.००
हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास	डॉ० जार्ज इब्राहम गियर्सन (सं० डॉ० किशोरीलाल गुप्त)	६.००
आधुनिक हिन्दी कविता की स्वच्छन्द धारा	डॉ० त्रिभुवन सिंह	५.००
रत्नाकर और उनका काव्य	उषा जायसवाल	५.००
छायावाद के गौरव-चिह्न	प्रो० 'क्षेम'	६.००
बाबू श्यामसुन्दर दास : व्यक्तित्व और कृतित्व	रामनाथ पाण्डेय	२.२५



हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पो० बा० नं० ७०, पिशाचमोचन
वाराणसी-१

टेलीफ़ोन : २५५०

हिन्दी प्रचारक

हिन्दी पुस्तक-व्यवसाय का मुख-पत्र

प्रचारक पॉकेट बुक्स

की

नई १० पुस्तकें

- आदमी का बच्चा : भिक्खु
- प्रतिमा : डॉ० हरेकृष्ण मेहताब
- संतरों की डाली : अनन्त गोपाल शेवड़े
- आरज़ू की शायरी : सं० ठा० राजबहादुर सिंह 'नसीब'
- मासूम निगाहों के शिकार : पृथ्वीनाथ शास्त्री
- काले उजले टीले : भगवान सिंह
- तूफ़ान और किनारा : विमल वेद
- आज़ादी के नवरत्न : हरिमोहन लाल श्रीवास्तव
- एक तारा : डॉ० प्रभाकर माचवे
- घर की सहेली : सावित्री वर्मा

प्रत्येक का मूल्य 1/- रु.


प्रचारक पॉकेट बुक्स

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय | पो० बाक्स नं० ७० वाराणसी–१

हिन्दी प्रचारक कार्यालय, सी. २१/३०, पिशाचमोचन, वाराणसी–१ से श्री ओमप्रकाश बेरी द्वारा प्रकाशित एवं

वर्ष : १२ • अङ्क ८-९

हिन्दी प्रचारक

हिन्दी पुस्तक-व्यवसाय का मुख-पत्र

डॉ. शिवप्रसाद सिंह

का

बहुप्रशंसित भाषा वैज्ञानिक ग्रन्थ

कीर्तिलता और अवहट्ठ भाषा

(दूसरा परिवर्धित-संशोधित संस्करण)

- अवहट्ठ भाषा पर हिन्दी का पहला ऐतिहासिक कार्य जिसने परवर्ती अपभ्रंश भाषा के अध्ययन को नई दिशा दी ।
- कीर्तिलता की भाषा का शास्त्रीय अध्ययन जिसने संक्रान्तिकालीन आरंभिक हिन्दी के वैज्ञानिक अध्ययन को ठोस आधार प्रदान किया ।
- कीर्तिलता की नई प्रतियों के आधार पर पाठ संशोधन, विस्तृत टीका, संस्कृत अवचूरिका तथा वृहत् शब्दसूची ।
- विद्यापति की पदावली की भाषा के साथ तुलनात्मक व्याकरणिक टिप्पणियाँ ।

[नया संस्करण भाषा और साहित्य के अनुसंधायकों और छात्रों के लिए एक अनमोल उपहार ।]

अपनी प्रति तुरन्त प्राप्त कीजिए ।

डिमाई आकार के चार सौ पृष्ठ का मोनो मुद्रित ग्रन्थ, सुन्दर तिरङ्गा आवरण

मूल्य : सात रुपये मात्र

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय : वाराणसी-१

हमारे नये प्रकाशन

★प्राचीन भारत में लक्ष्मी प्रतिमा
[पुरातत्व] १२·००
डॉ. राय गोविन्दचन्द्र

★भारत का भौगर्भिक अध्ययन
[भूगर्भशास्त्र] १२·००
डॉ. बालवीर सिंह नेगी

★मीमांसा
[उपन्यास] २·००
अनूपलाल मण्डल

★देश के लिए
[नाटक] १·२०
राजकुमार



हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पो. बक्स नं० ७०,
पिशाचमोचन
वाराणसी-१

हिन्दी प्रचारक

[मासिक]

वर्ष : १२ : अंक : ८-९

मूल्य

सम्पादक
श्रीकृष्णचन्द्र बेरी

नवंबर/दिसम्बर : १९६४

वार्षिक : ३.००
एक प्रति : २५ पसे

पुस्तकों पर टेण्डर प्रणाली

विगत २९ नवम्बर से १ दिसम्बर तक नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली की ओर से '**वर्तमान भारत को किन पुस्तकों की आवश्यकता है**' विषय पर साहित्यकारों, पुस्तकालयाध्यक्षों, प्रकाशकों तथा मुद्रकों की एक विचारगोष्ठी दिल्ली में हुई। इस गोष्ठी में पुस्तकों से सम्बन्धित अनेकानेक प्रश्नों पर विचार-विमर्श हुआ। गोष्ठी का सबसे बड़ा महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पुस्तकों की टेण्डर प्रणाली के सम्बन्ध में था। गोष्ठी में जो भी विचार-विमर्श हुए, उनमें वक्ताओं ने बहुत ही बल देकर कहा कि पुस्तकें ऐसी चीज नहीं हैं, जिन पर टेण्डर माँगे जायँ और जब तक इस प्रणाली को विभिन्न सरकारें जारी रखेंगी तब तक स्वस्थ साहित्य के प्रकाशन में बहुत बड़ी बाधा रहेगी। टेण्डर प्रणाली के विरुद्ध अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ ने सम्बन्धित अधिकारियों से काफी लिखा-पढ़ी और आन्दोलन किया है। उसका परिणाम यह हुआ था कि स्वर्गीय प्रधान मंत्री श्री नेहरू और भारत सरकार के वित्त मंत्रालय की ओर से सभी सरकारों को कहा गया था कि पुस्तकों पर टेण्डर न माँगा जाय। अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के नेट बुक समझौते के अनुसार उत्तर प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, बिहार आदि के कई सरकारी और गैरसरकारी पुस्तक-क्रेता विभागों ने हिन्दी पुस्तकों के लिए साढ़े बारह प्रतिशत कमीशन भी स्वीकार किया था। इसका परिणाम यह हुआ था कि हिन्दी पुस्तकों की खरीद में टेण्डर प्रथा समाप्त हो चली थी और कमीशन की दानवी स्पर्धा कुछ हद तक रुक गयी थी। परन्तु यह प्रवृत्ति भी कहीं-कहीं फिर बदल गयी।

टेण्डर प्रणाली का सबसे बड़ा दोष यह है कि कमीशन की लालच में ऐसी पुस्तकें खरीद ली जाती हैं जो कि अवांछनीय होती हैं और जिनका मूल्य अधिक छपा रहता है। कहीं-कहीं इस प्रणाली का दुष्परिणाम यह होता है कि पुस्तकें माँगी कुछ जाती हैं और उनके बदले में रद्दी और भद्दी छपी कूड़ा-करकट पुस्तकें अधिक कमीशन के नाम पर खरीद ली जाती हैं। अच्छे लेखकों की पुस्तकें लाइब्रेरी तक पहुँच भी नहीं पातीं, क्योंकि इन पुस्तकों के प्रकाशक अधिक कमीशन नहीं दे सकते। इसलिए अच्छी पुस्तकों की बिक्री पर इस प्रणाली के कारण बहुत हद तक नुकसान पहुँचता है। अक्सर देखा जाता है कि सरकारी विभाग मार्च के अंतिम सप्ताह में पुस्तकों की खरीद करता है और ऐसे अवसर पर उन पुस्तक-विक्रेताओं की बन आती है, जो अधिक कमीशन के नाम पर अपना कूड़ा-करकट इन लाइब्रेरियों में फेंक देते हैं।

पुस्तकें जन-मानस के हृदय को आलोकित करती हैं। उन्हें यदि साग-सब्जी की तरह मोलभाव करके खरीदा जाय तो यह अशोभनीय होगा। जीवन की अन्य उपयोगी वस्तुओं और पुस्तकों में बहुत बड़ा अन्तर है। व्यापार के अन्य क्षेत्र में मोलभाव करना जितना युक्तिसंगत है, उतना ही पुस्तकों के विषय में मोलभाव करना अनुचित और असंगत है। यदि हमें अपने साहित्य को समृद्ध करना है, यदि हमें जनता तक अच्छी पुस्तकें पहुँचाना है, यदि हमें साहित्य की सेवा करने वाले लेखकों का उचित मूल्यांकन करना है और उन्हें आर्थिक कष्ट से बचाना है, तो यह आवश्यक है कि इस विनाशकारी टेण्डर-प्रणाली को समाप्त करें। सभी राज्य सरकारों से हमारा निवेदन है कि वे नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित इस सर्वदलीय सम्मेलन की सिफारिश को स्वीकार करें और टेण्डर प्रणाली को सर्वदा के लिये समाप्त करें।



बंगाल के प्रसिद्ध हिन्दी-सेवी

आचार्य मुरलीधर शुक्ल का अभिनन्दन-समारोह

"भारतीय समाज-व्यवस्था के अन्तर्गत अध्यापक का स्थान बड़ा ही श्रेष्ठ है। वह गुरु, आचार्य और ज्ञान का उपदेशक है। अतः हमें गुरुजनों का पूर्ण सम्मान करना चाहिए। आचार्य मुरलीधर शुक्ल का सम्मान इसी परम्परा में किया गया है। आचार्यजी ने हिन्दी के प्रचार व प्रसार तथा शिक्षा के लिये जो कार्य किये हैं, वे अभिनन्दनीय हैं।"

उपर्युक्त विचार हैं पश्चिम बंगाल के शिक्षा-विभाग के राज्य मन्त्री श्री सौरेन्द्र मोहन मिश्र और उन वक्ताओं के जिन्होंने आदर्श हिन्दी हाई स्कूल के संस्थापक और अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक पंडित मुरलीधरजी शुक्ल के अभिनन्दन-समारोह के अवसर पर भाषण करते हुए व्यक्त किये।

सभापति पद से भाषण करते हुए श्री सौरेन्द्र मोहन मिश्र ने कहा कि आचार्य शुक्ल की सफलता का प्रमाण यह है कि विद्यालय के समस्त छात्रों, अध्यापकों और अधिकारियों के सम्मिलित प्रयास से उनका अभिनन्दन हो रहा है। आचार्य शुक्ल जैसे कर्मठ, सरल हृदय शिक्षक अभिनन्दनीय हैं।

श्री सीताराम सेकसरिया ने कहा कि शुक्ल जी आदर्श शिक्षक और कुशल संगठनकर्त्ता हैं। अनेक संकटों का सामना करते हुए इन्होंने आदर्श हाई स्कूल की उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया है। प्रो० शिवनाथ पाण्डेय ने कहा कि इनका जीवन ऋषियों के जीवन की तरह पवित्र है।

डॉ० रामप्रसाद त्रिपाठी, प्रो० रामसकल सिंह, श्रीराम मिश्र, श्री हजारी सिंह, श्री रामगोविन्द राय, डॉ० रामसेवक पाण्डेय आदि अनेकानेक विद्वानों और पत्रकारों ने उपस्थित होकर आचार्य जी का अभिनन्दन किया।

अभिनन्दन का उत्तर देते हुए आचार्य शुक्ल ने कहा कि आदर्श हिन्दी हाई स्कूल की स्थापना १९४० में की गयी थी और मूलतः अध्यापकों तथा छात्रों के सहयोग से ही इस संस्था का विकास हुआ, किन्तु प्रारम्भ में स्वर्गीय बाबू मूलचन्द अग्रवाल, मदन मोहन बर्मन, विजयकृष्ण रोहतगी आदि सज्जनों ने विशेष रूप से सहयोग दिया था और उनके प्रति मैं आभारी हूँ।

आचार्य शुक्ल ने स्व० बाबू सरजू सिंह और स्व० [illegible]दीप चौबे के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की तथा विद्यालय की उत्तरोत्तर उन्नति की शुभ कामनाएँ कीं। आचार्य शुक्ल ने श्री पशुपति-राय शर्मा, श्री महेन्द्रनाथ तिवारी, श्री लल्लन सिंह, श्री श्री-कान्त पांडेय, श्री ललिता प्रसाद त्रिपाठी, श्री डी० एन० पांडेय आदि की सेवाओं की प्रशंसा की।

वर्तमान प्रधानाध्यापक श्री पशुपति राय शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए आचार्य शुक्ल की सेवाओं की प्रशंसा की और यह आशा प्रकट की कि भविष्य में भी उनका सहयोग और शुभाशीर्वाद [illegible] मिलता रहेगा।

प्रो० रघुनन्दन मिश्र ने [illegible] स्वामी समर्थ रामदासजी की परम्परा का आचार्य बताते हुए कहा कि ये बहुत बड़े राष्ट्रप्रेमी और हिन्दी-भाषियों के नेता हैं।

विश्वविद्यालय प्रकाशन-कार्यालय वाराणसी में

विश्वविद्यालय प्रकाशन के संचालक एवं स्वत्वाधिकारी श्री पुरुषोत्तमदास मोदी सूचित करते हैं कि विश्वविद्यालय प्रकाशन का सारा व्यवसाय तथा कार्यालय गोरखपुर से वाराणसी स्थानान्तरित कर दिया गया है। वाराणसी का पता है: के ४०/१८ भैरवनाथ (फोन नं०: ४७४१)। कृपया अब इसी पते पर सम्पर्क स्थापित करें।

राष्ट्रीय प्रदर्शनी तथा विचार-गोष्ठी

विगत २६ नवम्बर को हिन्दी में नेशनल बुक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में भारतीय भाषाओं की पुस्तकों की एक प्रदर्शनी का उद्घाटन डॉ० राधाकृष्णन् ने किया। इसी अवसर पर 'वर्तमान भारत को किन पुस्तकों की आवश्यकता है' विषय पर एक विचारगोष्ठी भी २९ नवम्बर से १ दिसंबर तक विज्ञान भवन में आयोजित हुई। गोष्ठी का उद्घाटन ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ० केसकर ने किया। इस प्रदर्शनी के लिये विगत माह डॉ० केसकर काशी भी पधारे थे। प्रचारक संचालक श्री ओमप्रकाश बेरी ने वाराणसी के प्रकाशकों की ओर से एक ज्ञापन भी उन्हें दिया था।

श्री रघुनाथप्रसाद सिंहानिया का निधन

राजस्थानी साहित्य के विशिष्ट मर्मज्ञ श्री रघुनाथ प्रसाद सिंहानिया का विगत १९ नवम्बर को कलकत्ता में चित्तरंजन कैंसर अस्पताल में ऑपरेशन के साथ ही साथ स्वर्गवास हो गया। मृत्युके समय आप की आयु ५० वर्ष की थी।

रस-सिद्धान्त का प्रकाशन समारोह

डॉ० नगेन्द्र की उपरोक्त कृति का प्रकाशन समारोह राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की अध्यक्षता में दिल्ली के नेशनल स्पोर्ट्स क्लब में दिनांक १ दिसम्बर मंगलवार को मनाया गया।

इंडियन इकॉनामिक्स जर्नल

बम्बई से प्रकाशित होनेवाले 'इंडियन इकॉनामिक्स जर्नल' (त्रैमासिक) में अर्थशास्त्र विषय पर हिन्दी में प्रकाशित मौलिक पुस्तकों की समीक्षा प्रकाशित की जायेगी।

नगेन्द्र-साहित्य

इसी मास प्रकाशित हो रहा है—



रस-सिद्धान्त

२०.००

मूर्धन्य आलोचक डा० नगेन्द्र का बहुप्रतीक्षित प्रामाणिक ग्रन्थ। हिन्दी-साहित्य की एक विशिष्ट उपलब्धि।



भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा

२०.००

डा० नगेन्द्र के इस महत्वपूर्ण बहुप्रतीक्षित ग्रन्थ का

द्वितीय संशोधित, संवर्द्धित संस्करण

प्रकाशित हो गया है।

✤ भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका	१२.५०
✤ देव और उनकी कविता	७.००
✤ रीतिकाव्य की भूमिका	५.५०
✤ विचार और विश्लेषण	५.५०
✤ सियारामशरण गुप्त	५.५०
✤ विचार और अनुभूति	४.५०
✤ विचार और विवेचन	४.५०
✤ अनुसंधान और आलोचना	४.००
✤ आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ	४.००
✤ कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ	३.००



[सम्पूर्ण सूचीपत्र एवं नियमावली के लिए कृपया पत्र-व्यवहार करें।]





नेशनल पब्लिशिंग हाउस

चन्द्रलोक : जवाहर नगर : दिल्ली-६.

समीक्षक हैं—डॉ० व्रजकिशोर सिंह, रीडर अर्थशास्त्र-विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी–५। प्रकाशकों से अनुरोध है कि उपरोक्त पते पर अपने अर्थशास्त्र विषयक प्रकाशनों की एक-एक प्रति भिजवायें।

नटरंग

हिन्दी में विविध विषयों पर पत्र-पत्रिकायें प्रकाशित होती हैं; परन्तु नाटक, नाट्य-साहित्य तथा रंगमंच से संबन्धित कोई पत्रिका नहीं थी। 'नटरंग' के प्रकाशन ने इस अभाव को दूर कर दिया। पत्रिका त्रैमासिक है और इसका सम्पादन दिल्ली के श्री नेमिचन्द जैन कर रहे हैं।

अहिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तों में हिन्दी-प्रशिक्षण विद्यालय की स्थापना का सुझाव

केन्द्रीय हिन्दी सलाहकार समिति ने, अपने प्रथम अधिवेशन में जिसका सभापतित्व स्वराष्ट्र मंत्री श्री नन्दा ने किया, यह प्रस्ताव पास किया कि सरकार को अहिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तों में हिन्दी शिक्षकों के लिए कम-से-कम एक प्रशिक्षण-विद्यालय की स्थापना करनी चाहिए। स्वराष्ट्र मंत्री ने भाषण में कहा कि हिन्दी के विकास से अन्य प्रान्तीय भाषाओं को दबाया नहीं जायेगा, परन्तु उनका विकास ही होगा। समिति ने सरकारी राज्य-भाषा के रूप में हिन्दी के स्थान का १९६३ के कानून पर जोर देने की अपील की। और सरकारी कर्मचारियों को हिन्दी पढ़ाने के लिए प्रत्येक विभाग में एक एक हिन्दी अधिकारी रखने का सुझाव दिया एवं हिन्दी में सरकारी काम-काज करने पर बल दिया।

:o: :o: :o:

चिल्ड्रेन बुक-ट्रस्ट द्वारा बाल-साहित्य के चित्रकारों की रिफ्रेशर ट्रेनिंग

यूनेस्को के सहयोग से सञ्चालित चिल्ड्रेन बुक ट्रस्ट द्वारा बाल-साहित्य के २६ चित्रकारों की एक रिफ्रेशर ट्रेनिंग का उद्घाटन दिल्ली चीफ कमिश्नर श्री धर्मवीर ने विगत माह में किया। ट्रस्टीज कौंसिल के मेम्बर श्री जी० बी० पाई ने घोषित किया कि पुस्तकों की प्रथम किस्त का प्रकाशन इस वर्ष के अन्त में प्रारम्भ कर दिया जायेगा। इस किस्त की पुस्तकों का नाम 'भारतीय बच्चे तथा भारतीय उद्योग' होगा। वे क्रमशः १६ और २४ खण्डों में होंगे। भारतीय बच्चे एक सचित्र बाल-कोश के रूप में होगा, जिसमें भारत के हर प्रान्त के बच्चों का अलग-अलग चित्रण होगा तथा चित्रों का संयोजन इस तरह से किया जायेगा जिससे बच्चे उसे आसानी से समझ सकें। [शेष पृष्ठ १३ पर देखें]

वाराणसी में राष्ट्रीय पुस्तक-समारोह

हिन्दी पुस्तकें और पाठकों की रुचि

विषय पर

विचार-गोष्ठी का आयोजन

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निर्देशानुसार विगत १४ नवम्बर को काशी पुस्तक व्यवसायी संघ की ओर से राष्ट्रीय पुस्तक समारोह के उपलक्ष में 'हिन्दी की पुस्तकें पाठकों द्वारा क्यों कम पढ़ी जाती हैं', विषय पर एक विचारगोष्ठी का आयोजन 'हिन्दी प्रचारक' कार्यालय पिशाचमोचन में डॉ० तिलेश्वर राय प्रिंसिपल, जे० पी० मेहता कालेज, वाराणसी की अध्यक्षता में किया गया।

गोष्ठी का समारम्भ करते हुए काशी पत्रकार संघ के अध्यक्ष श्री श्यामाप्रसाद शुक्ल 'प्रदीप' ने हिन्दी की पुस्तकों के अधिक मूल्य का जिक्र किया और सुझाव दिया कि पुस्तकों का मूल्य कम रक्खा जाय। उन्होंने कहा कि बंगाल में पाठकों में पढ़ने की रुचि हिन्दी पाठकों की अपेक्षा बहुत ज्यादा है। कारण बताते हुए उन्होंने कहा कि बँगला के लेखक पाठकों के लिए उपयुक्त सामग्री उपस्थित करते हैं, जब कि हिन्दी के पाठकों को उनकी रुचि के अनुकूल बहुत कम पुस्तकें मिलती हैं। प्रकाशकों को ऐसे लेखक खोज निकालने चाहिये जो कि जनता के दिल और दिमाग को समझें। ऐसे लेखक तभी मिल सकते हैं, जब उनका सही मूल्यांकन किया जायगा।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के मंत्री श्री कृष्णचन्द्र बेरी ने हिन्दी पुस्तकों में पाठकों की कम रुचि के चार मुख्य कारण बताये। उन्होंने कहा कि हिन्दी पुस्तकों की बिक्री के लिए सामाजिक परिवेश, आर्थिक विषमता, आधुनिक युग का प्रचार और प्रकाशन का स्तर चार ऐसे कारण हैं, जो हिन्दी की पुस्तकों की बिक्री में मुख्य रूप से बाधक हैं। सामाजिक परिवेश के प्रसंग में महाराष्ट्र और बंगाल की सामाजिक स्थिति की तुलना करते हुए श्री बेरी ने बताया कि बिहार, उत्तर-प्रदेश, मध्य-प्रदेश और राजस्थान आदि हिन्दी-भाषी क्षेत्रों में सामाजिक परिवेश कभी भी ऐसा नहीं बन पाया, जिससे यहाँ का पाठक अपनी अन्य दुनियाबी चिन्ताओं से मुक्त हो पुस्तकों के पढ़ने में अधिक रुचि ले। इन प्रदेशों का मध्यवर्गीय समाज आर्थिक विषमता में उलझे रहने के कारण पुस्तकों के बारे में सोच ही नहीं पाता। श्री बेरी ने कहा कि पुस्तकों के न बिकने का तीसरा कारण है, कुछ अपवादों को छोड़कर सामान्यतः प्रकाशन स्तर अभी तक ऐसा नहीं हो सका है, जो सहज ही पाठकों के मन को मोह ले और उनके मन में यह भावना जागृत हो कि उन्हें अमुक लेखक या अमुक प्रकाशक की पुस्तकें अपने यहाँ संग्रहीत करनी हैं। आधुनिक युग के प्रचार को देखते हुए प्रकाशकों को चाहिये कि वे अपने विज्ञापन के तौर-तरीकों में क्रान्ति पैदा करें। जब तक पुस्तकों का विज्ञापन वर्तमान युग की वैज्ञानिक विज्ञापन-प्रणाली को दृष्टिगत रख नहीं किया जायेगा तब तक पुस्तकों की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट होना बहुत कठिन है। इसके लिए आवश्यक है कि हम अधिक से अधिक पुस्तक प्रदर्शनियों का आयोजन करें और पाठ्य-रुचि का सर्वेक्षण पुस्तकालयों द्वारा करवायें।

उत्तर प्रदेशीय माध्यमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष पं० हरिहर पाण्डेय ने कहा कि हिन्दी भाषाभाषी प्रदेश विगत एक हजार वर्षों से विदेशी आक्रमणों से बहुत ज्यादा आक्रान्त रहते आये हैं। यही कारण है कि इन प्रदेशों में सामाजिक परिवेश वैसा नहीं बन सका, जैसा कि बंगाल और महाराष्ट्र का है। इन प्रदेशों की संस्कृति को नष्ट करने की हमेशा चेष्टा की गयी और यहाँ के मध्यम वर्ग ने सदैव अपने को जीवित रखने की चेष्टा करने के लिए संघर्ष किया। अब ऐसा समय आ गया है कि यहाँ का मध्यम वर्ग पढ़ने-लिखने की ओर रुचि ले रहा है और यदि प्रकाशकों ने समुचित प्रचार-प्रसार किया तो उन्हें हिन्दी के पाठक धीरे धीरे मिलेंगे।

हिन्दी के प्रख्यात आलोचक डॉ० किशोरीलाल गुप्त ने अच्छे बाल-साहित्य के प्रकाशन की ओर ध्यान आकृष्ट कराया। उन्होंने कहा कि यदि हम अपने बच्चों को अच्छा बाल-साहित्य दें तो यही बच्चे आगे चलकर हिन्दी के अच्छे पाठकों में गिने जायेंगे। डॉ० गुप्त ने हिन्दी में ग्रन्थावलियों के अभाव का जिक्र किया और प्रकाशकों से आग्रह किया कि हिन्दी के ख्यातिप्राप्त लेखकों की पुस्तकें कम मूल्य में प्रकाशित करें। उन्होंने लेखकों से भी आग्रह किया कि वे ग्रन्थावलियों के लिए प्रकाशकों से अनुबन्ध करें जिससे सस्ती ग्रन्थावलियाँ प्रकाशित हो सकें।

'[illegible]स' दैनिक के सहकारी सम्पादक श्री माधवजी ने हिन्दी में प्रकाशित होनेवाले अधिकांश शोध-ग्रन्थों का निम्न स्तर बताया। उन्होंने शिकायत की कि

संस्कृत के ग्रन्थों से सीधे हिन्दी में अनुवाद न करके उनके अंग्रेजी अनुवाद से हिन्दी में अनुवाद किया जाता है। यह भी कहा कि हिन्दी की कुछ पुस्तकें खरीदने के बाद उन्हें यह अनुभव हुआ कि हिन्दी में छपनेवाली अधिकांश पुस्तकों की विषय-वस्तु उस मूल्य के बराबर नहीं है, जो मूल्य पाठक पुस्तक-विक्रेता को उस पुस्तक के बदले में देता है।

गोष्ठी का समापन करते हुए डॉ० शिवप्रसाद सिंह ने कहा कि प्रकाशन तथा विक्रय का कार्य उतना आसान नहीं है, जितना कि लोग समझते हैं। इस कार्य में आने-वालों को यह सोच लेना होगा कि उन्हें व्यवसाय के साथ-साथ कुछ सेवा का कार्य भी करना है। उन्होंने कहा कि आज के युग में प्रकाशन-व्यवसाय को वैज्ञानिक रीति से विकसित करना होगा। फिर कोई ऐसा कारण नहीं है कि हिन्दी में पाठक कम मिलें। मध्यम वर्ग की स्थिति का जिक्र करते हुए डॉ० सिंह ने कहा कि हमारे मध्यम वर्ग की स्थिति बंगाल और महाराष्ट्र के मध्यम वर्ग से अच्छी नहीं है। यही कारण है कि इच्छा रहते हुए भी हिन्दी भाषाभाषी राज्यों का मध्यम वर्ग हिन्दी की पुस्तकें नहीं खरीद पाता। इतने पर भी एक बौद्धिक वर्ग पैदा हो रहा है, जो पुस्तकों के पढ़ने का प्रेमी है। इस बौद्धिक वर्ग के पास पहुँचने के लिए प्रकाशकों को प्रयत्न करना होगा और जनता के बीच चलना होगा। जनता से अपना सम्बन्ध विच्छिन्न रखने पर प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता इस वर्ग तक नहीं पहुँच सकेंगे।

काशी पुस्तक व्यवसायी संघ के अध्यक्ष श्री कैलाश-नाथ भार्गव ने विचारगोष्ठी में आये लोगों को धन्यवाद दिया। ✤

इस मास के नए प्रकाशन

पहले से कहीं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

उपन्यास

सन्तुलन-असन्तुलन —मनहर चौहान

❖ मनहर की लेखनी का एक और कमाल। जनाब ! यह एक नहीं दो उपन्यास हैं। एक सन्तुलन, दूसरा असन्तुलन। दोनों एक ही जिल्द में, फिर भी स्वतन्त्र आवरण पृष्ठ लिए हुए। हिन्दी में पहली बार इस ढंग के प्रकाशन का प्रयोग। रोचक इतने हैं कि एक ही बैठक में पढ़ जाएँ।

किशोर-उपन्यास-माला के नए पुष्प

शान्तिदूत नेहरू वीरेन्द्र मोहन रतूड़ी

वीर कुंवर सिंह वीरेन्द्र मोहन रतूड़ी

भीष्म सुदर्शन चोपड़ा

चंद्रगुप्त विक्रमादित्य प्रकाश नगायच

गुरु अमरदास राजेश शर्मा

विविध

शेक्सपियर के नाटकों की कथाएँ : भाग २

—रूपा० : शत्रुघ्नलाल शुक्ल

पुस्तक-विक्रेता बन्धु अपना आर्डर बना कर भेजें।



उमेश प्रकाशन

५, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली—६



तमिल साहित्य–प्रकाशक : दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास–१७; पृ. सं. २०४; मूल्य ३.०० ।

पुस्तक के प्रारम्भ में तमिल-साहित्य के क्रमिक विकास का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करने के पश्चात् तमिल भाषा के अधिकारी विद्वानों के सात निबन्ध संकलित हैं। तमिल भाषा के विविध अंगों पर उनके आनुक्रमिक विकास को दृष्टि में रखकर ये लिखे गए हैं। इन निबन्धों द्वारा तमिल-साहित्य के विकास का अच्छा परिचय मिल जाता है। भारत में भावात्मक ऐक्य-स्थापन के लिए नितान्त आवश्यक है कि विविध भाषाओं में रचित इसके साहित्य को राष्ट्रभाषा के माध्यम से सारे देश को परिचित कराया जाय। दक्षिणी भाषाओं में तमिल साहित्य अत्यन्त प्राचीन होने के साथ-साथ अत्यन्त समृद्ध भी है। ऐसे महान् साहित्य का आधिकारिक परिचय राष्ट्र-भाषा में प्रकाशित करके दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा ने राष्ट्रभाषा के साहित्य की सेवा के साथ-साथ राष्ट्र की भी महत्वपूर्ण सेवा की है। छपाई सफाई और आवरण महत्वपूर्ण है।

तेलुगु की प्रतिनिधि कहानियाँ (संकलन)—**प्रकाशक** : दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, केन्द्र कार्यालय, त्यागनगर, मद्रास–१७; **पृ०** १६३; **मू०** ३.०० ।

प्रस्तुत कहानी-संग्रह में तेलुगु भाषा के बारह उच्चकोटि के कहानी-कारों की एक-एक कहानी गृहीत है। कहानियाँ तेलुगु भाषी समाज के विभिन्न अंगों का परिचय प्रस्तुत करने के साथ मानव-हृदय के कोमल पक्ष का विशेष रूप में उद्घाटन करती हैं। बुच्ची बाबू की 'मेरे बारे में कहानी न लिखोगे?' उत्कृष्ट कहानी है जिसमें मानव हृदय का कोमलतम पक्ष बड़ी सहृदयता और सँभाल के साथ उद्घाटित हुआ है। जमदग्नि शर्मा की 'तोता मैना' कहानी बड़ी मार्मिक और मनोवैज्ञानिक है। वैसे सभी कहानियाँ उच्च कोटि की हैं। यदि इस प्रकार दक्षिणी भाषाओं की कहानियाँ, उपन्यास और कविताओं के अनुवाद मातृभाषा हिन्दी में हो जाय तो इसमें सन्देह नहीं कि विभिन्न भाषा-भाषी भारतीयों का सम्बन्ध दृढ़ से दृढ़तर हो जायगा। इस उत्तम प्रकाशन के लिए हिन्दी-प्रचार सभा बधाई की पात्र है।

बँगला की प्रतिनिधि हास्य कहानियाँ—सम्पादक : पृथ्वीनाथ शास्त्री तथा योगेन्द्र कुमार लल्ला; **प्रकाशक** : आत्माराम एंड सन्स दिल्ली ६; **पृष्ठ संख्या** : चार सौ; **मूल्य** : दस रुपये।

प्रतिनिधि साहित्यमाला के अन्तर्गत इस पुस्तक का प्रकाशन करके प्रकाशक ने हिन्दी साहित्य भंडार को निःसंदेह एक श्रेष्ठ सामग्री दी है। बँगला के प्रतिनिधि कथाकारों की हास्य-कथा का मात्र यह संग्रह ही नहीं है, बल्कि प्राचीनता के क्रम से लेखकों की कृतियों का चुनाव और लेखकों के सचित्र स्वल्प परिचय ने बँगला कथा साहित्य के इतिहास को भी पाठकों के सामने रखा है।

हास्य कथाओं के चुनाव में कथा-लेखों की प्रमुखता है, यह एक और विशेषता है। निःसंदेह यह एक सराहनीय कृति है।

हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन—लेखक : डॉ० गनेशन; **प्रकाशक** : राजपाल एंड सन्स, दिल्ली; **पृष्ठ संख्या** : ४६४; **मूल्य** : बारह रुपये।

मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डॉ० एस० एन० गनेशन यद्यपि मलय भाषा-भाषी हैं, पर जिस श्रम और लगन से उन्होंने यह कृति तैयार की है, वह प्रशंसनीय है। यह लेखन-कार्य हिन्दी के प्रमुख विद्वान आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की देखरेख में हुआ है, जिससे पुस्तक विषयानुकूल हुई है। विश्व कथा साहित्य का क्षेत्र बहुत विशाल है। प्रस्तुत पुस्तक में हिन्दी उपन्यासों के साथ पाश्चात्य कथा साहित्य का भी तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में यह पुस्तक निःसंदेह एक उचित देन है।

चुटीले चुटकुले—लेखक : मिश्री-मल जैन तरंगित; **प्रकाशक** : सोहन प्रकाशन, सरदारपुरा, जोधपुर; **पृ० संख्या** १४४; **मूल्य** : दो रुपये पचहत्तर पैसे।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने शिष्ट हास्य जैसे कठिन विषय को ढंग से निबाहा है। समाज और उपदेशात्मक व्यंगों से एक आवश्यकता की पूर्ति हुई है। हास्य प्रकरण शिष्ट है।

भारतीय फिल्मों की कहानी—लेखक : बच्चन श्रीवास्तव; **प्रकाशक** : राजपाल एंड सन्स; **पृष्ठ संख्या** २१४; **मूल्य** : ४ रुपये ५० न० पै०।

लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक में फिल्में कैसे बननी प्रारम्भ हुई, इस वैज्ञानिक विषय से पुस्तक का आरम्भ किया है तथा भारतीय फिल्मों के इतिहास का ढंग से दिग्दर्शन किया है। लेखक

ने जिन फिल्मों और कलाकारों की ओर संकेत किया है, उ.. साथ आज काफी दृढ़ वैचारिकता बरती है। खलनायकों के साथ-साथ सफल हास्य अभिनेताओं की चर्चा आवश्यक थी। लेखक का कथन यहाँ तक है कि फिल्मनिर्माण के जिस युग में अछूत-कन्या, विद्यापति आदि फिल्म बनीं वह फिर कभी नहीं आयेगा। लेखक का यह कथन फिल्मोद्योग के लिए एक चुनौती है। नयी पीढ़ी के अधिकांश उन फिल्मों से वंचित होंगे। पुस्तक लेखन में श्रम और ईमानदारी बरती गई है।

एक डर पाँच निडर—लेखक : सत्यप्रकाश अग्रवाल; **प्रकाशक** आत्माराम एंड सन्स दिल्ली; **मूल्य :** २.५० पैसा।

बाल साहित्य में बाल उपन्यासों की बहुत ही कमी है। लेखक ने उस कमी की पूर्ति की है। पाँच बालकों द्वारा उसने ऐसे मकान की सैर कराई है, जिसे भुतिया महल कह कर उसे सारे आकर्षणों के रहते सूना छोड़ा गया है। बच्चों के सैर की प्रत्येक चेष्टा में बालक की खोज छिपी है। सरल भाषा में लिखी सुन्दर कृति है।

भोजपुरी कहानियाँ—सम्पादक : स्वामीनाथ सिंह; **प्रकाशक :** भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी।

भोजपुरी भाषा में प्रकाशित यह कहानी पत्रिका निःसंदेह हिन्दी साहित्य की पूरक बनेगी। लोक-कथाओं के रूप में विस्त्रित भोजपुरी भाषा-भाषी क्षेत्र में फैली हुई होती कहानियों का उद्धार होगा तथा भाषा को नये उपयोगी सरल शब्द प्राप्त होंगे।

प्रतिनिधि बाल एकांकी—संपादक : श्रीकृष्ण योगेन्द्र कुमार लल्ला; **प्रकाशक :** आत्माराम एण्ड संस दिल्ली; सजिल्द कापी साइज; **पृष्ठ संख्या** २८०, सजिल्द, सचित्र; **मूल्य :** ६ रुपये पचास नये पैसे।

हिन्दी के बाइस प्रमुख लेखक-लेखिकाओं के बाल एकांगी का यह संग्रह बाल-साहित्य के लिए अमूल्य देन है। प्रायः एकांकी ऐसे हैं, जिन्हें बालक अपने घर या पाठशाला में बिना किसी पर्दे के खेल सकते हैं। पुस्तक संग्रहणीय है।

नागरीप्रचारिणी सभा,
वाराणसी

हिन्दी के पुस्तकाध्यक्ष,
हिन्दी के सुधी विद्वान,
हिन्दी के विद्वान, शोधकर्त्ता एवं निर्देशकगण
हिन्दी के शोध छात्र !

महोदय,

व्यक्तिगत रूप से आप सबको सूचित कर सकना सम्भव नहीं हो पा रहा है; इसलिए विज्ञापन का सहारा लिया गया है। इसके लिए क्षमा चाहते हुए निवेदन यह है कि आप सब सभा के खोज-विवरणों से अवगत हैं। वह हिन्दी शोध-जगत् का मूलाधार रही है और हिन्दी के उन्नयन एवं विकास के आकलन के लिए उसकी उपयोगिता अनन्य एवं अनिवार्य रूप से सर्व-ग्राह्य रही है।

सन् १९०१ ई० से सन् १९५५ ई० तक के विस्तृत नवीन खोज का संशोधित संक्षिप्त विवरण केन्द्रीय सरकार की सहायता से दो खण्डों में नवम्बर' ६४ में प्रकाशित किया जा रहा है। यह स्मरणीय है कि खोज का विस्तृत विवरण केवल सन् १९४३ ई० तक का ही प्रकाशित है। दोनों खण्ड लगभग रायल आकार के ६५०-६५० पृष्ठों से अधिक के हैं। कपड़े की जिल्दबन्दी भी की गयी है और प्रत्येक खण्ड का मूल्य ३०.००-३०.०० रुपये है। दोनों खण्ड एक साथ मँगानेवालों को ५१.०० में ही दिसम्बर माह तक देने की व्यवस्था की गयी है। यह अत्यन्त सीमित मात्रा में छप रही है। इसलिए विशेष रूप से निवेदन है कि इस सम्बन्ध में अपना आदेश शीघ्रातिशीघ्र भेजकर अनुगृहीत करें।

भवदीय
प्रकाशन मंत्री
नागरीप्रचारिणी सभा,
वाराणसी।

[पृ. ४ से आगे]

पच्चीस बाल-साहित्य लेखक पुरस्कृत

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने इस वर्ष बाल-साहित्य की दसवीं प्रतियोगिता में पच्चीस विभिन्न भाषा-भाषी लेखकों को पुरस्कृत किया है। पुरस्कार प्राप्त करनेवाले लेखक एवं उनकी पुस्तकों के नाम निम्नलिखित हैं :—

डाक्टर कोका—श्रीमती पुण्य प्रभा महंता (असमी), **छोटोदेर व्यासदेब रचित महाभारत**—श्री शशिभूषण दास गुप्त (बंगाली); **नानादेशेर रूपकथा**—श्रीमती सुखलता राय (बंगाली); **गांधी बापू**—जीनेन्द्र जे० देसाई (गुजराती) **एक-अजब-गाजबनू-बुलबुल**—लीला मंगलदास (गुजराती), सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्ताँ हमारा—योगेन्द्र कुमार 'लल्ला' (हिन्दी), **विज्ञान की कहानियाँ**—रत्नप्रकाश 'बील' (हिन्दी) **मैं हवा हूँ**—व्यथित हृदय (हिन्दी); **के कुदरती रामा**—गुप्ता बन्धु (हिन्दी); **विनोद**—के० वी० विट्टालशेनोई (कन्नड़); **नवु जेलेयारु**—शशिकुमार (कन्नड़), **इडियूय यिन्नालय**—टी० वी० जान (मलयालम); **कुट्टीकालूडे**—(मलयालम); **भरताछे परमवीर**—कैप्टन एस० जी० चाफेकर (मराठी); **रनजारा**—श्रीमती दुर्गा भागवत (मराठी); **हुके हो**—(उड़िया); **पिलांक पशु-पक्षि पुराण**—उपेन्द्र त्रिपाठी (उड़िया); **चाणन दी कहानी**—गुरुबचन सिंह (पंजाबी); **जल परियाँ**—एस० एस० अमोले (पंजाबी); **चाहचिता**—मनोहरदास कौरोमल (सिन्धी); **ददिया जी दत**—लेखराई 'हंस' (सिन्धी); **पंड्या उलागिल-परावकुम पप्पा**—'कालवि' गोपाल कृष्णन् (तमिल); **पगालू राथरी**—श्रीमती डी० कन्याकुमारी (तेलुगु); **तालिबइल्म की कहानी**—अब्दुल गफ्फार मधोली (उर्दू) **जमीन से चाँद तक**—श्रीमती के० जैदी (उर्दू)

:o: :o: :o:

भारत सरकार के हिन्दी परामर्शदाता-पद पर श्री दिनकर जी

विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ है कि भारत सरकार के हिन्दी परामर्शदाता और हिन्दी सलाकार समिति के उपाध्यक्ष पद पर श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' नियुक्त किये जायेंगे। आगामी २६ जनवरी '६५ को श्री दिनकरजी यह कार्य-भार सम्हाल लेंगे। हिन्दी सलाहकार समिति के अध्यक्ष स्वराष्ट्र मंत्री श्री गुलजारीलाल नन्दा हैं।

:o: :o: :o:

पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन के लिए भारत-रूसी बोर्ड का गठन

भारत सरकार ने उचित मूल्यों पर देश की शिक्षण संस्थाओं को पुस्तकें सुलभ हो सकें, इसके लिए भारत-रूसी बोर्ड के गठन का निश्चय किया है। बोर्ड इस वर्ष के अन्त तक बन जायगा। इस बोर्ड का कार्य सोवियत पाठ्य-पुस्तकों एवं अन्य विशिष्ट विषयक पुस्तकों का अनुवाद, प्रकाशन एवं वितरण करना होगा। अनुवाद कार्य विभिन्न भारतीय भाषाओं एवं अंग्रेजी में होगा। सोवियत सरकार अपने यहाँ से विषय-वस्तु एवं तद्विषयक विशेषज्ञ देगी।

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत भारत सरकार विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रकाशनार्थ एक केन्द्रीय ब्यूरो की स्थापना भी करेगी।

:o: :o: :o:

सुप्रसिद्ध हिन्दी लेखक का निधन

सुप्रसिद्ध हिन्दी के विद्वान् श्री जहूरबख्श का निधन विगत माह में भोपाल में ६५ वर्ष की अवस्था में हो गया। जीवन के अन्त तक श्री जहूरबख्शजी ने हिन्दी की सेवा की।

:o: :o: :o:

'चतुर्मुखी' समर्पण-समारोह

हिन्दी-साहित्य के प्रख्यात सुपरिचित साहित्यकार श्री व्रजकिशोर 'नारायण' की ५४वीं साहित्यिक कृति एवं छठी काव्य-पुस्तक 'चतुर्मुखी' जो हाल ही पारिजात प्रकाशन'

पटना-१ से काफी सजधज के साथ प्रकाशित हुई है—का समर्पण समारोह विगत ६ अगस्त को बिहार के वर्तमान आधार-स्तंभों में से प्रमुख डा० लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु' के किंगजौर्ज एवेन्यु-स्थित निवास स्थान पर सम्पन्न हुआ। घनघोर वृष्टि के बावजूद राजधानी के प्रमुख साहित्य-कार, पत्रकार और कवि समारोह में उपस्थित थे। समुपस्थित साहित्यकारों में सर्वश्री राजाराधिकारमण प्र० सिंह, महाकवि प्रभात जी, डा० परमेश्वरीलाल गुप्त, श्री नवलकिशोर गौड़, पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह, रामरीझन रसूलपुरी प्रो० केसरीकुमार, दिनेश प्रसाद सिंह, वैद्यनाथ महतो, एम० एल० ए०, देवीदयाल सिंह, डा० पूर्णेन्दुनारायण सिंह, एम० एल० सी०, प्रो० पद्मनारायण, नानालाल त्रिवेदी (सपत्नीक), श्यामलानन्द जी चित्रकार, प्रो० नृपेन राय, उदयराज सिंह जी, भुवनेश्वरी प्रसाद 'भुवन', जितेन्द्र सिंह, गीतेश शर्मा, केदारनाथ 'कलाधर', आत्मानन्द सिंह, सिद्धनाथ जवस्थी, (कानपुर) प्रभृति शताधिक प्रमुख व्यक्ति उल्लेखनीय हैं।

प्रारम्भ में श्री रुद्र जी ने आगत व्यक्तियों का स्वागत किया। तत्पश्चात् महाकवि प्रभातजी ने इसी अवसर के लिए लिखित अपनी कविता का पाठ किया। समारोह का उद्घाटन राजा राधिकारमण ने अपने आशीर्वाद के साथ किया। सर्वश्री नवलकिशोर गौड़, डा० परमेश्वरीलाल गुप्त, प्रो० केसरी जी, जितेन्द्र सिंह आदि ने इस अवसर पर अपने-अपने उद्गार प्रकट किये। श्री 'नारायण' द्वारा किये गये ग्रन्थ-समर्पण की स्वीकारोक्ति में डा० सुधांशु जी ने अन्त में अपने उद्गार प्रकट करते हुए बिहार के साहित्यकार-कवियों पर शोधपूर्ण पुस्तक प्रकाशन की आवश्यकता बतलाई। अन्त में समारोह के आयोजक तथा 'चतुर्मुखी' के प्रकाशक श्री शंकरदयाल सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर एक कविगोष्ठी भी सम्पन्न हुई जिसमें सर्वश्री महाकवि प्रभात जी, श्री रुद्र जी, पांडेय कपिल, आलोक जी, रामचन्द्र भारद्वाज, पंकज, राम सिंहासन विद्यार्थी, सत्यनारायण, शारदा चरण, रायप्रभाकर प्रसाद, पांडेय सुरेन्द्र आदि कवियों ने भाग लिया। संपूर्ण समारोह का संचालन कविवर श्री रामगोपाल रुद्र ने किया। आगतों को डा० सुधांशु जी की ओर से मधुर सलोना उपहार एवं चायपान कराया गया।

आपका पत्र मिला

वर्तनी-सम्बन्धी एक सुझाव

अक्टूबर के **हिन्दी प्रचारक** में श्री सत्यप्रकाश गोस्वामी 'गिरीश' ने प्रूफरीडिंग-सम्बन्धी अनेक उपयोगी सुझाव दिये। मैं उनके केवल दो सुझावों से असहमत हूँ। उनका कहना है कि **'इन्टर'** नहीं **'इण्टर'** लिखना चाहिए। वे भूल जाते हैं कि 'इण्टर' का शुद्ध उच्चारण णकार लिये हुए होगा, जो रोमन लिपि के लिए सर्वथा अज्ञात है। अवश्य ही प्रत्येक भाषा के सन्धि-नियम अन्य भाषा में पूर्णतः चरितार्थ नहीं हो सकते। अन्यथा 'नीत्शे' को नागरी में 'नीच्छे' लिख कर हास्यास्पद बनना होगा।

गिरीश जी का दूसरा सुझाव, जिससे मैं सहमत नहीं हो पाता, है कि महिलाओं की जातिगत पदवी के रूप में **'गुप्ता'** न लिख कर **'गुप्त'** ही लिखना चाहिए। उन का तर्क यह है कि शब्द-कोश में **'गुप्ता'** का अर्थ रखैल स्त्री भी है। भला यह भी कोई बात हुई? एक शब्द के अनेक अर्थ संभव हैं और कौन सा शब्द किस विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, इस का निर्णय प्रसंग देखकर ही किया जाता है। **'कावेरी'** एक नदी का नाम है और एक स्त्री का भी। उस का एक अर्थ वेश्या भी होता है। वस्तुतः संस्कृत में भी **'गुप्ता'** शब्द जातिगत पदवी के रूप में प्रयुक्त मिलता ही है। गुप्त-वंश की एक महिला 'प्रभावती गुप्ता' हो गयी है जिस के नाम का उल्लेख एक संस्कृत शिलालेख में भी मिलता है। अतः कोई कारण नहीं कि 'गुप्ता' शब्द का प्रयोग स्त्री नाम में 'गुप्त' शब्द में बदल दिया जाय।

रामरत्न वाजपेयी मार्ग — **हर्षनारायण एम. ए.**
लखनऊ।

लेखकीय मंच

[पाण्डुलिपि तैयार है, प्रकाशक सम्पर्क स्थापित करें।]

* **श्री लीलाधर शर्मा**, डी. ३/१० मीरघाट, वाराणसी।
  १. पहाड़ों की कैद (उपन्यास)
  २. बरफ के फूल प्यार के गंध (कहानी-संग्रह)
  ३. दिशा हाथों के रूमाल (कविता-संग्रह)
* **श्री रामप्रकाश पांडेय 'प्रवासी'**, एम. ए., बी. टी. अध्यक्ष श्री शान्त विद्यालय, बानपुर, पो. कल्ली, जि० सीतापुर (उ० प्र०)
  १. कृष्ण कर्णालय (खंड-काव्य)
  २. राष्ट्रप्रेम की मन्दाकिनी (कविता-संग्रह)
* **श्री हरिमोहनलाल श्रीवास्तव**, एम. ए., एल-एल. बी., एल. टी., किताबघर, दतिया (म० प्र०)
  १. हिन्दी गद्य-काव्य का आलोचनात्मक इतिहास (आलोचना)
  २. शैली के प्रयोग (गद्य-काव्य-संग्रह)
  ३. भारत भक्ति (राष्ट्रीय गद्य-काव्य)
  ४. जीता जागता हिन्दुस्तान (कविता संकलन)
  ५. अमर [illegible]सा (लघु उपन्यास)
  ६. झाँसी की रानी (जीवनी)
  ७. [illegible] भाषा की झाँकी (निबन्ध)
* **श्री विष्णुदेव यादव 'विष्णु'**; मंत्री युवक संघ नादग्राम, नया गाँव (मुंगेर)
  १. लवकुश (खण्ड काव्य)
  २. प्रियतम (गीत संग्रह)
  ३. जय भारत (कविता-संग्रह)
  ४. भक्ति भावना (कविता-संग्रह)
* **श्री दीनानाथ मिश्र**, बिन्द टोली, अखाड़ा, जिला : आरा, (बिहार)
  १. वेणु (सामाजिक उपन्यास)
  २. मीना („ „)
* **श्री सिद्धनाथ मिश्र**, बिन्द टोली, अखाड़ा, जिला : आरा (बिहार)
  
  १. पर ला (जासूसी उपन्यास)
  २. बीड़ा (सामाजिक उप०)
* **श्री हलधर** द्वारा भोला प्रिंटिंग वर्क्स, बड़ी पियरी, वाराणसी
  १. घुँघरू (उपन्यास)
  २. तुम्हारे गीत तुम्हारे नाम (कविता-संग्रह)

★

सुप्रसिद्ध लेखक

डॉ० शिवप्रसाद सिंह

की रचनाएँ

१. सूरपूर्व ब्रजभाषा और उसका साहित्य — मूल्य : १२.५०

बहुचर्चित शोध-ग्रंथ का नया परिवर्धित संस्करण ।

२. विद्यापति — मूल्य : ५.००

कवि विद्यापति के कृतित्व का आधिकारिक विवेचन ।

३. कीर्तिलता और अवहट्ठ भाषा — मूल्य : ७.००

विद्यापति के प्रसिद्ध अवहट्ठ-ग्रंथ कीर्तिलता का शास्त्रीय और साहित्यिक विवेचन, मूल पाठ, अर्थ, संस्कृत टीका और विस्तृत व्याख्या के साथ नया संस्करण ।

४. रसरतन — मूल्य : १०.००

पुहुकर कवि का अद्यावधि अप्रकाशित महाकाव्य विस्तृत शोधपूर्ण भूमिका के साथ ।

५. इन्हें भी इन्तजार है — मूल्य : ४.००

बीस विचारोत्तेजक, नये शिल्प और संवेदना की अनुपम कहानियाँ ।

६. आर-पार की माला — मूल्य : २.००

लेखक का पहला कहानी-संग्रह, जिसने अपनी नवीन भाव-सम्पदा से सब का ध्यान आकृष्ट किया ।

७. कर्मनाशा की हार — मूल्य : ३.००

१६ कहानियों का अद्भुत संग्रह । अछूती विषय-संयोजना ।

८. शिखरों का सेतु — मूल्य : ३.५०

ललित निबंधों का अनूठा संग्रह जिसे सभी आलोचकों ने एक स्वर से विचार और शिल्प की अद्वितीय उपलब्धि माना ।

९. घाटियाँ गूँजती हैं — मूल्य : २.५०

चीनी आक्रमण की पृष्ठभूमि में लिखा हुआ एक अभिनव वैचारिक नाटक ।

१०. अन्तरिक्ष के मेहमान — मूल्य : १.००

अन्तरिक्ष-यात्रा पर निकले मनुष्य की आगामी संस्कृति की भविष्यवाणी से संयुक्त अनोखा वैज्ञानिक औपन्यासिक रिपोर्ताज़ ।

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय | पो. बॉक्स नं. ७०, पिशाचमोचन, वाराणसी-१

हमारी प्रकाशित प्रमुख पुस्तकें

थीसिस (शोध-प्रबन्ध)

भारतीय मुक्तक परम्परा :
डॉ० रामसागर त्रिपाठी ७.५०

बंगला पर हिन्दी का प्रभाव : डॉ० ब्रह्मानन्द १५.००

आधुनिक हिन्दी काव्य में वात्सल्य रस :
डॉ० श्रीनिवास शर्मा १२.५०

हिन्दी उपन्यासों में नायिका की परिकल्पना :
डॉ० सुरेश सिन्हा १२.५०

साहित्यिक

पद्मावत में काव्य और दर्शन :
डा० गोविन्द त्रिगुणायत १५.००

हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ :
प्रो० शिवकुमार एम. ए. (हिन्दी व संस्कृत) ८.००

हिन्दी साहित्य समस्याएँ और समाधान :
डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त ५.००

कामायनी की भाषा : श्री रमेशचन्द्र गुप्त ७.५०

सटीक काव्य

कबीर ग्रन्थावली सटीक : पुष्पपालसिंह एम. ए. १०.००
जायसी ग्रन्थावली सटीक : डॉ० श्रीनिवास शर्मा ८.००
विद्यापति पदावली सटीक : प्रो. कृष्णदेव शर्मा ५.००
मीराबाई पदावली सटीक : देशराजसिंह भाटी ५.००
केशव और उनकी रामचन्द्रिका : देशराजसिंह ७.००
बिहारी सतसई सटीक : प्रो० विराज एम. ए. ४.००
घनानन्द कवित्त सटीक : लक्ष्मणदत्त गौतम ३.५०
पृथ्वीराज [illegible] अ.) देशराजसिंह भाटी ३.५०
कबीर साखी समीक्षा : प्रो० पुष्पपालसिंह ३.५०

टीकाएँ

महादेवी और उनकी दीपशिखा : शान्तिस्वरूप ४.५०
दिनकर और उनकी उर्वशी : प्रो. देशराजसिंह ७.५०
दिनकर और उनका कुरुक्षेत्र देशराजसिंह भाटी ३.५०
पन्त और उनका रश्मिबन्ध : देशराजसिंह भाटी ३.५०
प्रियप्रवास की टीका : लक्ष्मणदत्त गौतम ५.००
कामायनी की टीका : प्रो. रमेश मिश्र ५.००
साकेत की टीका : प्रो. ब्रजभूषण शर्मा ५.००
भ्रमरगीतसार की टीका : प्रो. पुष्पपालसिंह ५.००
निराला और उनकी अपरा : देशराजसिंह भाटी ४.५०
रत्नाकर उनका उद्धवशतक : देशराजसिंह भाटी २.५०
आधुनिक [illegible] पंत की टीका कृष्णदेव शर्मा ३.००

निबन्ध

साहित्यिक निबन्ध : डा० गणपतिचन्द्र गुप्त ८.००

अशोक निबन्ध सागर : प्रो० विजयकुमार एम.ए. ५.००
अशोक निबन्ध माला : प्रो. शिवप्रसाद शास्त्री ३.००

आलोचनात्मक

प्रमुख कवि

कबीर : प्रो० कृष्णदेव शर्मा २.५०
सूरदास : प्रो. शिवशंकर सारस्वत २.५०
मीरा : प्रो. देशराजसिंह भाटी २.५०
कवि प्रसाद : प्रो० भारतभूषण 'सरोज' २.५०
मैथिलीशरण गुप्त : विनयकुमार २.५०
महादेवी वर्मा : प्रो० देशराजसिंह भाटी २.५०
बिहारी : प्रो० देशराजसिंह भाटी २.५०
प्रमुख कवियोंकी काव्य-साधना प्रो. भाटी एम.ए. ३.५०

प्रमुख लेखक

आचार्य शुक्ल : प्रो० लक्ष्मणदत्त गौतम २.५०
वृन्दावनलाल वर्मा : प्रो० विश्वप्रकाश २.५०

प्रमुख कृतियाँ

गोदान : डॉ० रामगोपाल शर्मा २.५०
गबन : प्रो० रमेशचन्द्र २.५०
चन्द्रगुप्त : प्रो० कृष्णदेव शर्मा २.५०
स्कन्दगुप्त : प्रो० कृष्णदेव शर्मा २.५०
चिन्तामणि : प्रो० कृष्णलाल एम० ए० २.५०
बाणभट्ट की आत्मकथा : देशराजसिंह भाटी २.५०
कामायनी : आचार्य कुसुम २.५०
साकेत : प्रो० ब्रजभूषण २.५०
हिन्दी साहित्य का नूतन इतिहास : आचार्य बटुक ३.५०
हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ० राजेश्वरप्रसाद २.५०

काव्य शास्त्रीय

पाश्चात्य काव्य-समीक्षा : प्रो० ब्रजभूषण शर्मा ३.००
भारतीय काव्य-समीक्षा : डॉ० श्रीनिवास शर्मा २.५०
भाषा-विज्ञान समीक्षा : प्रो० हेमदेव शर्मा २.५०
रस छन्द अलंकार : प्रो० लक्ष्मणदत्त गौतम २.५०

परीक्षोपयोगी (साहित्य सम्मेलन, प्रयाग)

अशोक हिन्दी प्रथमा गाइड : १९६४ संस्करण ७.००
अशोक हिन्दी मध्यमा गाइड : १९६४ संस्करण ९.००
अशोक उपवैद्य गाइड : (संपूर्ण छः पत्र) ६.००
अशोक वैद्यविशारद गाइड : (प्रथम भाग) ६.००
अशोक वैद्यविशारद गाइड : (द्वितीय भाग) ८.००
अशोक आयुर्वेदरत्न गाइड (प्रथम भाग) १५.००
अशोक आयुर्वेदरत्न गाइड (द्वितीय भाग) १५.००

✤ सभी प्रकार की अन्य प्रकाशकों की साहित्यिक पुस्तकें उचित मूल्य पर मिलने का एकमात्र स्थान ✤

अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-६

भूतत्वीय रचना पर
हिन्दी में सर्वप्रथम
प्रकाशन !

भारत का भौगर्भिक अध्ययन
(Geological Study of India)
[भौगर्भिक रेखाचित्रों एवं मानचित्रों से सज्जित]





❖भारत की भूतत्वीय रचना पर केवल दो ही पुस्तकें अभी तक आंग्ल-भाषा में पाठकों तथा छात्रों के समक्ष उपस्थित थीं; परन्तु हिन्दी भाषा में इस विषय पर कोई भी पुस्तक नहीं लिखी गई ।

❖'भारत का भौगर्भिक अध्ययन' नामक पुस्तक के प्रारम्भ में आद्यकल्प (Archaen Era) से ले कर अब तक पृथ्वी का संक्षिप्त इतिहास दिया गया है तथा विश्व की विभिन्न भौगोलिक संरचना की तुलनात्मक सारणी प्रस्तुत की गई है ।

❖भारत की भूतत्वीय रचना का वर्णन करते समय लेखक ने भारतीय खनिजों, प्राकृतिक साधनों, अगाध-भूसन्तति, पर्वतीकरण की विभिन्न अवस्थाओं तथा हिमालय पर्वत की उत्पत्ति की पूर्ण विवेचना प्रस्तुत की है ।

❖सम्पूर्ण पुस्तक में लगभग २१ अध्याय हैं, जो इस प्रकार हैं--विषय-प्रवेश, आद्य-कल्प, धारवार क्रम कुड्डपा क्रम, विन्ध्यान क्रम, पुराजीवकल्प, कैम्ब्रियन क्रम, और्डोभिसियन क्रम, सिलूरियन,डिवोनियन कार्बोनिफेरस युग, ऊपरी कार्बोनिफेरस से पर्मियन क्रम, पर्मियन युग, ट्रियासिक क्रम, गोंडवाना क्रम, जूरेसिक क्रम, क्रिटेशियस क्रम, दक्खिन ट्रेप तृतीय कल्प--इयोसीन क्रम, औलिगोसीन एवं मायोसीन पूर्वार्द्ध, मध्यमायोसीन एवं प्लीस्टोसीन, प्लीस्टोसीन एवं नवजीवन कल्प ।

❖पुस्तक में यथास्थान आवश्यकतानुसार रेखा-चित्रों एवं भौगर्भिक मानचित्रों का समावेश भी किया गया है । पुस्तक के अन्त में पारिभाषिक शब्दकोष भी दिया गया है ।

★

मोनो-टाइप में मुद्रित, पृ. सं. ५००, आकर्षक डस्ट-कवर एवं मजबूत जिल्दबन्दी से युक्त पुस्तक का

मूल्य
पन्द्रह रुपये मात्र

❖



हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
पो. बॉक्स नं. ७०, पिशाचमोचन
वाराणसी—१

प्रचारक पॉकेट बुक्स

की नवीन पुस्तकें !



★ **आदमी का बच्चा**
—'भिक्खू'

★ **सन्तरों की डाली**
—अनन्त गोपाल शेवड़े

★ **आरजू की शायरी**
—सं. : 'नसीब'

★ **एक तारा**
—डॉ. प्रभाकर माचवे

★ **प्रतिभा**
—डॉ. हरेकृष्ण मेहताब

★ **स्वतंत्रता के सेनानी**
—हरिमोहन लाल श्रीवास्तव

★ **काले-उजले टीले** : भगवान सिंह

★ **मासूम निगाहों के शिकार** : पी. नाथ 'मोहन'

★ **तूफान और किनारा** : श्रीमती विमल वेद

★ **घर की सहेली** : सावित्री देवी वर्मा

[प्रत्येक का मूल्य : 1/- मात्र]

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय पी. बॉक्स नं. ७०, पिशाचमोचन
वाराणसी-१

हिन्दी प्रचारक कार्यालय, सी. २१/३०, पिशाचमोचन, वाराणसी-१ से श्री ओमप्रकाश बेरी द्वारा प्रकाशित एवं

साप्ताहिक हिन्दुस्तान

२५ अक्तूबर १९६४.

